जब अंग्रेज़ आये—

सस्ता-साहित्य-मण्डल
अजमेर

जब अंग्रेज़ आये—

[श्री अक्षयकुमार मैत्रेय के बंगला ग्रन्थ 'मीरकासिम' का अनुवाद]

सस्ता-साहित्य-मण्डल
अजमेर

'त्यागभूमि'

"× × × आजकल नाम के बराबर काम नहीं होता। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि 'त्याग-भूमि' इस बुरी आदत को दूर करने का प्रयत्न करेगी। ×"

मोहनदास गांधी

"हिन्दी में त्यागभूमि जैसी सुसम्पादित पत्रिका देखकर मुझे प्रसन्नता होती है। × × मैं चाहता हूँ कि वह चिरजीवी हो।"

मदनमोहन मालवीय

"× × मेरी राय में हिन्दी में सब से अच्छी पत्रिका 'त्यागभूमि' है। × "

जवाहरलाल नेहरू

संपादक

हरिभाऊ उपाध्याय

वार्षिक मूल्य

४)

जब अंग्रेज़ आये—

लेखक

श्री अक्षयकुमार मैत्रेय

भूमिका-लेखक

श्री केदारेश्वर भट्टाचार्य एम० ए०,

(अध्यापक ब्रिटिश भारतीय इतिहास,

हिन्दू-विश्वविद्यालय, काशी)

अनुवादक

श्री रामनाथलाल 'सुमन'

प्रकाशक
जीतमल लूणिया
सस्ता-साहित्य-मण्डल
अजमेर

प्रथम बार २०००	१९३०	मू० १।=) सजिल्द १॥)

मुद्रक
जीतमल लूणिया
सस्ता-साहित्य प्रेस.
अजमेर

दो शब्द

श्री अक्षयकुमार मैत्रेय भारत के उन प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ताओं में से हैं जो प्रचलित पुस्तकों को ही प्रमाण न मान, मूल काग़ज़-पत्रों का अन्वेषण कर सिद्धान्त स्थिर करते हैं। उनका 'सिराजुद्दौला' इतिहास-प्रिय समाज में खूब आदर पा चुका है।

अक्षय बाबू की शैली ख़ास उनकी है। वह क्रोध नहीं उत्पन्न करती; चुभती है और चुभकर अपनी स्थिति पर मन में करुणा एवं ऊपर उठने का भाव उत्पन्न करती है। उसमें प्रवाह है।

यह एक जुदा सवाल है कि ऐसी शैली का इतिहास में प्रयोग किया जाय या नहीं। इसमें मतभेद है और हो सकता है। कुछ इतिहास-वेत्ताओं के मत से इतिहास आवेश, क्रोध, घृणा या दया के ऊपर की चीज़ है। वहाँ इनका प्रवेश न होना चाहिए। बात बुरी नहीं और शायद एक दृष्टि से बहुत अच्छी और ऊँची है पर प्रश्न रह जाता है कि फिर दर्शनशास्त्र से भिन्न इतिहास की आवश्यकता क्या है? और इतिहास के पाठक तो साधारण हाड़-मांस के बने मनुष्यों में से ही आते हैं, और उनके लेखक भी वहीं से। फिर मनुष्य के जीवन पर आस-पास के वातावरण का जो प्रभाव पड़ता है उसी के अनुसार उसकी मनोवृत्तियां भी बनती हैं और जैसी उसकी मनोवृत्तियाँ होती हैं, उसीके अनुकूल वह वस्तुओं को ग्रहण भी करता है। मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूँ कि हैवेल और विन्सेण्ट-स्मिथ इन कमज़ोरियों (Prejudices) से परे थे और न मैं

यही मानने को तैयार हूँ कि यदुनाथ सरकार, जायसवाल या भण्डारकर कुछ पूर्वाधारों को लेकर विचार नहीं करते या अपने अनेक संस्कारों एवं पारम्परिक विचारों से रहित हैं।

फिर इतिहास से लाभ भी तो आदमी, अपनी, अपने देश या विश्व की अवस्था और परिस्थिति के अनुसार ही उठाता है। इस प्रकार इतिहास के दृष्टि-बिन्दुओं में भेद होना स्वाभाविक है। फिर 'मीरक़ासिम', जैसा कि स्वतः उसके लेखक अक्षय बाबू अपनी प्रस्तावना में कहते हैं, 'इतिहास नहीं, एक ऐतिहासिक चित्र है।'

× × ×

इस पुस्तक के अनुवाद-कार्य में अनुज श्यामलाल (बी० ए०) तथा स्नेहभाजन बंधु श्री कैलासपति त्रिपाठी (बी० ए०) से बड़ी सहायता मिली है। इन्हें धन्यवाद देना इनके उस स्नेह का अपमान करना है जो बहुत गुप्त और मूक स्वीकृति—'अप्रीसियेशन'—चाहता है।

पुस्तक का अनुवाद करने की आज्ञा देकर श्री एस० मैत्रेय ने मुझे उपकृत किया है तथा, समय न होते हुए भी, एक सुन्दर भूमिका लिखकर हिन्दू-विश्वविद्यालय के ब्रिटिश भारतीय इतिहास के अध्यापक श्री केदारेश्वर भट्टाचार्य महोदय ने मुझपर कृपा दिखाई है। इसके लिए इनका उपकार मानता हूँ। सस्ता-मण्डल के व्यवस्थाकों की कृपा से ५—६ साल से पड़ी हुई इस पुस्तक का जीर्णोद्धार हुआ है अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं।

गांधी-आश्रम, हटुण्डी (राजपूताना) — श्री रामनाथलाल 'सुमन'

प्रस्तावना

'साहित्य' एवं 'भारती' नामक (बँगला) पत्रिकाओं में मीरजाफ़र तथा मीरकासिम-सम्बन्धी मेरे जो लेख प्रकाशित हुए थे, उनका ही, संशोधन और परिवर्द्धन के पश्चात्, इस पुस्तक में संग्रह किया गया है। पुस्तक में आये हुए वर्णनों की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए प्रामाणिक ग्रंथों के मूल अवतरण भी दे दिये गये हैं।

मीरकासिम जिस युग में उत्पन्न हुए थे, वह बंगाल के इतिहास का विस्मयपूर्ण विप्लवयुग कहा जाता है। पुरातन दूर होता जा रहा था और उसकी जगह नूतन अपना अधिकार जमा रहा था;—ऐसे समय मीरकासिम ने पुरातन को बाँध रखने की चेष्टा की थी। वह चेष्टा बुरी थी या भली, इसका इस ग्रंथ से सम्बन्ध नहीं है। किस प्रकार पुरातन नष्ट हो गया एवं किस प्रकार उस नूतन का अभ्युदय हुआ, यही कार्य-कारण की शृंखला के साथ इस ग्रंथ में दिखलाया गया है।

इतिहास एवं ऐतिहासिक चित्र में अन्तर है। इतिहास पूर्ण

होता है; ऐतिहासिक चित्र पूर्ण नहीं होता। चित्र में सम्पूर्ण अंश समान भाव से विकसित नहीं हुआ करता।

ऐसा नहीं है कि मीरकासिम का कुछ अपराध ही नहीं था तथापि उनमें गुण का भी अभाव नहीं था। स्वदेश के शिल्प-वाणिज्य की रक्षा के लिए उत्सुक न होने पर मीरकासिम का इस प्रकार सर्वनाश न होता।

बंग-बिहार उड़ीसा के अन्तिम स्वाधीन मुसलमान नवाब ने प्रजा-रक्षा के लिए ही आत्म-विसर्जन किया था;—यही मीरकासिम के इतिहास की प्रधान कथा है। उस कथा की इस पुस्तक में यथासाध्य आलोचना की गई है। बस।

राजशाही
भाद्र, १३१२ (बंगला) साल। } श्रीअक्षयकुमार मैत्रेय

भूमिका

अठारहवीं सदी के प्रारम्भ में कृतज्ञ शाहंशाह फर्रुखसियर ने पूर्वीय उदारता और उससे भी अधिक पूर्वीय लापरवाही के कारण अपने अंग्रेज डाक्टर की सेवाओं के पुरस्कार-स्वरूप ईस्टइण्डिया कम्पनी को मुगल-राज्य में सर्वत्र व्यापार करने के लिए बड़ी से बड़ी रियायत दे दी। शाही फ़रमान ने अंग्रेजों को माल पर चुंगी देने से मुक्त कर दिया। इसके बदले वे थोड़ा-सा रुपया सालाना सुलतान को दे दिया करते थे। शासन-सूत्र जब मुगलों के हाथ से निकल गया तो बंगाल के अयोग्य और नाममात्र के सूबेदारों ने शाही फ़रमान का अर्थ बिलकुल उसके शब्दों के अनुसार ही लिया। कम्पनी के माल पर, चाहे वह बाहर से मँगवाया जाय या बाहर भेजा जाय चुंगी नहीं लगती थी। अन्तर्प्रान्तीय व्यापार इस चुंगी से मुक्त नहीं था लेकिन कम्पनी के कारिन्दे चोरी से अन्तर्प्रान्तीय व्यापार में भी भाग लेते थे और उन लोगों को कम्पनी का माल ले जाने के लिए जो लाइसेन्स मिले थे उन्हें दिखाकर और झूठ बोलकर चुंगी देने में बेईमानी करते थे। शाही फ़रमान का यह अनुचित उपयोग पलासी युद्ध में हार हो जाने के बाद तो और भी बढ़ गया। सिराजुद्दौला, जो यह जानता ही न था कि मन पर संयम रखना किसे कहते हैं, अपने राज्य की शक्ति और गौरव के पुनरुत्थान के लिए अत्यन्त उत्सुक था। बिना सोचे-समझे उसने

कम्पनी से युद्ध मोल ले लिया और अपने पैरों में स्वयं ही कुल्हाड़ी मार ली। बस फिर क्या था। कम्पनी के कारिन्दों की आमदनी का सबसे बड़ा ज़रिया अन्तर्प्रान्तीय व्यापार में भाग लेना ही हो गया। अब सन् १७१५ के फ़रमान से यह अर्थ भी निकाल लिया गया कि कम्पनी के नौकर-चाकर बाहरी और अन्दरूनी दोनों प्रकार के व्यापारों में चुंगी से मुक्त हैं। मीरजाफ़र इस पर कभी-कभी क्रोध कर बैठता था और चिढ़ भी जाता था परन्तु अधिकार-प्रमत्त क्लाइव उसे डरा-धमकाकर या फुसलाकर चुप कर देता था। देश अकाल-पीड़ित था, जुलाहे अंग्रेजों के ठेके से कष्ट पा रहे थे और अंग्रेजों के साथ विशेष रियायतें होने के कारण भारतीय व्यापार नष्ट होता जा रहा था। नवाब को कर्ज़ लेना पड़ रहा था और यूरोपीय व्यापारियों के व्यवहार से दिवाला निकलने की नौबत आ रही थी। अंग्रेजों ने नवाब को खूब लूटा-खसोटा। यहां तक कि बेचारा बिलकुल ही नंगा-भूखा हो गया। जब सब-कुछ इन विदेशी अंग्रेज व्यापारियों ने मीर जाफ़र से चूस लिया और उसके पास इनकी लालसा-तृप्ति की सामग्री न रही तो कम्पनी के संरक्षण में मीरजाफ़र के स्थान पर मीरकासिम बिठाया गया। वांसिटार्ट और उसके मित्रों ने अपनी नीति का यह उत्तम पाठ क्लाइव और डूप्ले से बखूबी ग्रहण किया था।

परन्तु इस षड्यंत्र के जो परिणाम निकले उनसे मालूम हो गया कि खिलाड़ी यहां चूक गये और मीरकासिम-जैसे चतुर आदमी को सिंहासन पर बिठाकर उन्होंने बड़ी ग़लती की। मसनद पर बैठते ही यह प्रत्यक्ष हो गया कि मीरकासिम मीरजाफ़र की

तरह छिछले स्वभाव का आदमी नहीं है और न वह सिराजुद्दौला की तरह अदूरदर्शी और प्रतिहिंसा के भाव से अन्धा हो जाने वाला है। मीरकासिम एक योग्य और देशभक्त मनुष्य था जिसमें बुद्धि और दूरदर्शिता भरी थी। उसने अंग्रेजों की गुलामी का जुआ उतार फेंकने का दृढ़ निश्चय कर लिया। धीरे-धीरे वह स्वतंत्र नीति काम में लेने लगा। एक जागीरदार होना अच्छा, लेकिन नाम का शहंशाह होने में कौन-सा गौरव है? बर्दवान, चटगांव और मिदनापुर की भूमि अंग्रेजों को देकर वह उनके ऋण से मुक्त हो गया। तब उसने अपनी राजधानी मुँगेर में स्थापित की, जो कलकत्ता के पास है। फिर धीरे-धीरे उसने आर्मनी अफसर रखकर अपनी सेना में और खास कर तोपखाने में सुधार आरंभ किया। इसके बाद उसने कड़ाई से टैक्स वसूल करना, उन अयोग्य अफसरों और मंत्रियों को निकालना, जिनपर अंग्रेज दबाव डाल सकते थे, और उन महाजनों पर पूरी निगरानी रखना जिनका कारोबार अंग्रेजों से होता था—इत्यादि उपाय शनैः-शनैः काम में लाना प्रारम्भ किया। कम्पनी के कारिन्दों के अनुचित व्यवहार और बेईमानी को रोकने के लिए उसने अनेक प्रयत्न किये परन्तु उससे अंग्रेजों की द्वेषाग्नि भड़क उठी क्योंकि भारतीय शासन पलासी के युद्ध के बाद से घृणा और अनादर की वस्तु हो गया था। अंग्रेज लोग देशी सल्तनत के अधीन रहना भूल चुके थे। जिस प्रकार का बर्ताव एलिस ने पटना में किया वह क्लाइव की विजय के बाद से अंग्रेजों के उग्र स्वभाव के बढ़े-चढ़े रूप का एक उदाहरण है।

इसके विपरीत नवाब ने यह निश्चय कर लिया था कि मैं

बंगाल की आर्थिक परतंत्रता दूर करूंगा और अंग्रेजों को १७१५ के शाही फरमान का वही अर्थ मानने को बाध्य करूंगा जो पलासी की लड़ाई के पूर्व समझा जाता था। इसलिए अब यह सम्भव नहीं था कि कम्पनी को पान, नमक इत्यादि का व्यापार केवल 'दस्तक' या लाइसेंस के बल पर करने दिया जाय। सारे इतिहासकार (सिवाय डाडवेल के) इस बात को मानते हैं कि कम्पनी के कारिंदों का अपना निजी व्यापार डाइरेक्टरों-द्वारा सम्मत नहीं था और शाही फ़रमान के अनुसार तो बिना चुंगी दिये माल ले जाना सरासर न्याय को तिलांजलि देना था। परन्तु एक बार जब उन लोगों ने इस रियायत का उपभोग कर लिया और राज्य ने भी इस बुराई को बर्दाश्त कर लिया तो जिन लोगों को इससे लाभ होता था उन्होंने इसे न्यायोचित अधिकार ही मान लिया।

कलकत्ता के कौंसिलर, जिनमें व्यावहारिकता बिलकुल नहीं थी, समझते थे कि नवाब की मांग स्वीकार करने का अर्थ हुआ, बंगाल में से बृटिश शासन का उखड़ जाना। उनकी बुद्धि में इसके सिवाय कुछ भी न आता था कि ऐसा करने से हमारी सत्ता चली जायगी और वही पलासी के युद्ध के पहले वाले दिन आ जायँगे जब कि अंग्रेजों को व्यापार में अपेक्षाकृत हानि उठानी पड़ती थी और उनके व्यापार का भली प्रकार चलना नवाब की इच्छा पर निर्भर था। इसलिए प्रश्न वास्तव में यह था कि 'किसकी सत्ता रहे।' कम्पनी और मीरकासिम के लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न था। क्लाइव ने इस सत्ता पर विजय द्वारा अधिकार कर लिया था और अब उसके उत्तराधिकारियों के

लिए यह असंभव था कि नवाब के मांगने पर सारे अधिकार लौटा दिये जायँ।

इतने दिनों तक अंग्रेजों के हाथ में सारी शक्ति रहने से वे प्रमत्त हो गये थे। उन लोगों में से बहुत कम में (जैसे वार्न-हैस्टिंग्ज और वांसिटार्ट में) थोड़ी-बहुत समझदारी रह गई थी परन्तु अधिकांश कौंसिलरों का तो यही निश्चय था कि सर न झुकाया जाय। उन लोगों ने वांसिटार्ट की नवाब से समझौता करने की बात बिलकुल न सुनी और इसी पर अड़े रहे कि सन् १७१५ के शाही फ़रमान के अनुसार उन्हें बाहरी और अन्दरूनी दोनों प्रकार के व्यापार के लिए बिना चुंगी दिये माल ले जाने की छूट है, यद्यपि उन्होंने इस शर्त को स्वीकार कर लिया कि नमक पर २½ प्रतिशत चुंगी दे देंगे।

तब नवाब ने यह चाल चली कि निजी व्यापार के माल पर से बंगाल में चुंगी बिलकुल ही उठा दी। कलकत्ता की अंग्रेजी कौंसिल भड़क उठी। इस आम छूट ने तो फ़रमान के अनुसार दिये गये उनके सारे विशेष अधिकारों पर ही पानी फेर दिया। नवाब को समझाने एजेण्ट मुंगेर भेजे गये। इस बीच में कुछ ऐसी घटनायें हो गईं जिनसे नवाब की क्रोधाग्नि पर घी पड़ गया और पटना में एलिस पर ही सारा गुस्सा उतारा गया। परिणाम-स्वरूप युद्ध, जो अनिवार्य था, समय से पहले ही छिड़ गया।

परिणामों को दोहराना अनावश्यक है। मीरक़ासिम के कार्य में कोई षड्यंत्र बाधक नहीं हुआ जैसा कि सिराज के साथ किया गया था। मीरजाफ़र को छोड़कर क़रीब सारे देश ने

मीरकासिम का साथ दिया था। उधवानाला और बक्सर के युद्ध पलासी की लड़ाई की तरह खेल नहीं थे। परन्तु भाग्य उलटा था। नवाब की तैयारी पूर्ण होने के पहले ही युद्ध प्रारंभ हो गया। परिणाम अंग्रेजों की विजय हुई। शायद दूसरी बार विप्लव करना संभव नहीं था और उससे देश को लाभ होने की भी आशा नहीं थी।

बंगाल के कुशल इतिहासकार, इस पुस्तक के लेखक, ने मुग़ल-शासन के अन्तिम दृश्य का चित्र बड़े मर्मस्पर्शी शब्दों में खींचा है। अक्षय बाबू ने ही पहले-पहल कालकोठरी की घटना के विरुद्ध संदेहात्मक प्रमाण खोजे थे, जो कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, अधिक जोरदार होते जाते हैं। मीरकासिम का उनका अध्ययन भी इतिहास की ग़लतफ़हमी दूर करने के लिए है। हम लोग मीरकासिम के चरित्र, नीति और कार्यों को अंग्रेज इतिहासकारों की दृष्टि से देखते हैं। हम यह नहीं कहते कि सारी बातें हमारे अनुकूल ही लिखी जायँ। परन्तु इस काल के इतिहास का अध्ययन करने से और भी नवीन सामग्री प्राप्त हुई है। 'पर्शियन कैलेण्डर' में दोनों ओर के पत्रों का उत्तम संग्रह है, जिससे अंग्रेजों की तात्कालिक कुटिल नीति तथा मीरकासिम का सदाशयता प्रकट होती है।

इस पुस्तक का अनुवाद करके श्रीयुत रामनाथलाल 'सुमन' ने हिंदी की अच्छी सेवा की है और साथ ही साथ इतिहास के निरपेक्ष विद्यार्थी के लिए हिन्दी में सामग्री उपलब्ध करने में सहायता दी है। आशा है कि यह अनुवाद वास्तविक इतिहास की जांच-पड़ताल की इच्छा हिंदी भाषा-भाषी जनता में जाग्रत करेगा

और इससे इस विषय की मदरसों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों में सुधार करने में भी सहायता मिलेगी। पुस्तक को पढ़कर हमें अपनी दुर्बलताओं से सचेत हो जाना चाहिए क्योंकि अंग्रेजों की विजय का मूल कारण उन लोगों की कूटनीति और षड्‌यंत्र ही नहीं हैं, बल्कि हमारे जातीय और व्यक्तिगत चरित्र की दुर्बलतायें और दोष भी हैं। हम 'सुमन'जी को हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हिन्दी-भाषी जनता के सामने इस प्रकार की उच्चकोटि की पुस्तक प्रस्तुत की है। हमें इसमें संदेह नहीं है कि शिक्षित जनता उनके परिश्रम का आदर करेगी।

हिन्दू-विश्वविद्यालय
काशी

केदारेश्वर भट्टाचार्य

भारत में अंग्रेज़ी राज्य का आरम्भ

भारत में अंग्रेज़ी राज्य के आरम्भ का इतिहास ऐसी धोकेबाज़ियों, षड्यंत्रों, ज़ुल्मों और चरित्र-हीनताओं से भरा हुआ है कि अन्य देशों के इतिहासों के पन्नों में उनकी मिसाल नहीं मिल सकती। आज शक्ति हाथ में आ जाने के कारण जो अंग्रेज़ अधिकारी और भारतीय सभ्यता की हँसी उड़ाने वाले विदेशी प्रचारक-गण, भारतीयों की चारित्रिक दुर्बलता के सच्चे-झूठे क़िस्से गढ़कर और बड़े गर्व से कहने का अधिकार लेकर दुनिया के सामने रखने को उत्सुक हैं; जो न केवल शारीरिक वरन् चारित्रिक दृष्टि से भी भारतीयों को अपने से अधम समझते हैं, मुझे विश्वास नहीं है कि वे भारतीय साम्राज्य के आरम्भ की कहानी पढ़कर देर तक सर ऊँचा किये रह सकते हैं। अंग्रेज़ों के विश्वासघात और जालसाज़ी के नमूनों से विगत तीन सौ वर्षों और विशेषतः ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी के शासनकाल का इतिहास भरा पड़ा है।

हम आज गुलाम हैं; हमसे कहा जाता है कि यदि तुम्हारा चरित्र दुर्बल न होता और हम तुमसे श्रेष्ठ न होते तो तुम पराजित और पराधीन ही क्यों होते ? बात चुभनेवाली है और सत्य से ख़ाली भी नहीं। हम मानते हैं कि हमारे यहाँ अमीचन्द-जैसे भी कितने ही थे पर हम ज़ोर देकर कहना चाहते हैं कि अमीचन्द

के विश्वासघात की तुलना क्लाइव के विश्वासघात से नहीं की जा सकती। अमीचन्द ने जब अपने भारतीय शासक के प्रति विश्वासघात करके अंग्रेज़ों की सहायता की तब उन्हें अंग्रेज़ी चरित्र में विश्वास था; तब वह समझते थे कि अंग्रेज़ बात के सच्चे निकलेंगे। वह क्या जानते थे कि अंग्रेज़ी साम्राज्य-विस्तार के इतिहास के पन्ने धोकेबाज़ी की स्याही से ही काले किये जाने वाले हैं। चोरों और डाकुओं में भी ज़बान एक चीज़ समझी जाती है पर चाहे मीरजाफर के साथ हो या मीरकासिम के, हैदरअली के साथ हो या मराठों के, अंग्रेज़ अपनी बात के पक्के कभी साबित न हुए। इसीलिए भारत में अंग्रज़ी शासन का इतिहास जिन्होंने अच्छी तरह पढ़ा और समझा है, वे सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हमारा राज्य चले जाने का एक बहुत बड़ा कारण हमारा भोलापन और सादगी थी जो बहुत जल्द दूसरों की बात पर विश्वास कर लेती थी। पर जहाँ धोका देकर काम बना लेना राजनीति का चरम विकास समझा जाता हो, वहाँ के अधिवासियों से चारित्रिक आदर्श के सम्बन्ध में बहस करना महज़ फ़िजूल है !

इंग्लैण्ड के इतिहास में क्लाइव का नाम बड़े आदर के साथ आता है। वह ब्रिटिश साम्राज्य का जन्मदाता और राष्ट्र का आदर्श वीर कहा जाता है। हम मानते हैं कि क्लाइव अंग्रेज़ी राष्ट्र का वह प्रतीक (Symbol) था जिसके रूप में पहली बार हमने इंग्लिस्तान को देखा। यह क्लाइव वही था जिसके सम्बन्ध में अंग्रेज़-इतिहासलेखकों तक को लिखना पड़ा है कि धोकेबाज़ी उसकी आदत में दाखिल थी और धोका देने में उसे कभी

पश्चात्ताप या दुःख न होता था!। यह वह क्लाइव था जिसने, यह जानते हुए भी कि इंग्लैण्ड में जालसाज़ी की सज़ा प्राणदण्ड है, पार्लमेण्ट की जाँच-समिति के सामने बड़े अभिमान के साथ अपनी धोकेबाज़ियों और षड्यन्त्रों का ज़िक्र किया था और यह इंग्लैण्ड का ही चारित्रिक आदर्श था कि दण्ड देने के बजाय, एक दूसरे देश में, एक दूसरे राजा के राज्य में (जिसने अंग्रेज़ों को अतिथि के योग्य आदर के साथ शरण दी) जालसाज़ी करने के पुरस्कार-स्वरूप उसे 'लार्ड' की उपाधि दी गई, उसकी मूर्ति खड़ी की गई और उसके सम्मान में तमगे डाले गये।

× × ×

अंग्रेज भारत में या तो बाइबिल लेकर आये या व्यापार की गठरी लादे हुए। पहले वर्ग ने महात्मा ईसाके पवित्र नाम पर और दूसरे ने व्यापार-विस्तार के नाम पर भारतीय जनता के साथ क्या क्या नहीं किया? पादरियों के लम्बे चोगों के भीतर भी वही कवच था जिसे व्यापार की आड़ में व्यापारी अंग्रेजों ने उस समय तक छिपा रक्खा था जबतक उनके हाथों में उसे प्रकट करने की ताक़त नहीं आ गई। इतिहास के साधारण विद्यार्थी धर्म-प्रचारकों और व्यापारियों के इस गूढ़ सम्बन्ध को शायद न समझें पर अंग्रेजों के भारतीय साम्राज्य का उद्भव इन दोनों को ही लेकर हुआ है। पहले वर्ग का रूप धार्मिक एवं सांस्कृतिक आवरणों से ढका था इसलिए उसे पहचानना सरल काम न था और दूसरे वर्ग का सम्बन्ध सीधे देश के राजा या शासक से होने के कारण वह सहज ही आँखों में चढ़ गया।

यह एक आश्चर्यजनक बात है कि भारत में अंग्रेज़ों का

प्रवेश सबसे पहले हुआ तो भारत के पश्चिमी तट पर किन्तु उनके साम्राज्य की नींव बंगाल में पड़ी। इसका कारण यह है कि एक तो बंगाल, विद्रोह की अवस्था में और बहुत अरक्षित-सा था और दूसरे उसमें उपज की बहुत अधिकता होने के कारण व्यापार के लिए अधिक सुविधायें थीं; धनका अधिक आकर्षण था। इसके अतिरिक्त एक बड़ा कारण यह भी है कि मुग़ल-साम्राज्य के ह्रास के साथ-साथ पश्चिमी तट पर मराठों की शक्ति बढ़ती गई; उनकी जल-सेनासे मुठभेड़ करना अंग्रेज़ों के लिए उतना आसान नहीं था जितना दुर्बलकाय बंगालियों को धोका देकर या उनमें फूट डालकर उन्हें पराजित कर लेना। इसलिए अंग्रेज़ों की दृष्टि बंगाल की ओर शुरू से ही लग गई।

❀ ❀ ❀

बंगाल में अंग्रेजों के श्रीचरण औरंगजेब के काल में पड़ने शुरू हुए। इसके पहले बम्बई में भी वहां की प्रजा पर इनके अत्याचार इतने बढ़ गये थे कि औरंगजेब ने इनकी कोठियां जब्त कर लेने और इन्हें इस देश से मारकर निकाल बाहर करने की आज्ञा दे दी थी। सूरत इत्यादि की कोठियाँ जब्त करके इन्हें निकाल बाहर भी किया गया पर ये इतने चपट थे कि बम्बई की कोठियों के घिरने पर झट औरंगजेब के चरणों पर गिर पड़े; माफ़ी माँगी और नेकचलनी का वादा किया। औरंगजेब बेचारा, जो एक जबर्दस्त और कठोर शासक होने पर भी, आखिर हिन्दुस्तानी ही था, इनके चकमे में आ गया और उसने न केवल इनकी कोठियाँ वापिस कर दीं वरन् १६९९ में अपनी कोठियों की रक्षा के लिए साधारण क़िलेबंदी करने की भी आज्ञा दे दी। पीछे

उसके पौत्र आज़मशाह ने (जो बंगाल का सूबेदार था) हुगली नदी के तट के तीन गाँवों (कलकत्ता, गोविन्दपुर और छूतानटी) की जागीर कम्पनी को दे दी।

यह जागीर ही हमारे लिए काल बन गई। यहीं से अंग्रेज़ी राज्य की नींव का पड़ना आरम्भ होता है। पीछे कलकत्ता में, इसी जागीर के अन्दर, क़िला (फ़ोर्ट विलियम) बनाया गया।

औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद मुग़ल-साम्राज्य अपने आन्तरिक विद्रोह के कारण छिन्न-भिन्न होने लगा और १७६१ की पानीपत की लड़ाई में भारतीय शासन का साफ़-साफ़ अन्त हो गया। इस अशान्त अवस्था के अन्दर अंग्रेज़ों की महत्वाकांक्षा बराबर बढ़ती ही गई। क़िलेबंदियाँ हुईं; फिर सेना रक्खी जाने लगी; धीरे-धीरे उस सेना के द्वारा देशी कारीगरों और किसानों को अपने स्वार्थ के लिए तंग किया जाने लगा। किसी को पकड़वाकर पिटवा देना एक मामूली बात हो गई! किसान अत्याचारों से त्राहि-त्राहि करने लगे; देशी कारीगर इनके जुल्मों से ऊबकर भाग खड़े हुए। देश का उद्योग-व्यापार नष्ट हो चला। यह इन विदेशी बनियों को शरण और सहायता देने का पुरस्कार था!

बातें बढ़ती गईं, फल-स्वरूप १७५७ में पलासी का वह विख्यात युद्ध बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंग्रेज़ों के बीच हुआ जिससे अंग्रेज़ी सल्तनत का पाया इस देश में पहली बार मज़बूती के साथ बैठ गया। कुछ देश-द्रोही भारतीयों के विश्वासघात* और अपनी चालबाजी के कारण अंग्रेज इस युद्ध

---

* इस युद्ध में सिराजुद्दौला की विजय निश्चित-सी थी पर उसके प्रधान सेनापति मीरजाफ़र तथा सहायक सेनापति दुर्लभराम और

में विजयी हुए; सिराजुद्दौला की जगह मीरजाफ़र गद्दी पर बिठाया गया।

मीरजाफ़र एक स्वार्थी और बुद्धू आदमी था, जैसा कि विश्वासघाती और देशद्रोही प्रायः हुआ करते हैं। उसमें वह नैतिक साहस कहाँ से आ सकता था जो सिद्धान्तों के ऊपर मर मिटने वालों में हुआ करता है। एक बूढ़ा, आरामतलब, स्वार्थी आदमी था, जो स्वतंत्र राजा होने की महत्वाकांक्षा रखते हुए भी, ख़तरों से दूर रहकर ऐशो-इशरत की ज़िन्दगी बिताना चाहता था। इसलिए गद्दी पर बैठने के बाद भी वह आजकल की उन मूर्तियों के समान हो गया जिन्हें पुजारी तथा पंडे टके वसूल करने के लिए अपनी इच्छानुकूल स्थापित करते और बदलते रहते हैं। बङ्गालरूपी मन्दिर के जड़वत् अधिपति मीरजाफ़र का क्लाइव प्रधान पंडा था। मीरजाफ़र का काम इतना ही रह गया कि वह चुपचाप महल में पड़ा रहे और अपने पण्डे अंग्रेज़ अधिकारियों की जेबें भरता रहे। उसके गद्दी पर बैठते ही, लगभग ७३ लाख रुपये तो कलकत्ता की अंग्रेज़-कमेटी के पास पहुँच गये। यह धन ७०० सन्दूकों में भरकर १०० नावों के सहारे कलकत्ता पहुँचा। मतलब यह कि मुर्शिदाबाद का ख़जाना कलकत्ता की अँग्रेज-कोठी में, बिना किसी झगड़े-झंझट के पहुँच गया। क्लाइव के मित्र इतिहासकार ओर्मी ने ठीक ही लिखा है कि 'पहले कभी अँग्रेज-जाति को एक साथ इतना अधिक नक़द धन नहीं मिला था।'* सचमुच अँग्रेजों की चाँदी

यारलुत्फ़खां ४५००० सेना लेकर युद्ध के बीच, ऐन वक्त पर, अंग्रेज़ों की ओर मिल गये। इनमें पहले ही समझौता हो चुका था।

* Orme's History of Indostan, Vol II.pp. 187—88.

थी। मीरजाफ़र-जैसे निकम्मे और दुर्बल शासक भारत के इतिहास में बहुत थोड़े हुए होंगे। न तो उसमें दबंगपन था, न राजकीय तेजस्विता थी और न दूरदर्शिता। इसी से चिढ़कर एक दिन व्यंग में उसके परिहासप्रिय मुसाहब मिर्जा शमशेरउद्दीन नें उसे 'क्लाइव का गधा' की उपाधि दी थी। इसमें सन्देह नहीं कि मीरजाफ़र की सम्पूर्ण जीवन-विधि इस उपाधि के सर्वथा योग्य थी। इन दो शब्दों में उसके जीवन का जो विश्लेषण हुआ है। उसका प्रायः सभी कुशल इतिहासलेखकों ने समर्थन किया है। धोबियों के गधे जिस प्रकार सुबह से शाम तक बोझ ढोकर संध्या समय रूखी-सूखी घास छोड़ और कुछ खाने को नहीं पाते, अंग्रेजों का बोझा ढोने जाकर, बंगाल बिहार-उड़ीसा के सिंहासन पर पदार्पण करके भी, मीरजाफ़र को वही विडम्बना भोगनी पड़ी। गद्दी पर बैठने के पूर्व जिस सुख की कल्पना उसने की थी वह भी पूरी न हुई। राज्याधिकारी तक उसकी ओर न देखकर क्लाइव और अंग्रेज अफसरों के इशारों पर नाचने लगे। मानो सब कुछ होकर भी उसका कुछ नहीं था। जो अंग्रेज अभी चन्द साल पहले मुर्शिदाबाद की सड़कों पर चलते समय डर से काँपते रहते थे, वे आज दुर्बल 'क्लाइव का गधा' को गद्दी पर बिठाकर उसकी आड़ में उच्छृंङ्खलता का ताण्डव-नृत्य करने लगे। व्यापार का नाश होने लगा; खजाने में रुपया नहीं रह गया। उधर अंग्रेजों की धन की प्यास दिन-दिन बढ़ती गई; 'लाओ, लाओ' का स्वर तीव्रतर हो गया। मीरजाफ़र घबड़ा गया। खजाने में रुपया नहीं; देश का व्यापार नष्ट हो जाने से राज्य की आय का स्रोत भी बन्द हो चला। इसलिए

शासन-कार्य चलाना ही असंभव होने लगा। तब मीरजाफ़र अपने पापों का स्मरण करके कांप उठा। उसे भी समझते देर न लगी कि इतनी कठिनाइयों के बाद जो राज-सिंहासन मिला; जिसके लिए दया-धर्म, कर्त्तव्य-बुद्धि, स्नेह-ममता सबको पैरों तले कुचलकर, कुरान को स्पर्श करके झूठी क़सम खाने में भी लज्जा न की वही पैरों के नीचे है किन्तु कोई स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाला शासक उसका स्वामी नहीं वरन् क्लाइव ही उसका वास्तविक मालिक है और मैं उसका बोझ ढोकर पाप की कमाई करने वाला गुलाम-मात्र हूँ।

ऐसा जान पड़ता है कि नशा उतर जाने पर मीरजाफ़र को अपने इन कृत्यों पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ था और उसके मन में एक बार अपनी स्थिति मज़बूत करने की भावना भी उठी थी पर अनुसन्धान से यह जानने में उसे देर न लगी कि मेरी मूर्खता से यह रास्ता पहले ही बन्द हो गया है।

बात यह थी कि अलीवर्दीखाँ और सिराजुद्दौला दोनों ने राज-कार्य में हिन्दू-मुस्लिम भेद-भाव को कभी स्थान नहीं दिया था। वे राजा का कर्त्तव्य समझकर धार्मिक झगड़ों को कभी इन दोनों जातियों के बीच खड़ा न होने देते थे। यह आश्चर्य की बात है कि कर्नल क्लाइव के संरक्षण में मीरजाफ़र के गद्दी पर बैठते ही इस धार्मिक भेद-नीति ने शासन पर जोरों से हमला शुरू किया। अभी कुछ दिन पहले तक, जब मीरजाफ़र सिराज का प्रधान सेनाध्यक्ष था, उसमें ये भेद-भाव के दृष्टान्त नहीं पाये जाते थे पर गद्दी पर बैठते ही न जाने किसने उसपर ऐसी जादू की लकड़ी फेर दी कि उसने चुन-चुनकर हिन्दुओं को तमाम

ऊँचे पदों से हटाना और उनपर मुसलमानों को नियुक्त करना आरम्भ किया। इसका फल यह हुआ कि सम्पूर्ण शक्तिमान हिन्दू सरदार उसके विरोधी हो गये। इस प्रकार अंग्रेजों से मित्रता करने जाकर जहाँ उसने अपनी राजशक्ति को खेलवाड़-सा कर दिया वहाँ उनके कुचक्र में पड़कर उसने अपने को सरदारों और हितैषियों के सहयोग से वंचित करके अपने पुनरुत्थान का मार्ग भी सदा के लिए बन्द कर दिया।

इस प्रकार बंगाल-बिहार और उड़ीसा में आन्तरिक कलह को जगाकर और धोका-धड़ी तथा मुठमर्दी से देशी व्यापार का सत्यानाश करके क्लाइव भारत से विदा हुआ। यही नहीं उसने अपनी जेब भी खूब भर ली। जो क्लाइव कुछ ही दिनों पहले एक दीन-हीन क्लर्क बनकर भारत आया था, अपने विश्वासघात कला के पाण्डित्य तथा कतिपय भारतीय देशद्रोहियों की अदूर-दर्शितापूर्ण स्वार्थपरता के कारण संसार का एक बड़ा धनिक बनकर तथा इतिहास को अपनी करतूतों से कलंकित कर समका-लिक अंग्रेजों के बच्चों के लिए एक बहुत बड़ी जायदाद पुश्त-दर पुश्त भोगने का इन्तजाम करके स्वदेश लौटा। उसके बाद 'काल कोठरी' के कल्पित हत्याकांड का गप्पी रचयिता हालवेल गवर्नर बनाया गया। पर वह अधिक दिन तक इस देश में टिक न सका। और उसके बाद वांसिटर्ट नामक एक बुद्धू और कमजोर स्वभाव का आदमी इस पद पर नियुक्त हुआ।

पर क्लाइव हो या हालवेल, वांसिटर्ट हो या हेस्टिंग्स, आदम हो या कैलो सब एक ही जाति या देश के आदमी थे, एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे। स्वार्थपरता इनमें भरी थी और नैतिक

आदर्शों को ये दिल्लगी की चीज़ समझते थे। हालवेल ने आते ही मीरजाफ़र में झूठे-सच्चे दोषों का आविष्कार आरंभ किया। जो मीरजाफ़र कल तक अच्छा था; जिसके समर्थन में बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारी उठ खड़े हुए थे, आज 'दुष्ट, नालायक़ और फाँसी पाने के योग्य' क़रार दिया जाने लगा। पीछे, काम निकल जाने पर, सभी ने स्वीकार किया कि मीरजाफ़र ने सन्धि के नियमों और शर्तों का पालन करने का सदैव प्रयत्न किया पर मतलब के समय, उसे गद्दी से उतारने के लिए, सभी उसके विरुद्ध हो गये। बात असल यह थी कि गाय का सारा दूध दुह लिया गया था और अब, जब उससे आगे दूध निकलने की कोई उम्मीद न थी, उसे घर से निकाल बाहर करना स्वार्थपरता की गोद में पले हुए लोगों के लिए बिलकुल स्वाभाविक था। मुर्शिदाबाद के खज़ाने में कुछ रह नहीं गया था; अब मीरज़ाफ़र से कुछ आमदनी की आशा नहीं की जा सकती थी। इसलिए उसके विरुद्ध अनेक प्रकार की बातें उड़ाई जाने लगीं। और कलकत्ता की अंग्रेज-कमेटी में बहुत जल्द उसके विरोधियों का प्राधान्य हो गया। गप्पी और मक्कार हालवेल ने उसपर तरह-तरह के इल्ज़ाम लगाने शुरू कर दिये। उसे ज़ालिम, लालची और सुस्त बताया गया। ※ उसपर

※ "The Nawab Jaffir Ali Khan, was of a temper extremely tyrannical and avaricious, at the same time very indolent, and people about him being either abject slaves and flatterers or else the base instruments of his vices; ....numberless are the instances of men, of all degrees, whose blood he has spilt without

निर्दोष आदमियों की हत्या करने का इल्ज़ाम लगाया गया और षड्यन्त्र करके उसके पुत्र मीरन को (जो अंग्रेज़ों की चालबाज़ियों को खूब समझता था) दुनिया से सदा के लिए उठा दिया गया।†

धीरे-धीरे अंग्रेज़ों ने प्रान्त के कई शक्तिमान सरदारों एवं नवाब-सरकार के अधिकारियों को अपनी ओर मिला लिया। अंग्रेज़ों का मतलब तो रुपया चूसना और अपनी ज़मींदारी या राज्य बढ़ाना था; उन्हें न्याय-अन्याय नहीं देखना था; न उन्हें मीरजाफ़र या मीरकासिम में से किसी के प्रति सहानुभूति थी। जब मीरज़ाफ़र से रुपया मिलने की उम्मीद न रही तो उसके दामाद मीरक़ासिम के साथ साज़िश करके उसे गद्दी से उतारनेका षड्यन्त्र किया गया और षड्यन्त्र सफल होनेपर अनेक व्यापारिक एवं व्यावहारिक सुविधाओं के साथ पच्चीस लाख रुपये पाने की शर्त भी अंग्रेज़ अधिकारियों ने मीरक़ासिम से करा ली।

सभी इतिहासकारों ने मीरक़ासिम की दृढ़ता, स्वदेश-प्रेम, साहस और लगनकी प्रशंसा दिल खोलकर की। ऐसा आदमी इस नीच षड्यन्त्र में क्यों शामिल हुआ? क्या स्वार्थ-सिद्धि के

---

the least assigned reason."—Holwells' Address to the Proprietors of the East India Stock, p. 46.

† एक दिन आधी रात को खीमे के अन्दर चारपाई पर मीरन मरा हुआ पाया गया। मशहूर यह किया गया कि बिजली गिरने से उसकी मौत हुई, पर जैसा कि बर्क ने व्यंगपूर्ण भाषा में पार्लमेंट के सामने कहा था—"वह कैसी विचित्र बिजली रही होगी कि ऊपर का खीमा ज्यों-का-त्यों खड़ा रहा; बिजली के गिरने की आवाज, पास सोये हज़ारों सैनिकों में से किसी को सुनाई न पड़ी और मीरन उसके प्रहार से मर गया!"

लिए ? नहीं; क्योंकि उसका सारा जीवन-क्रम हमारे मन में ऐसा कोई भाव ठहरने नहीं देता। असल में तो मीरक़ासिम का दिल मीरजाफ़र की कायरता और दब्बूपन पर जल रहा था। थोड़े-से विदेशी बनियों के हाथ स्वदेश की ऐसी दुर्दशा देखकर वह अपने को शान्त न रख सकता था। धीरे-धीरे उसके मन में यह धारणा बढ़ती गई कि मीरजाफर-जैसे निकम्मे और पस्त-हिम्मत आदमी के गद्दी पर होते हुए कुछ नहीं हो सकता। इसलिए उसने सबसे पहले, जिस प्रकार हो, उसे गद्दी से हटाने का निश्चय किया। सब बातचीत पक्की हो जाने पर अंग्रेजों ने मीरजाफ़र के सामने असम्भव शर्तें पेश करनी शुरू कीं। अब बातें इतनी खुली-खुली हो रही थीं कि मीरजाफर-जैसे कमअक़्ल आदमी को भी अपनी परिस्थिति समझने और अपने भविष्य का अनुमान करने में देर न लगी। पर अब क्या हो सकता था ? जो मूर्खता की जा चुकी थी, उसके प्रतीकार का कोई उपाय न था। हालवेल ने अपनी कल्पना के बल पर 'ढाका की हत्या-कहानी' की सृष्टि कर और उसका प्रचार करके तथा, जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, मीरजाफ़र के ऊपर अनेक झूठे ❀ दोष लगाकर उसे

❀ क्लाइव ने स्वयं ही इंग्लैण्ड के संचालक-मण्डल को पत्र लिखकर इस कल्पित कहानी का खण्डन किया है। वह लिखता है—"× × × In justice to the memory of the late Nabab Meer Jaffier, we think it incumbent on us to acquaint you, that the horrible massacres with which he is charged by M. Holwell............are cruel aspersions on the character of that Prince, *which have not the*

सर्वत्र बदनाम कर दिया था। मीरजाफ़र की अदूरदर्शिता ने परिस्थिति और भी खराब कर दी थी. इसलिए जब सेनापति कैलो ने उसके सम्मुख मीरक़ासिम को शासन-भार सौंप देने का प्रस्ताव उपस्थित किया तो वह दुःखी और निराश होकर, निरुपाय व्यक्ति की नाईं, सिर्फ इतना ही कह सका—"× × × आप लोगों ने अपने वादों को तोड़ना मुनासिब समझा। मैंने अपने वादे नहीं तोड़े। अगर मेरे दिल में इस तरह की कपटपूर्ण चाल चलने की होती तो मैं चाहते ही बीस हज़ार फ़ौज जमा करके आप लोगों से लड़ सकता था। मेरे पुत्र मीरन ने मुझे इन बातों के सम्बन्ध में पहले ही आगाह किया था!"†

२० अक्तूबर १७६० का दिन था। अन्धकार दूर हो चला था पर सूर्य उगने में अभी दो-एक घण्टे की देर थी। अफ़ीमची और बूढ़ा मीरजाफ़र महल में आराम से सोया हुआ था। और लोग भी मीठी नींद ले रहे थे कि कम्पनी की सेना ने महल घेर लिया। शोर-गुल से जागकर जब मीरजाफ़र ने खिड़की से देखा तो चारों ओर सेना ही सेना! सिंह-द्वार पर गवर्नर का पत्र हाथ में लिये हुए स्वयं सेनापति कैलो सशस्त्र उपस्थित हैं। मीरजाफ़र को समझते देर न लगी कि अब समय पूरा हो गया है। वही अंग्रेज़! वही कुटिल कौशल! वही राजप्रासाद! मीरजाफ़र सोचकर कांप उठा; जीवन की ममता जग गई। सिराजुद्दौला की

---

least foundation in truth.—Letter addressed to the Hon'ble Court of Directors by Clive and others, 30th September 1766 Supplement.

† Malcolm's Life of Clive, Vol II, p. 268.

दुर्दशा और उसके साथ किये हुए विश्वासघात का स्मरण हो आया। तीन वर्ष पूर्व पलासी-समराभिनय के आरंभ में अपने जीवन के पहले अंक में नवयुवक सिराज के सिंहासन की रक्षा के लिए मीरजाफ़र को हम कुरान हाथ में लिये देखते हैं किन्तु पीछे दूसरे अंक में वही मीरजाफ़र अंग्रेजों की सहायता से सिराज का नाश करने का षड्यन्त्र रचता दिखाई देता है। आज ठीक उसी प्रकार, उससे भी अधिक लाचारी की अवस्था में अपने को बिकते देखकर मीरजाफ़र की मानसिक अवस्था क्या हुई होगी, इसकी कल्पना की जा सकती है पर उस समय भाग्य के इस आकस्मिक परिवर्तन को देखकर मीरजाफ़र के मुँह से कोई बात न निकल सकी। वह मुकट उतारकर धीरे-धीरे सिंह-द्वार पर विनीत भाव से आ खड़ा हुआ। इतिहासकार मैलीसन उसकी मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुए बहुत ठीक लिखता है—

"निस्सन्देह उस महत्वपूर्ण प्रभात में बूढ़े मीरजाफ़र को तीन वर्ष से कुछ अधिक पहले के उस दिन की याद आई होगी, जब कि पलासी के रणक्षेत्र में, इन्हीं अंग्रेजों से गुप्त समझौता करके, उस मसनद के लिए, जिसे अब उसका एक सम्बन्धी उसी प्रकार के उपायों द्वारा उसके हाथों से छीन रहा था, उसने अपने स्वामी और आत्मीय सिराजुद्दौला के साथ विश्वासघात किया था। उसके मन में अवश्य यह बात आई होगी कि इतने नीच और कलङ्कपूर्ण ढंग से प्राप्त किया हुआ सिंहासन मेरे किस काम आया? सिराजुद्दौला से छीने हुए महल में बीतने वाले तीन वर्ष के समय में जो कष्ट और अपमान भोगने पड़े उसके सामने हमारे पिछले ५८वर्षों के समस्त दुःख नगण्य हैं। यदि मैंने अपने बाल क

सम्बन्धी और मालिक सिराज की प्रार्थना मानकर उसकी पगड़ी की लाज बचाने के लिए प्रयत्न किया होता तो आज मेरी कितनी इज्जत होती ? आज जो विदेशी मुझपर हुकूमत चला रहे हैं, उनके हाथ यदि मैंने अपने देश को बेच न दिया होता और उनके विनाश में अपनी शक्ति लगाता तो मेरा देश बच गया होता, मेरे हाथ में असली ताक़त होती और मेरा नाम इज्ज़त के साथ लिया जाता। किन्तु मेरी भूल के कारण आज लाल वर्दी वाले अंग्रेज सिपाही मेरे ही एक सम्बन्धी के झण्डे के नीचे, मुझे गद्दी से उतारने के लिए मेरा महल घेरे खड़े हैं ! मैंने सिराज के साथ जो व्यवहार किया था उसे देखते हुए क्या मीरक़ासिम मेरे साथ अधिक दयापूर्ण व्यवहार करेगा ? × × × ।"*

इस प्रकार छल-कपट और विश्वासघात की मूर्ति मीरजाफ़र का अन्त उसी के दिखलाये हुए उपायों से हुआ।

यह मानना पड़ेगा कि मीरजाफर ने कभी अंग्रेजों को धोका नहीं दिया। उसने स्वयं कष्ट और अपमान सहकर भी सन्धि की सब शर्तें पालन कीं। फिर भी मित्रता और हितैषिता की बातें करनेवाले अंग्रेजों ने उसे बिना किसी अपराध के, बिना सफाई का मौका दिये धोका दिया और उसके साथ अत्यन्त नीचतापूर्ण व्यवहार किया। ऐसी आचार-हीनता और जुल्म की मिसाल इतिहास में मिलना कठिन है। † स्वयं अंग्रेज इतिहासकारों ने

---

* Malleson's Decisive Battles of India, pp. 131–32.

† Surely, Cortez and Pizarro were not guilty of so base a treachery when they arrested Montezuma and the Inca Athahualpa, for they offered the Inca an

इसकी निन्दा करते हुए लिखा है—"अंग्रेज़ लोग बाइबिल चूमकर ईश्वर और ईसामसीह के पवित्र नाम पर मीरजाफ़र के साथ जिस धर्म-प्रतिज्ञा में आबद्ध हुए थे उसकी पूर्ति के लिए मीरजाफर के सिंहासन की रक्षा करने को बाध्य होते हुए भी अर्थ-लोभ से दूसरे के हाथ बेचकर गवर्नर एवं कौंसिल ने अंग्रेज़-जाति को कलंकित किया।" ❀ खुद कौंसिल के चन्द सदस्यों ने विलायत लिख भेजा था—"अंग्रेज़ों की धर्म-प्रतिज्ञा और उनका जातीय सम्मान चूर्ण कर मीरजाफ़र को सिंहासनच्युत किया गया है।"† पर जो कुछ किया गया और जो-कुछ आगे होने वाला था वह तो होकर ही रहा। अंग्रेज़ अधिकारियों की धोका-धड़ी और चालबाज़ियों के कारण बंगाल से भारतीय राज्य उठ-सा गया। लार्ड क्लाइव ने पार्लमेंट के सामने बड़े गर्व से कहा था—"मैं ऐसी स्थिति में जालसाज़ी करना आवश्यक समझता हूँ और काम पड़ने पर सौ बार इसे फिर करूँगा।"

× × ×

---

opportunity of answering the charges preffered against him before a tribunal.

—*The Rise of Christian Power in India by B. D. Basu.*

❀ Terren's Empire in Asia.

† "Thus was Jaffier Ally Khan deposed in breach of treaty founded on the most solemn oaths and in violation of the national faith."

—*Letter from some gentlemen of the Calcutta Council.*

'क्लाइव का गधा' दब्बू मीरजाफर के बाद साहसी, दृढ़निश्चयी, देशभक्त एवं गम्भीर मीरक़ासिम का बंगाल के रंगमंच पर प्रवेश हुआ। गद्दी पर बैठते ही मीरक़ासिम ने जहाँ एक ओर सन्धि के नियमों का पालन करना शुरू किया, वहीं चुपके-चुपके वह अपनी स्थिति सुधारने और शक्ति बढ़ाने के काम में भी लगा। महलों में राग-रंग एकदम बन्द हो गया। मानों किसी ने एकाएक सजीव विलास का गला घोंट दिया हो। शान-शौकत को फाँसी दे दी गई; हास्य-कौतुक निकाल बाहर किया गया। सादा जीवन बिताने के लिए जो ज़रूरी चीजें थीं, वही रक्खी गईं; राज्य के सब विभागों में भी खर्च घटा दिया गया।

अपने उद्देश्य की सफलता के लिए अंग्रेजों के महत्व को शासन से निकाल बाहर करना मीरक़ासिम को पहला कर्तव्य समझ पड़ा। उसने सोचा कि पहले ये बनिये मुगल-सिंहासन के आश्रय में पेट भरने की कोशिश करते थे। देश के शासन या देश-वासियों के सुख-दुःख से इन्हें कोई मतलब न था। यह बात बहुत दिनों की नहीं केवल ३–४ वर्ष पूर्व की है जब सिराजुद्दौला के अमलों तक के राजपथ पर चलते समय अंग्रेजों की अन्तरात्मा कांप उठती थी; बात-बात में अंग्रेज गुमाश्तों को हाथ जोड़े राजमहल तथा दरबार में खड़ा रहकर दीनता दिखानी और क्षमा माँगनी पड़ती थी। ज़रा भी असभ्य और उच्छृंखल व्यवहार करते ही हथकड़ी-बेड़ी से बँधकर नवाब की घुड़साल के अन्दर कारागृह का कष्ट भोगना पड़ता था। पर तीन ही वर्षों में क्या से क्या हो गया? मीरक़ासिम ने विचारकर देखा—केवल दो ग़लतियों के सहारे अंग्रेज हमारे कन्धों को दबाये हुए हैं। एक

तो मीरजाफ़र ने अंग्रेजी सेना की सहायता लेने तथा उसके लिए मासिक वेतन देने का वादा किया था और दूसरे राज-कोष की शक्ति से बहुत अधिक मूल्य देकर सिंहासन ख़रीदने को तैयार हो गया था। इसके परिणाम-स्वरूप अंग्रेज कम्पनी का ऋण नवाब पर बढ़ता ही जा रहा था। इसलिए ऋण के बदले मीरक़ासिम ने बंगाल के तीन ज़िले अंग्रेज़ों को सौंप दिये और दूसरी ओर अपनी देशी सेना को सुसंघटित करना आरंभ किया। थोड़े ही दिनों में उन्होंने यूरोपीय समर-प्रणाली से सेना को शिक्षित करने का प्रबन्ध कर लिया। साथही शासन की सुव्यवस्था करके आमदनी बढ़ा ली।

किन्तु अंग्रेज कर्मचारियों की उच्छृंखलता बराबर जारी थी। सम्राट् ने कम्पनी को आयात-निर्यात सम्बन्धी महसूल की माफी कर दी थी किन्तु धीरे-धीरे सभी अंग्रेज व्यापारी इस माफी के नाम पर कम्पनी के 'दस्तकों' (छूट-सम्बन्धी आज्ञापत्रों) का उपयोग करने लगे और इस प्रकार देशी व्यापारियों की अपेक्षा सस्ती चीजें बेचने में सफल हुए। भारतीय व्यापार का नाश होने लगा। बहुत जगह लोगों को अपनी चीजें बेचने के लिए मजबूर किया जाता और इन्कार करने पर कोड़े लगाये जाते। दुनिया का क़ायदा है कि वह फायदे के लोभ से सहज ही अन्धी हो जाती है। उस समय के अंग्रेज सौदागर भी अपने स्वार्थ के लिए अन्धे हो गये थे। यह देश उनका नहीं है, अथवा इसपर उनका अधिकार नहीं है, इसे शक्ति और स्वार्थ के नशे में वे जान-बूझकर भूल गये थे। वे इस देश में असहाय विदेशी बनियों की तरह आये थे पर इस देश की असीम धन-राशि

देखकर उनकी तृष्णा बढ़ती जाती थी और वे मतवाले हो उठे थे। उनके अत्याचारों से प्रजा पीड़ित होकर त्राहि-त्राहि कर रही थी।

मीरक़ासिम का जीवन स्वराज्य की स्थापना के लिए सतत प्रयत्नशील एक भारतीय शासक का जीवन था। प्रजा के दुःख उससे देखे न गये। उसने अंग्रेज़ों से बार-बार शिकायतें कीं पर कौन सुनता था ? अन्त में निरुपाय होकर उसे अंग्रेजों को दबाने का उपाय करना पड़ा। अंग्रेज़ों को भी इन बातों का पता चल गया अतः वे भी मीरक़ासिम से सजग हो गये।

इस संघर्ष का इतिहास बड़ा लम्बा-चौड़ा है और उसे यहाँ दोहराने से किसी विशेष लाभ की आशा नहीं की जा सकती। मीरकासिम ने अन्त में तंग आकर सारे व्यापार को कर-मुक्त कर दिया। इसके सिवा उसके पास दूसरा उपाय न था, पर इसे भी अंग्रेज़ सहन न कर सके। वे चाहते थे कि हम तो महसूल न दें पर दूसरों से जरूर लिया जाय। प्रजा-हितैषी मीरकासिम इसके लिए तैयार न हो सका। तब अंग्रेज़ों ने अपने पुराने अस्त्र का प्रयोग फिर शुरू किया। दरबारियों को फोड़ने और सरदारों को मिलाने लगे और अन्त में आन्तरिक कलह का आश्रय ले अपनी धोखेबाज़ी-कला के पाण्डित्य के बल पर उन्होंने विद्रोह की तैयारी कर ली। देश की बदकिस्मती और अंग्रेजों के सौभाग्य से 'क्लाइव का गधा' अभागा मीरजाफ़र अभी तक जीवित था। उसे ही पण्डों ने खड़ा किया और जिसे वे एक बार ज़ालिम, नालायक और काहिल कह चुके थे, उसे ही स्वार्थ-साधन के लिए फिर खड़ा किया गया।

अंग्रेजों की इस धोखेबाज़ी से क्षुब्ध होकर मीर कासिम ने जो व्यंगपूर्ण पत्र उन्हें लिखा था उसमें उनके चरित्र का बड़ा अच्छा खाका है। उन्होंने लिखा था—"आप सज्जन-गण अजीब मित्र निकले। महात्मा ईसा की शपथ लेकर आप लोगों ने हमसे सन्धि की और हमसे इसलिए एक प्रदेश लिया कि उससे हमारी मदद के लिए सदैव प्रस्तुत रहने वाली सेना रक्खी जायगी पर वस्तुतः आप लोगों ने हमारे विनाश-साधन के लिए ही सेना रक्खी थी।"

इसके बाद का इतिहास मीर कासिम की दृढ़ता, लगन, वीरता एवं देश-हितैषिता का इतिहास है। और अंग्रेजों का इतिहास छल प्रपंच, कूटनीति, जाल-साजी और शर्मनाक करतूतों का एक ज़खीरा है। जो लड़ाइयाँ दोनों पक्षों में हुईं उनमें, कतिपय देशद्रोही भारतीयों के विश्वासघात के कारण मीर कासिम असफल हुआ और बार-बार के तूफ़ानी संघर्षों के बाद, अन्त में फक़ीर हो गया। अंग्रेजी शासन की नीति और 'स्पिरिट' जानने-समझने के लिए इस समय का इतिहास हमारे लिए बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि 'क्लाइव का गधा' के गद्दी से उतारकर कलकत्ता पहुँचने के बाद के तीन-वर्षों का इतिहास अंग्रेजों की जैसी काली करतूतों से भरा है उसकी तुलना नहीं की जा सकती। दुनिया की किसी क़ौम का इतिहास इससे अधिक नीच, कलुषित और शर्मनाक कार्रवाइयों से भरा हुआ नहीं है। *

---

*" × × The annals of no nation records of conduct more unworthy, more mean, and more disgraceful.

"१७७७ ई० को छठी जून को दिल्ली की सीमा पर एक टूटी कुटी के आँगन में एक अज्ञात पुरुष की मृत-देह धूल में लोट रही थी। उसे दफनाने की भी सामग्री न थी। कुटीमें एक जीर्ण शाल पाकर नागरिकों ने उसे ही बेच दफनाने की व्यवस्था की। जिस समय वह मृत शरीर क़ब्र में रक्खा जाने लगा, उसी समय न जाने किसने अकस्मात् चीखकर बता दिया कि यही बंगाल के अन्तिम स्वाधीन नरपति मीरकासिम हैं। वह आर्तनाद भी तुरन्त आकाश में विलीन हो गया।" ❀

'क्लाइव के गधा' दुर्बल और अफीमची मीरजाफ़र ने विश्वासघात की जो नीति इख्तियार की थी वह बराबर फूलती-फलती गई या यों कहिए कि विदेशियों द्वारा बराबर सींची जाती रही। मीरजाफ़र उसी नीति से पराजित हुआ और आगे चलकर डलहौज़ी ने भारतीय राजाओं की कमर इसी नीति की सहायता से तोड़ दी। आश्चर्य और दुःख इतना ही है कि सिराज का, अपना तथा मीरकासिम का, इसी नीति से नाश होता हुआ देखकर भी बुड्ढ़ मीरजाफ़र उर्फ़ 'क्लाइव का गधा' मीरक़ासिम के बाद फिर 'अंग्रेज़ों का गधा' बनने के लिए तैयार हो गया!

× × ×

---

than that which characterised the English Government of Calcutta, during the three years which followed the removal of Mir Jafar,"

—Col. Malleson.

❀ श्री अक्षयकुमार मैत्रेय।

कैसे यह राज्य-विप्लव हुआ; मीरक़ासिम ने देशी शासन के पुनरुत्थान के लिए क्या-क्या प्रयत्न किये, अगले पन्नों में, अपनी चुभती भाषा में प्रसिद्ध बंगाली इतिहासकार श्री अक्षयकुमार मैत्रेय ने यही विस्तार के साथ समझाया है। आशा है इससे लोग विदेशियों की नीति को ठीक तरह समझकर उससे सजग होने की चेष्टा करेंगे।

बस।

'त्यागभूमि' कार्यालय,
अजमेर
वसन्त-पंचमी—३-२-३०.

श्रीरामनाथलाल सुमन'

विषय-सूची
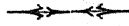
१—दो शब्द आरंभ में

२—प्रस्तावना ,,

३—भूमिका ,,

४—भारत में अंग्रेजी राज्य का आरम्भ ,,

पृष्ठ

१—'तख्तमुबारक' ३

२—मोहमुद्गर ११

३—'भूते पश्यन्ति बर्ब्बरा' १८

४—'क्लाइव का गधा' २९

५—कर्म फल ३८

६—मूल्य-निरूपण ४९

७—मुकुट-मोचन ६३

८—नये नवाब ७३

९—अंग्रेज बनियों की जमींदारी-प्राप्ति ८६

पृष्ठ

१०—विद्रोह दमन ९५

११—शाहज़ादा का अभियान १०३

१२—मीर क़ासिम का सनद-लाभ ११३

१३—राज्य-शासन १२८

१४—उद्योग-पर्व १३६

१५—बन्धु-विच्छेद १४८

१६—समर-सूचना १६२

१७—फिर मीरजाफ़र ! १७५

१८—कटवा का युद्ध १८७

१९—गिरिया का युद्ध १९६

२०—उधवानाला का युद्ध २०६

२१—पटना का हत्याकाण्ड २१६

२२—देश त्याग २२३

२३—मित्र-लाभ २३१

२४—विजय-यात्रा २३९

२५—भाग्य-विपर्यय २४६

२६—दीवानी सनद २५४

२७—परिशिष्ट २६२

जब अंग्रेज़ आये—

जब अंग्रेज़ आये—

==

मीर क़ासिम

'तख़्तमुबारक'

पन्द्रह-बीस वर्ष पूर्व मुर्शिदाबाद के 'मुबारक मंज़िल' नामक राजमहल के खुले हुए चबूतरे पर एक पुराना राज-सिंहासन पड़ा था, जो बहुत दिनों के अयत्न और अनादर के कारण मैला हो रहा था। दिल्लीश्वर शाहजहाँ के द्वितीय पुत्र सुलतान शुजा ने एक दिन इसी सिंहासन पर बैठकर बंगाल में मुगल-राजशक्ति की पताका फहराई थी। उसी दिन से यह राज-सिंहासन (तख़्तमुबारक) पहले राजमहल और फिर ढाका में रहने के बाद मुर्शिदाबाद की मुगल-राजधानी का गौरव बढ़ाता रहा। दस-बारह वर्ष हुए लार्ड कर्ज़न महोदय की कृपा से मुर्शिदाबाद से मँगवाकर इसे कलकत्ते के 'विक्टोरिया मेमोरियल' में रख दिया गया है।

सिंहासन विशेष बड़ा नहीं है। सादे अलंकारहीन चार ऊँचे खंभों पर प्रतिष्ठित पत्थर के टुकड़े पर लिखा हुआ है—"यह परम मंगलास्पद राज-सिंहासन बिहार प्रदेशान्तर्गत मुँगेर नगर में हिजरी सन् १०५२ के सुभान मास की २७ वीं तारीख को दासानुदास ख्वाजा नज़र बोखारी—द्वारा निर्म्मित हुआ।" ❀ इसके बहुमूल्य रत्न-खचित मसनद पर बंगाल-विहार एवं उड़ीसा के नवाब और नाज़िम लोग गौरव-पूर्वक बैठकर देश का शासन-कार्य करते थे और बग़ल के कनकदण्ड पर चारु-चन्द्रातप झल-झल करता हुआ मुगलों की विभव-छटा को प्रकाशित करता था।

नवाब मन्सूरुलमुल्क सिराजुद्दौला शाहकुली मिरज़ामहम्मद हैबत जंगबहादुर ने अपने 'हीराझील' नामक सुन्दर राजमहल में रखकर थोड़े ही दिनों तक इसका गौरव बढ़ाया था। इसके सुख के दिनों का तभी से अन्त हो गया। उसके बाद और किसी ने इसकी रक्षा की चेष्टा नहीं की।

पीछे बहुत दिनों तक प्रखर सूर्य-ताप में नंगे शरीर पड़े रहने के कारण समय-समय पर गल-गलकर निकली हुई गैरिक धारा ने इसमें बहुतेरे निशान कर दिये, जो अब भी ज्यों के त्यों हैं। आगरा के मुगल-राजप्रासाद में जो बड़ा सिंहासन पड़ा हुआ है. उसमें भी इस प्रकार के अनेक चिन्ह पाये जाते हैं। मुर्शिदाबाद के आस-पास के मुसलमानों का ऐसा विश्वास है कि मुसलमानों के

❀ मूल प्रतिलिपि यह है—"तैयार शुद तख़्त मुबारक बतारीख़ बिन तोहफ़्तम सहर सुभानुलमन अय्याम १०५२ बएहतमाम कमतरीन बन्दा ख़ाजा नज़र बोख़ारी कि मोकामे मुँगेर मिन् सूबा बिहार।"

अतीत गौरव को स्मरण करके ही यह 'तख्तमुबारक' नीरव रोदन करता रहा है गैरिक रेखायें उसी रोदन की अश्रु-धारा से बनी हैं। ❀

इस बहुमानास्पद राजसिंहासन के साथ मीरजाफ़र की कलकं-कहानी सदैव के लिए संयुक्त हो गई है। हिन्दू-मुसलमान कोई मीरजाफ़र की बात भूल नहीं सका है। मीरजाफ़र अब इस संसार में नहीं हैं; मुसलमान राज्य भी विस्मृति के समुद्र में विलीन हो गया है। सभ्यताभिमानी बृटिश राज्य के जुए को उतार फेंकने के लिए भी हम बूढ़े और थके बैल के समान छटपटा रहे हैं फिर भी अभी तक मीरजाफ़र की कलंक-कहानी हमारे स्मृति-पट पर ज्यों की त्यों लिखी हुई है।

हिन्दू, मुसलमान एवं अंग्रेज सभी जाति के इतिहासकारों ने मीरजाफ़र की दुष्टता की आलोचना की है। पाँच सौ वर्ष तक मुसलमानों के सामने झुकते-झुकते हिन्दू-संतान के लिए मुसलमानों का शासन अभ्यस्त हो गया था। उनमें से कोई राजा, कोई मन्त्री और कोई सेनापति होकर, मुसलमान राज्य के गौरवपूर्ण पदों को हस्तगत करके मुसलमान शासन की सहायता करता था। सिराजुद्दौला ने शासन-भार ग्रहण करते ही इन हिन्दू पदाधिकारियों की जड़ उखाड़ने को चेष्टा की; इसीसे हिन्दुओं ने

❀ The stone has reddish stains, due to the presence of iron; and it sometimes swells so much, that the water trickles over the edge. Then the stone is weeping, according to the natives, for the passing away of the glory of the Subahdari.

H. Beveridge.

बिगड़कर मीरजाफ़र का पक्ष ग्रहण करके सिराज का नाश कर डाला। फिर भला हिन्दू मीरजाफ़र की बात कैसे भूल जाँयगे?

मुसलमान तो देश के राजा ही थे। अंग्रेज हों या भारत-वासी, सभी नवाब के दरबार में भूमि तक माथा नवाकर प्रवेश करते थे। जो नितान्त नगण्य मुसलमान थे, उनके पद-भार से भी मेदिनी काँप उठती थी। मीरजाफ़र के ही नीच व्यवहार और अदूरदर्शिता से उनका वह पूर्व गौरव नष्ट हो गया अतएव मुसलमान भी मीरजाफ़र की कथा भूल नहीं सकते।

अंग्रेजों के सम्बन्ध में तो कुछ कहना ही निष्प्रयोजन है। विदेश से व्यापार करने आकर जिन्होंने ऐसा सुन्दर स्वर्ण-सिंहासन बिना विशेष प्रयास किये ही मुफ़्, प्रसाद-रूप में पाया, वे इतने थोड़े समय में इस बात को भूल जाने की कृतघ्नता कैसे कर सकते हैं?

× × × ×

अंग्रेज-शासन के समान मुसलमान राज्य में भी प्रतिभा का आदर था। इस प्रकार सम्मान प्राप्त करके कितने ही मामूली आदमी इतिहास में प्रसिद्ध हो गये हैं। मुरशिदकुली खाँ इसी प्रकार का एक नगण्य व्यक्ति था—जाति का ब्राह्मण, धर्म का मुसलमान और अवस्था में क्रीतदास। शिक्षा के कारण स्वाभाविक प्रतिभा का विकास होने के पश्चात् वह सम्राट औरंगजेब की आज्ञा से हैदराबाद के प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुआ। उन दिनों खुरासान के अफशार वंश का शुजाउद्दीनखाँ नामक एक और तरुण युवक हैदराबाद में निवास करता था। समय पर मुरशिदकुली की एक मात्र कन्या का विवाह इस तरुण-युवक

के साथ हुआ। पीछे जब मुरशिदकुली खाँ बंगाल-विहार एवं उड़ीसा के नवाब-नाज़िम पद पर नियुक्त हुए तो शुजाखाँ को उड़ीसा का शासन-भार प्राप्त हुआ। शुजाखाँ की इस उन्नति का समाचार सुनकर उसके अनेक सम्बन्धी उड़ीसा में जाकर बस गये। इस प्रकार आये हुए लोगों में मिरजामुहम्मद नामक एक दरिद्र व्यक्ति का शुजाखाँ से विशेष घनिष्ठता प्राप्त करने का प्रमाण मिलता है।

मिरज़ामुहम्मद के दो पुत्र थे—हाजी अहमद एवं अली-वर्दीखाँ। ये दोनों ही अपनी विद्या-बुद्धि और प्रतिभा के कारण बंगाल के इतिहास में अपनी कीर्ति-कहानी छोड़ गये हैं। ये थोड़े ही दिनों में उत्कल के नवाब के दरबार में सर्वस्व बन बैठे। अलीवर्दी को कोई बेटा न था, तीन लड़कियाँ-भर थीं। उन्होंने अपनी इन तीनों पुत्रियों का विवाह अपने भाई हाजीअहमद के तीनों पुत्रों के साथ कर दिया और दौहित्र सिराजुद्दौला को पोष्य-पुत्र के रूप में ग्रहण किया। हाजी अहमद के जामाता अता-उल्ला एवं बहनोई मीरजाफ़र, इसी समय से अलीवर्दी के मुँहलगे मुसाहिब बन बैठे। अताउल्ला की बात इस समय बहुत लोग भूल गये हैं किन्तु मीरजाफ़र की कहानी भारतवर्ष के इतिहास में चिरस्मरणीय हो गई है।

मुरशिदकुलीखाँ को कोई पुत्र न था। जामाता शुजा एवं दौहित्र सरफ़राज़ ही उनके प्रेम-पात्र थे किन्तु अनेक कारणों से जामाता का ख्याल न करके दौहित्र सरफराज़ को ही राजसिंहा-सन का भार दे उन्होंने इस संसार से अवसर ग्रहण किया। किन्तु अलीवर्दी के बाहु-बल, हाजीअहमद के कुटिल कौशल

और अपने सौभाग्य से शुजाखाँ ने ही सिंहासन-लाभ किया। इससे अलीवर्दी की पदोन्नति हुई; वह पटना के नवाब बनाये गये।

शुजाखाँ की मृत्यु होने पर सरफराज़ सिंहासन पर बैठे किन्तु उनके भाग्य में तख़्तमुबारक पर अधिक दिन तक बैठना लिखा नहीं था। ज़मींदारों को मिलाकर चतुर अलीवर्दी ने सिंहासन की आशा से ससैन्य मुर्शिदाबाद की ओर कूच किया और सरफराज़ को धोखा देने के लिए लिख भेजा "मैं तो आपका दास हूँ। आपके सामने कुछ जटिल अभियोग उपस्थित करने के लिए ही आ रहा हूँ!" गिरियार प्रान्त के प्रकाश्य युद्ध में उसकी मीमांसा हुई—सरफराज़ मारे गये। अलीवर्दी ने शून्य सिंहासन पर अधिकार किया।

मीरजाफ़र तरुण युवक था। अलीवर्दी के इस असाधु व्यवहार से उसने जो शिक्षा ग्रहण की उसे इस जीवन में फिर भूल नहीं सका। उसने समझा कि सिंहासन-लाभ के लिए विश्वासघात वा प्रभु-हत्या करना निन्दनीय नहीं है अतएव जिस तरह से हो एक बार स्वार्थ-साधन करना ही पड़ेगा। सिंहासन पर अधिकार कर लेने के पश्चात् किसी को इस कार्य की आलोचना करने का साहस नहीं होगा। प्रजा-रंजन करने से थोड़े ही दिन में इस बात को लोग भूल जांयगे। उस समय देश की जो अवस्था थी उसे सामने रखकर मीरजाफ़र की इस भावना को परीक्षा करने पर जान पड़ता है कि उसका ऐसा सोचना नितान्त अनुचित वा अस्वाभाविक न था। जिस देश में जन्मदाता पिता को क़ैद करके सिंहासन पर अधिकार जमानेवाला औरंगज़ेब 'इस्लाम का जयस्तंभ' कहलाकर इतिहास में प्रसिद्ध है, उस

देश में आश्रयदाता शुजाखाँ के कुक्रियासक्त अयोग्य पुत्र को सम्मुख समर में मारकर सिंहासन पर अधिकार करना कैसे अन्याय कार्य कहा जा सकता है ? मीरजाफ़र ने भी ऐसा ही समझा। इतिहास में भी अलीवर्दी को धर्मशील राजा कहकर साधुवाद दिया गया है, ऐसी अवस्था में मीरजाफ़र की ऐसी धारणा असंगत कहकर भर्त्सना किये जाने योग्य नहीं है।

उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में मीरजाफ़र चुपचाप दिन बिताने लगे। एक बार जब कुछ लोग बिगड़ खड़े हुए थे तो मीरजाफ़र ने अताउल्ला की सहायता से विद्रोह की घोषणा करने की चेष्टा की थी किन्तु अलीवर्दी के कौशल से उसमें सलफता न हुई। अलीवर्दी के समय में जो विफल हो गया था, वही सिराजु-द्दौला के समय में सफल हुआ। मीरजाफ़र ने कुछ अंश में सफलता तो अवश्य प्राप्त की किन्तु क्लाइव का हाथ धरकर केवल एकबार थोड़े दिनों के लिए 'तख्तमुबारक' का उपभोग कर सके। अधिक दिन तक उनका भाग्य न चमक सका। उसी समय से यह प्राचीन राजसिंहासन अयत्न और अनादर के साथ पड़ा सिसक रहा है।

× × × ×

जिस युद्ध के कारण यह इतिहास-प्रसिद्ध भाग्य-परिवर्तन हुआ, वह पलासी के उत्तर में बसे तेजनगर के पास १७५७ ई० २३ वीं जून बृहस्पतिवार को हुआ था। आज भी प्रत्येक बृहस्पति वार को इस युद्ध-क्षेत्र में कितने ही नर-नारियों का समागम होता है। युद्ध-क्षेत्र के अधिकांश चिन्ह भागीरथी के गर्भ में विलीन हो गये हैं किन्तु एक समाधिस्तूप अब भी देखा जा

सकता है । उस दिन दल के दल लोग आकर इसी स्तूप की की शुद्ध-शान्त चित्त से पूजा करते हैं । समाधि किसकी है, इस विषय में मतभेद है किन्तु इतना सभी स्वीकार करते हैं कि यह किसी प्रभुभक्त मुसलमान वीर का स्मृति-चिन्ह है । वह स्वामी की रक्षा के लिए सम्मुख समर में तलवार लेकर निहत हुआ था, अतएव आज भी लोग पीर की नाईं इस समाधि की पूजा करते हैं । पलासी के अतिरिक्त बंगाल में और कहीं इस प्रकार की वीर-पूजा प्रचलित है या नहीं, सो हम नहीं जानते ।
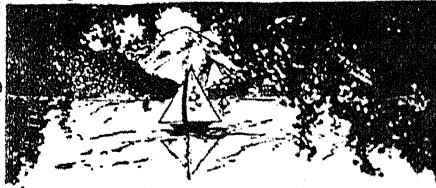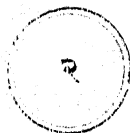
मोहमुद्गर

सिंहासन पाकर भी मीरजाफर सुखी न हो सके ! जिन अंग्रेज वणिकों की सहायता से राज्य पाया था, उनका व्यवहार देखकर अन्तरात्मा काँप उठा ! पहले जो नितान्त असंभव जान पड़ा था, वही अब प्रत्यक्ष दीख पड़ने लगा और जिसकी संभावना थी, वह एकबारगी असंभव हो गया !

अंग्रेज बनिये थे; लाभ की गन्ध पाकर ही वे अपनी मातृ-भूमि से इतनी दूर इस ग्रीष्म-प्रधान देश में आये थे। इस देश के सुख-दुःख या उन्नति-अवनति से उन्हें कोई मतलब नहीं था। अनुचित-उचित जिस उपाय से हो सके अपनी जेब भरना, और स्वदेश लौटकर शान्त-शीतल कुंजस्थित सुन्दर भवन में उस धन के भरोसे, अपनी कोमलांगी प्रेयसी के साथ सुख-पूर्वक शेष

जीवन बिताना ही उनका लक्ष्य था। अपने इस स्वार्थमय उद्देश्य की पूर्ति के लिए दया, धर्म एवं कर्तव्य-बुद्धि को थोड़ी देर तक ताक़ पर रख देने में उन्हें ज़रा भी लज्जा या संकोच न होता था। आजकल के कितने ही अंग्रेज इतिहास-लेखकों का सिर इन घटनाओं की याद करके लज्जा से नीचे झुक जाता है किन्तु उस समय के कितने ही अंग्रेज लेखकों ने इससे लज्जित न होकर साफ़-साफ़ लिख दिया है—"भारत तो सभ्य यूरोप नहीं है अतएव यहाँ रहने के समय धर्म-नीति के नियमों का पालन करने की आवश्यकता ही क्या है ?" ❀

इस प्रकार के घृणित विचारों के कारण अर्थ ही उनका परमार्थ हो गया था। अर्थोपार्जन के लिए विभिन्न उपायों का (चाहे वे उचित हों वा अनुचित) प्रादुर्भाव उनके मस्तष्क में होने लगा और मीरजाफ़र के गद्दी पर बैठते ही उनका खुल्लमखुल्ला उपयोग भी आरंभ हो गया।

मीरजाफ़र के साथ की जाने वाली गुप्त-सन्धि के द्वारा, कम्पनी के कर्मचारियों एवं कलकत्ता के निवासियों में से किसको

❀ It seems, indeed at this time to have been too generally thought that the ethics of Europe were not applicable to Asia; and their plainest rules violated without hesitation. Englismen, sometimes, manifested a degree of cupidity, which might rival that of the most rapacious servants of the worst oriental governments. They seem to have thought principally, if not solely, of the means of amassing fortunes, and to have acted as though they were in India for no other purpose.

Thornton Vol. I. 252.

किस प्रकार और कितना पुरस्कार मिलेगा, यह सब ठीक हो गया। सिराजुद्दौला के सतर्क गुप्तचर गण सदैव चारों ओर घूमा करते थे अतएव अंग्रेजों और मीरजाफ़र में परस्पर बातचीत करने के समय वाट्स साहब की ओर से एक मध्यस्थ नियुक्त करने की आवश्यकता हुई। वणिकराज 'अमीचन्द' इस अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए, जो इस देश के इतिहास में साधारणतः 'धूर्त अमीचन्द' के नाम से मशहूर हैं। अधिकतर धूर्त अंग्रेज बनियों ने ही उन्हें यह अकीर्तिकर उपाधि प्रदान की है। उनका प्रकृत नाम अमीचन्द था जो विभिन्न लोगों के मुख से आमिचन्द, उमीचन्द, अमीर-चन्द एवं उमाचरण इत्यादि नाना रूपान्तरों को प्राप्त हुआ। अमीचन्द, बंगाल एवं विहार के प्रधान वाणिज्याधिपति होने के कारण अपनी विद्या-बुद्धि एवं अर्थ के बल से जिस प्रकार नवाब के दरबार में आदृत थे उसी प्रकार अंग्रेजों में भी उनकी बड़ी प्रतिष्ठा था। अंग्रेजों का हिमायती बनकर उन्होंने देशवा-सियों के साथ उनका वाणिज्य-सम्बन्ध स्थापित करा दिया था। उनके ही परिश्रम से अंग्रेजों ने अपने आरंभिक व्यवसाय में उन्नति की थी किन्तु लाभ का बटवारा होने के समय कुछ मनो-मालिन्य उपस्थित हुआ और नवाब-दरबार के साथ अधिक घनिष्ठता रखने के कारण कुछ दिन के लिए वह अंग्रेजों के विराग-भाजन हो गये थे।

अंग्रेजों का शत्रु कहलाकर भी अमीचन्द ने कभी उनके साथ शत्रुवत् व्यवहार नहीं किया! अंग्रेजों के सन्देह में पड़कर वह कलकत्ता के फोर्ट विलियम में बन्दी हुए। अंग्रेजों के अत्या-चार से डरकर उनके घर की स्त्रियों ने असमय ही प्राण त्याग

किया। उनकी कलकत्ता की सुधा-धवल अट्टालिका कृतघ्न अंग्रेजों की कृपा (!) से जलाकर राख कर दी गई❀ किन्तु इतनी नीचता, कृतघ्नता और अत्याचार पर भी उनकी अंग्रेज-हितैषणा में कभी कमी न आई! अंग्रेज लोग जिस समय कलकत्ते के दुर्ग में घिरे हुए लड़ रहे थे उस समय संधि और शान्ति-स्थापना के लिए अमीचन्द ने ही मानिकचन्द को पत्र लिखा था।† कलकत्ते के ध्वंस हो जाने के पश्चात् अंग्रेज जिस समय अन्नाभाव के कारण पथ के भिखारी होकर दर-दर ठोकर खा रहे थे, अमीचंद ने ही उस समय अंग्रेजों की लाज बचाई थी।‡ अलीनगर की संधि के लिए जब अंग्रेज व्याकुल हो उठे थे, तब व्याकुलता के साथ अमीचंद ने ही अंग्रेजों का पक्ष समर्थन किया था।§ सिराजुद्दौला जब अंग्रेजों की दुष्ट-बुद्धि का परिचय पाकर उनके व्यापार को नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील हुआ था, तो अमीचंद ने ही ब्राह्मण के पैर छूकर शपथ करते हुए उनके

❀ See Orme's Indostan, Vol. II.

† Stewart's History of Bengal.

‡ When an order was published that such of the English as had escaped the Black Hole might return to their homes, they were supplied with provision by Omichand "whose intercession," says Orme "had probably procured their return."

Mill. Vol. III. 170.

§ His tales and artifices prevented Siraj Dowla from beleiving the representations of his most trusty servants who early suspected and atlength were convinced, that the English were confiderated with Jaffier--*Orme, Vol. II. 182.*

धन प्राण की रक्षा की थी।❀ अंग्रेजों के अत्याचार एवं व्यवहार से शोक-सन्तप्त तथा क्षतिग्रस्त होकर जिस समय आँखों में आँसू भरे हुए वह इस लोक से प्रस्थान कर रहे थे, उस समय भी अंग्रेजों की कल्याण-कामना करते हुए एक दानपत्र लिख गये।†

जब मीरजाफ़र के साथ लाभ का परिमाण निर्दिष्ट हो गया तो जो लोग आत्म-प्रकाश न करके छिपे-छिपे षड्यंत्र में लिप्त थे, उन लोगों को भी पुरस्कार पाने का विश्वास हुआ। उस समय अमींचंद ने भी अपने लिए पुरस्कार पाने का प्रस्ताव किया। उनको नवाब के दरबार में उपस्थित रहकर गुप्त-मंत्रणा में सहायता करने का काम मिला था, जिसमें शर्त्त थी कि किसी बात के प्रकट हो जाने पर (चाहे और लोग छोड़ भी दिये जाँय किंतु) उनको सब से पहले शूल पर चढ़ाकर सूली दी जायगी ! काम बहुत ही कठिन और भयानक था, अतएव अमीचंद ने वॉट्स से कहा कि कार्य के गुरुत्व को देखते हुए मुझे भी तीस लाख रुपये पुरस्कार मिलना चाहिए।

इसी घटना के साथ अमीचंद के सर्वनाश का सूत्रपात

❀ Mr. Watts writes from Moorshidabad, that "Omichand told the Nabab that he had lived under the English protection these forty years and never knew them once to be guilty of breaking their word ; to the truth of which he took his oath by touching a Brahmin's foot, and that if a lie could be proved in England on any one, they were spat upon and never trusted." —*Select Committees' Proceedings, 25 February.*

† Omichund, by his will, left Rs. 1500 to the Treasurer of the Founding Asylum, the same to the magdoalen,--both were paid.—*Long's Selections.*

हुआ। कलकत्ते की गुप्त-समिति को जब "धूर्त अमिचंद" (?) की इस अमार्जनीय (!) धृष्टता का परिचय प्राप्त हुआ तो उसके सभी सदस्य क्रोध और घृणा से अधीर हो उठे ! उन्होंने इसे अमीचंद का विशेष अपराध स्थिर किया और उन्हें पुरस्कार देने को कौन कहे, कलकत्ते के लुटे हुए धन की क्षतिपूर्ति का हिस्सा देने में भी असम्मति प्रकट की। अंग्रेज इतिहास-लेखक कहता है—"पाठक ! आप लोग इसे सुनकर हँसी न रोक सकेंगे, किन्तु उस समय उन्होंने (अमीचंद के साथ) सचमुच ऐसा ही व्यवहार किया !"[१] किंतु क्लाइव बड़ा चालाक था। आपस में झगड़ा करने से सारा भेद खुल जायगा, इसलिए उसने गुप्त-समिति के अंग्रेज सदस्यों के सामने प्रस्ताव उपस्थित किया कि—"इस समय अमीचंद की शर्त स्वीकार करलो, समय आने पर उसे इसका प्रतिफल दिया जायगा।" प्रस्ताव से सब सम्मत हुए; तब क्लाइव के परामर्श से दो संधि-पत्र लिखे गये ! एक लाल काग़ज़ पर था, जो जाली था। उसमें अमीचंद को तीस लाख रुपये देने की बात थी। दूसरा सादे काग़ज़ पर था; यह असली था; इसमें अमीचंद का कहीं नाम भी नहीं था। जल-सेनापति वाटसन ने जाली संधि-पत्र पर हस्ताक्षर करने में हिच-किचाहट प्रकट की अतएव ाइव के आदेश से लसिंगटन ने वाटसन का जाली दस्तख़त कर दिया।[२]

---

1 *To men whose minds were in such a state, the great demands of Omichand appeared (the reader will laugh--they did literally appear) a crime. They were voted a crime ; and so great a crime, as to deserve to be punished, not only by depriving him of all reward, but depriving him of his compensation which was stipulated for every body*--MILL, VOL. III. 171.

2 *Clive, whom deception, when it suited his purpose, never cost a pang, proposed that two treaties with Meer Jaffier should be drawn up and signed : One, in which satis-*

इस कलंक-कहानी का वर्णन करते समय अंग्रेज़ इतिहास-लेखकों का सिर लज्जा से नीचे झुक गया है। मीरजाफ़र के सिंहासनारूढ़ होने पर जगतसेठ के महल में यह संधि-पत्र सबके सामने पढ़ा गया। उस समय उसे सुनते ही अमीचंद घबराकर बोले—"तुम लोगों से भूल हुई है; यह कौन संधि-पत्र पढ़ रहे हो? मुझे तो जो दिखाया गया था, वह लाल क़ाग़ज़ पर था!" धूर्त क्लाइव ने समय पाकर गर्व के साथ कहा—"यह ठीक है कि तुम्हें लाल काग़ज़ पर लिखा हुआ संधि-पत्र ही दिखाया गया था; किन्तु अब तो देख रहे हो न, कि यह सादे काग़ज़ पर है?" इतना कहकर स्क्राफ्टन साहब की ओर इशारा करते हुए कहा—"अब क्या? सच्ची बात बता दो न?" स्क्राफ्टन ने मानो नाटक का अभिनय करते हुए कहा—"अमीचंद! तुम्हें जो संधि-पत्र दिखाया गया था वह जाली था—इस समय जो पढ़ा गया है, वही असली है! तुम एक कौड़ी भी न पाओगे!!"

इतिहास-लेखकों ने लिखा है कि यह बात सुनते ही अमीचंद बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े। सब लोगों ने उन्हें घर पहुँचा दिया। इस घटना के बाद थोड़े दिन तक और जीकर अभागे अमीचंद ने अपनी इहलोक-लीला संवरण की, किंतु उस दिन के बाद अंत तक एक दिन के लिए भी उनकी बुद्धि ठिकाने नहीं हुई! इस तरह धोखा खाकर उनका मोह भंग हो गया; किन्तु जिस मोह-मुद्गर ने अमीचंद का मोह भंग कर दिया, उससे मित्रों का अंतरात्मा भी काँप उठा!

faction to Omichund should be provided for, which Omichund should see, another, that which should be in reality executed, in which he should not be named, to his honor be it spoken. Admiral Watson refused to be a party in this treachery. He would not sign the false treaty, and the Committee forged his name--IBID.
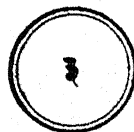
"भूते पश्यन्ति बर्बरा : ।"

जिन विचक्षण हिन्दू-मुसलमानों ने सिराजुद्दौला का सर्वनाश करने के लिए मुग़ल-राज-सिंहासन की जड़ काटने की चेष्टा की थी, उनका इसमें विशेष अपराध नहीं था, ऐसा आजकल के अनेक इतिहास-कार मानते हैं। उनकी दृढ़ धारणा थी कि सिराजुद्दौला ही सारे अनर्थों का मूल है; किसी प्रकार उसे सिंहासन-च्युत कर देने के साथ ही 'राम-राज्य' आ जायगा। उद्देश्य सिद्ध करने की तीव्रताड़ना से अन्धे मीर-जाफ़र और उसके साथियों ने किसी बात को भली-भांति विचार कर नहीं देखा; सब वहातक मैदान में उतर पड़े। चतुर अंग्रेज सौदागरों की जो हार्दिक इच्छा थी, सबने मिलकर मानो उसी-

को पूरा करने के लिए सन्धि-पत्र का कार्य पूरा किया ![1] दैवेच्छा से, 'जो रोगी को भावे सो वैद्य बतावे' वाली बात हो गई।

एक दिन यह सन्धिपत्र कार्य-रूप में परिणत हो जायगा; एक दिन विजयोन्मादी बृटिश-वणिक सबको लात मारकर मुग़लों की गौरव-पताका उखाड़ फेंकेंगे और देश पर अपना अधिकार जमा लेंगे, किसीको भी यह सोचने-विचारने का अवसर न मिला। सबने यही सोचा कि सिराज को गद्दी से उतार देने के बाद, अगर कुछ गड़बड़ी होगी, तो इन बनियों से समझ लेंगे।

पर जो होना था, हो गया। समझने या देखने का अवसर किसीको नहीं मिला। पलासी का अभिनय समाप्त होते ही अंग्रेज सेनापति कर्नल क्लाइव ने जगतसेठ के मंत्रणा-भवन में सन्धि की शर्तें पालन करने के लिए सबको बुला भेजा। उस समय सबने अनुभव किया कि केवल सिराजुद्दौला का ही सर्वनाश नहीं हुआ; सन्धि-पत्र के अक्षर-अक्षर में जो प्रलयङ्करी महाशक्ति छिपी हुई थी, उसके प्रबल पीड़न से मुसलमान-शासनशक्ति के मिट्टी में मिल जाने का सूत्र-पात हो गया। अब कौन उसकी गति रोकेगा ?

मुसलमानों ने शत्रु की भाँति भारतवर्ष पर आक्रमण करके इसपर अधिकार किया था अवश्य, किंतु सैकड़ों वर्ष से रहते-रहते वे इसे ही स्वदेश समझने लगे थे। आज उन्होंने अकस्मात् देखा कि विदेशी बनियों की समिति उनके चिरसुख-स्वरूप सिंहासन

1 The plain truth was that the so-called treaties were mere agreements patched up on the eve of a revolution. The English were in a position to demand anything; the Nawab-expectant could refuse nothing. There was not even a shadow of deliberation; for there was no time to haggle over terms.--EARLY RECORDS OF BRITISH INDIA, P. 316.

को क्षणभंगुर काँच-पात्र के समान चूर्ण करने की शक्ति और अधिकार लिये उसके बग़ल में गर्व और दृढ़ता के साथ खड़ी है।

अंग्रेजों ने सोचा था कि इस गुप्त संधि के कारण कुबेर का खज़ाना हमारे हाथ लगेगा। इस लोभ के कारण ही समरानल में रूपोन्मत्त पतंग की नाईं प्राण-विसर्जन करने को वे तैयार हुए थे। अंग्रेज़-सेनापति की आज्ञा से जब वह कुबेर-भाण्डार खोला गया तो उसकी असली हालत देखकर वह झुंभला उठा। धन-रक्षकों को डाटने-डपटने में त्रुटि नहीं हुई; मीरजाफ़र पर आँखें लाल करने में भी कुछ कमी नहीं हुई, और न बार-बार 'देहि-देहि' के अर्थ-लोलुप भीषण हुंकार से आकाश-मण्डल को कम्पित करने में ही किसी प्रकार की त्रुटि होने पाई; किंतु इतना होने पर भी जब किसी प्रकार अधिक-धन न मिल सका, तब क्लाइव को भी समझते देर न लगी कि धन पाने के लिए धर्म को पैरों से रौंदने पर भी कलंक ही हाथ लगा।[१]

अब वे दिन नहीं रहे! जो क्लाइव पृथ्वी तक झुककर, हाथ जोड़े हुए नवाब अलीवर्दीख़ाँ के दरबार में डरते-डरते प्रवेश करता था; जो बच्चे सिराजुद्दौला के निकट भी अमीचंद या जगतसेठ का आश्रय लेकर काँपते हृदय से पैर उठाता था; जो अभी दो-चार घण्टे पहले तक मुर्शिदाबाद की सड़कों पर अकेले चलने में हिचकता था, आज विधि-विडम्बना-वश राज-मुकुट को अधिक दाम में बेचने का अधिकार लेकर श्वेतांग सेना का नायक बनकर उसीने गर्व के साथ राजमहल में प्रवेश किया! क्या मीरजाफ़र में

1 *In manufacturing the terms of the confederacy, the grand concern of the English appeared to be money.—MILL, VOL. III. p. 185.*

इतनी शक्ति है कि वह उसके मुँह पर सन्धि-पत्र को अस्वीकृत करदे ? सब निश्चेष्ट होकर असहाय विधवा के समान रोते हुए मानो क्लाइव की मनस्तुष्टि का यत्न करने लगे। अपनी असमर्थता दिखाकर 'क़िस्तबंदी' करने के लिए दीन भाव से सिर झुकाकर बैठने वाले वणिकों के अब वे दिन नहीं रहे !

विख्यात इतिहास-लेखक जेम्स मिल लिख गये हैं—"भारतीय राजाओं को जो विडम्बना भोगनी पड़ी थी, उसका प्रधान कारण राजकोष में अर्थाभाव ही था।" यह अर्थाभाव मीरजाफ़र को पत्थर से भी अधिक भारी और कठोर प्रतीत हुआ। पलासी की लड़ाई के पूर्व मीरजाफ़र की वैसी अवस्था नहीं थी। अलीवर्दी दान-शील व्यक्ति थे। राज-कर्मचारियों के हृदय से राजद्रोह की भावना दूर करने के लिए वह धन को पानी की तरह बहाते थे, इसीलिए वह अपने मरने के पश्चात् सिराज के लिए विशेष धन न छोड़ गये। सिराजुद्दौला भी, अपने राज्यकाल के प्रभात में ही कोलाहल में फँस जाने के कारण, राजकोष की उन्नति करने का अवसर न पा सका। ऐसी अवस्था में मीरजाफ़र ने अंग्रेजों को इतना अधिक रुपया देने का वचन क्यों दिया ? राजकोष में तो इतने धन के होने की ज़रा भी संभावना नहीं की जा सकती थी।

कुछ लोगों का अनुमान है कि मीरजाफ़र ने सोचा था कि जो लोग प्रतिहिंसा की भावना लेकर विद्रोही-दल में सम्मिलित होंगे वे चेष्टा सफल होने पर थोड़ा धन पाकर भी संतोष कर लेंगे। अंग्रेज लोग कठोरता-पूर्वक संधि-पत्र में स्वीकार किये हुए धन को पाने के लिए निर्मम हृदय से गर्जन-तर्जन करेंगे, मीरजाफ़र को इतनी दूर तक विश्वास नहीं हुआ था किंतु इस समय सबको

विवश होकर विश्वास करना ही पड़ा। ऐसे समय मीरजाफ़र ने निरुपाय होकर अंग्रेज़-सेनानायकों को कुछ घूस देकर टरकाने और संधि-पत्र की बातों को दबा देने की बड़ी चेष्टा की, किंतु वह चेष्टा सफल नहीं हुई। अंग्रेज़, जिस बुद्धि के बल से सात समुद्र पार के एक अपरिचित देश में यहाँ के व्यापार को नष्ट करके अपना व्यवसाय फैलाने आये थे, वह इतनी कुण्ठित नहीं थी कि सहज ही ऐसा सोनहला अवसर छोड़ देने को तैयार हो जाती।

ऐसे समय किसी-किसीने उपदेश किया, 'फिर देरी क्यों ? अब तो काम निकल ही गया है, अतएव इन इने-गिने अर्थ-लोलुप अंग्रेज़ भिखारियों को लात मारकर, धक्का देकर, निकाल देने में क्या हर्ज है ?' किंतु अभागे मीरजाफ़र के कर्म-दोष से वह रास्ता पहले ही बंद हो गया था। उसके राजधानी में प्रवेश करने के पूर्व ही धनवान नागरिकगण लूटे जाने के भय से अपना-अपना धन लेकर दूसरे शहरों को भाग गये। जो उस समय तक नहीं भागे थे, उन्होंने भी मीरजाफ़र के भय से क्लाइव की शरण ली। बहुत दिनों तक वेतन न पाने के कारण नवाब की सेना अलग विद्रोहोन्मुख हो उठी। पलासी-युद्ध के बाद वेतन मिलने की आशा से वह इतने दिनों तक शांत रही थी, किंतु विजय के पश्चात् भी वेतन न मिलता देख वह बिगड़ खड़ी हुई। इस प्रकार विद्रोही सेना से घिरा हुआ बेचारा असहाय मीरजाफ़र किस बूते पर अंग्रेजों को मार भगाने के लिए खड़ा होता ? मन में चाहे अंग्रेजों के प्रति जैसा भी भाव रहा हो, किंतु घटना-चक्र में पड़कर अभागे मीरजाफ़र को चुपचाप सारा अपमान सहना पड़ा !

क्लाइव, इन बृटिश बनियों के सौभाग्य का सितारा था। अपनी प्रतिभा, कार्य-दक्षता, धूर्तता और साहस के कारण वह हमारे इस पतन-काल के इतिहास में चिरस्मरणीय हो गया है। जब सिराजुद्दौला के राजभण्डार को खाली कर देने पर भी वह अधिक न पा सका, तो उसे १७६०००० चाँदी एवं २३००००० सोने के सिक्कों, दो संदूक सोने की गुल्लियों, चार संदूक रत्नजटित गहनों और दो संदूक हीरे-जवाहिर पर ही संतोष करना पड़ा!

किसको कितना हिस्सा और पुरस्कार मिला, इसके सम्बन्ध में इतिहासज्ञों के अनेक मत दीख पड़ते हैं। ईस्ट इण्डिया कंपनी का नियमन करने वाली इंग्लैण्ड की महासभा (हाउस ऑव् कामन्स) ने कुछ दिनों बाद इसके सम्बन्ध में ठीक अनुसन्धान करने के लिए एक कमिटी बैठाई थी। उसके सामने गवाही देते हुए क्लाइव मुक्त-कण्ठ से स्वीकार कर गया है—" जब संधि-पत्र की सारी बातें तय हो चुकीं तब हमारी गुप्त समिति के सदस्य बिचर साहब ने कहा कि 'केवल कम्पनी ही क्यों लाभ उठावेगी? सेना और गुप्त समिति के सदस्यों को भी पुरस्कार मिलने की व्यवस्था होनी चाहिए।' यह बात वाट्स साहब को मुर्शिदाबाद लिखकर भेज दी गई, किन्तु वाट्स साहब ने इसके सम्बन्ध में क्या किया, यह बात हमें पलासी-युद्ध के पहले तक कुछ भी मालूम न थी। हाँ, हम लोग इतना अवश्य जान गये थे कि किसीकी उपेक्षा न की जायगी। जब मुझे मालूम हुआ कि किसे क्या मिलेगा, तो मुझे भी एक स्वाधीन नरपति के निकट पुरस्कार ग्रहण करना कुछ विशेष गर्हित कार्य नहीं जान पड़ा! उस समय कम्पनी के साथ कर्मचारियों की कोई धर्म-प्रतिज्ञा भी

तो नहीं थी ! फिर अगर वह गर्हित ही कार्य रहा हो तो महासभा के साथ उसका क्या सम्बन्ध ?" कम्पनी को ऐसे नीच कार्य की निन्दा करनी चाहिए थी, किन्तु निन्दा करनी तो दूर, उलटे प्रसन्नता-पूर्वक उसने इस कार्य का अनुमोदन किया ।१

विचर साहब के दिये हुए हिसाब के देखने से जान पड़ता है कि खज़ाने के धन में से सबके यथायोग्य पुरस्कार बाँट लेने के पश्चात् जो धन बचा, उसे संधि-पत्र में लिखे हुए धन का आधा बताकर कम्पनी के खज़ाने में जमा किया गया और शेष आधा धन जमा करने के लिए 'कृपा करके' मीरजाफ़र को तीन बरस की मोहलत दी गई ।२

1 *Clive's Evidence before the Committee of the House of Commons, 1772.*

२ विचर साहब का दिया हुआ हिसाब यों है—

मि॰ ड्रेक (गवर्नर)	२८०००० रुपये	—कुल २८००००)
कर्नल क्लाइव—		
सभासद् की हैसियत से	२८०००० रुपये	कुल २०८००००)
सेनाध्यक्ष की हैसियत से	२००००० रुपये	
पुरस्कार (दान के रूप में)	१६००००० रुपये	
मि॰ वाट्स—		
सभासद् की हैसियत से	२४०००० रुपये	कुल १०४ ०००)
पुरस्कार वा दान के रूप में	८००००० रुपये	
मेजर कील पेट्रिक (Major Kil Patrik)		
अफ़सर की हैसियत से	२४०००० रुपये	कुल ५४००००)
पुरस्कार वा दान के रूप में	३००००० रुपये	
मि॰ मैनिंघम (Manningham)	२४०००० रुपये	,, २४००००)
मि॰ विचर (Beecher)	२४०००० रुपये	,, २४००००)

"भूते पश्यन्ति बर्ब्बराः।"

पलासी का युद्ध समाप्त होने के पश्चात् सेनापति क्लाइव ने गवर्नर ड्रेक साहब के नाम जो पत्र भेजा था, उसे २५ जून को पाते ही कलकत्ता की अंग्रेज-मण्डली अपनी देव-दुर्लभ विजय-वार्ता पर आनन्दोन्मत्त हो उठी। एक वर्ष पूर्व इसी जून मास के अंतिम भाग में कलकतिये अंग्रेज सिराजुद्दौला के भय से जिस प्रकार काँप उठे थे, उसी प्रकार इस समय भाग्य पलट जाने के कारण पुरस्कार मिलने की लालसा से उनका हृदय खिल उठा। सभी जय-ध्वनि करते हुए सड़कों पर नाचने लगे। उस समय सबकी ज़बान पर एक बात थी, सबके हृदय में एक आनंदोच्छ्वास था। उस उच्छ्वास में कलह-विवाद भूलकर सभी थोड़ी देर के लिए मतवाले हो उठे। १

कलकत्ते की अंग्रेज-सभा ने तुरन्त, एक जहाज़ सजाकर समारोह के साथ, मैनिंघम साहब को यह सुसमाचार देने के लिए इंग्लैण्ड रवाना किया। इधर मुर्शिदाबाद के नूतन नवाब से मिला हुआ धन, सात सन्दूकों में भरकर सौ सुसज्जित नावों के एक

कौंसिल के ६ मेम्बरों में से प्रत्येक को एक लाख ,, ६०००००)

मि० वाल्श (Walsh)	५००००० रुपये	
मि० स्क्रैफ्टन (Scrafton)	२००००० रुपये	
मि० लुशिंगटन (Lushington)	५००.०० रुपये	,, १९०००००)
मि० ग्राण्ट (Grant)	१००००० रुपये	
जल और स्थल सेना	६००००० रुपये	

1 *The comparison of the prosperity of this day with the calamities in which the colony was overwhelmed at this very season in the preceding year; in a word, this sudden reverse and profusion of good fortune INTOXICATED the steadiest minds, and hurried every one into the excesses of intemperate joy; even envy and hatred forgot their energies, and were reconciled, at least for a while, to familiarity and good will.--ORME VOL . 187*

बेड़े के सहारे, बृटिश विजय-वैजयंती फहराते तथा विजय-वाद्य की ध्वनि से भगीरथी के दोनों किनारों को कँपाते हुए, क्लाइव की अध्यक्षता में नवद्वीप लाया गया और फिर अंग्रेजों के परमबंधु राज-राजेन्द्र कृष्णचंद्र भूप बहादुर की सेना द्वारा सुरक्षित होकर वहाँ से यथासमय कलकत्ते पहुँचा। १

इतिहास में इस प्रकार अकस्मात् भाग्य पलट जाने की घटना बहुत कम दीख पड़ती है। अंग्रेजों ने भी स्वीकार किया है कि इस विजय-वार्त्ता को सुनकर उनकी चित-वृत्ति जिस प्रकार विह्वल और उद्वेलित हो उठी थी, उस प्रकार के आनन्दोच्छ्वास का बहुत ही थोड़े युद्धों में उन्हें अनुभव हुआ। २

२९ वीं जुलाई को 'खिलअत'– वितरण के समारोह से मुर्शिदाबाद हँस उठा! क्लाइव ही उस समय कर्त्ता-धर्त्ता हो रहा था। उसके सम्बन्ध में और अधिक क्या कहें? सेनापति वाटसन ने एक सुसज्जित हाथी, दो सुसज्जित घोड़े के साथ एक सुवर्ण-खचित परिच्छद और शिरपेंच तथा एक रत्नजटित उष्णीशचूड़ा पाकर बड़े आदर और गौरव के साथ उसे सिर पर रक्खा। पीछे रणतरी पर बैठकर धीरे-धीरे तोप-गर्जन से जलस्थल को कंपाता हुआ अपने स्थान पर लौट गया। धीरे-धीरे अंग्रेजों की विजय की यह कहानी समस्त बंगाल में फैल गई।

मीरजाफ़र के चरित्र के सम्बन्ध में दोनों अंग्रेज सेनापतियों

1 Orme, vol. II. 187--188.

2 *Few events in history have created a greater revulsion of feeling than the victory of Plassey. The people of Calcutta had been depressed not only by the capture of the Factory, but by the utter loss of all their worldly goods. But now the disgrace was forgotten in the triumph ; the poverty was forgotten at the sight of the treasure.*--
EARLY RECORDS OF BRITISH INDIA p. 261

ने क्या विचार प्रकट किये, यही उस समय आलोचना का प्रधान विषय हो उठा। इतिहास में देखा जाता है कि क्लाइव और वाटसन दोनों इस सम्बन्ध में दो भिन्न मत प्रकट कर गये हैं। 'खिलअत' और पुरस्कार पाकर वाटसन ने मीरजाफ़र को लिखा था—"विशेष प्रसन्नता की बात तो यह है कि देश के प्रायः सभी व्यक्ति आपके राज्याभिषेक से आनंदित होकर यथा-योग्य आदर दिखला रहे हैं! सिराजुद्दौला को इस प्रकार जन-साधारण की शुभकामना पाने का सौभाग्य नहीं मिला!" १

इधर क्लाइव ने अपनी विलायत की चिट्ठी में लिखा—"वर्त्तमान नवाब बहादुर को ज़रा भी विद्या-बुद्धि नहीं है; जिस गुण से अपने सामन्तों एवं कर्मचारियों की सहानुभूति प्राप्त की जा सकती है या उनके हृदयों में अपने प्रति विश्वास और स्नेह-ममता उपजाई जा सकती है, उसका उनमें अत्यंत अभाव है! इन थोड़े ही महीनों के शासन-काल में देश अराजक हो उठा है; चारो ओर विद्रोहाग्नि जल उठी है। हमारी संरक्षकता के कारण ही मीरजाफ़र की रक्षा है!" २

यह अयोग्य नवाब अधिक दिन तक बंगाल-बिहार एवं

1 But what pleases me beyond expression, is, to hear that all men rejoice in them (your health and prosperity) ; and while they acknowledge you are worthy of them, pray for their continuance. This is a satisfaction your predecessor never knew.--Letter to Meer Jafer from Admiral Charles Watson, commander of the Fleet belonging to the most Puissant King of Great Britain, Irresestible in battle.

2 In laying open the state of this government, I am concerned to mention that the Present Nabab is a Prince of little capacity, and not at all blessed with the talent of gaining the love and confidence of his principal officers. His management threw the country into great confusion in the space of few months, and might have proved of fatal consequence to himself but for our known attachment to him.--Clive's letter to the Court of Directors, 23 December 1757, para 2.

उड़ीसा के राज-पद का संभोग न कर सका। उसके विरुद्ध भी षड्यंत्र का सूत्रपात हुआ। इस षड्यंत्र के कुचक्र में पड़कर मीरजाफ़र (नवाब सुजाउलमुल्क हाशिमुद्दौला मीरमुहम्मद-जाफ़रअलीखाँ बहादुर महावत जंग) अपने प्रिय पुत्र मीरन के बाहुबल के भरोसे राज्य-रक्षा की चेष्टा करने के कारण (इतिहास में) 'क्लाइव का गधा' नाम से बदनाम हुआ; तब सबने मन में यह सोचकर इस झंझट से छुटकारा पाने की कोशिश की—"भूते पश्यन्ति बर्ब्बराः।"

४
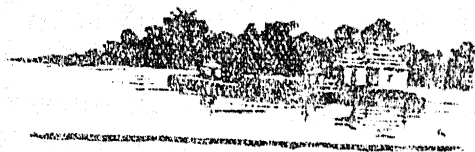
"क्लाइव का गधा!"

अंग्रेजों के लिए अपने सिर कलंक का टीका लगाकर भी अंग्रेज़ी-इतिहासों में मीरजाफ़र 'क्लाइव का गधा' कहलाकर अपमानित हुए हैं, किन्तु उनकी यह अकीर्तिकर उपाधि अंग्रेज़ों द्वारा दी हुई नहीं है। मिर्ज़ा शमशेरउद्दीन नामक उनके एक स्पष्ट-भाषी परिहास-रसिक बाल्य-सहचर थे। मिर्ज़ा साहब के नौकरों के साथ एक दिन क्लाइव के अंग्रेज़ों की कुछ कहा-सुनी हो गई। धीरे-धीरे यह बात भी मीरजाफ़र के कानों तक पहुँची। मीरजाफ़र क्लाइव की मनस्तुष्टि के लिए इतने व्यग्र रहा करते थे कि इस सामान्य बात के लिए भी मिर्ज़ा साहब पर क्रोध-प्रकाश करते हुए सबके सामने दरबार में बोले—"क्या अभीतक तुम्हें कर्नल साहब की मर्यादा

अवगत नहीं हुई ? उनके बन्धुओं का इस प्रकार अपमान करने का साहस तुमने क्यों किया ?" मिर्ज़ा, विनयावनत राजभृत्य की नाईं, कृत्रिम कातरता दिखाते हुए तुरन्त बोल उठे—"यह कैसी बात ? आप मेरे अन्नदाता है। जब मैं नित्य प्रातःकाल 'क्लइव के गधे' को तीन बार यथारीति सलाम करता हूँ, तो आप सहज ही समझ सकते हैं कि क्या मैं कर्नल साहब के मुँह की ओर दृढ़ता-पूर्वक देखने का भी साहस कर सकता हूँ ?"[१] इस प्रकार मिली हुई मीरजाफ़र की यह नई उपाधि धीरे-धीरे सर्वत्र फैल गई !

मिर्ज़ा साहब व्यंग्य करते हुए मीरजाफ़र को जो अकीर्ति-कर उपाधि दे गये हैं, ऐतिहासिक सत्यानुसंधान-निपुण साहित्य-सेवीगण उसे ही मीरजाफ़र का वास्तविक परिचय बताकर समाज के सम्मुख रखते हैं।[२] धोबियों के गधे जिस प्रकार सुबह से शाम तक बोझा ढोकर संध्या-समय घास छोड़ और कुछ खाने को नहीं पाते, अंग्रेज़ों का बोझा ढोने जाकर, बंगाल-बिहार-उड़ीसा के सिंहासन पर पदार्पण करके भी, मीरजाफ़र को उसी प्रकार विडम्बना भोग करनी पड़ी ! मीरजाफ़र के इस अदृष्ट को स्वयं बुलाई हुई व्याधि कहकर, क्या अंग्रेज़, क्या बंगाली, सभी उससे उदासीन हो रहे, किसीने उससे ज़रा भी सहानुभूति न प्रकट की !

1 *Meer Jaffer reproved him, saying. "Know you not the rank of the Colonel, that your people should dare to insult any of his friends ?" The Mirza, putting on a look of submission, exclaimed, "My patron, how dare I even look the Colonel in the face with stediness, who every moring of my life, make three obeisances to his ASS !"--Scott History of Bengal, p. 376.*

2 *Mills' History of British India, vol. III.*

सिराजुद्दौला ने सिंहासन की रक्षा के लिए राज्यकोष का अधिकांश धन पहले ही ख़र्च कर दिया था; जो कुछ मीरजाफ़र के हाथ लगा भी, वह अंग्रेजों का क़र्ज़ (?) चुकाने में स्वाहा हो गया—वेतन न पाने के कारण सैनिक लोग क्रुद्ध होकर दाँतों से ओठ चबाने लगे। राष्ट्र-विप्लव की सम्भावना से भयभीत होकर स्वार्थ-रक्षा के लिए कितने ही लोग गड़बड़ मचाने लगे; अतः मीरजाफ़र की रक्षा के लिए क्लाइव को सेना-सहित कुछ दिन तक राजधानी ही में रहना पड़ा। इन सब तथा अन्यान्य अनेक कारणों से एक प्रकार अंग्रेज ही सिंहासन के मालिक समझे जाने लगे। इससे पहले अंग्रेज़ मुर्शिदाबाद में दिखाई नहीं देते थे। जो लोग वाणिज्याधिकार प्राप्त करने के लिए कभी आते थे, वे भी बहुत संकोच से डरते हुए फूँक-फूँककर सड़कों पर क़दम रखते थे! पलासी-युद्ध के बाद ये ही (दीन-हीन भिखारी) अंग्रेज़ मुर्शिदाबाद के सर्वस्व हो उठे! १ तब फिर प्रजा का क्या अपराध? उसने देखा कि अंग्रेज़ ही वस्तुतः स्वामी हैं; मीरजाफ़र तो उनका ग़ुलाम-मात्र है! यह सोचकर लोग अपनी स्वार्थ-रक्षा के लिए क्लाइव को सन्तुष्ट और अनुकूल करने को व्यग्र हो उठे। २ प्रधान-प्रधान हिंदू-मुसलमान अमीर-उमराओं तक ने क्लाइव के कृपा-कटाक्ष का भिखारी बनकर अंग्रेजों की पद-मर्यादा को सहसा सौगुना ऊँचा कर दिया।

1 Before the capture of Calcutta, no Englishman appeared at Murshidabad, except as supplicants for trading privileges. Since the battle of Plassey, the English were lords and masters.--Early Records of British India, p. 263.

2 For the moment, the grandees at Murshidabad regarded Clive as the symbol of power, the arbiter of fate, the type of omnipotence. who could protect or destory at will. One and all were eager to propitiate Clive with presents ; such has been the instinct of Orientals from the remotest antiquity.--Early Records of British India, p. 261.

अपने अभाग्य से प्रजा की सहानुभूति न प्राप्त करके भी अपनी अवस्था को समझने में मीरजाफ़र को देर न हुई, किन्तु तबतक 'पासा हाथ से छूट चुका था !' अपनी अवस्था को भलीभाँति समझने पर भी वह उसका प्रतीकार न कर सके, उलटे सन्धि-पत्र में स्वीकार किये ऋण को चुका न सकने के कारण "चोर" बनना पड़ा। लोगों में प्रसिद्ध हो गया कि अन्तरंग महल में स्थित बेगमों के खज़ाने की बहुमूल्य रत्नराशि को भी मीरजाफ़र ने मुन्शी नवकृष्ण की राय से अपहरण करके क्लाइव के हवाले कर दिया ![1] वेतन न चुका सकने के कारण मीर-जाफ़र अपने सेवक-समूह में विश्वासघातक, शठ, प्रवंचक इत्यादि अकीर्तिकर सम्बोधनों से प्रसिद्ध होने लगे; अतएव प्रजा तथा अनुचर-वर्ग के विराग से भयभीत होकर अपने धन, मान एवं प्राण की रक्षा के लिए उन्हें अंग्रेज़ सेना की शरण लेनी पड़ी। जो मुसलमान आत्मीय अन्तरंग इतने दिन तक प्राण-पण से राजगद्दी पर बैठाने में सहायता करते आये थे, वे भी अवसर पाकर पूर्निया की फ़ौजदारी, पटना की नवाबी एवं मुर्शिदाबाद की दीवानी इत्यादि पदों पर अधिकार जमाने के लिए बार-बार उत्तेजित होने लगे।[२] हिन्दू अमात्यों को जब इसका पता लगा तो वे अपने अधिकार की रक्षा के लिए क्लाइव के शरणागत हुए ! अंग्रेज़ों ने जब सन्धि-पत्र के सहारे कलकत्ते की ज़मींदारी ले ली तो उस समय मीरजाफ़र को विवश होकर लिख ही देना

1 *It is also well-known that besides this treasury, there existed another in the Harem, which fact Meer Jaffier concealed from Col. Clive, at the instigation of the Dewan and Coloneis' Munshi.--Tarikh-i-Mansuri.*

२ देखिए मुताखरीन.

पड़ा—"इस परवाने के द्वारा हुगली के ज़मींदारों, चौधरी लोगों तथा अन्य भूम्याधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आज से वे कम्पनी के शासनाधीन हुए। वह (कम्पनी) बुरा या भला कैसा भी व्यवहार करे, बिना प्रतीकार किये उसे पालन करने की मैं आज्ञा देता हूँ।"१ इतना ही नहीं, जगतसेठ के लाभ-मार्ग में काँटा डालकर अंग्रेज़ों को कलकत्ते में टकसाल खोलने की आज्ञा भी दे दी गई।२ खोजा वाजिद का लाभजनक शोरे का व्यापार उखाड़कर बिहार में शोरे के व्यवसाय का आधिपत्य अंग्रेज़ों को प्रदान करना पड़ा।३ उपयुक्त अवसर पाकर अंग्रेज़ बनिये सदर्प अपने वाणिज्य-विस्तार में अग्रसर हुए।४ नाना प्रकार से मीरजाफ़र का धन हड़प करके राज्यकोष शून्य कर देने पर भी उनका पेट न भरा। लवंग, पान, सुपारी, जिसी व्यवसाय में उन्होंने भारतीयों को दो पैसे की आमदनी देखी, उसीको हड़पने के लिए तैयार हो गये।५ सिंहासन पर पदार्पण करने के बाद एक ही महीने के अन्दर

1 Know then, Ye Zamindars &c that Ye are dependents of the Company, and that Ye MUST submit to such treatment, as they give you, WHETHER GOOD OR BAD, and this is my express injunction.--Perwanah for the granted lands.

2 A Mint has been established in Calcutta ; continue coining gold and silver into Siccas and Mohurs, of the same weight and standard with those of Murshidabad ; the impression to be CALCUTTA ; they shall pass current in the Provinces of Bengal, Behar, and Orissa, and be received into the Cadjana : THERE SHALL BE NO OBSTRUCTION OR DIFFICULTY FOR KUSSOOR--Perwanah for the Mint.

*3 At this time, through the means of Col. Clive, the Salt-peter lands of the whole province of Behar have been granted to the English company, * * * in the room of Coja Mahumed Wazeed.--Perwanah for the Salt peter of Behar.*

4 Orme, II. 189.

5 As it is the nature of man to err with great changes of fortune, many, not content with the undisputed advantages accruing from the revolution, immediately began to trade in Salt, & the other articles, which had hitherto been prohibited to all Europeans.-Ibid.

मीरजाफ़र को इन सब अत्याचारों के विरुद्ध अभियोग उठाना पड़ा, किन्तु यह अभियोग केवल व्याकुल आर्त्तनाद एवं अरण्य-रोदन के ही रूप में परिणत होकर रह गया। उससे रोग का प्रतीकार नहीं हुआ, उलटे इसी समय से भविष्यत् में होने वाले सर्वनाश का सूत्रपात हुआ।१

स्वदेशवासियों के अन्न की रक्षा के लिए अंग्रेज बनियों के व्यापार की गति रोकने जाकर सिराजुद्दौला का सर्वनाश हुआ था; वही ऐतिहासिक तत्व धीरे-धीरे पुनः प्रकट होने लगा। जिन्होंने सिराजुद्दौला की उच्छृंखलता एवं शासन कार्य से असहिष्णु होकर आशा की थी कि नये नवाब (मीरजाफ़र) आयु में बड़े होने के कारण वृद्ध अलीवर्दी की उदार नीति का अनुसरण करके प्रजा-पालन करेंगे, वे भी मीरजाफ़र एवं मीरन के अत्याचार तथा अनाचार से मर्मपीड़ित होकर सिराजुद्दौला के साथ किये गये व्यवहारों की निन्दा तथा पिछले शासन की सराहना करने लगे।२ देश की अवस्था बड़ी शोचनीय हो उठी।

मीरजाफ़र की दुर्दशा का कारण सोचकर, उसके कल्याण-साधन के लिए अंग्रेजों ने उपदेष्टा का आसन ग्रहण किया।

1 Meer Jaffier complained of these encroachments within a month after his accession, which although checked for the present, were afterwards renewed; and at last produced much more mischief than even disinterested sagacity could have foreseen.
--Ibid.

2 The greatest number of the principal people of the Provinces, disgusted with the bad qualities and tyranny of the late Nawab, had been pleased at his disposal, judging, that as Meer Jaffier was advanced in years and had long served Mohubut Jung, he would follow his example ; but upon his accession to power, experiencing his behaviour, and more particularly the cruel actions of his son Meerun, a Monster of his time, they now regretted the fall of Seraj-ad-Dowla, and the old saying of "Bless our Former Ruler" was renewed in the tongues of the wise and the simple.--Scott's History of Bengal, p. 379-80.

राजकोष में रुपये का न होना ही सारे अनर्थों की जड़ है, यह सबने सहज ही समझ लिया। अभी तक पुर्निया और बिहार मीरजाफ़र अपने हाथ में नहीं कर सके थे; उनके प्राप्त करने में ही न जाने कितने धन-जन की आवश्यकता होगी, यह सोचकर लोगों के सिर चकरा गये। ऐसे समय ख़ाली हाथ सिंहासन की रक्षा करना कितना दुरूह कार्य है, इसे सब समझ गये। उपयुक्त अवसर हाथ से न जाने देना चाहिए, यह सोचर चएट क्लाइव ने बेचारे बुद्धिहीन मीरजाफ़र को पट्टी पढ़ाई की 'सेना-विभाग में ही सबसे अधिक व्यय है; अतएव जब मैंने अपने ऊपर सिंहासन-रक्षा का भार ले ही लिया है, तो फिर इतनी अधिक सेना रखने का प्रयोजन ही क्या है ? आधी सेना बर्ख़ास्त कर दीजिए।'[१]

व्यय कम करने के इस सरल उपाय का तात्पर्य समझने में मीरजाफ़र को विशेष सोचने की ज़रुरत नहीं पड़ी। 'मुझे पूरी तरह हाथ में करने के लिए ही ऐसी तद्बीर बताई जा रही है,' यह आसानी से समझ में आ गया। किन्तु इतना साहस नहीं था कि इस सम्मति की अवहेलना करते। मीरजाफ़र से न तो इसे स्वीकार ही करते बना, न प्रकट रूप से इन्कार ही। इस द्विधा का कारण समझने में लोगों को देर न लगी। मीरजाफ़र का हृदय अपने-आप ही बुलाई हुई बला के भावी फल को सोचकर सिहर उठा। मीरजाफ़र ने अपना बन्धु समझकर जिस परम शत्रु को अपने घर का प्रवेश-द्वार दिखला दिया था, उसका यह कृत्य देख हृदय में उससे बदला लेने की नीति उदय

1- In vain did Colonel Clive represent to him that, instead of drawing his treasury for keeping such an immense army on foot, he had better dismiss one half of them, and rely on the English.—Scrafton.

हो गई है, इसे अंग्रेजों ने भी अनुमान से समझ लिया ।[1] इस प्रकार मीरजाफ़र और क्लाइव दोनों स्वार्थी बन्धुओं में मन-मुटाव का उपक्रम हुआ । मौखिक आदर-अभ्यर्थना में तब भी त्रुटि नहीं हुई, किन्तु दोनों ही हृदय की बातें छिपाकर अपने इष्ट-साधन का आयोजन करने लगे ।

सन्धि-पत्र का अवशिष्ट दायित्व-बंधन तोड़कर किस तरह फेंक दिया जाय, इसके लिए मीरजाफ़र नाना प्रकार का अनुसन्धान करने लगे । उनके इस अनुसन्धान की बात जानकर क्लाइव ने भी अपना पक्ष मज़बूत करने का आयोजन आरंभ किया । क्लाइव को इस आयोजन के लिए कोई नई बात सीखनी नहीं पड़ी । जिस कौशल से सिराजुद्दौला के समान प्रबल प्रतापी एवं तेजस्वी नवाब को इतनी सरलता के साथ मिट्टी में मिला दिया गया, उससे मीरजाफ़र को उखाड़ फेंकने में कितनी देर लगती ? उस समय राजभक्ति, स्वदेशप्रेम और स्वजातिरक्षा, दूर की बातें थीं—सभी अपने स्वार्थ के लिए एक-दूसरे के गले पर छुरी फेरने की तैयारी कर रहे थे । राज-कर्मचारियों में ही इस प्रकार की चरित्र-हीनता देखकर क्लाइव ने अपनी चालाकी से कुछ लोगों को अपनी ओर मिला लिया[2] और इस प्रकार मीरजाफ़र की सारी गुप्त-मन्त्रणाओं के जानने की सुविधा प्राप्त कर ली । गृहभेदी

1 No sooner was Meer Jaffir advanced to the Subahship, then he began to feel his own strength; and look on us rather as rivals than allies ; and his first thoughts were vow to check our power and evade the exeaution of the treaty.--Scrafton.

2 (Meer Jaffir) formed his plan quite differently and seemed to think himself sufficiently powerful to dispute the remainder of the treaty ; and to this he bent all his, future politics ;--the natural consequences of which was, that we were necessitated to strengthen ourselves, by forming a party in his own court to be a continual check upon him ; a matter by no means difficult, in a country where loyalty and gratitude are virtues almost unknown.—Scrafton.

विभीषणों की सहायता से अंग्रेजों की नवोदित राजशक्ति को बार बार मीरजाफ़र को पददलित करने का मौक़ा मिला। अब मीरजाफ़र ने समझ लिया कि मेरे पाप का घड़ा भर गया है। इतनी कठिनाइयों के बाद जो राजसिंहासन मिला; जिसके लिए दया-धर्म कर्त्तव्य-बुद्धि, स्नेह-ममता सबको पैरों-तले कुचलकर इस्लाम के नाम धब्बा लगाया, यहाँतक कि प्रियपुत्र मीरन के सिर पर हाथ रखकर, भगवान के पुण्यनाम पर पवित्र कुरान को स्पर्श करके, झूठी क़सम खाने में भी लज्जा न की, वही सिंहासन इस समय पैरों के नीचे है; किन्तु, हाय —सिंहासनारूढ़ शुजाउल्मुल्क हाशिमुद्दौला मीरमुहम्मद जाफ़रअलीख़ाँ बहादुर महब्बतजंग उस सिंहासन के मालिक नहीं हैं वरन् 'क्लाइव का स्नेहानुपालित, इशारे पर चलने वाला, घास खाकर दिन भर बोझा ढोने वाला, कंकालावशिष्ट, अभागा गधा' उसका अधिकारी है ! हाय !!
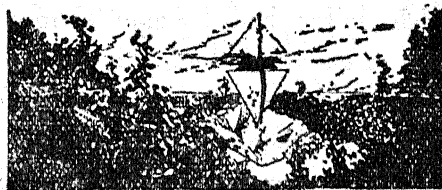
कर्म-फल

Every transaction since Plassey—the suppression of the risings within, repulse of the two formidable invasion from without, the crushing of the Dutch—had confirmed and strengthened the predominance of the English. Mr. Ja'far had become simply a tool in their hands, an unwilling tool, it is true, but a tool whom the circumstances of every year forced to be more submissive. Against this position the whole soul of Mir Kasim revolted.—*Col. Malleson.*

बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के अन्तिम स्वाधीन नवाब का नाम मीरक़ासिम था। वह इस देश के इतिहास में क़ासिमअली के नाम से भी परिचित हैं। उनके अधःपतन के

बाद जिसे मसनद पर बैठने का अधिकार मिला, वह स्वाधीनभाव से शासन-दण्ड चलाने में समर्थ नहीं हुआ, इसीलिए कहता हूँ कि कासिमअली का इतिहास ही बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के मुसलमान शासन का अन्तिम चित्रपट है।

पलासी-युद्ध के साथ ही मुसलमान शासन-शक्ति की जड़ उखड़नी शुरू हुई। अंग्रेज सेनापति के मीरजाफ़र को मसनद पर बैठाकर 'नजर' देते और बंगाल, बिहार-उड़ीसा का 'सूबेदार' कहकर यथारीति अभिवादन करते हुए देखकर भी, लोगों को समझते देर न लगी कि मीरजाफ़र केवल नाम के लिए नवाब हैं, क्लाइव और उसके साथी ही वस्तुतः कर्त्ता-धर्ता एवं राज्य के भाग्य-विधाता हैं। बाद के अंग्रेज इतिहास-लेखकों ने लिखा है—"हमने पलासी-युद्ध में बाहुबल से बंगाल जीतकर भारतवर्ष में बृटिश-साम्राज्य की नींव डाली।" किन्तु सच पूछा जाय तो गुप्त संधि-पत्र ही हमारे पराभव और अंग्रेजों के साम्राज्य-संस्थापन का प्रधान कारण था। बाहु-बल का चमत्कार तो कहीं दीख नहीं पड़ता। अंग्रेजों के साथ षड्यंत्र करने के समय भी लोभान्ध मीरजाफ़र ने प्रकाश्य और गुप्त भाव से उन्हें जो आशातिरिक्त पुरस्कार देने का वचन दिया था, वही समय के फेर से मुसलमान शासन-शक्ति को शिथिल करके बृटिश साम्राज्य-विस्तार का कारण हो उठा। अज्ञान से अपने ही हाथों विनाश का बीज बोया गया।

सर्वस्व समर्पण करके भी मीरजाफ़र ऋण से छुटकारा न पा सके, उलटे सब-कुछ अंग्रेजों के चरणों में सौंप देने के कारण विप्लवमय राज्य का शासन करना भी उनके लिए असंभव हो

गया ! अवसर आया देख जब चतुर क्लाइव ने प्रधान-प्रधान मंत्रियों को अपनी ओर मिला लिया, तो मीरजाफ़र के हृदय से राज्य-शासन की संभावना तिरोहित होने लगी। १ इस विवाद में अग्रसर होने के लिए अपेक्षित साहस और अर्थबल ज्यों-ज्यों क्षीण होने लगा, मीरजाफ़र के राज्याभिनय का उत्कट उच्चाभिलाषा भी त्यों-त्यों विषादपूर्ण करुण-क्रन्दन के रूप में बदलने लगी। घड़ा थोड़ी ही दिनों में मुँह को आ गया !

कलकत्ता के अंग्रेज व्यापारी मुफ़्त का विपुल धन पाकर भी सन्तुष्ट नहीं हुए, उन्होंने जल-थल में अपने प्रबल आतंक के भरोसे स्वाधीन वाणिज्य-विस्तार के नये-नये रास्ते निकालकर दरिद्र भारतीयों के पेट का अन्न छीनना शुरू कर दिया। नवाब मुरशिदकुलीखाँ के समय में जो इच्छा सफल न हो सकी थी, और सिराजुद्दौला के समय में भी चेष्टा करके अंग्रेज बनिये जिसके लिए अपमानित हुए थे, इस समय अवसर पाकर उसी-को सफल करने के लिए कम्पनी का झण्डा उड़ाकर सबने ही बिना 'कर' दिये व्यापार करना आरंभ किया। २ शर्त्तनामे के अनुसार इस प्रकार का अन्तःवाणिज्य अंग्रेजों के लिए निषिद्ध था, इस प्रकार के वाणिज्य में हस्तक्षेप करने के साथ ही क़ानूनन वे रोके जा सकते थे। किन्तु रोकने की शक्ति और साहस देश में नहीं रह गया था, अतएव चारो ओर प्रबल विद्रोहाग्नि धधक

1 *We were necessitated to strengthen ourselves by forming a party in his own Court to be a continual check upon him ; a matter by no means difficult in a country where loyalty and gratitude are virtues almost unknown.*—SCRAFTON.

2 *As it is the nature of man to err, with great changes of fortune, many, not content with the undisputed advantages accruing from the revolution, immediately began to trade in salt and other articles which had hitherto been prohibited to all Europeans.*—
Orme, vol. II. 189

उठी। मुसलमानों की शासन-शक्ति चूर हो गई है, यह समझते किसी को देर न लगी !

जिन लोगों के बाहु-बल और शासन-कौशल पर भरोसा करके मुसलमान इतने दिनों तक बंगाल का शासन करते आये थे, वे मीरजाफ़र पर विश्वास न करके अपनी स्वार्थ-रक्षा के लिए व्याकुल हो उठे। कभी बाहु-बल से, कभी छल-कौशल से और कभी आँखें दिखाकर उनमें से कितने ही नवाब की शासन-क्षमता अस्वीकार करने लगे। पुर्निया शत्रु-संकुल; बिहार विद्रोहोन्मुख; राजधानी हाहाकारपूर्ण, राजकोष धन-रत्नहीन; शाहज़ादा सिंहासन पर आक्रमण करने को तैयार — एक साथ ही इन सब अदृष्ट विडम्बनाओं के प्रबल आक्रमण ने मीरजाफ़र को उत्तरोत्तर अंग्रेजों का क्रीतदास बना दिया। बेचारा गले की फाँसी छुड़ा न सका। प्रत्येक घटना ने एक के बाद एक आक्रमण करके उसके पैरों को जकड़ दिया और इस प्रकार वह हिलने-डुलने योग्य भी न रह गया। राजमुकुट विडम्बना दीखने लगा; प्रकृत शासन-क्षमता की असमर्थता के कारण उपजी हुई चिन्ता के मारे बाल पककर पीले पड़ गये। जिन लोगों ने मीरजाफ़र के विश्वासघात-मय गुप्त षड्यंत्र में प्रधान रूप से सहायता की थी, उनमें से भी कोई-कोई सामने ही अपमान और घृणा दिखाने लगे।

अपनी भूल समझने में मीरजाफ़र को देर न लगी। गुप्तरूप से अंग्रेज 'बन्धुओं' का यह स्नेह-बंधन तोड़ने का आयोजन भी किया, किन्तु वह सफल न हो सका। एडमिरल वाटसन कुछ सज्जन थे; उनकी अकालमृत्यु हो जाने के बाद क्लाइव ने मीरजाफ़र

की घोर निन्दा से भरे हुए पत्र विलायत भेजने शुरू किये। इसी समय जावा के डच लोगों ने विद्रोह करने के लिए जहाज़ लेकर कलकत्ते की ओर प्रस्थान किया। अंग्रेजों ने समझा कि स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए मीरजाफ़र ने ही यह कुटिल कौशल किया है।[1] डचों का आक्रमण सफल नहीं हुआ किन्तु बेचारे मीरजाफ़र को उनके बदले प्रायश्चित्त करना पड़ा। उन्होंने एक हाथ से आँसू पोंछकर और दूसरे हाथ से क्लाइव के नाम एक बहुमूल्य जागीर का दान-पत्र लिखकर किसी प्रकार सिंहासन की रक्षा की।[2] इसके थोड़े ही दिन बाद वज्राघात से प्रियपुत्र मीरन की अकस्मात् मृत्यु हुई।

'मुर्शिदाबाद काहिनी' नामक बंगला पुस्तक के लेखक ने लिखा है—"वज्राघात से मीरन की मृत्यु हुई, इसे कितने ही लोग सन्देह-जनक मानते हैं।" इस जनरव का मूल क्या है, यह निस्सन्देह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। सिराजुद्दौला की नाईं मीरन भी उच्छृंखल युवक था; पिता के राज्याधिकार पाने के पश्चात् अपनेको मसनद का उत्तराधिकारी समझकर वह और भी दुर्वृत्त एवं निष्ठुर हो गया। लोगों का कथन है कि ढाका में उसीके आदेश से नौका के साथ डुबाई जाती हुई घसोटी और अमीना दोनों बेगमों ने वज्रघात द्वारा उसकी मृत्यु होने का अभिशाप दिया था. इसीलिए ऐसी घटना हुई। मीरन की इस प्रकार की मृत्यु में जो लोग सन्देह करते हैं, वे अपना कोई

1 Malleson's Decisiue Battles of India.

2 The complicity of Meer Jaffir in (the) Dutch Exepedition, was beyond all doubt. Indeed it might be conjectured that Clive got his JAKHIRA, not bacause he had defeated Shajada, but because Meer Jaffir was in mortal terror, lest Clive should punish him for his intrigues with the Dutch.—EARLY RECORDS OF BRITISH INDIA, P. 226.

विश्वस्त मत प्रकाश नहीं करते। उस समय के प्रसिद्ध इतिहास-लेखक गुलामहुसेन ने तो बज्राघात से ही मृत्यु होने की बात लिखी है। राजमहल में इस अशान्त मुसलमान युवक को समाधि अब भी देखी जा सकती है।

मीरन की मृत्यु बंगाल के इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना है। इसी समय से बंगाल के इतिहास में एक नये विप्लव का सूत्रपात हुआ। मीरन की मृत्यु के बाद शोक-संतप्त वृद्ध नवाब को प्रबोध देने वाला कोई नहीं रह गया। जिन लोगों ने परिश्रम करके मीरजाफ़र को गद्दी पर बैठाया था, उनमें से भी कितने ही देश-देशान्तरों को चले गये थे और कितने ही घर बैठे विलायत के इन विस्मयापन्न गोरे बनियों की कुतूहलोद्दीपक कहानी सुनाते हुए पलासी-युद्ध की अलौकिक वीर कहानी के वर्णन-लालित्य से अपने बन्धुओं का मनोरंजन करते थे।

इस समय जिन लोगों को कलकत्ते के अंग्रेजी दरबार में सदस्य का आसन मिला था, उनमें अधिकांश 'अर्थलोभी बन्धु' थे। वे अपना पेट भरने की आशा से मीरजाफ़र के अधःपतन की चेष्टा करने लगे। १७६० ई० की ८ वीं फ़रवरी को क्लाइव के विलायत चले जाने के कारण, कुछ दिन के लिए हालवेल साहब सभापति हुए। उस समय पीटर आमियट (Peter Amyatt), मेजर केलाड (Cailaud), समनर (Sumner) और मेगुयर (Macguire) सदस्य हुए। *

7 Governor Clive departing for Europe, the 8th of February, 1763, Mr. Holwel succeeded by his rank to the government; established committee en-rusted with the conduct of all political occurrance with the Government consisted of the President, Peter Amyatt Esqr., Major Callaud, W. B. Sumner Esqr, and W. Macguire Esqr.—INDIAN TRACTS, P. 22.

थोड़े दिनों के लिए अंग्रेजी दरबार का सभापति होकर हालवेल, गवर्नर हालवेल के नाम से, इतिहास में प्रसिद्ध हो गया है। उतने थोड़े समय के भीतर ही अपने कृत्य से वह अपनेको चिर-स्मरणीय बना गया है। वह पहले चिकित्सक बनकर अर्थोपार्जन के निमित्त भारतवर्ष आया था; पीछे इस व्यवसाय में सफलता की आशा न देख प्रयत्न करके कलकत्ते का 'कलेक्टर' (अर्थात् जमींदार) बन गया इस पद पर रहने के समय धन और पद-गौरव दोनों की कमी नहीं थी, वरन् अपच हो गया था। सिराजुद्दौला ने जब कलकत्ते पर चढ़ाई करके क़िले को घेर लिया तो कलकत्ते के तात्कालिक अंग्रेज गवर्नर ड्रेक साहब और प्रधान-प्रधान सेनानायकगण प्राण लेकर भाग गये। उस समय कुछ चारा न देख दुर्गवासियों ने हालवेल साहब को ही अपना सेनापति चुना। हालवेल दुर्ग छोड़कर भागा नहीं, किन्तु दो दिन तक घोर परिश्रम करके भी जब रक्षा का कोई उपाय नहीं देखा तो अन्त में निरुपाय होकर आत्मसमर्पण करना ही पड़ा। 'काल-कोठरी' से छुटकारा पाकर भी बेचारे को दण्ड-स्वरूप मुर्शिदाबाद के जेलखाने में बहुत दिनों तक क्लेश भोगना पड़ा। छुटकारा पाने पर अपनी कष्ट-कथाओं में खूब नमक-मिर्च लगाकर अंग्रेजों के सम्मुख उपस्थित करने के कारण कुछ दिनों के लिए वह 'दस में एक' हो गया। थोड़े ही दिनों बाद उसकी 'कीर्ति-कहानी' का परिचय पाकर विलायत के कम्पनी-नियन्ताओं ने जब उसपर सख्ती आरंभ की, तो अपनी इज्जत बचाने के लिए इस्तीफ़ा देकर बेचारा स्वदेश को लौट गया। अपने त्यागपत्र में उसने लिखा था—"कम्पनी के स्वार्थ और संग्राम की रक्षा के लिए मैंने क्या

नहीं किया ? किन्तु, कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद पाने के बदले, उलटे मुझे अपवाद ही अपवाद प्राप्त हुआ उपकार का ऐसा फल पाकर अब मुझे इस्तीफा देना पड़ रहा है !" जिसकी लेखनी से निकली हुई कालकोठरी-कहानी ने इतिहास-लेखकों का हृदय विचलित कर दिया, उसीकी लेखनी से निकला हुआ यह करुण विलाप उनको सहानुभूति और समवेदना प्राप्त करने में भी समर्थ न हो सका !१

हालवेल, औरों की भाँति अपने को नवाब का बन्धु कहकर धोखा नहीं देता था। वरन् समय-समय पर उन (नवाब) की यथेष्ट निन्दा करता था और अवसर पाते ही नवाब की शासन-क्षमता के प्रति आन्तरिक अवज्ञा प्रकाश करने में भी त्रुटि न करता था। क्लाइव के इंग्लैण्ड लौट जाने पर कलकत्ते के अंग्रेजी दरबार के प्रधान का पद प्राप्त करते ही उसके सारे गुप्त-संकल्प जागृत हो उठे। कालकोठरी' की करुण कहानी की सृष्टि करके सभ्य जगत् को रुलाने के कारण, मीरजाफ़र से पाये हुए धन-भाण्डार की बाँट के समय उसे एक लाख से अधिक नहीं मिला था। हालवेल उस समय निम्न सदस्य मात्र था अतएव निरुपाय होकर अपमान की व्यथा चुपचाप विष की घूँट की नाईं पी गया। वही हालवेल इस समय अंग्रेजी दरबार का सर्वस्व होकर यदि प्रबल प्रतिहिंसा के तीव्र तेज से जल उठा तो इसमें क्या आश्चर्य ? हालवेल की

1 The many unmerited and consequently unjust marks of resentment which I have lately recieved from the present Court of Directors, will not suffer me longer to hold a service, in the cause of which, my steady and unwearied zeal for the honor and interest of the Company, might have expected a more equitacle return.—Holwell's letter to the President, 29 September 1760. (INDIA TRACTS, P. 377--378).

इस प्रज्वलित विद्वेषाग्नि में अभागा मीरजाफ़र पतंग के समान पतित हुआ !

नवाब को किसी प्रकार पदच्युत करके मुर्शिदाबाद का राजसिंहासन फिर अधिक मूल्य में बेचकर अपनी थैली भरना ही जिसका लक्ष्य हो उठा, उसको मीरजाफ़र पर कलंक लगाकर सिंहासन से हटा देने का समर्थन करने के लिए कहानी गढ़ने में क्या कठिनाई हो सकती थी? जिसने अपने हाथ से 'कालकोठरी-हत्या' का अलौकिक इतिहास रचकर समाज के सामने उपस्थित किया था, समय पाकर वही अपने अभ्यस्त हाथ से फिर 'इतिहास' लिखने बैठा !

अपने सुललित वचन-विन्यास-कौशल से, मानो आँसू बहाते हुए, हालवेल ने पुनः मीरजाफ़र के विरुद्ध एक हत्या-कहानी गढ़ डाली ! उसका नाम 'ढाका की हत्या-कहानी' है। अर्थ-संग्रह का नया-नया उपाय निकालने और उसके लिए नीति की मर्यादा का उल्लंघन करने में हालवेल कैसा सिद्ध था, इसे तात्कालिक अंग्रेजों ने अनेक स्थानों पर साफ़-साफ लिखा है। १

कालकोठरी-हत्या की सचाई-झुठाई के सम्बन्ध में अभी तक तर्क-वितर्क का अन्त नहीं हुआ। इतिहास का सरल सिद्धान्त सर्वत्र मान लेने की उदारता आज भी लोगों में नहीं दिखाई पड़ती। कलकत्ता के राजपथ की बग़ल में 'कालकोठरी हत्या' का स्मृति-

1 Being blest with a genius, uncommonly fertile in expedients for RAISING MONEY and further unclogged by those silly notions of punctilion, which often stand in the way between some people and fortune, he had projected and put in practice several INFERIOR MANEUVERS ; but CHEFE D' SEUVRE, this master scheme, though formed almost as soon as he came to power, time did not allow him the honor of executing.—REFLECTION ON THE PRESENT STATE OF OUR EAST INDIAN AFFAIRS, P. 39.

स्तंभ अब भी खड़ा है। इस 'कालकोठरी-हत्या-कहानी' को झूठा सिद्ध कर देने पर भी अभीतक कितनों ही ने विस्मय से, कुछ ने विराग से, और कुछ ने द्वेष के कारण, पूरी तरह उसकी झुठाई पर विश्वास नहीं किया है। किन्तु हालवेल की यह 'ढाका हत्या-कहानी' बिलकुल झूठी और स्वकल्पित है, इसमें किसी को कुछ सन्देह नहीं है। हालवेल के स्वदेशवासी राजकर्मचारियों ने ही लिखा है—"वह सर्वथा मिथ्या है; उसमें लेशमात्र सत्य नहीं।" १

हालवेल केवल कहानी गढ़कर ही चुप नहीं हुआ। मीर-जाफ़र को गद्दी से उतारकर किसको उसपर बैठाया जायगा और इस भाग्य-परिवर्तन के लिए कम्पनी और उसके सदस्यों के पेट में कितना धन जायगा, इत्यादि सारी बातें भी उसने स्थिर कर लीं। क्लाइव के इंग्लैण्ड लौट जाने पर वांसिटर्ट (Vansittart) गवर्नर नियुक्त हुआ। नये गवर्नर के आगमन की प्रतीक्षा में, अपना संकल्प पूरा करने का साहस न करके, हालवेल सतृष्ण नयनों से आशा-पथ की ओर देखता रहा। २ वांसिटर्ट कमजोर प्रकृति का पर बड़ा सज्जन और ईमानदार पुरुष था, किन्तु उसके दुर्भाग्य से उसके साथी बेईमान थे, अतएव, वह भी उनकी चाल में पड़ गया।

1 In justice to the memory of the late Nabob Meer Jaffier, we think it incumbent on us to acquaint you that the horrible massacre with which he is charged by M. Holwell..... are CRUEL ASPERSIONs on the character of that Prince, WHICH HAVE NOT THE LEAST FOUNDATION IN TRUTH.--LETTER TO COURT, 30 th Sep. 1766. Supplement.

२ विन्सेण्ट स्मिथ ने लिखा है:—*"During Clive's absense the Company's affairs in Bengal were ill-managed by Mr. Vansittart, a weak but tolerbly honest man who had the misforteune to be surrounded by colleagues not at all honest."*

जो सौभाग्यशाली मुसलमान राज-कर्मचारी, इन कुटिल कौशलों से सिंहासन पाने की आशा में मस्तक ऊपर किये हुए, मीर जाफ़र के अधःपतन की प्रतीक्षा कर रहा था, वह उस (मीरजाफ़र) का जामाता था—उसी का नाम इतिहास-विख्यात मीरक़ासिम है !
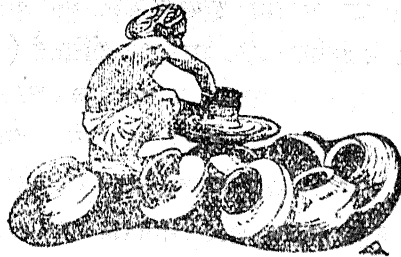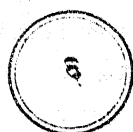
मूल्य-निरूपण

Admitted to the deliberations of the English councillors, Mir Kasim, feeling his way carefully, soon came to the conclusion that *there was not one amongst them who could not be bought.* His father-in-law had bought their predecessors, he could ascertain their price, and buy them.—*Col, Malleson.*

बंगालियों की चरित्रहीनता से लाभ उठाकर बृटिश वनियों की गुप्त मंत्रणा द्वारा सिराजुद्दौला को पराजित करने के उपरान्त, चारों ओर से बंगाल पर सतृष्ण दृष्टियों का सूत्रपात हुआ। फरासीसी लोग प्रतिहिंसा-वाड़व अशान्त

हृदय से अंग्रेजों को निकाल बाहर करने की चेष्टा में लग गये; शाहजादा पितृ-सिंहासन से वंचित होकर साम्राज्य-लालायित अतृप्त अन्तःकरण में बंगाल-बिहार-उड़ीसा की सूबेदारी हथियाने की आशा से सेना संग्रह करने में व्यस्त हो गया; मरहठों की अश्वसेना ग्राम-नगर विध्वंस करने का अवसर ढूँढ रही है, ऐसी अफवाह जनता में जोरों से फैल गई।

बृटिश वणिक मीरजाफर की रक्षा के लिए संगीन लेकर प्रासाद, शिविर एवं राजदुर्ग में मौजूद थे। उनके कर्मचारीवर्ग कम्पनी के वाणिज्य-व्यवसाय को शिथिल कर अपना पेट भरने की आशा से सौदागरी करने के लिए लालायित थे। मीरजाफर को हाथ में रखकर उनके नाम पर बंगाल-बिहार-उड़ीसा के भाग्य-निर्णय में सर्वस्व कर्ता-धर्ता के पद पर आरूढ़ होने की आशा से क्लाइव दुर्ग-निर्माण में शिथिलता कर रहा था। इन सब अवस्थाओं की जाँच कर विलायत की वाणिक-समिति सिहर उठी। उन लोगों का अधिकांश मूलधन दुर्ग-कार्य में नष्ट हो गया। यह उन लोगों का लक्ष्य नहीं था।[1] उन लोगों ने क्लाइव को बार-बार सतर्क करने में त्रुटि नहीं की। परन्तु उन लोगों के व्याकुल होने से क्या होता? बहुत दूर रहने के कारण बंगाल के अंग्रेजी दरबार के कार्य-प्रवाह को रोकने में वे लोग समर्थ नहीं हुए। कम्पनी के कर्मचारीगण राज्याधिकार प्राप्त करने की उत्तेजना के कारण वाणिज्य के रूखे कार्य को बढ़ाने में पहले की भाँति परिश्रम करने के लिए तैयार नहीं हुए।

इस नये नीति-परिवर्तन का अवश्यंभावी अशुभ फल

1 Long's Selections from the Records of the Government of India.

फलना आरंभ हो गया। हालवेल ने जिस समय अंग्रेज़ी दरबार का शासन-भार ग्रहण किया, उस समय कम्पनी के खज़ाने में रुपयों की बड़ी कमी थी। वे लोग व्याकुल-हृदय से धन-कुबेर जगतसेठ के पास ऋण के लिए प्रार्थना करने को बाध्य हुए। वारेन हेस्टिंग्स के द्वारा यह प्रार्थना जगतसेठ के निकट उपस्थित की गई पर वे ऋण देने को राज़ी नहीं हुए। यह संवाद पाकर गवर्नर हालवेल ने भविष्य में सेठ-वंश का सर्वनाश करने की धमकी दी, पर ऋण न पा सके। हालवेल ने वारेन हेस्टिंग्स को लिख भेजा-"ऐसा समय भी आ सकता है जबकि सेठजी को कम्पनी का आश्रय लेने के लिए लालायित होना पड़ेगा। उस दिन उन्हें शैतान के हाथ अपने को समर्पित करके मुसीबत झेलनी पड़ेगी। यह बात उन्हें अच्छी तरह से समझा दीजिएगा!"[1] इस समय कम्पनी की आर्थिक अवस्था ऐसी खराब होगई थी कि मीरक़ासिम ने समझा—यही अवसर है!

पहले राज-विप्लव में शत्रु-मित्र सभी की आँखें खुल गई थीं। बंगालियों की दुर्बलता का मूल क्या है, इसे अंग्रेज लोग समझ गये थे। अंग्रेज़ों की दुर्बलता का मूल क्या है, इसे भी बंगालियों ने समझ लिया था। इस प्रकार मैदान में किसी को किसी प्रकार की हिचकिचाहट करने का कोई कारण नहीं रह गया। मीरकासिम जानते थे, अंग्रेज कर्मचारी रुपयों के दास हैं, मूल्य-निर्णय करने पर उन सभों को खरीद लेना संभव है। मीरजाफर ने एक दल को मूल्य देकर खरीदा था।

1 *A time may come, when they may stand in need of the Company's protection, in which case they may be assured THEY SHALL BE LEFT TO SATAN to be buffeted.—LETTER form J. Z.* Holwell to Mr. Warren Hastings, dated Fort William May 6, 1760.*

जामाता मीरकासिम एक और दल का मूल्य निर्णय कर उसे ख़रीदने की चेष्टा में प्रवृत्त हुए। इस प्रकार स्वार्थ के चरणतल में गुप्त संधिपत्र की धर्म-प्रतिज्ञा को बलिदान कर अंग्रेज और बंगाली पुनः गुप्त-मंत्रणा में लिप्त हुए।

मीरजाफर के विरुद्ध जाल बिछाया गया। किस कौशल से मीरजाफर का सिंहासन मीरकासिम के हाथ आ गया, यह अतिशय आश्चर्य की घटना है। जिन सब घटना चक्रों में फँसकर मीरजाफर सिंहासनच्युत हुए थे, उनका ऐतिहासिक विश्लेषण करने पर अनेक रहस्य प्रकट होते हैं।

मीरकासिम अंग्रेजों का विश्वास नहीं करते थे। वह भी सिराजुद्दौला की तरह अंग्रेजों को घृणा करने की शिक्षा से शिक्षित हुए थे। सिराजुद्दौला देश का राजा था। वह हृदय के आवेग से अधीर होकर शैशव काल में ही अंग्रेजों से द्वेष करने लगा था। मीरकासिम केवल राज-कर्मचारी थे। उन्हें अनुराग-विराग करने का कोई प्रयोजन नहीं था। अतः अंग्रेज लोग उन्हें अपना मित्र ही समझते थे, । वह भी स्वार्थ-सिद्धि की आशा से अंग्रेजों के इस भ्रम को दूर नहीं करते थे। स्वयं कर्नल क्लाइव ने भी मीरकासिम को अंग्रेज़ों का अकृत्रिम मित्र समझ उनकी पदोन्नति के लिए सिफारिश का पत्र स्वदेश भेजा था। यही मीरकासिम की पदोन्नति का प्रथम सोपान था!

क्लाइव की विलायत-यात्रा के बाद, सेनापति के पद पर अभिषिक्त होकर, केलड गवर्नर हालवेल के प्रधान सदस्य हुए थे। इस परिवर्तन के तीन महीने के भीतर ही मीरकासिम की आशा के सफल होने का सूत्र-पात हुआ। गवर्नर हालवेल ने ५ मई

को सेनापति केलड को लिखा—"मीरकासिम के लिए कर्नल क्लाइव ने जो अनुरोध किया था वह भी लिखे देता हूँ। इस सम्बन्ध में नवाब को भी पत्र लिखा है। जैसा समय है, उससे राजा रामनारायण की प्रभुभक्ति और कार्य-दक्षता में संदेह करने का कारण मालूम होता है। नवाब शायद शीघ्र ही उन्हें और उनके अधीनस्थ अन्य राजकर्मचारियों को पदच्युत करेंगे। हमारे साथ इस विषय में आपका मतभेद न हो तो, आप कासिम अली की पदोन्नति की चेष्टा करें, इसमें मैं विशेष अनुगृहीत हूँगा।"

इस पत्र में कासिमअली की पदोन्नति के लिए हालवेल की व्यग्रता देखकर, उसका मूल कारण जानने का कुतूहल किसे न होगा ? उन दिनों प्रतिभा के प्रति आदर दिखलाने के लिए अंग्रेज किसीको पदोन्नति की चेष्टा नहीं करते थे। उस समय स्वार्थ ही सब कार्यों का प्रधान प्रवर्त्तक था। गवर्नर होने के बाद ही संयोग-वश हालवेल की मीरकासिम से भेंट हुई। मीरकासिम उस समय मरहठों की गति रोकने के उद्देश से ससैन्य मेदिनीपुर प्रान्त में गये थे। हालवेल से साक्षात् कर उन्होंने उनकी सहायता से पटना की नवाबी हासिल करने की चेष्टा की थी और चेष्टा के सफल होने पर हालवेल को यथासाध्य पुरस्कार प्रदान करने का प्रलोभन देने में भी त्रुटि नहीं की थी। केवल पटना की नवाबी पाकर ही सन्तोष करने का उनका विचार नहीं था। कारण, चतुर मीरकासिम ने हालवेल के अभिप्राय से अनुमान कर लिया था कि अंग्रेज शीघ्र ही अकर्मण्य मीरजाफर को पदच्युत कर देंगे एवं शाहजादा को दिल्ली के सिंहासन पर बैठाकर, उसके फर-

मान की दोहाई दे अन्य किसी को भी नाममात्र का नवाब बनाकर स्वयं बंगाल–बिहार–उड़ीसा की नवाबी करेंगे। यह बात कासिमअली को अच्छी न लगी, इसीसे वह उसे दूर करने के लिए व्याकुल हो उठे। इस समय पटना की नवाबी पा लेने पर, उनको अपने कार्यक्रम में सुविधा होने क संभावना थी। क़ासिमअली पहले इसके लिए हालवेल की शरणागत हुए। अंग्रेजों के मीरजाफर को पदच्युत करने की बात सुनकर क़ासिमअली की इच्छा और भी बलवती हो उठी। उन्होंने हालवेल के मूल्य का निर्णय कर हालवेल की सहायता से ही मीरजाफर को पदच्युत करने का आयोजन आरंभ किया।

इस प्रकार के गुरुतर कार्य में हस्तक्षेप करने पर कम्पनी एवं कम्पनी के कर्मचारी वर्ग के लाभ की संभावना थी। मीरजाफर की भांति अकर्मण्य अफीमची नवाब को पदच्युत करने का प्रस्ताव उपस्थित करने पर अंग्रेजी दरबार के सदस्यगण उसमें सम्मत होंगे कि नहीं, इसका निर्णय करना ही हालवेल का प्रधान कार्य था! सदस्यों की सम्मति प्राप्त कर लेने पर, मीरकासिम की सहायता से बिना खून बहाये, राज्य-विप्लव करने में विशेष कठिनता न होगी, यह समझने में हालवेल को विलम्ब नहीं हुआ; किन्तु इस कार्य में अग्रसर होने के पहले अंग्रेज सेनापति कर्नल केलड को अपने पक्ष में मिला लेना आवश्यक था। हालवेल ने इसके लिए केलड को लिखा—"दो दिन के लिए एक बार कलकत्ता आइए; आपके साथ हमलोगों को विशेष परामर्श करने की आवश्यकता है। शाहजादा न्यायसंगत सम्राट् हैं। यह देश उन्हींका है। फिर भी उनके विरुद्ध अस्त्र धारण किया गया है। किसीके

लिए—मीरजाफर के लिए? उनकी शासन-नीति की तो जितनी ही आलोचना करता हूँ, उतनी ही आपके पहले आक्षेप की सत्यता का अनुभव करता हूँ। आपने सत्य ही कहा था—"मीरजाफ़र की शासन-नीति ऊपर से नीचे तक खोखली है; उसका अधःपतन, उसके वंश का अधःपतन अनिवार्य है। उसकी सहायता करके क्या होगा?"

पर हालवेल का उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ। केलड हालही में विलायत से भारतवर्ष आये थे। भारतवर्ष की कूटनीति उस समय भी सेनापात की शिक्षा-दीक्षा विफल करने में समर्थ नहीं हुई थी। उन्होंने हालवेल के पत्र को युक्तिसंगत नहीं समझा वरन् सरल भाव का पत्र समझकर सरल भाव से ही उत्तर भेज दिया—

"आपका २४ तारीख का पत्र पाकर मैं अनुगृहीत हुआ। कलकत्ता आने का प्रयोजन क्या है? हम लोग इस समय जिसके पक्ष का समर्थन कर रहे हैं वह अच्छा आदमी नहीं है, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु उसकी अपेक्षा अच्छा आदमी मिलेगा कहाँ? उसके लिए चेष्टा करने पर सम्भव है और कठिनाइयों में फँसना पड़े। देश में शांति स्थापित करने में ही हम लोगों का लाभ है; उसके द्वारा बाणिज्य की श्रीवृद्धि होगी! हम लोग राज-विप्लव का आह्वान कर एवं उसे घसीट लाकर पुनः अशान्ति को क्यों पैदा करें? अशान्ति मचाये बिना राज-विप्लव करना असम्भव है। यदि आप ही आप राज-विप्लव संगठित होने का सूत्र-पात हो जाय, तो उसे नीरव होकर सह लेना भी हम लोगों के पक्ष में बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं होगा एक आदमी को पदच्युत कर और एक आदमी को मसनद पर बैठाने से लाभ क्या है? हो

सकता है कि वह भी ऐसा ही अकर्मण्य शासन-कर्ता निकले। हो सकता है, वह भी इसी प्रकार कुक्रियासक्त हो। किन्तु यदि वह मीरजाफर को भांति निर्बोध और कापुरुष न हो, तो उसे अपनी इच्छानुसार शासन करने देना हम लोगों के पक्ष में बड़ा कठिन होगा। मीरजाफर ने ही डच लोगों को बुलाया था, यह निस्सन्दिग्ध रूप से प्रमाणित नहीं होता और मीरजाफर पर सन्देह करने का कारण ही क्या रह गया है? उसे हम लोगों की इच्छा के अनुसार चलाने का आयोजन करना ही होगा। शाहजादा के लिए मैं भी विशेष व्यथित हूँ। किन्तु यह सब करने का इस वक्त समय नहीं है। मराठे और जाट अयोध्या के वजीर के साथ मिल गये हैं; अबदाली (अहमदशाह) रण में विजय प्राप्त करके भी, सच पूछिए तो, उन लोगों को परास्त नहीं कर सका। मुझे मालूम होता है, पठानों ही को भारतवर्ष से भागना पड़ेगा।" १

जो लोग निःस्वार्थ होकर सरल भाव से इस समय की घटनाओं की आलोचना करेंगे, वे केलड के इस पत्र की प्रत्येक बात

1 Bad as the man may be, whose cause we now support, I cannot be of opinion that we can get rid of him for a better, without running the risk of much greater Inconveniences attending on such a change.......No new revolution can take place without a certainty of troubles.........It is very possible we may raise a man to the dignity, just as unfit to govern, as little to be depended upon and in short as great a rogue as our Nobab, but perhaps not so great a coward, nor so great a fool and of consequence much more difficult to manage......As to the breach of his treaty by Introducing the Dutch last year; that was never so clearly proved, I believe, but as to admit of some doubt--EXTRACTS from the Letter from John Caillaud to the Honble J. Z. Holwell Esq. President and Gorenor of Fort William, dated Camp at Bal-Kissens Gardens, 29th May, 1760.

यह लम्बा पत्र अंशतः उद्धृत और भाव-मात्र अनुवादित है। मूल पत्र *First Report 1712* एवं *India Tracts* नामक ग्रंथ में मिलता है।

स्वीकार करने को बाध्य होंगे। कम्पनी को केलड का ही परामर्श ग्रहण करना उचित था; उससे वाणिज्य की श्रीवृद्धि होती, विश्वास-घात की कलंक-कालिमा से इतिहास न कलंकित होता; मीर-कासिम भी अंग्रेजों को नष्ट करने के प्रयत्न करने का अवसर न पाते। परन्तु केलड का यह मत शीघ्र ही बदल गया। हालवेल का और एक पत्र पाकर वह अपने पूर्वोक्त सरल मत के विरुद्ध हालवेल की ओर कुछ-कुछ खिंच गये। हालवेल के लिखे हुए इस दूसरे पत्र का पता नहीं लगता। किस तर्क से उन्होंने केलड को अपने पक्ष में खींच लिया था, यह भी आज ज्ञात नहीं है। केवल केलड के प्रत्युत्तर में उसका कुछ आभास मिलता है, जो इस प्रकार है—

"आपका २५ ता० का लिखा पत्र मिला। आपने जो प्रस्ताव किया है, उसके अनुसार कार्य करने में कोई आपत्ति नहीं है—हेस्टिंग्स एक बार वृद्ध नवाब को समझा कर देखें। मैं भी छोटे नवाब के साथ (मीरन) बातें करके देखूँगा। परन्तु देखिए, फिल-हाल हम लोग पटना नहीं जा सकेंगे। वर्षाकाल में धीरे धीरे अच्छी तरह सोच-समझकर निरापद पथ से यात्रा करनी होगी। उस समय हम लोग विशेष विचार करके कर्त्तव्य का निर्णय कर सकेंगे। जिससे हम लोगों का गौरव नष्ट न हो, हम लोगों के देश और मालिकों का सब प्रकार से लाभ हो, उसी उपाय का अवलंबन करना उचित है। परन्तु मीरजाफ़र पर एकबारगी यह प्रकट कर देना उचित नहीं होगा।"

इस प्रत्युत्तर के पढ़ने से स्पष्ट ही मालूम होता है कि हाल-वेल के पत्र से कर्नल केलड के मन में मीरजाफ़र के सम्बन्ध

में नाना प्रकार की आशंकायें उत्पन्न हो गई थीं। वह साधारण भाव से हालवेल के प्रस्ताव से सहमत होने पर भी आत्मगौरव नष्ट कर किसी कार्य में हस्तक्षेप करने को तैयार नहीं थे। बाद को यह संकल्प भी नष्ट हो गया।

युवराज मीरन ने वैद्यराज राजवल्लभ को दीवान बनाया था। कायस्थ राजवल्लभ और उनके पिता महाराज दुर्लभराम मीरजाफ़र के अधःपतन-साधन में असफल हो क्लाइव की कृपा से भागकर कलकत्ता में समय बिता रहे थे। इसी समय सहसा मीरन की मृत्यु हो जाने से राज-विप्लव का सुयोग उपस्थित हुआ।

राजवल्लभ पटना की नवाबी प्राप्त करने की चेष्टा में लगा। दुर्लभराम शाहजादा का 'फ़रमान' लाकर अंग्रेजों को दीवानी दे स्वयं सेनानायक होने की मंत्रणा में लगे। वान्सिटार्ट ने कलकत्ता का गवर्नर होकर आने पर भी, यह सब झगड़ा सामने देख कुछ दिन हालवेल को ही सब कार्यों का भार दे रक्खा। मीरकासिम हालवेल के प्रेमपात्र हुए; उनके लिखे हुए अनेक पत्र हालवेल और गवर्नर को मिलने लगे जिनमें उन्होंने अंग्रेजों की कल्याण-कामना में शरीर, मन, वाणी से नियुक्त रहने की बातें बार-बार लिखी थीं। १

इस समय मुर्शिदाबाद की अवस्था बड़ी ही शोचनीय हो गई थी। पुत्र-शोक की तीव्र ताड़ना से मीरजाफ़र और भी अकर्मण्य हो गये थे। अंग्रेजों को संधि के अनुसार जो रुपया देना था, वह

1 In this period Mr. Holwell received frequent letters from Mir Cossim Ally Khan, containing the strongest professions and assurances in favour of the Company, If by our support, he was promoted to the succession of the Dewanee and other posts enjoyed by the late Chuta Nobob, his brother-in-law---INDIA TRACTS, P. 88.

दिया नहीं जा सका क्योंकि ढाका प्रदेश का राज—कर संगृहीत नहीं हुआ। अंग्रेजों के व्यापार-संबन्धी अत्याचार से शुल्क-विभाग की आय लुप्त हो रही थी; वेतन न पाकर सेना विद्रोही हो गई थी; इन सब दुर्दशाओं में पड़कर वृद्ध नवाब जामाता के ऊपर ही निर्भर रहने को बाध्य हुए। मीरकासिम ने समय देखकर हालवेल को उत्तेजित करने में त्रुटि नहीं की।

संकल्प-सिद्धि के लिए क़ासिमअली को कलकत्ता जाने की आवश्यकता हुई, परन्तु कलकत्ता जाने से वृद्ध नवाब के मन में सन्देह उत्पन्न हो सकता था। अतएव कोई उपाय निकालने का भार हालवेल के ऊपर पड़ा। अपनी उर्वर कल्पना के ही कारण हालवेल इतिहास में अमर हो गया है। उसने सरकारी पत्र-द्वारा नवाब को सूचित किया कि सामरिक परामर्श के लिए क़ासिम-अली को कलकत्ता आने की विशेष आवश्यकता है। उद्देश्य सिद्ध हो गया। मीरजाफ़र ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।[1]

कासिमअली कलकत्ता आये। कर्नल केलड भी कलकत्ता में उपस्थित हुए। अंग्रेजी सरकार का कर्तव्य क्या है, इसका निर्णय करने के लिए हालवेल ने एक दीर्घ मन्तव्य प्रस्तुत किया। खोजा पिट्रू के साथ कासिमअली का विशेष सौहार्द्र था; हालवेल ने उसीको कम्पनी के पक्ष का मध्यस्थ दलाल नियुक्त किया। कासिमअली के साथ बातचीत कर हालवेल ने सब ठोक-पीटकर देख लिया। फिर दरबार लगा।

1 These matters being debated in committee it was judged eligible to obtain permission for Kasim Ali Khan's paying a visit to Calcutta, a circumstance he himself intimated in a letter to the Governor and Mr. Holwell. The times gave good pretences for it....To gain this point, the Governor and Mr. Holwell wrote to the Subah with good success.—INDIA TRACTS. P. 89.

इस दरबार का पूरा विवरण मिलता है। इसमें सब सदस्य उपस्थित नहीं थे; सब लोगों को उपस्थित होने का अवसर भी नहीं दिया गया। जो लोग मन्त्रणा में नहीं थे, हालवेल ने उन लोगों को दरबार की बातें ज़रा भी नहीं जानने दीं। इसके लिए इंग्लैण्ड में इस दरबार के विरुद्ध अभियोग लगाया गया। महासभा में साक्षी देते समय मेजर कारनाक ने कहा था—"सब लोगों के उपस्थित रहने पर कभी इस प्रकार की विश्वास-घातकता का अभिनय न हो सकता।" हालवेल के कौशल से ही अंग्रेजों का नाम कलंकित हुआ। भव्य भारत का इतिहास मलीन हो गया। कलकत्ता के राजपथ के बगल में हालवेल की स्मृति बनाये रखने के लिए अन्धकूप (Blackhole) हत्या का जो संगमर्मर-निर्मित मन्दिर है, उसमें हालवेल की यह सब कीर्ति-कहानी चिरजीवी रहेगी। 'हालवेल कौन था ?'—भविष्य में लोग जिस समय यह बात जानने की आशा से इतिहास का उद्घाटन करेंगे उसी समय अन्धकूप (Blackhole)-हत्या की बात, ढाका की हत्या की बात, पलासी के युद्ध की बात, मीरजाफर के मुकुट-मोचन की बात, हालवेल के पद-त्याग की बात एवं उसके समकालिक सहयोगी अंग्रेजों की लेखनी से लिखित हालवेल की धन कमाने की बात जन-समाज में प्रकाशित हो जायगी।

१७६० ई० की १५ वीं सितम्बर को कलकत्ता में इस विख्यात गुप्त दरबार का अधिवेशन हुआ। उसमें वांसिटर्ट सभापति और कर्नल केलड, समनर, हालवेल एवं मेकग्वायर उपस्थित थे। इस दरबार की सब बातें व्यक्त नहीं हुईं; सभापति

महाशय ने मीरकासिम को अंग्रेजों के रुपये की कमी की बात सुनाकर सबको यह जताने की चेष्टा की कि अपनी आर्थिक दुरावस्था को दूर करने के लिए ही मीरकासिम से ❀ रुपयों की शर्त कराई जा रही है।

गुप्त समिति के सदस्यों ने अपने सामने दो रास्ते देखकर, मार्ग स्थिर करने का भार सभापति के ऊपर छोड़ दिया। दुर्लभराम से परामर्श करने का भार हालवेल पर पड़ा। उस रात को दोनों ही अपने-अपने कार्य को पूरा करने में लगे। हालवेल ने दुर्लभराम से भेंट की। वांसिटर्ट की भी मीरकासिम के साथ बातचीत हुई। इस गुप्त भेंट मुलाक़ात के समाप्त होने पर शाहजादा के साथ सन्धि करने का कलकत्ते के अंग्रेज दरबार का पूर्व संकल्प बदल गया। मीरकासिम का पक्ष लेना ही स्थिर हुआ। मीरकासिम सभी को यथायोग्य पुरस्कार देने को तैयार हो गये। सदस्यों ने पहले पुरस्कार स्वीकार करने में नाहीं-नूहीं

❀ इस दरबार का विवरण अविकल उद्धृत किया जाता है—

Fort William, Sept. 15th, 1760
At a Select Committee
Present
The Hon'ble Henry Vansittart, Esqr., President.
Colonel Cailaud.
Wm. Brightwell Sumner.
J. Zephaniah Holwell.
Willam Mac Guire Esqr.

Resolved unanimously, that the entering into an alliance with the Prince is a necessity and expedient measure. The president is accordingly desired to press Cassim Aly Khan on the subject of our expenses and our great distress for money, so as to draw from him some proposal of means for removing those difficulties by which probably we may be able to form a judgment, whether he might not be brought to join this negotiation, and in procuring the Nabab's consent.

की। किन्तु पीछे उत्तर के समय मीरकासिम की सम्मान-रक्षा के बहाने उसे ग्रहण करने को प्रस्तुत हो गये ।[१]
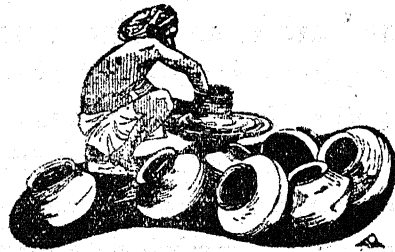
1 *Revolution in favor of Cassim, 1760.*

Mr. Sumner ...	...	*£ 28000*
,, Holwell ...	...	*£ 30000*
,, M'c Guire	...	*£ 20625*
,, Smith ...	...	*£ 15354*
Major York ...	...	*£ 15354*
General Caillaud	...	*£ 22916*
Mr. Vansittart	...	*£ 58333*
5000 G. Ms	...	*£ 8750*

मुकुट-मोचन

A tool, a cipher in the hands of the foreigners for whom he had betrayed his master, Mir Jafar was allowed to rule, never to govern: Well for him that he did not possess the power to dine into futurity and behold the representative of his name and office, an unhonored Pensioner of the People, he had called into subdue his country !

—Col. Malleson.

अँग्रेज, इतिहास में, स्वदेशभक्त कहलाकर प्रसिद्ध हैं। स्वदेश की स्वाधीनता की रक्षा और गौरव-वर्द्धन के लिए अकातरचित्त प्राण देकर वे इतिहास में अक्षय कीर्ति संचय कर गये हैं। अभागा मीरजाफर अपने स्वार्थ के लिए

देशद्रोह में लिप्त होकर अंग्रेज़ों की भाग्योन्नति में सहायक बनकर भी अंग्रेज़ों की श्रद्धा पाने में समर्थ नहीं हुआ। तब या अब किसी समय अंग्रेज़ मीरजाफर-जैसे देशद्रोहियों को आदर और श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देख सकते। यदि मीरजाफ़र स्वदेश-रक्षा के लिए अंग्रेज़ों से लड़ा होता, तो उस समय कर्तव्यवश वे भले ही उसकी अवहेलना करते, पर उनके हृदय में उसके लिए आदर अवश्य होता। देश-द्रोही मीरजाफ़र को घृणा करने के लिए वे स्वभाव से विवश थे। वे मीर-जाफ़र को नाममात्र के लिए नवाब बनाकर स्वयं ही बंगाल के भाग्य का शासन करते थे, क्योंकि एक देश-द्रोही नवाब की अधीनता में रहना वे अपना अपमान समझते थे। ऐसी अवस्था में मीरजाफ़र को पदच्युत करने में उन्हें क्या ममता हो सकती थी?

मीरजाफ़र को सिंहासन देकर फिर क्यों ले लिया गया, इस रहस्य का उद्घाटन करते हुए कुछ समय बाद हालवेल ने लिखा था—"मीरजाफ़र और उसके पुत्र मीरन की बात ही क्या? उन्हें तो सिंहासन न देकर सूली पर चढ़ा देना ही अधिक न्याय संगत कार्य होता।"[१] अंग्रेज़ों ने दया करके इस 'न्याय-संगत कार्य' (सूली) को छोड़ दिया, सो बात नहीं है। उन्होंने अपने सामयिक स्वार्थ की रक्षा के लिए ही मीरजाफ़र को फाँसी के तख्ते की ओर न ले जाकर राजसिंहासन पर बैठाने की व्यवस्था की थी; किन्तु अब उनका वह स्वार्थ बहुत-कुछ सध गया था; हाथ में शक्ति आ गई थी, पहले की स्थिति नहीं थी अतएव

1 "*Meer Jaffier Aly Khan, and his son Miran, were more deserving a HALTER than Subahship of Bengal.*--HOLWELL (INDIA TRACTS) P. 102.

सिंहासन पर क़ब्जा कर लेने में किसी को कुछ आपत्ति नहीं हुई।

अपने कर्तव्य का निर्णय करने में अंग्रेज खूब वाग-वितण्डा से काम लेते हैं; किन्तु कर्तव्य-निर्णय के पश्चात्, संकल्प-साधन के समय आपस का सब भेद-भाव भूलकर एकाग्र मन से कार्य करते हैं। उस समय वे एक शरीर, एक प्राण और एक शक्ति होकर स्वार्थरक्षा में अग्रसर होते हैं। इसी गुण के बल से, अंगुली पर गिने जाने योग्य बनियों की समिति ने बंगाल, विहार एवं उड़ीसा के विस्तृत मुग़ल-राजसिंहासन को बेचकर अपनी थैली भरने का साहस किया, अन्यथा उनका तात्कालिक बाहुबल ऐसे गुरुतर कार्य में हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं कर सकता था—हिम्मत करना तो दूर रहा, स्वप्न भी नहीं देख सकता था।

कई वर्षों बाद मीरजाफ़र के मुकुट-मोचन के रहस्य की जाँच करने के लिए विलायत की महासभा ने बहुत आडम्बर किया![1] कलकत्ते के अंग्रेज कर्मचारियों ने भी दो दल में विभक्त होकर वाद-विवादपूर्ण पुस्तकों का प्रचार करके इस रहस्य का उद्घाटन करने में सहायता की[2] किन्तु मुकुट-मोचन के समय किसी ने भी प्रकट रूप से बाधा उपस्थित करने की चेष्टा नहीं की थी।

किसी-किसी का कहना है कि उस समय गवर्नर और सेनापति का गुप्त संकल्प बहुतों को मालूम नहीं था और जिन्हें यह

1 *First Report. 1772.*
2 *Vansittart's Memorial.*
Vansittart's Narrative.
Letter from certain Gentlemen.
Holwell's Refutation of the same.
इत्यादि—इत्यादि

बात मालूम थी, वे भी जानते थे कि मीरजाफ़र ही नवाब रहेंगे, केवल शासन-कार्य के शृंखलाबद्ध और सुव्यवस्थित करने के लिए मीरक़ासिम को नायब नवाब बनाया जा रहा है। मीरन नायब नवाब था ही; उसके स्थान पर मीरक़ासिम को नियुक्त करने में किसीको क्या आपत्ति हो सकती थी ? नवाब से साक्षात् करने के लिए गवर्नर के आगमन की बात सुनकर मुर्शिदाबाद के निवासियों का भी कुछ सन्देह नहीं हुआ।

गवर्नर वांसिटर्ट एवं सेनापति केलड के क़ासिमबाज़ार की अंग्रेज़ी कोठी में आकर टिकने पर, नये गवर्नर के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए, पहले नवाबबहादुर ही क़ासिमबाज़ार आये। पहली भेंट में केवल शिष्टाचार की बातें हुईं; गवर्नर ने अपने गुप्त संकल्प के सम्बन्ध में कोई बात प्रकट न की। द्वितीय दर्शन के समय मीरजाफ़र ने सुना और समझा कि शासन-व्यवस्था से प्रजा असन्तुष्ट है, अतएव कार्य-कुशल कर्मचारी नियुक्त करके सुशासन की स्थापना के लिए ही 'बन्धुओं' का शुभागमन हुआ है। तीसरे दर्शन से पूर्व, प्रभात-काल में पलंग से उठने के साथ ही झरोखे की ओर नज़र गई तो देखा कि चारों ओर फैली हुई अंग्रेज़ सेना के बीच मीरकासिम की रणपताका उड़ रही है और सिंह-द्वार पर गवर्नर का पत्र हाथ में लिये हुए स्वयं सेनापति केलड सशस्त्र उपस्थित हैं [१]। मीर जाफ़र को समझते देर न लगी कि अब समय पूरा हो गया है। हाथ में तलवार लेकर आत्मरक्षा करने वा लड़ते-लड़ते रणक्षेत्र में कट

1 *A glance from the window of his palace showed him the redcoated English soldiers rallying round the standard of his kinsman in revolt against him*—COL. MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA, P. 140.

मरने की इच्छा एक बार मन में उदय हुई, किन्तु पुत्र-शोकार्त्त वृद्ध नवाब का यह संकल्प शीघ्र ही बदल गया। [1] वही अंग्रेज, वही कुटिल कौशल—वही राज-प्रासाद! मीरजाफ़र सोचकर काँप उठे। जीवन की ममता जाग उठी; सिराज की दुर्दशा की याद कर अतीत के अपराधों का स्मरण हो आया। [2]

तीन वर्ष पूर्व पलासी-समराभिनय के विचित्र रंगमंच पर अपने जीवन के पहले अंक में बालक सिराजुद्दौला के सिंहासन की रक्षा के लिए हम वृद्ध मीरजाफ़र को कुरान हाथ में लिये तैयार देखते हैं, किन्तु पीछे दूसरे अंक में वही मीरजाफर अंग्रेजों की सहायता से बालक सिराजुद्दौला का नाश करने को शत्रु-सेना की कल्याण-कामना में ध्यानमग्न दिखाई देता है। आज ठीक उसी प्रकार, उसी मूल्य में अपने को बिकते देखकर मीरजाफ़र की मानसिक अवस्था क्या हुई होगी, इसकी कल्पना अनेक इतिहास-लेखकों ने की है, परन्तु उस समय भाग्य के इस आकस्मिक परिवर्तन को देखकर मीरजाफ़र के मुँह से कोई बात न निकल सकी। वह मुकुट उतारकर धीरे-धीरे सिंहद्वार पर विनीत भाव से आ खड़े हुए। इसी स्थान पर मीरजाफर के

1. 'You have thought proper to break your engagements. I would not mine. Had I such designs, I could have raised twenty thousand men and faught you if I pleased. My son the Chuta Nabab (Miran) forewarned me of all this.--मीरजाफ़र के मुँह से अंग्रेजों के प्रति कही हुई यह पहली साहस-युक्त बात है, जो मालकम-रचित क्लाइव के जीवन-चरित में दीख पड़ती है।

2. Well, indeed, that eventful morning, might the thoughts of the old man have carried him back to a period little more than three years distant, when.. on the field of Plassey, he, too, in secret compact with these same English, had betrayed his kinsman and master to obtain the seat which another kinsman was now by similar means wresting from him.--DEECISIVE BATTLEE OF INDIA, P. 139.

लिए कलकत्ता में रहकर अंग्रेजों के आश्रय में जीवन बिताने की व्यवस्था भी स्थिर हुई। यहाँ की विचित्र घटनाओं का वर्णन करते हुए कलकत्ता के अंग्रेज सदस्यों में से किसी-किसीने लिखकर विलायत भेजा—"अंग्रेजों की धर्म-प्रतिज्ञा और उनका जातीय सम्मान चूर्ण कर मीरजाफ़र को सिंहासनच्युत किया गया है।"[1]

मीरजाफ़र के मुर्शिदाबाद छोड़कर कलकत्ता जाने और अंग्रेजों का आश्रय ग्रहण करने के समय से आज तक इतिहास-लेखक दो दलों में विभक्त होकर कोई मीरजाफ़र की और कोई अंग्रेजों की निंदा करते आ रहे हैं। एक दल कहता है—"अंग्रेज लोग बाइबल चूमकर ईश्वर और ईसामसीह के पवित्र नाम से मीरजाफ़र के साथ जिस धर्म-प्रतिज्ञा में आबद्ध हुए थे उसकी पूर्ति के लिए मीरजाफ़र के सिंहासन की रक्षा करने को बाध्य होते हुए भी अर्थ-लोभ से दूसरे के हाथ बेचकर गवर्नर एवं कौंसिल ने अंग्रेज जाति को कलंकित किया है।"[2]

दूसरे दल का विश्वास है कि सब अपराधों का कारण मीरजाफ़र ही है। वे लोग कहते हैं—"इस प्रभात में मीरजाफ़र को पलासी की बात अवश्य ही याद आई होगी। पलासी के मैदान में उनके स्नेह-भाजन तरुण नरपति ने जिस प्रकार सकरुण अनुरोध से मुकुट-रक्षार्थ उन्हें उत्तेजना दी थी उस दिन

1 Thus was Jaffier Aly Khan deposed in breach of a treanty founded on the most solemn oaths and in violation of the national faith.--LETTER FROM SOME GENTLEMAN OF THEC ALCUTTA COUNCIL.

2 He was the sworn and blood-knit ally of the Company, and if ever men were bound by decency to maintain atleast the form of good faith the Governor and Council of Calcutta was so bound--TERREN'S EMPIRE IN ASIA.

उस बात पर ध्यान देकर राजभक्ति का कर्त्तव्य पूरा करने से आज मीर जाफ़र बंगाल, बिहार और उड़ीसा के उद्धारकर्ता सेनापति कहलाते और स्वदेश में कितना आदर, कितना गौरव प्राप्त करते; उनका देश भी सब तरह से कितना सुरक्षित रह सकता !" १

दोष किसका है, इसका सूक्ष्म विचार कर एक निश्चय पर पहुँचना असंभव है। उस समय कौन किसका विश्वास करता था? विप्लव पर विप्लव होने से बंगाल के अन्नक्षेत्र की भांति राजनैतिक पुण्य-क्षेत्र भी कण्टकवन के समान हो रहा था। वैसे समय में, वैसे देश में मीरजाफर क्या बहुत कम लोग देश की चिन्ता करते थे। स्वार्थत्याग और आत्म विसर्जन द्वारा सिराजुद्दौला के सिंहासन की रक्षा कर मीरजाफ़र स्वदेश के उद्धारकर्ता कहलाकर गौरव-लाभ करते, या कुछ ही दिनों के भीतर अन्य विप्लव में अथवा निर्मूल सन्देह में पड़कर पदच्युत होते, इसके विषय में भी कुछ नश्चित नहीं था। ऐसी परिस्थिति में रहकर, जन समाज देश के लिए मरने, देश के लिए जीने और देश के लिए सर्वस्व विसर्जन करने की शिक्षा नहीं पा सकता। मीरजाफ़र को भी वैसी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला था उस समय अंग्रेजों का अपराध कितना भी अधिक हो, इतिहास में उसे छिपाने में त्रुटि नहीं की जाती थी। कौन किसका

1 He could not contrast his position, threatened by the men to whom he had sold his country, with that which he would have occupied it at Plassey, he had been loyal to the boy relative who had, in the most touching terms. implored him to defend his TURBAN. With the prestige of having been the main factor in the destruction of the insolent foreigners who had since dictated to him he would have weilded a real power; his country would have been secure.—DECISIUE BATTLES OF INDIA, P. 140.

विश्वास करता; कौन धर्म-प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए स्वार्थ त्याग करने को तैयार होता ? समय और सुयोग ही सब कार्यों का संचालक हो गया था। मीरजाफ़र संधिपत्र को अस्वीकार कर प्रतिज्ञा-भंग करने योग्य समय और सुयोग पाकर, उसे कदाचित हाथ से न जाने देते; बाहुबल से अंग्रेज़ों को भगाने का समय और सुयोग पाने पर, कदाचित् अंग्रेज-बन्धु के गले का हार होकर उनके आदेश पालन के कारण इतिहास में 'क्लाइव का गधा' नाम से न परिचित होते। उन दिनों समय और सुयोग के अभाव से जो मित्र मित्र की भांति हाथ मिलाते थे, समय और सुयोग पाते ही वे शत्रु बनकर प्राण-हरण करने में भी हिचकते नहीं थे। ऐसे मित्र को उस समय के अंग्रेज़ एवं भारतीय मौखिक शिष्टाचार की रक्षा के लिए मित्र कह कर पुकारते थे। ऐसी अवस्था में, इतने दिन बाद, हम लोगों को सूक्ष्म विचार कर, अंग्रेज़ों को निर्दोष साबित कर मीरजाफ़र को अपराधी ठहराना, अथवा मीरजाफ़र को निर्दोष कह अंग्रेजों को अपराधी ठहराना और इसके अनुसार इतिहास की रचना करना शोभा नहीं देता ! दोनों ही का गुण-दोष एक समान है, दोनों ही ऐतिहासिकों की दृष्टि में चिरकाल से कलंकित हैं ! दोनों ही राज-विद्रोही हैं।

अंग्रेज़ सुयोग पाने पर, मीर जाफ़र को नाम-मात्र का नवाब रखकर, इस देश के सब-कुछ बन गये; सिंहासन पर पदार्पण करने के पूर्व मीरजाफ़र क्या, प्रतिभाशालिनी रानी भवानी को छोड़कर और किसी ने उस प्रकार की आशंका नहीं की थी। उस समय सिंहासन पाने के लिए सभी रुपयों के ज़ोर से

लट्टबाजों की तरह ठीके पर सैन्य-संग्रह कर रहे थे। मीरजाफ़र ने सोचा कि हम भी उसी प्रकार की सहायता अंग्रेजों से पा रहे हैं, इसलिए अंग्रेजों से बन्धु-भाव से बात करने में हर्ज क्या है? पर सिंहासन पर बैठते ही अंग्रेज बन्धुओं की चालाकी और कूटनीति देखकर मीरजाफ़र बिलकुल निराश और निरुपाय हो गये और उनकी गति रोकने की चेष्टा करने का साहस न कर सके। मीरन उत्तेजना दे रहा था। मीरजाफ़र के बाद के करुण विलाप से स्पष्ट मालूम होता है कि मीरन ने उनको सतर्क करने में त्रुटि नहीं की थी, किन्तु भाग्य दोष से भ्रम-संशोधन की सुविधा और उसका सुयोग नष्ट हो गया था। मीरकासिम इस सुअवसर के लिए ही चुपचाप ओठ चबा रहे थे। कोई जानता नहीं था, आकार-प्रकार से भी अनुमान करने का अवसर नहीं मिला, किन्तु मीरकासिम इस कलंक को दूर करने के लिए सुअवसर की प्रतीक्षा अधीर होकर कर रहे थे।

सरल भाव से सम्मुख रण में विदेशी वणिक-समिति का दर्प चूर्ण कर ससुर के सिंहासन को स्वाधीन कर देने पर कासिम-अली की स्मृति कलंकित न होती। पर ससुर के दृष्टांत का अनु-सरण कर षड्यंत्र में लिप्त होकर कौशल से सिंहासन पर अधि-कार करने के कारण किसीने उनके गुप्त संकल्प की ओर ध्यान देने का कष्ट नहीं उठाया वरन् उनको भी मीरजाफ़र की तरह निन्दा करने को रख छोड़ा। क़ासिमअली के इस कलंक को अकारण कहने का कोई उपाय नहीं है!

तथापि मीरजाफ़र और मीरक़ासिम के अपराध के रूप का विचार करने पर कुछ कहा जा सकता है। सिराजुद्दौला के

समय में अंग्रेज केवल सौदागर थे, मुसलमान सिंहासन के प्रकृत अधिकारी थे। उस समय सिराजुद्दौला को सिंहासन-च्युत करने की चेष्टा करना मीरजाफ़र के लिए स्वजाति-विद्रोह था। कुरान छूकर सिंहासन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा कर अवसर मिलने पर विपरीत व्यवहार करने के कारण उनपर स्वधर्म-द्रोह का अभियोग लग सकता है। मीरजाफ़र के समय में अंग्रेज़ केवल वणिक ही नहीं कहे जाते थे वरन् एक प्रकार से उन लोगों का ही सिंहासन पर अधिकार था। ऐसे समय मीरक़ासिम का सिंहासन को स्वाधीन करने की चेष्टा करना स्वजाति-द्रोह नहीं कहा जा सकता। मीरक़ासिम ने कुरान हाथ में लेकर प्रतिज्ञाबद्ध होकर किसी के साथ विपरीत व्यवहार नहीं किया। अतएव उसका कार्य स्वधर्म-द्रोह के नाम से भी निन्दनीय नहीं हो सकता। तथापि ससुर एवं जामाता के सिंहासन की प्राप्ति का उद्देश्य पृथक् होने पर भी, पथ एक ही था। वह पथ सर्वथा निन्दनीय है, कुरान हाथ में लेकर प्रतिज्ञा भंग करने से मीरजाफ़र का पक्ष और भी निन्दनीय हो गया है।

मीरजाफ़र और मीरक़ासिम इस समय निन्दा एवं प्रशंसा के परे परलोक में हैं। उस समय उन लोगों के कार्य की समालोचना करने की स्वाधीनता नहीं थी, पर इस समय उसको बहुत पीछे छोड़ गौरव से उज्ज्वल नवयुग का आविर्भाव हुआ है। इतिहास ने इस समय समालोचना की स्वाधीनता प्राप्त कर सत्य-समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। इस समय इस पूरी कहानी की आलोचना का अवसर उपस्थित हुआ है।
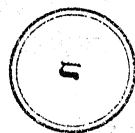
नये नवाब

In a short time (Mir Kasim) came to hate (the English) with all the intensity of a bitter and brooding hatred. He had full reason to do so; for the annals of no nation contain records of conduct more unworthy, more mean, and more disgraceful than that which characterised the English Government of Calcutta during the three years which followed the removal of Mir Jafar. —*Col, Malleson.*

किस उद्देश्य से अंग्रेजों ने मीरजाफ़र को सिंहासन-च्युत किया, इसका कोई कुछ अनुमान न कर सका। उन लोगों (अंग्रेजों) ने धर्म की शपथ करके मीरजाफ़र के साथ

सन्धि की; हाथ धर कर उसे सिराजुद्दौला के शून्य सिंहासन पर बिठाया, और उन्हीं लोगों ने सबसे पहले मीरजाफ़र को 'बंगाल-बिहार-उड़ीसा' का सूबेदार कहकर सबके सामने सिर नवाकर 'नज़र' दी थी। गुप्त या प्रकट किसी प्रकार से कभी चिर-सौहार्द्र प्रकाश करने में भी कोर-कसर नहीं हुई। अब उन्हीं अंग्रेजों, मीरजाफ़र के उन्हीं बन्धुओं की ऐसी लीला देखकर सब लोग आश्चर्य-चकित हो उठे। इस कुकृत्य से इतिहास में अंग्रेजों का नाम कलंकित हो गया। ऐसे नीच व्यवहार के सम्बन्ध में अनेक अंग्रेज-लेखक भी तात्कालिक अंग्रेज-समाज का यथेष्ट तिरस्कार कर गये हैं।

इस देश के लोग बहुत दिनों से अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख की समस्या लेकर उसीको हल करने में जीवन की सारी शक्ति लगाते आये थे और अबतक भी वही हाल है। भारत-वासियों ने जिस भाव से गाँवों में रहने का ढंग इख्तियार किया था, उससे राजधानी में होने वाली राजनैतिक कूट चालों को जानने वा समझने की कोई संभावना न थी। वे लोग इन राजनैतिक परिवर्तनों से होने वाली लाभ-हानि का विचार करने की इच्छा न रखते थे; राजा और प्रजा का पारस्परिक सम्बन्ध जानने तक का उन्हें अवसर न मिलता था। वे अपने गाँव के ज़मींदार को नियत कर देकर खेती करते और अपने परिवार के पालन-पोषण में ही लगे रहते थे। इस देश में यही साधारण प्रजा की जीवन-यात्रा की सनातन पद्धति हो रही थी। अतएव विदेशी बनिये हमारे देश में आकर इस प्रकार की उलट-फेर क्यों कर रहे हैं, इस बात का कारण जानने और समझने की

किसी ने कुछ उत्सुकता न प्रकट की १। इतना ही नहीं, कितने ही हिन्दुओं ने तो मीरजाफ़र के इस अधःपतन पर दो-चार शास्त्र-वाक्य दुहराकर एवं पुराने ज़माने के हिन्दू राजाओं की साधुता के लम्बे चौड़े क़िस्से स्मरण करके ही इस विषय की सभी आलोचना समाप्त कर दी। इस प्रकार बिना रक्तपात अथवा प्रतिरोध के ही इतना महत्वपूर्ण राज विप्लव हो गया। किसी-किसी अंग्रेज़ लेखक ने इसे हमारी नपुंसकता और कायरता कहकर अंग्रेज़ों के इस जघन्य एवं अमनुष्योचित कृत्य पर पर्दा डालने का यत्न किया है। इस प्रकार अंग्रेज़ी इतिहासों में हमारा चिरशान्तिप्रिय, सरल स्वभाव भी नितान्त उपहास की सामग्री बन गया है !२

इसमें कोई सन्देह नहीं कि देशवासियों ने इस अभूतपूर्व परिवर्तन का प्रतिरोध नहीं किया, किन्तु यह याद रखना चाहिए कि इस राज-विप्लव ने कुछ समय के लिए अंग्रेज़ों की राजशक्ति को शिथिल करने का उपाय और स्पष्ट कर दिया। बेचारा मीरजाफ़र तो अंग्रेज़ों का यह घृणित नशा उतार ही नहीं सकता था किन्तु मीरक़ासिम के लिए अंग्रेज़-शक्ति को चूर्ण करने की चेष्टा करना सरल हो गया।

मीरजाफ़र स्वार्थ साधन के लोभ से अंग्रेज़ों की सहायता

1 The people of Bengal cared nothing about the change of Nawabs; and thus the English could already depose and set up Nawabs at Will.—EARLY RECORDS OF BRITISH INDIA P. 273.

२ लेखक की बातों से मेरा विरोध है। शान्ति-प्रियता की एक सीमा हुआ करती है और वह जब उस सीमा से आगे चली जाती है तो असमर्थता या कायरता के ही नाम से पुकारी जाती है। —अनु०

ग्रहण करने को बाध्य हुए थे। अंग्रेजों की सहायता से सिंहासन पाने पर उन्हींकी सहायता से राज्य-रक्षा करने को वचन-बद्ध होकर ही मीरजाफ़र साहस करके सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्र में शामिल हुए थे। अतएव प्रकट वा गुप्त-रूप से अंग्रेजों को नष्ट कर डालने की चेष्टा करना उनके लिए असम्भव था। मीरक़ासिम ने भी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही अंग्रेजों की प्रभुता स्वीकार की थी, किन्तु इन बनियों की सहायता से सिंहासन हाथ में करके अपने बाहुबल और अपनी व्यवस्था-शक्ति के सहारे राज्य का शासन करने का भलीभांति निश्चय करके ही मीरक़ासिम अपने श्वसुर के विरुद्ध षड्यन्त्र में लिप्त हुए थे। सिंहासन प्राप्त कर लेने के बाद गुप्त वा प्रकट-रूप से मीरक़ासिम के लिए हमारी शक्ति को नष्ट करने की कोशिश करने की सम्भावना हो सकती है, इस बात को भलीभांति विचार कर देखने की बुद्धि उस समय के अंग्रेज-समाज में पैदा नहीं हुई। अपने स्वार्थ-साधन के लिए उन्मत्त मनुष्य वा समाज में सदैव ऐसी ही अविचारशीलता देखी जाती है। अंग्रेज मीरक़ासिम को भी मीरजाफ़र का ही संस्करण समझ कर निश्चिन्त हो गये।

मीरजाफ़र और मीरक़ासिम दोनों ने ही स्वार्थ-सिद्धि के लोभ से निन्दनीय पथ में पैर रक्खे थे, किन्तु इतना तो स्पष्ट ही दीख पड़ता है कि दोनों के स्वार्थ में भेद था। मीरजाफ़र का स्वार्थ था—'व्यक्तिगत सुख-संभोग'; मीरक़ासिम का स्वार्थ था—'आत्मविसर्जन द्वारा मुग़ल-राजशक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा'। मीरजाफ़र को स्वार्थ-साधन के लिए सिंहासन पाकर भी अंग्रेजों को गले लगाना पड़ा था। किन्तु मीरक़ासिम को सिंहासन

पर पदार्पण करने के साथ ही 'गले की फाँसी' तोड़कर फेंक देने को सचेष्ट होना पड़ा।[1] मीरकासिम का यह गुप्त संकल्प यद्यपि पीछे इतिहास में भली-भांति व्यक्त हुआ, किन्तु दुर्भाग्य-वश उस समय अंग्रेज उसे न जान सके। उन लोगों की कार्य-प्रणाली चाहे जितनी ही घृणित रही हो, किन्तु केवल इतनी सी बात के लिए मूर्ख कहकर उनका तिरस्कार नहीं किया जा सकता। मीरजाफ़र को अन्तःकरण से घृणा करक भी वे लोग उसके नजदीक बन्धु के रूप में ही परिचित थे। मीरकासिम भी, सर्वान्तःकरण से इन अंग्रेज बनियों को घृणा करने पर भी, बहुत दिनों तक उनके बन्धु ही समझे जाते थे। यदि मीरकासिम के गुप्त संकल्प का पता चल गया होता तो कदाचित् कलकत्ते का अंग्रेजी दरबार अपने जाति-भाइयों का नाश करने में सहायक होने को कोशिश न करता। वांसिटर्ट का कर्म-फल समय पाकर आत्म-द्रोहके रूप में फूट गया था किन्तु वह बेचारा जान-बूझ कर इस आत्मद्रोह में सहायक नहीं हुआ था। पुराने नवाब अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली थे, किन्तु काल-क्रम से इस बार अंग्रेजों के लिए ही नये नवाब के हाथ की कठपुतली बनने का अवसर उपस्थित हुआ। इस घटना का मूल्य है—अंग्रेजों की अज्ञता और मीरक़ासिम का शासन-कौशल! इस घटना में वांसिटर्ट या अंग्रेजी दरबार के स्वदेश-द्रोह का संसर्ग नहीं था।

सिराजुद्दौला को अधःपतित करने की चेष्टा करते समय अंग्रेजों ने सोचा था कि राज-विप्लव से चारों ओर हमारा

1. From the first Meer Cossim was bent on emancipating himself from English.—EARLY RECORDS OF BRITISH INDIA. P. 273.

अबाध वाणिज्य स्थापित हो जायगा; हमारी शक्ति और दृढ़ता-पूर्वक प्रतिष्ठित होगी; राज्य-कार्यादि में हम लोगों की पदोन्नति का सूत्रपात होगा, और साथ ही बंगाल बिहार-उड़ीसा में राम-राज्य का दृश्य दीख पड़ेगा। मीरजाफ़र के गद्दी पर बैठते-बैठते ही यह मोह-निद्रा भंग हो गई! अंग्रेजों ने स्वप्न से एका-एक उठे हुए व्यक्ति की भांति आश्चर्यमयी दृष्टि से देखा कि युद्ध के झगड़ों में लिप्त होने के कारण व्यापार चौपट हो रहा है; शक्ति सुदृढ़ होने की जगह अर्थाभाव से कोठियों के टूटने की नौबत आ गई है; पदोन्नति के स्थान पर सर्वनाश का सूत्रपात हो रहा है; और रामराज्य की शान्ति के बजाय अफीमची वृद्ध मीर-जाफ़र एवं उसके कुक्रियासक्त अशान्त पुत्र मीरन के शासन-कौशल से देश में चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है।

उस समय अपने कुकृत्य का परिणाम सोचकर कितने ही अंग्रेज सिहर उठे। किसी प्रकार अपनी ग़लती का परिष्कार करना आवश्यक हो गया। सेनापति क्लाइव ने इसकी नक बिलायत की कार्य-कारिणी समिति के कान में भी डाल दी थी। ज्यों-ज्यों मीरजाफ़र पर असन्तोष बढ़ने लगा, त्यों-त्यों मन में विश्वास होने लगा कि मीरजाफ़र की अयोग्यता ही सारे अनर्थों की जड़ है; अतएव नवाब को दूर करने के साथ ही वाणिज्य चमक उठेगा। मीरजाफ़र को गद्दी से उतार देने में कोई कठि-नाई नहीं थी। अंग्रेजों ने ही मीरजाफ़र को नवाब बनाया था, अतएव उनकी जिह्वा हिलने पर मीरजाफ़र को भिखारी होते कितनी देर लग सकती थी? किन्तु अयोग्यता की यह आलो-चना पिछले नवाब तक ही उठकर रह गई, नये नवाब की

योग्यता-अयोग्यता के विश्य में किसीने आँखें खलकर सोचने की तकलीफ़ न की। अच्छा अवसर आया देख मीरक़ासिम ने पुरस्कार का लोभ दिखाकर स्वार्थ सिद्ध कर लिया। अंग्रेजों ने एस ग़लती का सुधार करने जाकर दूसरी ग़लती कर दी।

मुग़ल-शासन-शक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करना ही मीरक़ासिम का प्रधान संकल्प था, अतएव अंग्रेजों का दमन करना ही उनका पहला और प्रधान उद्देश्य हुआ। उस समय भारतवर्ष के सभी प्रांतों में राज-विप्लव हो रहे थे। दिल्लीश्वर का शासन-क्षमता एकदम नष्ट हो गई थी। दाक्षिणात्य प्रदेशों में, अयोध्या में, उत्तर-दक्षिण पूर्व-पश्चिम, सर्वत्र बाहुबल एवं छल-कौशल की ही प्रधानता दिखाई देती थी। इस समय बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा से यूरोपीय शक्ति को उखाड़ फेंकने पर यह देश मुर्शिदाबाद के नवाब-वश के स्वाधीन राज्य में लाया जा सकता है, अलीवर्दी इसे बार-बार व्यक्त कर चुके थे। इसी उपदेश ने सिराज को अंग्रेजों से लड़ाकर उसे सिंहासनच्युत किया था। कर्मचारियों एवं मित्रों के अनुकूल होने पर अलीवर्दी की आशा को सफल कर दिखाना कोइ असंभव बात नहीं है, इसी विश्वास ने मीर-कासिम को भी विचलित कर दिया। अतः अंग्रेजों का दमन करना ही उनका पहला और प्रधान लक्ष्य हो उठा। वह इसके लिए सब प्रकार का आत्म-त्याग करने का संकल्प करके सिंहासन पर बैठे थे। सिंहासन पर बैठते ही इस उद्देश्य को पूरा करने का मार्ग सुगम और स्पष्ट हो जायगा, इसी विश्वास से न्याय-अन्याय के तराजू को उन्होंने थोड़े दिनों के लिए अतल जलमें बहा दिया था।

पर सिंहासन पर बैठने के पहले मुग़ल-शक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा

करना जैसा सरल मालूम होता था, सिंहासन पाने के बाद उतना सरल बोध नहीं हुआ। मीरकासिम को जल्दी ही समझ में आ गया कि "इतनी कठोर प्रतिज्ञा करके और इतने परिश्रम तथा कौशल से जो राज-सिंहासन मैंने ख़रीदा है वह सुन्दर पत्थरों का रूपान्तर मात्र है। राज-कोष में धन नहीं है; १ सेना अलग वेतन न मिलने से विद्रोही हो रही है; कर्मचारी और साथी लोग घर भरने और लूटने में लगे हैं। अंग्रेज़ों के भय से किसी को कुछ कहने वा उचित दण्ड देने में अशक्त होकर 'क्लाइव के गधे' मीर मुहम्मद जाफ़रख़ाँ बहादुर मुग़ल-राजशक्ति का पहले से ही मूलोच्छेद कर गये हैं। अब क्या उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की जा सकती है ?"

ऐसी अवस्था में लोग साधारणतः निराश होकर असंभव के साथ युद्ध करना छोड़ देते हैं और सदैव के लिए चुप होकर बैठ रहते हैं; किन्तु मीरक़ासिम की प्रकृति ऐसी नहीं थी; सांसारिक व्यवहार में उनकी बुद्धि बहुत तेज़ थी और लोक-चरित्र को ठीक ठीक समझने में उन्होंने अत्यधिक सफलता प्राप्त की थी। कार्य-कुशलता, निर्भयता एवं अपना उद्देश्य पूरा करने योग्य उपाय ढूँढ़ निकालने में वह पण्डित थे। विपत्ति में धैर्य, वैर-निर्यातन में कठोरता तथा संकल्प-साधन में अक्षुण्ण अध्यवसाय इत्यादि गुणों के लिए इतिहास में वह प्रसिद्ध हैं २। स्वभावानुसार वह

1 To meet all these demands, he found in the treasury only about 50,000 rupees and plate and jewels to the amount of between 3 and 4 lakhs more.—BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGAE ARMY, VOL, I., 316.

2 He was a man of considerable ability, far above the ordinary run of his countrymen, active and energetic, an excellent man of business and attentive to all details himself he was shrewd and of quick discernment, expert in estimating the characters of those with whom he had to deal, and where his own immediate interest or passions

अविचलित हृदय से, सारी कठिनाइयों का दमन करके, संकल्प-साधन में अग्रसर हुए।

अंग्रेजों के गृह-कलह ने मीरकासिम का पथ सरल कर दिया। मीरजाफ़र के सिंहासन-च्युत होकर कलकत्ता पहुँचने पर अंग्रेज-दरबार में बड़ा विचार उठा। एक दल मीरजाफर के लिए आँसू बहाने और उनका समर्थन करने में व्यस्त हुआ, तो दूसरे दल ने मीरकासिम की योग्यता की प्रशंसा करके सभा-स्थल को कँपाना शुरू किया। दोनों दलों को, एक दूसरे के भ्रम, त्रुटि और अपराध खोजने में लगा देख, कार्यकुशल नये नवाब को समझते देर न लगी कि यही उपयुक्त अवसर है। वह गवर्नर के दल से मिल गये क्योंकि उस समय उसी दल का प्राधान्य था। अब मीरकासिम को अपने संकल्प-साधन का मार्ग पहले से स्पष्ट और सरल मालूम पड़ने लगा।

अफ़ीमची, दुर्बल-चित्त और विश्वास-घातक बूढ़े मीरजाफ़र को कोई भी सच्चरित्र नहीं समझता था;[१] फिर भी उनको पद-च्युति की समस्या लेकर अंग्रेज-मण्डली में ऐसा कलह क्यों उपस्थित हुआ, यह एक ऐतिहासिक विस्मय का विषय है। दोनों दलों की विवादपूर्ण कटुता ने इतिहास के अनेक पन्ने काले किये; इतने दिनों बाद उसमें से सच्ची बात खोज निकालने की चेष्टा व्यर्थ

were not concerned, he appears to have had the good of the province generally at heart, and to have administered the government both in the Judicial and Revenue Departments with vigour and justice.--BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGAL ARMY, UOL. I. 315.

1 He who could pledge the most solemn oaths of fidelity to a sovereign of whose throne he was about to take possession, could scarcely be regarded as a pattern of moral excellence--THORNTON'S HISTORY OF THE BRITISH EMPIRE IN INDIA, UOL. I., 406.

का भ्रम है। मीरजाफ़र को गद्दी से उतारने की आवश्यकता आ पड़ी थी इसे स्वीकार किया जा सकता है; किन्तु इस पद-च्युति के मूल में व्यक्तिगत स्वार्थ एवं धन-लोभ की यथेष्ट मात्रा भी दीख पड़ती है। यदि मीरजाफर को सिंहासन से उतारने में पुरस्कार की गन्ध न होती तो इन अंग्रेज बनियों की बदनामी से इतिहास कलंकित न हुआ होता।

गवर्नर वांसिटर्ट के अंग्रेज कोर्ट का नेतृत्व ग्रहण करने से पहले ही गवर्नर हालवेल और सेनापति केलड ने मीरजाफ़र के सिंहासन से उतारने की सारी व्यवस्था ठीक कर रक्खी थी। अंग्रेज़-कोर्ट का सभापति हो जाने पर वांसिटर्ट ने हालवेल के कूटोपदेश को मानकर खुले दरबार में इस विषय को उठाने के बजाय कुछ सदस्यां से गुप्त परामर्श करके मीरजाफ़र को सिंहा-सन-च्युत कर दिया। मीरकासिम ने इन्हीं थोड़े सदस्यों को पुरस्कार देने का वचन दिया था अतः पता चलने पर कोर्ट के अन्य सदस्यों ने पुरस्कार से वंचित हो ईर्ष्या-वश यह गृह-कलह उपस्थित किया था, ऐसा ही अधिकांश अंग्रेज इतिहास-लेखकों का विश्वास है। [1] वांसिटर्ट एवं उसके साथियों के विरुद्ध मीर-जाफ़र का पक्ष लेने वाले दल में आमियट, एलिस, मेजर कर्नाक, स्मिथ और वेरलेस्ट नाम के पाँच सदस्य थे। अंग्रेज़-कोर्ट के

1 *Notwithstanding the obvious advantages already obtained and the improved prospects held out by the change, the personal interests of the opponents led them to condemn the whole proceeding, and a series of disgraceful disputes commenced, which were finally productive of the desruction of those concerned and of the most disastrous consequences to the interests of the Company generally. from which they were only rescued by the gallantry of the Army and the ability of its leaders.--BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGAL ARMY, VOL. I.. 318.*

सदस्यों में हालवेल के बाद आमियट का ही प्रभाव एवं महत्व था। हालवेल के पद-त्याग के पश्चात् उसीके गवर्नर होने की सम्भावना थी, किन्तु उसके इस प्राप्य पद पर वांसिटर्ट ने पदार्पण किया, अतएव वह क्रुद्ध हो उठा। एलिस यद्यपि पुराना सदस्य नहीं था, फिर भी उसने पटना की गुमाश्तगीरी पाने की इच्छा अपने हृदय में रख छोड़ी थी। वांसिटर्ट ने इस पद पर मेग्युअर को नियुक्त कर दिया अतएव वह भी असन्तुष्ट हो गया। मेजर कर्नाक शायद विलायत से प्रधान सेनापति के पद पर नियुक्त होकर भारतवर्ष आये थे। किन्तु वांसिटर्ट ने कुछ दिनों के लिए केलड को ही उक्त पद पर नियुक्त करके उसे पटना का कर्त्ता-धर्ता बना दिया और कर्नाक की उपेक्षा की, अतः उसने भी अपमान का अनुभव किया। स्मिथ एवं वेरलेस्ट पुराने सदस्य थे, किन्तु गुप्त परामर्श द्वारा अपनी उपेक्षा से असन्तुष्ट हो वे भी वांसिटर्ट के विरोधी-दल में सम्मिलित हो गये।[१] जिन इतिहास-लेखकों ने वांसिटर्ट का पक्ष नहीं लिया है, उनका कथन है कि वांसिटर्ट की सारी कारवाई अन्यायपूर्ण एवं अभद्रोचित थी; लालच में पड़कर ही उसने ऐसे कार्य में योग दिया।

1 Foremost among the opponents of Mr. Vansittart, who was rendered generally unpopular by his having been brought from another Presidency, was Mr. Amyatt, the Senior Member of Council next to Mr Holwell; this gentleman never forgave the fact of his own supercession; he was supported by Mr. Ellis, who had just arrived from England and Major Carnac, a man of violent passions, and who took offence at Mr. Vansittart's refusal to appoint him to succeed Mr. Amyatt at Patna, a situation which was conferred on Mcguir; Major Carnac joined this party, his pride having been wounded by Mr. Vansittart's resolution to retain Col. Callaud in the command of the troops until affairs were settled. Mr. Smyth, and Mr. Verelest took the same side, considering themselves slighted as members of Council in not having been officially informed of the arrangements in contemplation which were entirely conducted by the Select Committee.--BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGNL ARMY. VOL. I., 378.

१७६० ई० के सितम्बर महीने में मीरकासिम के साथ जो गुप्त सन्धि-पत्र लिखा गया, उससे अंग्रेजों को अनेक बातों में कम्पनी के लाभ की आशा हुई। पलासी-युद्ध के पूर्व मीरजाफ़र ने अंग्रेज़ों को जो धन देने की प्रतिज्ञा की थी, वह अभी तक पूरी तरह चुकाया नहीं गया था और मीरजाफ़र की व्यवस्था में वह शीघ्र वसूल हो जायगा, इसकी भी कोई आशा न थी। उधर शाहज़ादा अलग बंगाल पर आक्रमण करने की चेष्टा कर रहा था; मीरजाफ़र जैसे अकर्मण्य नवाब से उसकी गति रोकने के लिए सेना और धन एकत्र करने तथा अंग्रेज़ों के वाणिज्य-व्यवसाय की रक्षा करने की आशा भी व्यर्थ ही थी। कम्पनी का कार-बार अर्थाभाव से अब-तब कर रहा था। मीरकासिम के सन्धि-सूत्र से ये बातें दूर हो जायँगी, ऐसा विश्वास दिलाकर गवर्नर का दल राज-विप्लव सम्पन्न करने में दृढ़तापूर्वक अग्रसर हुआ। कम्पनी का कल्याण-साधन करना ही प्रधान लक्ष्य था; कम्पनी का सर्वनाश करके रुपया मारना किसी का उद्देश्य नहीं था; काग़ज़-पत्र दिखलाकर यह बात यहाँ के और विलायत के कर्मचारियों तथा अधिकारियों को समझा देने तथा उन्हें अपने पक्ष में मिला लेने में गवर्नर-दल को कठिनाई नहीं हुई। इस प्रकार विरोधी-दल को ही हारना पड़ा।

कलकत्ता-दरबार में गवर्नर का पक्ष ही प्रबल रहा; प्रतिवादियों ने एक लम्बा-चौड़ा शिकायतनामा अपने मन्तव्य के साथ विलायत भेजा, किन्तु बंगाल-बिहार और उड़ीसा में वांसिटर्ट के मतानुसार ही सारा कार्य चलने लगा। गवर्नर-दल सभी बातों में मीरकासिम का पक्ष समर्थन करने लगा।

नये नवाब (नासिरुल्मुल्क, इमतियाजुद्दौला, मीरमुहम्मद, कासिमअलीखाँ, नसरतजंग बहादुर) सिंहासन पर बैठने के साथ ही अर्थ-संचय, विद्रोह-दमन, शाहज़ादा के प्रतिरोध तथा प्रजा-रक्षा के लिए उपाय खोज निकालने में व्यस्त हो गये। 'इन सब कार्यों के मूल में अंग्रेजों का कल्याण निहित है,' ऐसा विश्वास दिलाकर वांसिटर्ट दल मीरकासिम का पक्ष लेने लगा; अतः चतुर नये नवाब इन छिद्र-पथों से ही अपनी संकल्प-सिद्धि का आयोजन करने लगे।

अर्थ-संग्रह के लिए मीरकासिम ने जिन उपायों का अवलम्बन किया, उनसे किसीको आश्चर्य न हुआ। उनके आदेश से मुग़ल-राजप्रासाद का इतिहास-विश्रुत विलास-तरंग एकबारगी समाप्त हो गया—नृत्य-गीत स्तम्भितभाव से अवसन्न होकर दूर जा खड़ा हुआ; हास्य-कौतुक राजप्रासाद से बहिष्कृत कर दिया गया; ऐश्वर्य की छटा और नवाबी लक़दक़ को फांसी दे दी गई; अगणित दास-दासियों की संख्या परिमित हो गई। जो व्यर्थ थीं, वे निकाल बाहर की गईं—जिन चीजों के न रहने से काम ही नहीं चल सकता, वही रह गईं। अन्यान्य सभी विभागों में व्यय घटाकर अर्थ-संग्रह का उपाय किया गया। राजपूत-राजशक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए महाराणा प्रताप पत्तों पर रूखी-सूखी रोटियाँ तथा फल-मूल खाते एवं तृण-शय्या पर शयन करते थे; मुग़ल-राजशक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की आशा से मीरकासिम ने अपने सुख-सम्भोग की सारी व्यवस्था तोड़कर सादा जीवन बिताना आरम्भ किया। इस विषय में मीरकासिम की कोटि के किसी दूसरे नरपति ने बंगालके सिंहासन पर पैर नहीं रक्खा!

अंग्रेज़ बनियों की ज़मींदारी-प्राप्ति

Mir Kassim was shrewd and of quick discernment.

—*Broome's Bengal Army.*

मीरजाफर के असंगत वात्सल्य-वश कितने ही छोटे राजकर्मचारी बंगाल-बिहार-उड़ीसा के सर्वेसर्वा हो उठे थे। मीर जाफर के दुर्दिन में वे अधिकांश राजकर दबाकर बैठ रहे। इन लोगों में कीनूराम, मन्नूलाल तथा चिकनलाल के नाम इतिहास में प्रसिद्ध हैं। इन तीनों ने बहुत ही छोटे पद से नवाब-सरकार में प्रवेश किया था, किन्तु मीरजाफ़र के भाग्य-विकास के साथ-साथ इन सबकी ऐसी पदोन्नति हुई कि अनेक समय मन्त्रियों को भी इनका मुँह जोहना पड़ता था! स्वार्थ-साधन

ही इन सबका एकमात्र लक्ष्य था; अतः मीरजाफ़र के इस अधःपतन-काल में अपरिमित धन-राशि पर हाथ साफ़ कर वे निरापद स्थान को खिसक जाने का यत्न कर रहे थे। चतुर नवाब ने इन सबको गिरफ़्तार करके हिसाब लेने का आदेश किया।

उस समय का इतिहास देखने से पता चलता है कि राजाओं की कृपा-दृष्टि हो जाने के कारण, नितान्त अयोग्य व्यक्ति के ऊपर भी राज्य का सबसे गुरुतर ज़िम्मेदारी का पद छोड़ दिया जाता था। मीरजाफ़र के शासन-काल में भी ऐसा ही हुआ। राज्य-शासन के जटिल विषयों का भार योग्यतर कर्मचारी को न देकर इन सामान्य भृत्यों के ऊपर छोड़ दिया गया था। गिरफ़्तार होने के बाद हिसाब ठीक-ठीक समझाने की बात तो दूर रही, राज्य-सम्बन्धी प्रश्नों के उचित उत्तर देने में भी वे असमर्थ रहे। नवाब मीरकासिम की आज्ञा से इनको एवं इनके अधीनस्थ राज-कर्मचारियों को निकाल दिया गया और इन सबके पास जो कुछ सम्पत्ति निकली, सब राज्य-भण्डार में जमा करली गई। इस समय धन की चारों ओर खींच थी – मुर्शिदाबाद की नवाब सेना वेतन न पाने से अधीर हो उठी थी; शाहज़ादा की गति रोकने के लिए पटना में कर्नल केलड की अधीनता में जो गोरी सेना थी, वह तनख़्वाह न पाने से बिगड़ रही थी; बिहार की नवाब-सेना भी वेतन न मिलने से अशान्त हो रही थी। गद्दी पर बैठकर मुर्शिदाबाद के इतिहास विख्यात राज-कोष में केवल पचास हज़ार रुपये देख नये नवाब मीरकासिम ने दांतों-तले अँगुली दबाई और क्रोध से ओठ चबाने लगे। जो कुछ रत्नादि मिले थे, उन्हें नक़द बेंच डाला, किन्तु उतने से क्या हो सकता था? इस समय राज्य

का धन हड़प करने वाले इन राज-कर्मचारियों को गिरफ़ार करके ग़बन के रुपयों का उद्धार किया गया।

इस प्रकार बहुत ही थोड़े समय में मीरकासिम ने अपनी चतुराई और शासन-कौशल से रिक्त खज़ाने की पूर्ति का उपाय किया। यह उन्हींका काम था कि ऐसी कठिन परिस्थिति में शासन हाथ में लेकर एक महीने के अन्दर ही उन्होंने मुर्शिदाबाद की नवाबी सेना को शान्त किया; अंग्रेज-वणिक-समिति को ढाई लाख की सहायता देकर उनकी मद्रास की कोठी को डूबने से बचाया, और पटना में रहनेवाली नवाबी सेना के लिए पाँच लाख तथा गोरी सेना के लिए दो लाख अर्थात कुल सात लाख रुपये कर्नल केलड के पास भेज दिये। १

नये नवाब की धन-संग्रह-पद्धति कितने ही लोगों को नई और असुविधाजनक प्रतीत होने लगी। पदच्युत राजकर्मचारी असंतुष्ट हो उठे; निकाले हुए दास-दासीगण जगह-जगह घूमने लगे; जिन लोगों का अनुचित रीति से एकत्र किया हुआ धन छीनकर राज-कोष में डाल दिया गया, वे बेईमान भी हाहाकार करके निन्दा-जनक तथा भ्रमपूर्ण बातें लोगों में फैलाने लगे। थोड़े ही दिनों में नये नवाब के विरुद्ध अंग्रेजों के पास अनेक शिकायतें आईं। मीरकासिम के सिंहासन पर बैठने के समय जिन लोगों ने विरोध किया था, वे इन छोटी-छोटी घटनाओं को लेकर अपने मत की पुष्टि तथा गवर्नर-दल को नीचा दिखाने की चेष्टा करने लगे। गवर्नर इत्यादि प्रमुख सदस्य भलीभांति जानते थे कि कैसे दुरूह समय में मीरकासिम ने सिंहासन ग्रहण किया

1 *Vansittart's Narrative. Vol I., 140*

है तथा इस समय रुपये की कितनी जरूरत है, अतएव उन लोगों ने किसी प्रकार भी नये नवाब का विरोध नहीं किया। इतना ही नहीं, वांसिटर्ट ने तो स्पष्ट ही कह दिया कि 'मीरकासिम देश के स्वाधीन शासक हैं; यह उन्हीं का देश है; अतएव वह किस प्रकार धन एकत्र कर रहे हैं, विदेशी बनियों की समिति को इसका छिद्रान्वेषण करने का अधिकार क्या है ?'

मीरजाफ़र के शासन-काल में अंग्रेज ही राज्य के कर्त्ता-धर्ता हो उठे थे। राज्य-शासन के प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप करना उन्होंने आरम्भ कर दिया था; वे भी जानते थे और प्रजा भी जानती थी कि अंग्रेज ही असली शासक हैं। मीरजाफ़र ने भी प्रकारान्तर से यह बात स्वीकार कर ली थी। इस विश्वास को सब लोगों के मन से हटाकर मुग़ल-शक्ति की स्वाधीनता के लिए ही मीरकासिम अग्रसर हुए थे; अतः अंग्रेज गवर्नर ने जिस समय साफ़ शब्दों में कह दिया कि 'नवाब ही दण्ड-मुण्ड के कर्ता हैं; अतएव वह किस प्रकार शासन का कार्य कर रहे हैं, इसका छिन्दान्वेषण करने का विदेशी बनियों को क्या अधिकार है' उस समय मीरकासिम का पथ और सरल हो गया। पलासी युद्ध के पश्चात् अंग्रेज-शक्ति धीरे-धीरे बंग, बिहार एवं उड़ीसा के शासन-कार्य पर कब्जा करती जा रही थी,: किन्तु वांसिटर्ट के न्यायोचित व्यवहार तथा राजनैतिक असावधानी से वह कमजोर हो पड़ी। ऐसा सुयोग पाकर चतुर नवाब मीरकासिम अपने को सब तरह स्वाधीन तथा अंग्रेजों के साथ सर्वांश में पदाश्रित बनियों का सा व्यवहार करने की चेष्टा करने लगे।

इस चेष्टा में ही मीरकासिम के शासन-कौशल का परिचय

मिलता है। पहले अंग्रेज बनिये वाणिज्य-लोभ से बंगाल में पदार्पण करके मुग़ल-सिंहासन के आश्रय में पेट भरने की व्यवस्था करते थे। देश के साथ, शासन-क्षमता के साथ, देशवासियों के सुख-दुख के साथ, मुगल-गौरव के उत्थान-पतन के साथ, उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। यह बहुत दिन पहले की बात नहीं है। मीरकासिम के सिंहासन पर बैठने के केवल तीन वर्ष पहले नवाब सिराजुद्दौला के अमलों तक के राज-पथ में चलते समय अंग्रेज बनियों की अन्तरात्मा काँप उठती थी; बात-बात में अंग्रेज गुमाश्तों के हाथ जोड़े राजमहल तथा दरबार में खड़ा रहकर दीनता दिखानी और क्षमा मांगनी पड़ती थी। ज़रा भी असभ्य और उच्छृंखल व्यवहार करते ही हथकड़ी-बेड़ी से बंधकर नवाब की घुड़साल के अन्दर कारागृह का कष्ट भोगना पड़ता था। पर तीन ही वर्षों में कैसा भाग्य बदल गया? मीरकासिम ने विचारकर देखा कि केवल दो ग़लतियों के सहारे ही अंग्रेज मुग़लों के कन्धे को दबाये हुए हैं। मीरजाफर कुक्षण में उनकी (अंग्रेजों की) सेना-सहायता ग्रहण करने तथा उस सहायता के लिए मासिक तनख्वाह देने को प्रतिज्ञाबद्ध हुए थे एवं कुक्षण में ही उन्होंने राजकोष के सामर्थ्य से अधिक मूल्य देने की प्रतिज्ञा करके सिंहासन ख़रीदा था। उनकी इन ग़लतियों से अंग्रेजों का ऋण न चुकने योग्य हो उठा था, एवं अंग्रेज-सेना की सहायता बिना राज्य-रक्षा करना असम्भव-सा हो गया था। मीरकासिम को समझते देर न लगी कि मुगल-राजशक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करने के लिए इन द्विविध अमंगलों को नष्ट करना होगा; अंग्रेजों का ऋण, जैसे हो, जल्दी से चुका देना होगा और यूरो-

पीय प्रणाली से देशीसेना का संगठन करके अंग्रेज-सेना की सहायता की आवश्यकता दूर करनी होगी। इसमें समय एवं धन की आवश्यकता थी। कासिमअली धीरे-धीरे इसी पथ पर आगे बढ़ने की चेष्टा करने लगे।

राजकोष में आशानुरूप धन एकत्र हो जाने पर मीरकासिम अंग्रेजों को कर्ज अदा करने में विलम्ब न करते, किन्तु वह जानते थे कि इतना धन शीघ्र संग्रह नहीं किया जा सकेगा; व्यय में कमी करके, आय बढ़ाकर, कष्ट-संचित धन, एक-एक कौड़ी दे देने पर भी पूर्ण रूप से चुकने की आशा नहीं है। जबतक देशी सेना का यूरोपीय युद्ध-प्रणाली से संगठन नहीं होता; जबतक सामरिक अस्त्र-शस्त्र इस देश में ही तैयार करने का उपाय नहीं होता, तबतक राज्य-रक्षा के लिए विवश हो, मासिक-वेतन देकर अंग्रेज-सेना रखनी ही पड़ेगी और इस तनख्वाह की रक़म को लेकर सदा कलह मचा रहेगा;—आज यह, कल वह कहकर अंग्रेज-सेनापति तनख्वाह की मात्रा बढ़ाते ही जायँगे, इन सब असुविधाओं को दूर करने के लिए राजनीति-चतुर मीरक़ासिम ने सोच-विचारकर एक उपाय निकाला। उन्होंने अंग्रेजों से एक नई सन्धि कर ली।

अंग्रेजों के ऋण को क़िस्त में उचित समय पर अदा न कर सकने के कारण मीरजाफ़र समय-समय पर नदिया, बर्दवान इत्यादि जिलों से रुपये वसूल कर लेने का भार अंग्रेजों पर डाल देते थे। वे लोग जमींदारों पर सख्ती करके प्राप्य धन ले लेते थे। इसका फल कभी अच्छा न होता था—देश पीड़ित होता था और अंग्रेजों की शक्ति बढ़ती थी, फिर भी आशानुरूप अंग्रेजों

का ऋण अदा नहीं होता था। इस प्रकार अंग्रेज-ऋण के लिए समग्र राज्य को ऋण के जाल में बाँध रखने की अपेक्षा, तीन ज़िलों को स्थायी रूप से अंग्रेजों को सौंपकर शेष राज्य को पूर्ण रूप से स्वाधीन कर लेने में अपने उद्देश्य की पूर्ति देख मीरक़ासिम ने बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव, 'बन्दोबस्त' कर अंग्रेजों को दे देने की इच्छा प्रकट की। इस बन्दोबस्त की शर्तों का सार यही था कि 'इन तीन स्थानों से जो आमदनी होगी, वह अंग्रेजों की होगी; उसके अतिरिक्त वे नवाब-सरकार से एक कौड़ी भी न पावेंगे। इन स्थानों से राजकर वसूल हो या न हो, इसके लिए भी नवाब-सरकार ज़िम्मेदार न होगी।' गवर्नर-दल के अनुकूल होने के कारण अंग्रेज-कोर्ट ने इस प्रस्ताव से सहमति प्रकट की। यह कार्य सब तरह से अंग्रेजों के लिए कल्याण-प्रद है, यह सोचकर सबने ही मन में आनन्द प्रकट किया। अंग्रेजों को इतनी सरलता से इस प्रकार की व्यवस्था स्वीकार कर लेते देख मीर-क़ासिम को भी यथेष्ट आनन्द हुआ।

अंग्रेज़ों के आनन्द का कारण यह था कि इतने दिन बाद उनका एक स्वतन्त्र राज्य हुआ। मीरक़ासिम के आनन्द का कारण यह था कि तीन स्थानों के बदले बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की अंग्रेज़ों के हाथ से मुक्ति हुई।

नवाब क़ासिमअली की प्रसन्नता के और भी कारण थे। मरहठों के पिछले हमले में मिदनापुर तथा बर्दवान उजड़-से गये थे—अधिकांश गाँव जन-शून्य हो गये थे; कितने ही उपजाऊ खेत निर्जन बन के रूप में बदल गये थे और ज़मींदार तथा राजा लोग अबाध्य-से हो रहे थे। उन लोगों को ताड़ित करके सुशासन

स्थापित करने और नियमित रूप से राजकर वसूल करने में समय और अर्थ की आवश्यकता थी। सेना तथा धन का नाश करके शान्ति स्थापित कर लेने पर भी इन दोनों स्थानों से अधिक आमदनी की आशा नहीं थी। रहा चटगाँव, सो उसकी बात तो सदैव से ही निराली रहा है। बंगाल में मुग़ल-शासन के आरम्भ से ही वहाँ सदा युद्ध-कलह होता रहता था; अराकानाधिपति के साथ न जाने कितने युद्धों में लोगों को जूझना पड़ा था, पीछे मग एवं फिरंगी दस्युदल सीमान्त में जगह-जगह अड्डा बनाकर जल तथा स्थल पथ से उसे लूट रहे थे। इन मग एवं फिरंगी डाकुओं के मारे चटगाँव में शान्ति नहीं थी अतएव शासन-कार्य चलाने योग्य आमदनी होने की आशा भी वहां से नहीं थी। ऐसी अवस्था में चटगाँव हाथ से निकल जाने पर नवाब सरकार की कुछ हानि नहीं थी—इसीलिए मीरक़ासिम अपने प्रस्ताव पर अंग्रेजों की सम्मति पाकर प्रसन्न हुए थे। उनके प्रत्येक कार्य से उनकी अद्भुत राजनीतिज्ञता का परिचय मिलता है।

दोनों पक्ष की सम्मति से यह सारी व्यवस्था सन्धिपत्र में लिखी गई।[1] तीनों जिले मीरक़ासिम ने अंग्रेजों को सौंप दिये।

1 *For all charges of the Company and of the said army, and provisions for field &c, the lands of Burdwan, Midnapour, and Chittagong shall be assigned, and Sunuuds for that purpose shall be written and granted. The Company is to stand all losses, and receive all the profits of these countries; and will demand no more than the three assignments aforesaid.—CLAUSE FIFTH OF THE TREATY CONCLUDED BETWEEN MR. VANSITTART, THE GENTLEMEN OF THE SELECT COMMITTEE AND THE NABAB MEER MOHAMAD KASSIM ALI KHAN, DATED THE 27 TH OF SEPTEMBER. 1760.*

अर्थात्, कम्पनी तथा उपर्युक्त सेना के सारे खर्चों, ऋण तथा युद्ध के रसद आदि के बदले बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव के जिले स्थायी रूप से कम्पनी को दे दिये जायँगे। इसके लिए सनद लिखकर स्वीकृत कर

इसी संधि से बंगाल के साथ अंग्रेजों का स्थायी और प्रकट सम्बन्ध हुआ एवं इन स्थानों की अराजकता धीरे-धीरे दूर होने लगी।

लिये जायँगे। इन स्थानों से जो कुछ घाटा वा लाभ होगा, उसकी ज़िम्मेदार कम्पनी ही होगी और वह इन स्थानों के अतिरिक्त अपने ऋण वा व्यय के लिए नवाब-सरकार से कुछ और नहीं माँग सकेगी।"

—मि० वान्सिटर्ट, सिलेक्ट कमेटी के सदस्यों तथा नवाब मीर मुहम्मद कासिमअलीखाँ के बीच २८ सितम्बर सन् १८६० को हुई सन्धि की पाँचवीं धारा।

विद्रोह-दमन

"The brunt of the fight fell upon the English, conduct of his own troops whenever they were brought under fire convinced Mir Cassim of the necessity of a reform in his army as stringent as that which he had introduced into his treasury"

—*Col. Malleson.*

मीरजाफर की शासन-शिथिलता से अवसर पाकर सीमान्त प्रदेश के अधीनस्थ राजा और जमींदार लोग प्रायः सावधान और स्वतंत्र हो उठे थे। इसी समय शाहजादा शाहआलम के भारत-सम्राट् बनने की इच्छा से सेना सजाकर उत्तर-पश्चिम के अनेक देशों में घूमने के बाद बिहार में उपस्थित होने पर विद्रोही जमींदार-दल के लिए नवाब-सर-

कार की उपेक्षा करना और सहज हो रहा था। मीरक़ासिम के सिंहासन पर बैठने के समय बिहार प्रदेश के अधिकांश स्थान तथा मिदनापुर, बर्दवान और वीरभूमि नवाब-सरकार की शासन सीमा से बाहर हो रहे थे, अतएव मिदनापुर और बर्दवान पाकर भी अंग्रेज निरुद्वेग रूप से कर वसूल करने में समर्थ नहीं हुए; बल्कि विद्रोह-दमन करने के लिए अंग्रेज और नवाब-सेना को सबसे पहले मिदनापुर की यात्रा करनी पड़ी।

कर्नल केलड के पटना की ओर प्रस्थान करने के पश्चात् ही कैप्टन मार्टिन ह्वाइट की अधीनता में गोरी एवं काली सेना तथा कुछ गोलंदाजों ने मिदनापुर प्रान्त की ओर यात्रा की। दूसरी ओर सेनानायक बनकर मीरकासिम ने स्वयं ही अंग्रेज सेनापति मेजर यार्क एवं उसकी सेना के साथ बर्दवान की तरफ प्रस्थान किया। १ कैप्टन मार्टिन को मिदनापुर में युद्ध छेड़ने की आवश्यकता न पड़ी; अंग्रेज सेना के पदार्पण-मात्र से ही विद्रोहीदल ने बनों एवं जंगलों को भागना शुरू कर दिया। इस प्रकार बिना कष्ट के ही मिदनापुर अधिकार में आ गया। शान्ति हो जाने पर कैप्टन साहब थोड़ी सेना वहाँ छोड़ वीरभूमि की ओर अग्रसर हुए।

वीरभूमि के जमींदार असदुज्जमाँखाँ प्रकाश्य रूप से विद्रोही हो उठे थे अतएव वह बाहुबल से बाहुबल को परास्त करने की आशा से अपनी शक्ति के अनुसार सेना-संग्रह करके आक्रमण की आशंका में सावधानी के साथ शासन कर रहे थे। उनकी सेना दुर्गम वीरभूमि के कड़वा नामक स्थान में गढ़ और खाई

१ देखिए 'सैरुल्मुताखरीन'—द्वितीय भाग, १५६ एवं ५१८ पृष्ठ।

बनाकर अड़ी हुई थी। असदुज्ज़माखाँ युद्ध-विद्या के पण्डित थे। अपने प्रबल प्रताप से उन्होंने वीरभूमि का नाम सार्थक कर रक्खा था। उनकी बीस सहस्र पैदल और पाँच हजार अश्वारोही सेना कड़वा में छावनी डाले हुए है, सुनकर उनकी गति-विधि का पता लगाने के उद्देश्य से नवाब-सेना कुछ दिनों के लिए बुधगांव में पड़ाव डालने को बाध्य हुई।

मीरकासिम एवं मेजर यार्क ने बुधगाँव तथा कैप्टन व्हाइट ने बर्दवान के उत्तर में छावनी डाल दी। शत्रु-सेना की गति-विधि का पता लगाकर दोनों सेनाओं को लेकर एकही साथ असदुज्ज़माँ पर आक्रमण करना तय हुआ। उधर कैप्टन व्हाइट को उत्तर-पूर्व से वीरभूमि की ओर अग्रसर होने का आदेश मिला।

कैप्टन ह्वाइट दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने लगे। असदुज्ज़माँ ने जिस स्थान पर शिविर डाल रक्खा था, वह स्वभावतः ही दुर्गम था; सामने से आक्रमण होने की संभावना बहुत ही कम थी अतः वह निश्चिन्त होकर ससैन्य समय बिता रहे थे। ऐसे ही समय कैप्टन ह्वाइट की सेना ने सहसा उनकी छावनी का पार्श्व-भाग भेद कर भीतर प्रवेश किया। इस प्रकार के अकस्मात् आक्रमण से जो होना चाहिए असदुज्ज़माँ की सेना का भी वही हाल हुआ। उसमें भगदड़ पड़ गई; लोग इधर-उधर भागने का प्रयत्न करने लगे; किन्तु इसी समय मेजर यार्क और मीरकासिम ने दोनों ओर से आक्रमण किया। इस प्रकार भागती हुई विद्रोही सेना सहज ही पराजित हुई।[1] यों वीरभूमि तथा बर्द्वान के

2 *Broome's Rise and Progress of the Bengal Army. Vol. I. 318.*

[1] देखिए 'सैरुल्मुताखरीन' —द्वितीय भाग, 1?? पृष्ठ।

इतनी सफलता से वश में आ जाने के बाद पुनः देश में नवाब की शासन-क्षमता ज़ोरों से फैल गई।

इस विद्रोह-दमन के उपलक्ष्य में नवाब की सेना को जिन छोटे-छोटे युद्धों में लिप्त होना पड़ा था, उनमें उसका मुखोज्ज्वल नहीं हुआ। मुगलों के भाग्योदय तथा उत्थान के समय मुग़ल सेना के वीर-दर्प से बंगभूमि काँप उठी थी; मुगलों का सौभाग्य-सूर्य जिस समय धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहा था, उस समय मुगल-सेना का पूर्व-गौरव भी अवसन्न हो गया था। निरन्तर के राज-विप्लव ने सेना को अस्त-व्यस्त कर डाला था; उनकी सुशिक्षा की व्यवस्था नष्ट हो गई थी; समय से वेतन मिलने का कभी अवसर नहीं आता था; किनके लिए और क्यों वे प्राण-विसर्जन कर रहे हैं, इसका पता भी अभागों को भली-भाँति नहीं चलता था। एक बार सिराजुद्दौला को बाँधकर मीर-जाफ़र को सिंहासन पर बैठा दिया था और इस बार मीरजाफर को ही बाँधकर मीरकासिम को मसनद पर बिठाना पड़ा। इस प्रकार अनिश्चित क्षेत्र में पड़कर सेना की रीति-नीति शिक्षा-दीक्षा, आदर्श और चरित्रबल सब गुणों का अधःपतन हो गया। लूट-पाट के लोभ वा पुरस्कार के लालच से सैनिक पुतलियों की नाईं युद्धस्थल को यात्रा करते थे और इसीलिए कभी-कभी गोलियों की बौछार वा गोलों का प्रहार आरम्भ होते-होते ही पीठ दिखाकर भाग खड़े होते थे।

डेरे-डेरे में घूमकर मीरक़ासिम ने मुग़ल-सेना की दुर्दशा के असली कारणों का पता लगाया। उन्हें यह जानने में देर न लगी कि वह वीर चरित्र के आदर्श से कितनी दूर चली गई है।

इसकी सहायता से मुग़ल-राजशक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा करने की बात तो दूर रही, एक दिन निश्चिन्त होकर राज्य-रक्षा करना भी असम्भव है। क़ासिमअली के चरित्र का प्रधान गुण था—कार्य-कुशलता। वह जब किसी बात की आवश्यकता का अनुभव कर लेते थे तो तुरन्त यथाशक्ति उसके सम्पादन का उद्योग करते थे। सेना की दुरावस्था देखने पर उसके संगठन की आवश्यकता के सम्बन्ध में जब उन्हें ज़रा भी सन्देह न रह गया, तो उन्होंने झट से उसके संस्कार में मन लगाया। १

उधर कर्नल केलड ने मीरक़ासिम-द्वारा प्राप्त धन लेकर पटना में पदार्पण किया और नवाब तथा अंग्रेज-सेना के पहले की बाकी तनख्वाह मध्ये उन्हें कुछ अंश बाँटकर शाहजादा की गति रोकने का आयोजन आरम्भ कर दिया। अंग्रेज सैनिकों का सारा बाकी वेतन तो कर्नल ने चुकाया किन्तु नवाब-सेना का पूर्व-वेतन पूरा-पूरा नहीं दिया। पूरा वेतन न पाने से आन्तरिक असन्तोष के कारण धीरे-धीरे नवाब-सेना विद्रोहोन्मुख होने लगी।

केलड रास्ते में मुँगेर दुर्ग में इनसाइन जॉन स्टेबुल्स नामक अंग्रेज के अधीन एक छोटी सेना छोड़ आया था। पटना पहुँचने पर उसकी सहायता के लिए उसने एक दल वहाँ और भेजा। इस दल में ५५० सैनिक थे; जिनमें तीन पल्टन सिपाही, पचास-साठ फिरंगी और दो पल्टन मुग़ल अश्वारोही थे। २ मुँगेर पहुँचने पर जान स्टिवल्स ने इस सेना को निकटवर्ती कटकपुर में

1 *The conduct of his own troops on this occasion convinced Meer Kasim Khan of their utter inefficiency, and he immediately set about a reform of his army.—BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGAL ARMY, VOL. I. 320.*

2 *BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGAL ARMY, VOL. I, 320.*

ले जाकर विद्रोह-दमन का आदेश किया। इस बात की खबर पाते ही विद्रोही राजा ने दो हजार पैदल और अश्वारोही सेना लेकर अपने सेनापति को अंग्रेजों के पड़ाव पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। नवाब की सेना ने मुँगेर से तीन मील की दूरी पर आकर छावनी डाल दी। दूसरे दिन सबेरे विद्रोही राजा की सेना आक्रमण करेगी, इस बात का पता अंग्रेज-नायक को लग गया। उसने रात में ही सोई हुई विद्रोही सेना पर आक्रमण कर दिया।

विद्रोही राजा की सेना जाग तो गई, किन्तु अकस्मात् आक्रमण के कारण विरोधियों की गति रोक न सकी, फिर भी उसने पलायन नहीं किया वरन् एकत्र होकर युद्ध के लिए दृढ़तापूर्वक तैयार हो गई। अब दोनों ओर की सेनाओं की शक्ति की परीक्षा होने लगी। उस परीक्षा में विद्रोही सेना-दल, अंग्रेजों की सुशिक्षित गोरी सेना के सामने से हटकर, पीछे नहीं मुड़ा। उसके अमित विक्रम के सामने फिरंगी-सेना आगे न बढ़ सकी; किन्तु इसी समय नवाब की सिपाही-सेना ने सहर्ष आगे बढ़कर विद्रोहियों पर आक्रमण किया और वीर की नाईं बन्दूकों पर संगीन चढ़ाकर दृढ़ता एवं धीरतापूर्वक अमित तेज से विद्रोही सेना-शिविर की ओर अग्रसर हुई। विद्रोहियों के सुदृढ़ वीरभाव के कारण अनेक सैनिक धराशायी होने लगे; किन्तु जो जीवित रहे, वे हटे नहीं और अन्त में वीरतापूर्वक आगे बढ़ शत्रु शिविर को भेदकर विद्रोही-दल को छिन्न-भिन्न कर दिया। इस समय प्राची दिशा में प्रभात की लालिमा फैलने लगी थी, अतएव उसके प्रकाश में विद्रोही-दल ने कटकपुर की राजधानी की ओर पला-

यन किया; विजयोन्मत्त मुगल अश्वारोहियों ने उनका पीछा किया।

कटकपुर की राजधानी के सामने ही प्रचंड प्रान्तर में विद्रोही राजा ससैन्य आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे थे। मुगल अश्वारोहियों एवं उनके पीछे आनेवाली सेना-नायक स्टेबुल्स की पैदल सेना के वहाँ पहुँचते ही युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में किसी ने किसी पर ज़रा भी रियायत न की; विद्रोही राजा प्राणों की पर्वा न करके ससैन्य उत्साह से युद्ध करने लगे। किन्तु उनकी क्षुद्र शक्ति में उस बाढ़ को रोकने की क्षमता कहाँ थी? अन्त में जो होना था, वही हुआ। उन्मत्त विजयी मुगल सेना ने राजधानी के मुहल्ले-मुहल्ले, घर-घर, विनोद-मंदिर, महल इत्यादि में, सर्वत्र आग लगाकर कटकपुर की सुन्दर राजधानी को भयानक स्मशान-भस्म के रूप में परिणत करके दम लिया। युद्ध से और मिल ही क्या सकता है? नेपोलियन ने ठीक ही कहा है कि 'भगवान् जिस जाति को सबसे अधिक दण्ड देना चाहते हैं, उसे ही युद्ध की मदिरा से उन्मत्त कर देते हैं।'

इस प्रकार विद्रोह शान्त हुआ। नायक स्टेबुल्स की पदोन्नति का सूत्रपात हुआ। जिस मुगल सेना की चरित्रहीनता के लिए मीरकासिम मर्मपीड़ित थे; मुसलमानों का गौरव अवसादग्रस्त था; इतिहास कलंक की घोषणा कर रहा था, उसी मुगल-सेना की वीरता की कथा एक बार अंग्रेज़ों के मुख से ही सर्वत्र फैल गई। उसकी वह वीरत्व-कहानी आज भी अंग्रेज़ों के सामरिक इतिहास के पृष्ठों में लिखी हुई है। १

1 The alarm however speedily spread, and he (Ensign Stables) found the enemy strongly posted under cover of an old entrenchment; but he did not hesitate

इसके बाद प्रधान सेनापति केलड अधिक दिनों तक पटना-प्रदेश में रह न सके; १७६१ ई० के आरंभ में ही मेजर कर्नाक के हाथ सेना का भार देकर उन्हें मद्रास की यात्रा करनी पड़ी।
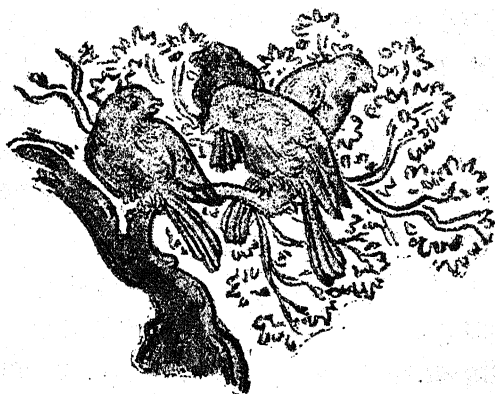
to attack them and finally succeeded THROUGH THE GALLANTRY OF THE SIPAHIS in forcing the camp at the point of the bayonet.—BROOME's RISE AND PROGRESS OF THE BENGIL ARMY, VOL. I, 321.

शाहज़ादा का अभियान

"He was most desiroues to persuade the English to embrace his claims, and support him with a force to enable him to advance upon Delhi and take possession of his capital and his throne."

—Broome's Bengal Army.

मुग़ल-राजशक्ति के अधःपतन के ज़माने में भारत में अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई थी। हैदराबाद के निज़ाम तथा अवध के वज़ीर ने मुगल बादशाह के विश्वस्त कर्मचारी होकर भी स्वाधीन राज्यों की स्थापना की थी; बंग, बिहार एवं उड़ीसा के नवाब-नाज़िम लोग दिल्लीश्वर के सूबेदार होकर भी कर देना छोड़ बैठे थे; यूरोपीय लोग बनिये

था व्यापारी होकर भी ताव दिखाने लगे थे, और महाराष्ट्र सेना-नायकों ने तो मुगलशक्ति की जड़ खोदकर उसकी जगह हिन्दू-साम्राज्य स्थापित करने के लिए देश को लूटना ही शुरू कर दिया था। भारतवर्ष के सारे प्रान्तों में घोर अराजकता फैली हुई थी। देश की आन्तरिक दुरावस्था देखकर ही नादिरशाह दिल्ली लूट गया था। अहमदशाह अब्दाली आकर पानीपत के अन्तिम युद्ध में महाराष्ट्र-शक्ति को पद-दलित एवं चूर-चूर करके भारतवर्ष को और भी दुर्बल कर गया।

ऐसी घोर अराजकता के समय जिस प्रकार मीरकासिम मुग़ल-शक्ति की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए कटिबद्ध हुए थे, उसी तरह एक और मुसलमान युवक ऐसी कठोर आकांक्षा को हृदय में लिये सेना-संग्रह कर रहा था। उसका नाम (शाहज़ादा) शाह-आलम था; दिल्ली के सिंहासन का उत्तराधिकारी होने के कारण उस समय भी जन-साधारण से उसकी धाक एकदम दूर नहीं हुई थी; तिसपर अहमदशाह अब्दाली-जैसे एक विजयी एवं परा-क्रमी मुसलमान वीर तथा अवध के नवाब-जैसे धनवान अमीर द्वारा शाहज़ादा को अभयदान एवं आश्वासन मिलने पर उसका पथ और भी सरल हो गया। दिल्ली एवं आगरा की राजधानियाँ उस समय भी शत्रु के हाथ में थीं; अतः शाहज़ादा ने बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की ओर ही पहले दृष्टि डाली। सिराजुद्दौला के समय में ही ऐसे लक्षण दिखाई दे चुके थे। मीरकासिम ने जिस समय सिंहासन पर अधिकार किया, उस समय शाहज़ादा बिहार के अधिकांश स्थानों पर अधिकार कर चुका था। सोननदी के किनारे बसे हुए दाऊदनगर तथा फलगू के किनारे बसे हिंदुओं

के तीर्थ गया में सेना की छावनियाँ नियत कर वह पटना के आस-पास के प्रदेश एवं दक्षिण विहार पर अधिकार जमा कर कर-संग्रह किया करता था। १

बहुत दिनों तक दक्षिण विहार पर अधिकार किये रहने के कारण कितने ही विद्रोही जमींदार उसके पक्ष में हो गये थे और नवाब की सेना से बहुतेरे सिपाही एवं जमादार भागकर उसके यहाँ आश्रय ले रहे थे। शाहज़ादा के सम्राट् होने पर बंगाल-विहारादि के मसनद् पर मीरकासिम बैठेंगे या लीलाक्रम से अंग्रेज लोग मुगल-साम्राज्य के वाणिज्य-व्यवसाय पर योंही एकाधिपत्य कर सकेंगे, इसका कोई निश्चय नहीं किया जा सकता था, अतएव शाहज़ादा की गति रोकना अंग्रेज और नवाब दोनों ही का कर्त्तव्य हुआ। पहले लिखा जा चुका है कि कर्नल केलड के मंद्रास चले जाने के कारण उस पद पर मेजर कर्नाक नियुक्त हुए थे। अपनी नियुक्ति के साथ ही कर्नाक ने शाहज़ादा पर ससैन्य आक्रमण करने का निश्चय किया। २

मीरकासिम ने व्यय के लिए कार्नाक के पास तीन लाख रुपये और भेज दिये तथा दिसम्बर महीने में पुनः छः लाख भेज-कर सेना का सारा बाकी वेतन चुका देने की प्रतिज्ञा करके देना-पावना का हिसाब बनाने के लिए उन्होंने नहवतराय नामक एक उच्च कर्मचारी को पटना भेज दिया। किन्तु इतने से भी देशी

1 *His head-quarters were established at Behar, but Daudnagger on the Soane. and Gyah on the Falgu, were also occupied by large detachments of his troops, and the revenues of the province were collected in his name up to within a few miles of the city of Patna.--BROOME'S RISE AND PROGRESS OF THE BENGAL ARMY, VOL. I. 322.*

1 *Major Carnac now assumed command of the Bengal force and that officer determined upon an immediate attack upon the Emperor.--BROOM'S RISE AND PROGRESS OF BENGAL ARMY, VOL. I, 322.*

सिपाही-सेना युद्ध-यात्रा के लिए पहले प्रस्तुत न हुई; पीछे से अंग्रेज-सेना का उत्साह देख तथा अंग्रेज कर्नल के व्यंग-वाक्यों से लज्जित हो उसने भी अंग्रेजी फ़ौज का अनुगमन किया।

कामगारखाँ तथा राजा बुनियादसिंह नामक ज़मींदारों ने ससैन्य शाहज़ादा का साथ दिया था, किन्तु शाहज़ादा के दरबार में कामगारखाँ की प्रधानता होने के कारण ईर्ष्यावश पहलवान-सिंह तथा बलवन्तसिंह इत्यादि अन्यान्य ज़मींदारों ने शाहज़ादा के प्रति उपेक्षा ही प्रकट की थी। ऐसे समय शाहज़ादा पर आक्रमण करना मीरकासिम तथा अंग्रेजों के लिए विशेष सुविधा-जनक हुआ।

विहार नगर के तीन कोस पश्चिम सोन नामक बस्ती के निकट मोहना नदी की एक छोटी शाखा के किनारे शाहज़ादा ने ससैन्य डेरा डाल रक्खा था। मेजर कर्नाक की सेना के इस क्षुद्र नदी के दूसरे तट पर पहुँचते ही युद्ध आरंभ होगया। ❀ इस युद्ध में शाहज़ादा की सेना ने बड़ी वीरतापूर्वक प्रतिपक्षी सेना की गति रोकने की चेष्टा की, किन्तु एक आकस्मिक घटना ने लड़ाई का रुख एकदम बदल दिया। शाहज़ादा एक हाथी पर बैठकर स्वयं युद्धस्थल में सेना का संचालन कर रहा था। अकस्मात् प्रतिपक्षी सेना की ओर का एक गोला आकर उसके पैरों के पास गिरा, जिससे आहत होकर हाथी शिविर की ओर भागा। सेना-

❀ मिल ने इस युद्ध को 'गया-युद्ध' के नाम से वर्णित किया है, किन्तु वस्तुतः यह गया में नहीं हुआ था। अंग्रेज इतिहास-लेखकों में केवल ब्रूम ने ही अपने 'बंगसेना का उदय एवं उत्थान' शीर्षक ग्रन्थ में ठीक-ठीक स्थान का निर्देश किया है।

संचालक शाहज़ादे की अनुपस्थिति तथा हाथी के दौड़ने से दल-भंग हो जाने के कारण उसकी सेना भाग खड़ी हुई।[1]

उपयुक्त अवसर देख मेजर कर्नाक ने प्रचण्ड वेग से शत्रु की सेना का पीछा किया, किन्तु सहसा उन्हें रुकना पड़ा। सिराजुद्दौला के अधःपतन के बाद फ्रांसीसी वीर मौशिये ला ने शाहज़ादा का आश्रय लिया था। उसे अंग्रेज़-सेना की गति रोकने के लिए सामने ही ससैन्य उपस्थित देख मेजर कर्नाक और आगे बढ़ने में समर्थ न हुए।

माश्योर ला के पिता का नाम जॉन ला था। उनका जन्म यद्यपि स्काटलैंड में हुआ था, किन्तु आजीवन फ्रांस में बसकर उसी देश के राजकार्य में नियुक्त रहने के कारण, सब लोग उन्हें फ्राँसीसी ही कहने लगे थे! उनके वीर पुत्र माश्योर ला ने फ्रांस के ही सामारिक विद्यालय में शिक्षा पाकर भारतवर्ष में पदार्पण किया था। अंग्रेजों के अत्याचार के कारण चन्द्रनगर छोड़कर उन्होंने सिराजुद्दौला की शरण ली थी किन्तु अभागे सिराज को अंग्रेज सेनापति के चक्कर में पड़कर तथा विद्रोही राजकर्मचारियों के कुटिल कौशल-जाल में फँसकर माश्योरला-जैसे सच्चे बन्धु से हाथ धोना पड़ा। माश्योरला को अपना चिर-शत्रु बताकर अंग्रेजों ने सिराज पर दबाव डाल कर उन्हें बंगाल बिहार एवं उड़ीसा से बाहर कर दिया था। उन सब बातों को स्मरण कर ला ने युद्ध के लिए तैयारी की थी। अंग्रेजों के गोले खाकर उसकी सेना के कितने ही सैनिकों ने पीठ दिखा दी। किंतु पचास साहसी सैनिक, तेरह सेनानायक और सेनापति

1 *Ironside's Narrative, P. 24.*

महावीर ला जरा भी विचलित न हुए ।[१] अंग्रेज सेनापति ऐसी निर्भीक तथा वीर मूर्ति के सामने थोड़ी देर के लिए स्तंभित होकर उसकी अपरमित निश्चलता देखता रहा एवं मुग्ध हो क्षण भर बाद ही सारी सेना को पीछे छोड़ सम्मुख जाकर माश्योर ला को वीरोचित अभिवादन किया तथा प्राण विसर्जन न करने के लिए बार-बार अनुरोध करने लगा । बहुत अनुरोध तथा अनुनय-विनय के बाद माश्योर ला ने युद्धभूमि छोड़ अंग्रेज-शिविर में चलने की सम्मति मान ली, किंतु प्राण रहते अस्त्र-त्याग करने में अस्वीकृति प्रकट की । अंग्रेज सेनापति वीर था तथा वीरों का आदर करना जानता था, अतएव उसने बड़े आदर के साथ फरासीसी सेना-वेष्ठित वीरवर ला को अपने खीमे में ले जा कर रक्खा; अभ्यर्थना की और इस प्रकार वीरत्व की मर्यादा का पालन किया ।[२] इस प्रकार युद्ध में नवाब तथा अंग्रेज-दल की विजय हुई और शाहजादा की सेना को पीछे हटना पड़ा । किन्तु इस लड़ाई का कोई परिणाम न हुआ । किसी पक्ष को विशेष हानि-लाभ न उठाना पड़ा । शाहजादा ने पुनः सेना एकत्र कर पटना की ओर यात्रा की ।

1 *Mooshur Lass finding himself abandoned and alone, resolved not to turn his back ; he bestrode one of his guns, and remained firm in that posture, waiting for the moment of his death. This being reported to Major Carnac he detached himself from his men, with Captain Knox and some other officers and he advanced to the man on the gun without taking with him either a guard or any Telingas at all. Being arrived near, his troop alighted from their horses, and pulling their caps from their heads they swept the air with them as if to make him a SALLAM ; and the salute being returned by Mooshur Lass in the same manner. some parley ensued in their own language—*
(सैरुलमुताखरीन, द्वितीय भाग, पृष्ठ १६४)

2 *Ironside's Narrative, P. 24.*

युद्ध समाप्त होने के बाद ही अंग्रेज-सेनापति ने शाहजादा के पास दूत भेजा था; पटना पर चढ़ाई की बात सुनकर वहाँ भी सेना भेज दी गई।

जो राजदूत बनाकर शाहजादा के पास भेजे गये थे, उनका नाम था महराज शिताबराय। यह नाम बंगाल के इतिहास में विख्यात है। विद्या, बुद्धि, साहस तथा रण-शिक्षा में उन्होंने बड़ी ख्याति पाई थी। इसीलिए अंग्रेज-सेनापति ने उन्हें ही कार्य के लिए नियुक्त किया था।

शिताबराय शाहजादा को अंग्रेजों के मनोनुकूल संधि के लिए तैयार न कर सके। उन्होंने बहुत समझाया, बहुत अनुरोध किया; बड़ी अनुनय-विनय की; यहाँ तक कि अन्त में मर्माहतकण्ठ से उन्होंने चलते समय कह दिया कि "अंग्रेज जिन-जिन शर्तों पर सन्धि करने की प्रार्थना कर रहे हैं उसे आप आज भले ही स्वीकार न करें किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि शीघ्र ही आपको स्वयं अंग्रेजों की शरण लेकर उनसे सन्धि की प्रार्थना करनी पड़ेगी और उस समय इन शर्तों पर अंग्रेज संधि करने के लिए कदाचित् ही प्रस्तुत होंगे।" [१] किंतु इन सब बातों का कुछ फल न हुआ। शाहजादा टस से मस न हुआ।

शिताबराय जो कह आये थे, वही हुआ। बहुत ही थोड़े दिनों में शाहजादा का सुख-स्वप्न भंग हो गया। वेतन ठीक समय पर न पाने के कारण सेना बिगड़ने लगी। अंग्रेज तो

[१] *His Majesty would himself shortly seek those terms of pacification, which he now refused, and would not find them; or if he found any at all, they would fall short of those now profered, and not redound so much to His Majesty's honor and advantages.*—(सैरुल्मुताखरीन, द्वितीय भाग, पृष्ठ १६६.)

अक्लान्त अध्यवसाय एवं साहस के लिए प्रसिद्ध ही हैं—उनकी सेना गाँव-गाँव में शाहजादा का पीछा करने लगी। अन्त में तंग आकर १८६१ ई० की २९ वीं जनवरी को शाहजादा ने ही संधि की प्रार्थना की और बख्सी फैजुल्लाखाँ को अंग्रेज-शिविर में दूत बनाकर भेजा। अंग्रेज सेनापति मेजर कर्नाक ने उत्तर दिया—"मुझे स्थायी संधि या विग्रह का अधिकार नहीं है। हाँ, यदि शाहजादा कुचक्री कामगारखाँ को छोड़ दें और इसी समय ससैन्य सोन के उसपार चलने को तैयार हों, तो मैं आपका प्रस्ताव कलकत्ता भेज दूँगा।" जान पड़ता है कि शाहजादा को इससे संतोष नहीं हुआ, क्योंकि अंग्रेज-सेना युद्ध से विरत नहीं हुई वरन् दूसरी जनवरी को शाहजादा के पड़ाव के समीप जा पहुँची। विवश होकर शाहजादा को भी सेना सजाने की आज्ञा देनी पड़ी, किन्तु उस समय तक उसकी साध मिट चुकी थी। संधि-स्थापन की आशा से उसने अंग्रेज-शिविर में दूत भेजा, किन्तु अंग्रेज सेनापति ने नहीं माना। उसने शाहजादा की सेना पर आक्रमण कर ही दिया। इसका फल वही हुआ जो होनाथा; शाहजादा को परास्त होकर भागना एवं कामगारखाँ को पद-च्युत करके सन्धि की प्रार्थना के लिए बृटिश शिविर में स्वयं जाने को तैयार होना पड़ा।[1]

गया-धाम के पास ही बादशाही एवं सूबेदारी सेना के शिविरों के बीच १७६१ ई० की ६ वीं फ़रवरी को भारतवर्ष के मुगल-राजसिंहासन के उत्तराधिकारी शाहजादा शाहआलम और अंग्रेज-वणिक समिति के सेना-नायक मेजर कर्नाक का

1 *Broome's Rise and Progress of the Bengal Army, VOL. I. 132.*

यह सम्मिलन हुआ। यदि सच पूछिए तो यह भेंट ही भारत में बृटिश शक्ति की दृढ़ स्थापना का मूल सूत्र है। इस मिलन के दूसरे ही दिन शाहजादा ने स्वयं अंग्रेज-शिविर में पदार्पण किया। आदर-सत्कार में अंग्रेजों की ओर से कुछ त्रुटि नहीं हुई। उस आदर अभ्यर्थना से संतुष्ट हो कर ८ वीं फरवरी से शाहजादा ने जाकर-ब्रिटिश-शिविर में ही निवास करना शुरू किया। दिल्ली के मुगल सिंहासन के अधिपति का आकर अंग्रेजों का आतिथ्य ग्रहण करने के कारण सारा युद्ध-कलह शान्त हो गया और अंग्रेज-शिविर में सर्वत्र शाहजादा को 'बादशाह' कहकर पुकारने की घोषणा कर दी गई। राजा रामनारायण अतिथि-सत्कार के लिए एक हजार रुपये रोज प्रदान करने लगे।

भारतवर्षीय मुगल राजसिंहासन के उत्तराधिकारी शाहजादा शाहआलम को वशीभूत करके अंग्रेज सेनापति आनन्द से उत्फुल्ल हो उठा और उसे लेकर बिहार की राजधानी पटना जाने की तैयारी करने लगा। अलेक्ज़ेण्डर च्याम्पियन एवं राजा दुर्लभराम पर सेना का भार छोड़ सेनापति कर्नाक ने शाहजादा के साथ पटना की यात्रा की।

पटना बहुत पुराना नगर है। हिन्दू एवं बौद्ध राजाओं का पाटलिपुत्र मुसलमानों के शासन-काल में भी बिहार का राजकीय केन्द्र था। इस समय भी वहाँ एक छोटा किला तथा परिखा-वेष्ठित नगर-प्राचीर दिखाई देता था। नगर के एक ओर भागीरथी की धारा थी तथा तीन तरफ दृढ़ोन्नत प्राचीर था। इस प्राचीर के बाहर थोड़ी दूर पर अंग्रेजों ने एक छोटा बंगला बनवा लिया था। शाहजादा ने बाँकीपुर पहुँचकर डेरा डाला; अंग्रेजों

की छावनी पटना के पश्चिम द्वार के निकट पड़ी । २२ वीं फरवरी को समारोह-पूर्वक शाहजादा ने नगर में प्रवेश किया तथा किले में डेरा डाला ।

अंग्रेजों के साथ शाहजादा का सौहार्द्र दिन-दिन बढ़ने लगा । दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करना ही शाहजादा का प्रधान लक्ष्य था, अतएव अंग्रेजों से सेना की सहायता प्राप्त करने की वह प्रबल चेष्टा करने लगा । अंग्रेजों को समझते देर न लगी कि शाहजादा को दिल्ली के सिंहासन पर बिठा देने से हमारे बाहुबल की बात दूर-दूर तक फैल जायगी, किन्तु कलकत्ते के अंग्रेज-दरबार में कलह उपस्थित होने तथा आशानुरूप सेना न रहने के कारण शाहजादा की आशा पूरी न हो सकी । उसे आतिथ्य-सत्कार वाले एक हजार रुपये दैनिक व्यय पर ही सन्तोष करने को बाध्य होना पड़ा । १
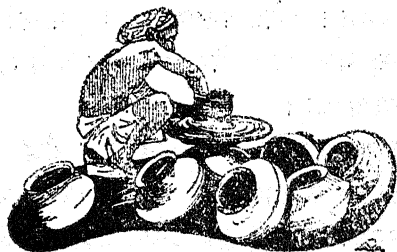
1 The prospect of an advance upon Delhi, and the advantages to be expected from restoring the Monarch to his throne, appear for a moment to have dazzled the Council, and to have been considered as feasible ; but it was finally abandoned, partly from a conviction of the want of means and material, and partly owing to the dissensions and disputes in Council, in which any plan proposed by one party was certain of meeting with opposition from the other,—BROOME'S RISE AND PROGRESS FO THE BENGAL ARMY, VOL. I, 329.

मीरक़ासिम का सनद–लाभ

"Lo, the dire tempest gathering from a far,
In dreadful clouds has dimm'd the Imperial star;
Has to the winds, and broad expanse of Heaven,
My state, my royaltty, my kingdom given !
Time was, O king, when clothed in power supreme,
Thy voice was heard, and nations hailed the theme;
Now sad reverse,—for sordid lust of gold,
By traiterous wiles, thy throne and Empire sold !"

—*Shah Alam.*

मुग़ल-साम्राज्य का अभ्युदय जैसे अत्यन्त विस्मय का विषय है, उसके अधःपतन की कहानी भी उसी तरह आश्चर्य-जनक है। उस विषाद-कथा को व्यक्त करने के लिए

अन्तिम मुगल-सम्राट् शाहआलम ने मर्मवेदना के रस में डूबी जो रचना की है, उसके अक्षर-अक्षर को चीरकर आँसुओं की धारा बह निकली है। उसका अंग्रेजी अनुवाद किसी समय शिक्षित लोगों में बहुत प्रचलित था, किन्तु काल-क्रम से मूल एवं अनुवाद दोनों ही दुष्प्राप्य हो उठे हैं।*

मुगल-शासन चला गया; उसकी ध्वंस-कहानी भी विस्मृति के गर्भ में विलीन होती जा रही है! मुगलों की वीर भुजाओं ने भारतवर्ष में जिस साम्राज्य-स्थापन का आयोजन किया था, उसके सौभाग्य ने एक समय यूरोप को आश्चर्य-चकित कर दिया था। आज यमुनातट-स्थित आगरे का जगद्विख्यात मर्म्मर-मन्दिर (ताजमहल) ही एकमात्र उस अतीत का साक्षी रह गया है। और कहीं थोड़ा-बहुत जो कुछ बचा है, वह भी धीरे-धीरे जरा-जीर्ण होकर लोप होता जा रहा है!

बादशाहों की चरित्रहीनता ही मुगल-साम्राज्य के अधःपतन का कारण कही जाती है; किन्तु सभी बादशाह नितान्त अपदार्थ थे, इतिहास ऐसा नहीं कहता। सच्ची बात तो यह है कि मुगल-साम्राज्य की गठन-प्रणाली में ही उसके ध्वंस का बीज निहित था। बादशाह लोग उस बीज के क्रम-विकास की गति रोक न सके। वे बिलकुल अशिक्षित नहीं थे। अनेक ने विविध विद्याओं से विभूषित होकर विद्वत्समाज में आदर पाया था।

* मूल फारसी कविता और उसका अंग्रेजी अनुवाद (जो ऊपर दिया गया है) कैप्टन फ्रैंकलिन विरचित 'शाह आलम' नामक ग्रन्थ में दिया हुआ है, किन्तु इस समय यह ग्रन्थ दुष्प्राप्य है।

शाहआलम भी अपनी शिक्षा, चरित्रबल एवं अभिज्ञता के लिए सज्जन-समाज के श्रद्धाभाजन हुए थे। उस समय भारतवर्ष में जितनी प्रधान भाषायें प्रचलित थीं, उनमें व्युत्पत्तिलाभ करके शाहआलम ने अपने रचना-लालित्य से सुकवि की ख्याति प्राप्त की थी।[१] किंतु उन्हींके समय में मुग़ल-साम्राज्य का गौरव-रवि अस्त-सा हो गया !

तलवार के बल से किसी देश को जीत लेना या राज्य-विस्तार कर लेना कठिन नहीं है, किंतु व्यवस्थित एवं सर्वोपयोगी शासन-प्रणाली से साम्राज्य को सुदृढ़ करना कठिन है। जबतक मुग़लों का शासन-गौरव अक्षुण्ण था, तबतक उनकी उत्तरोत्तर उन्नति होती गई किन्तु जिस दिन शासन-गौरव अवसन्न हुआ, उसी दिन से अधःपतन की गति रोकना असंभव हो गया। शाहआलम के जन्म से पहले ही इस अधःपतन के चिन्ह प्रकट हो चुके थे।

किसी खास घटना को लेकर एक दिन में मुग़ल-साम्राज्य का अधःपतन नहीं हुआ था। औरंगजेब की जीवन-संध्या में अराजकता की जो अग्नि-शिखा प्रज्वलित हो उठी थी, उसीने मुग़लों

1 *Shah Alam had improved a very good education by study and reflection; he was a complete master of the languages of the East, and as a writer attained an eminence seldom acquired by persons in his high position.--CAPTAIN FRANCKLIN'S SHAH ALAM.* अर्थात अध्ययन और मनन के द्वारा शाहआलम ने बहुत ही उत्तम शिक्षा सम्पादन की थी; पूर्वीय भाषाओं के वह पूर्ण आचार्य थे। कहा जा सकता है कि लेखक की हैसियत से उन्होंने जो प्रतिभा दिखाई थी, वह उनकी परिस्थिति और मर्यादा के लोगों में बहुत कम दीख पड़ती है।

के राजसिंहासन को जलाकर राख कर दिया। औरंगजेब के उत्तराधिकारी उस अग्नि-दाह की तीव्र गति को रोकने में समर्थ न हुए।

मुगल-साम्राज्य के व्यवस्थापक जो अमीर-उमरा थे, उनकी विश्वासघातकता, परस्पर के विवाद एवं स्वार्थपरता से ही मुगलों की गौरव-पताका गिर गई थी। दक्षिण के निज़ाम एवं अवध के वज़ीर ने ही स्वाधीन होने की चेष्टा करके बादशाह की शक्ति शिथिल कर डाली थी। उपयुक्त अवसर देख विजयोन्मत्त महाराष्ट्र सेना ने आक्रमण करके मुगल-शासन का छत्र भंग कर दिया। उसके बाद मुगल-शासन की छाया-मात्र रह गई थी; नादिरशाह के आक्रमण में उसका भी अन्त हो गया।

दिल्ली के नाम-सर्वस्व मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने किसी प्रकार सिंहासन हाथ में रखने की चेष्टा की। इसके लिए उन्हें नितान्त अकीर्तिकर सन्धि करके मुगल-साम्राज्य का खोखलापन एवं शोचनीय दुर्बलता दिखानी पड़ी। इस सन्धि के अनुसार अटक नदी के पश्चिम का सारा सम्पन्न देश नादिरशाह के हिस्से में चला गया। लाहौर, गुजरात, मुलतान एवं काबुल इत्यादि ज़िलों का समस्त राजकर नादिरशाह को मिलने लगा।

इधर यह दशा थी, उधर दक्षिण में महाराष्ट्र नरेश एवं निजाम स्वाधीन हो गये। बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के सूबेदार ने कर देना बन्द कर दिया तथा अवध के वजीर (सूबेदार) ने स्वतंत्र राज्य का संगठन करना आरंभ कर दिया। दिल्लीश्वर मुहम्मदशाह सब-कुछ खोकर कंगाल गृहस्थ की तरह दुखी शरीरसे बचे-खुचे दिल्ली नगर में किसी तरह अपने दिन बिताने लगे।

नादिरशाह की मृत्यु के पश्चात् मुहम्मदशाह को कुछ दिनों के लिए शान्ति मिली। इस समय उन्होंने पुनः मुगल-साम्राज्य की प्राण-प्रतिष्ठा करने की आशा में पश्चिम भारत में अपनी शासन-शक्ति फैलाने की चेष्टा शुरू की। किन्तु उनके शासन-काल के अन्तिम साल (१७४१ ई०) में पुनः युद्ध की आग जल उठी। अहमदशाह अब्दाली ने शाहंशाह की उपाधि ग्रहण करके भारत में आक्रमण करने की आशा से लाहौर में प्रवेश किया।

इस बार आत्मरक्षा के लिए दिल्लीश्वर सेना-संग्रह करने में प्रवृत्त हुए। निर्वाणोन्मुख दीपशिखा प्रज्वलित हो उठी। शाहजादा अहमदशाह, प्रधान मन्त्री कमरुद्दीन एवं उनके पुत्र महिम्नुलमुल्क सेनापति बनाये गये। इन लोगों की वीरता एवं रणपाण्डित्य से परास्त होकर अब्दाली अपने देश लौट गया। कमरुद्दीन की युद्ध में मृत्यु हुई, अतएव वीरता के पुरस्कार-रूप उनके पुत्र महिम्नुलमुल्क को लाहोर के सूबेदार के पद पर नियुक्त कर शाहजादा ने दिल्ली की यात्रा की।

पानीपत के समीप पहुँचने पर शाहजादा ने सुना कि पिता की मृत्यु होगई। शीघ्र दिल्ली पहुँचकर उन्होंने तख्त पर अधिकार किया और सिंहासनासीन होने के साथ ही अपने अनुकूल करने के लिए पात्रों को अच्छे-अच्छे राज्यपदों पर नियुक्त करना आरंभ किया; परन्तु फल, उद्देश्य के प्रतिकूल होगया। जिन मुसलमान अमीर-उमराओं ने स्वार्थान्ध होकर मुगल-साम्राज्य की जड़ें उखाड़नी शुरू की थीं; बादशाह को अनुकम्पा से, बेचारे के अज्ञान में, वे ही लोग प्रधान-प्रधान राजपदों पर नियुक्त होगये।

अवध के मन्सूरअलीखाँ उस समय के उमराओं में सर्व-प्रधान हो उठे थे। 'वज़ीर'-पद पर अभिषिक्त होकर उन्होंने, मन के अनुकूल, अपने अन्तरंग एवं मित्रों को राज-सम्बन्धी प्रधान-प्रधान पदों पर नियुक्त करना आरंभ किया। उनके ही अनुग्रह से ग़ाज़ीउद्दीनखाँ 'मीर-बख़्शी' हो गया। वस्तुतः दिल्ली-श्वर की समस्त शासन-क्षमता, धीरे-धीरे, अयोध्या के इन वज़ीर साहब के हाथ में चली गई; बादशाह उनके हाथों के पुतले ही गये।

अन्य अमीर-उमराओं ने मंसूरअली के इस एकाधिपत्य से असन्तुष्ट होकर बादशाह के पास नाना प्रकार की शिकायतें उप-स्थित करने में कोई कमी न की किन्तु रास्ता भी शीघ्र ही बन्द हो गया। अपने विरोधियों की खबर लगते ही मंसूरअली ने बादशाह को चोर-डाकुओं की तरह (उनकी रक्षा के बहाने) निरन्तर पहरेदारों एवं रक्षकों से घिरा हुआ रखकर शिकायतों के सुनने-सुनाने का पथ बन्द कर दिया! जितने प्रधान राजकर्म-चारी थे, सब वजीर के दासानुदास थे; सेनापति तक उनके ही अनुगत थे; ऐसी अवस्था में बादशाह के लिए केवल अपनी आज्ञा के बल पर वजीर को पदच्युत करने का विचार तक करना असंभव था। अतएव अपनी भूल के परिणाम की चिन्ता से व्याकुल हो गुप्त मंत्रणा द्वारा इस घोर-बंधन से मुक्ति पाने के लिए वह षड्यन्त्र में लिप्त हुए। इस तरह, मुगल-साम्राज्य के अधःपतन-काल में प्रबल गृह-कलह का आरंभ हुआ।

मुगल-साम्राज्य में शासन-कौशल की अपेक्षा सेना-बल पर

ही सम्राटों की अधिक आस्था थी। * नियमित सैन्य-बल से प्रजा का शासन करना सहज नहीं है। समय और सुयोग पाते ही किसी प्रबल पुरुष की उत्तेजना से लोग बादशाह की शासन-क्षमता अस्वीकार कर उस नये पुरुष की ओर मिल जाते थे। उक्त वजीर साहब ने भी इसी प्रकार अवध का स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था; अतः धन-बल और सैन्य-बल दोनों बलों से बली होकर वह नाम मात्र के बादशाह से अधिक शक्ति-शाली हो उठे थे। वह सहज ही छोड़ने वाले जीव न थे; बाहुबल से सारा षड्यन्त्र चूर्ण करने के लिए उन्होंने युद्ध की घोषणा कर दी। इस युद्ध में मुगलों के शासन का बचा-खुचा गौरव भी नष्ट हो गया!

युद्ध में बादशाह की विजय हुई, किन्तु जय-लाभ करके भी दिल्लीश्वर उसका फल न भोग सके। मंसूर ने भागकर जाट-राज्य में शरण ली। इनतिमाद्दौला को वज़ीर का पद मिला। मंसूरअली को राज-विद्रोह का दण्ड देना तो दूर रहा, घटनाचक्र में फँसकर उसे क्षमा करना पड़ा। इससे गृह-कलह शान्त न होकर और प्रबल हो पड़ा। पहले लिखा जा चुका है कि मंसूरअली के ही अनुग्रह से गाज़ीउद्दीन मीर-बख़्शी हुआ था, उसीने मंसूर-अली को क्षमा करने का विरोध किया। उसके विरोध की बात सुनकर जाट-राजा ने आक्रमण किया। चूँकि गाजीउद्दीन के ही विरोध पर जाटराज ने चढ़ाई की थी, अतएव प्रधान मंत्री ने उसे गोला-बारूद एवं सेना का अधिकार देने से इन्कार कर दिया।

* और इस अस्थिचर्मावशिष्ट बृटिश राज्य में हो, कौन कहे, ऐसा नहीं है? —अनुवादक।

इस व्यवहार से अपमान अनुभव कर 'मीर बख्शी' ने महाराष्ट्र-सेना की सहायता ली। एक विद्रोही को शान्त करने की इच्छा से दूसरे विद्रोही की शरण लेकर 'मीर-बख्शी' (गाजीउद्दीन) ने मुगल-शक्ति को चूर करने की चेष्टा की। महाराष्ट्र-सेनापति मल्हारराव ससैन्य गाजीउद्दीन से मिल गये। बादशाह एवं वज़ीर ने भी ससैन्य यात्रा की। इसी युद्ध में मुगलों का सर्वनाश हो गया। बादशाह दिल्ली के क़िले में कैद हो गये। विजायोन्मत्त गाजीउद्दीन ने उन्हें गद्दी से उतारकर तैमूरवंशीय आज़िमुद्दीन नामक एक राजकुमार को सिंहासन पर बिठाया। अहमदशाह की दोनों आँखें निकाल ली गईं! १७५५ ई० नवम्बर मास में दिल्लीश्वर ने अपने ही एक गुलाम के प्राधान्य और निरीक्षण में सिंहासन पर पदार्पण किया।

गाजीउद्दीन की कृपा से सिंहासन पाने पर भी उसके समान अकृतज्ञ नराधम की बातों पर बादशाह कभी विश्वास न कर सके। वह मनमें गाजीउद्दीन को पदच्युत करने का उपाय ढूँढने लगे।

इस प्रकार घोर अराजक अवस्था में पड़कर बाहुबल से मुगल-शासन को पुनः स्थापित करने का कोई उपाय ढूँढने में असमर्थ हो पात्रों एवं मित्रों ने अहमदशाह अब्दाली को पुनः भारतवर्ष में आने को निमंत्रित किया! स्वयं दिल्लीश्वर तक ने इस आमंत्रण-कार्य में योग दिया। महिम्नुल्मुल्क के अभाव में उनकी बेगम लाहौर का शासन-कार्य कर रही थी। व्यूह-द्वार पर रमणी एवं व्यूह के अन्दर कलह का आवास! ऐसी असहाय अवस्था में दिल्ली का सिंहासन देखकर अब्दाली आक्रमण के प्रस्तावको कैसे अस्वीकार कर सकता था?

वीर रमणी की नाईं प्राणपण से आत्मरक्षा की चेष्टा करके भी बेगम अब्दाली की गति रोकने में समर्थ न हो सकी। अब्दाली ने दिल्ली पर अधिकार करके गाजीउद्दीन को पदच्युत किया। आपदाओं से मुक्त होकर दिल्लीश्वर ने इच्छानुसार वजीर नियुक्त करने की क्षमता प्राप्त की। उसने जाट-राज्य पर आक्रमण करनेके लिए ससैन्य दक्षिण की ओर प्रस्थान किया

बादशाह ने अपने पुत्र अलीगौहर को वज़ीर बनाया। जाट-राज्य को जीत लेना अब्दाली के लिए सहज नहीं हुआ। पद-पद पर गति रुकने के कारण निराश हो उठा। सुयोग देख पदच्युत गाजीउद्दीन ने उसे लालच देना शुरू किया। अब्दाली ने देखा कि उसे पुनः वजीर बना देने पर वह सहायता करेगा अतएव उसने प्रस्ताव मान लिया। अब्दाली के साथ अग्रसर होकर जाट-युद्ध में गाजीउद्दीन ने विजय प्राप्त की। सच पूछिए तो दिल्लीश्वर उस समय अब्दाली के गुलाम मात्र थे अतएव उसकी इच्छानुसार उन्हें गाजीउद्दीन को पुनः वजीर बनाना पड़ा। शाहज़ादा अली-गौहर भाग गया।

मुगल-साम्राज्य की उस ध्वंसावस्था में पिता के सिंहासन को स्वतंत्र करने की आशा से शाहज़ादा अली गौहर ने महाराष्ट्र-सेना की शरण ली। दिल्लीश्वर के ज्येष्ठ पुत्र का इस प्रकार दिल्लीश्वर के प्रधान शत्रु की ही सहायता लेने के लिए महाराष्ट्र शिविर में आश्रय ग्रहण करना उचित न था। इस कार्य से मुगल शासन तक के उन्मूल होने का उपक्रम हो गया। इसी समय से अली गौहर का नाम भारत के इतिहास में आने लगा। अली गौहर का ही नाम भारतीय इतिहास में शाह आलम के रूप में प्रसिद्ध है।

मीर कासिम जिस समय बंगाल-बिहार एवं उड़ीसा में मुगल-शासन स्थापित करने के लिए जी-जान से चेष्टा करने में लगे थे, उसी समय दिल्ली के सिंहासन को उसके पूर्व गौरव पर प्रतिष्ठित करने की आशा में शाहजादा शाहआलम (कभी महाराष्ट्र सेना, कभी अयोध्या के वजीर और कभी अंग्रेजों की सहायता प्राप्त करने के लिए) इधर-उधर भटक रहा था।

एक समय वह था, जब मुगल बादशाहों के प्रबल प्रताप से दूर-दूर के राजा एवं बादशाह काँपते रहते थे और इस समय मुगल बादशाह के अधःपतन काल में सभी अधीन कर्मचारी स्वेच्छाचारी होकर अपने-अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए लालायित होने लगे। शाहज़ादा को हाथ में रखने पर, उसके नाम की दुहाई देकर स्वार्थ-रक्षा में सुविधा होगी, यह सोचकर कितने ही शक्ति-शाली पुरुष उसकी सहायता की प्रतिज्ञा करते जा रहे थे। अंग्रेजों को भी इसका पता चल गया था। 'धूर्त'-चूड़ामणि कर्नल क्लाइव ने सबसे पहले इस रास्ते पर पैर बढ़ाने की आशा से विलायत पत्र भेजा था। इसमें सन्देह नहीं कि यदि क्लाइव का परामर्श स्वीकृत हो जाता तो बहुत पहले ही दीवानी प्राप्त कर बंगाल-बिहार एवं उड़ीसा पर अंग्रेज अपना शासन फैला सकते थे किन्तु क्लाइव की बात पर किसी के ध्यान न देने के ही कारण मीरक़ासिम को अपने राज्य को स्वाधीन करने का अवसर मिल गया।

अंग्रेज इतिहास-लेखक फ्रैंकलिन ने अपने 'शाह आलम' नामक ग्रंथ में लिखा है:—" It would appear, however, that this Prince's disposition and capacity has been imperfectly understood by his contemporaries." अर्थात्

"सम-सामयिक लोग शाहज़ादा शाहआलम की मति-गति एवं शक्ति-सामर्थ्य को भली-भाँति समझ न सके थे।" दूसरों की बात तो हम नहीं कह सकते किन्तु मीरक़ासिम के विषय में इस उक्ति का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

मीरक़ासिम—जैसे चतुर, मानव-चरित के ज्ञाता, कर्म-कुशल नरपति को समझते देर न लगी कि अंग्रेज़ों की सहायता से सिंहासन लाभ करना ही शाहज़ादा का एक मात्र उद्देश्य है। इससे मीरक़ासिम सुखी न हो सके। वह जानते थे कि सामयिक स्वार्थ-साधन के लिए शाहज़ादा बिना सोचे-समझे ही, जिसकी शरण में मन होता है, चले जाते हैं। शाहज़ादा की इस अस्थिर नीति के ही कारण अहमदशाह अब्दाली, मरहठा सेनापति तथा मुसलमान उमरा उसे अपने हाथों की पुतली बनाकर नचाते आये थे। शाहआलम पर अंग्रेज़ों का जादू चल जाने के पश्चात् स्वाधीन राज्य का संस्थापन करना सहज नहीं रह जायगा, इसे सोचकर मीरक़ासिम विचलित हो उठे।

इस प्रकार विचलित होने के कारणों का भी अभाव नहीं था। पटना में पदार्पण करने के बाद शाहआलम, अंग्रेज़ों को 'बंगाल-विहार एवं उड़ीसा' की 'दीवानी' का सनद देने को उत्सुक हो उठे थे। अंग्रेज़ों को पुरस्कार-रूप में 'दीवानी-सनद' देकर उनकी सेना की सहायता से दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करना ही उनका उद्देश्य था। अंग्रेज़ों की ओर से टालमटोल होने के कारण उस समय यह बात कार्य-रूप में परिणत न की जा सकी किन्तु मीरक़ासिम ने सोचा कि आगे चलकर एक दिन यह कार्य-रूप में न परिणत होगी, इसका क्या निश्चय है? उस

दिन मेरे स्वाधीन सिंहासन का क्या परिणाम होगा ? उस दिन स्वाधीन राज्य की स्थापना के मेरे गुप्त संकल्प की क्या दशा होगी ? इन प्रश्नों का उत्तर सोचकर वह सिहर उठे ।

बाहु-बल से बंग-विहार एवं उड़ीसा में स्वाधीन राज्य स्थापित करके विदेशी वणिक-सम्प्रदाय को पैरों तले रखकर अपना अधिकार बढ़ाने के लिए ही मीरक़ासिम चुपचाप चेष्टा कर रहे थे किन्तु दुर्भाग्य-वश घटनाओं का रुख़ दूसरी ओर पलट गया;— अंग्रेज़ों के साथ शाहज़ादा का बन्धु-भाव स्थापित हुआ । अब शाहआलम की शरण में जाकर उनसे सनद प्राप्त करने के अतिरिक्त मीरक़ासिम के लिए दूसरा कोई मार्ग शेष न रहा; इससे आत्माभिमानी मीरक़ासिम के मस्तक पर आकाश फट पड़ा । तथापि चुपचाप माथा झुकाकर उन्हें यह सर्वनाश देखना पड़ा !

मीरक़ासिम बर्दवान और वीरभूमि के ज़िलों में शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से ससैन्य शिविर डाले हुए थे किन्तु अकस्मात् वज्रपात का लक्षण देख वहीं से उन्हें पटना की यात्रा करनी पड़ी । १७६१ ई० की पहली मार्च को पटना के निकट बैकुण्ठपुर में पहुँचकर उन्होंने छावनी डाल दी ।

अंग्रेज़ सेनापति मेजर कर्नाक के साथ मीरक़ासिम का कलह शुरू हुआ ।[1] असल बात तो यह थी कि नवाब के इस अकस्मात् आगमन से अंग्रेज़ों के स्वार्थ को धक्का पहुँचा और शाहज़ादा के साथ उनकी जो स्वार्थ-मय बंधुता बढ़ रही थी, उसका मार्ग बन्द हो गया । बातचीत में आत्माभिमानी नवाब ने पहले सेना-संचा-

1 *On arrival, he was visited by Major Carnac, and long series of discussions and disputes, which followed, appear to have commenced at the first interview.—BROOME'S BENGAL ARMY, UOL. I. P. 331*

लन का अधिकार स्वयं लेने का ज़िक्र किया; फिर शाहआलम को पटना क्यों लाया गया, इस विषय पर वाद-विवाद हुआ। अन्त में एकमात्र जो पथ बचा था, उसी पर मीरक़ासिम को अग्रसर होना पड़ा। अंग्रेज़ों को राजनैतिक चालों में मात करने तथा अपने उद्देश्य-साधन की बची-खुची आशा की पूर्ति के लिए एक-बार प्रयत्न कर देखने के उद्देश्य से उन्हें आत्माभिमान को दबा-कर वह राह ग्रहण करनी पड़ी;—नितान्त अनिच्छा से शाहआ-लम-द्वारा ख़िलअत ग्रहण करने का प्रस्ताव उन्होंने स्वीकार कर लिया।

यह कार्य सहज ही सम्पन्न नहीं हुआ। मीरक़ासिम ने शक्ति-भर टालमटोल करने में कमी नहीं की; मेजर कर्नाक ने भी नवाब के अभिमान पर चुपचाप आघात करने में कमी नहीं की। अन्त में, १२ वीं मार्च को पटना की अंग्रेज़-कोठी में शाहज़ादा और मीरक़ासिम की भेंट हुई।

इतिहास-लेखक सैयद गुलाम हुसेन ने इस दरबार का बड़ा सुन्दर विवरण लिखा है।* उसके विवरण से मालूम होता है कि अंग्रेज़ों के पास जो कुछ दरिद्र सामग्री थी, उसके द्वारा उन्होंने स्वागत का अनुष्ठान करने में कमी नहीं की; सिंहासन के अभाव में दो 'टिफ़िन टेबुल' (भोजन करने का टेबुल) एक में लगाकर उन्होंने उसपर सुन्दर लाल बानात बिछा दी एवं फ़र्श को गलीचों से मण्डित करके जो कुछ साज-सज्जा करनी थी, पूरी कर दी। बाहर अंग्रेज़-सेना क़तार बाँधकर खड़ी हुई। शाहज़ादा के तोरण-

* देखिए 'सैरुल मुताख़रीन', भाग १, पृष्ठ १७०, १७२।

द्वार पर उतरने के साथही सेना ने सलामी दी और अंग्रेज-सेना नायकों ने हाथों-हाथ उन्हें लाकर सिंहासन पर बिठा दिया। सिंहासन पर बैठते ही दरबार आरंभ हुआ। अंग्रेज सेनापतियों ने 'नज़र' देकर तथा यथा-रीति 'कोरनिश' बजा लाकर दरबार की मर्यादा की रक्षा की। एक घण्टा बाद मीरक़ासिम आये। उन्हें भी 'नज़र' देनी पड़ी। शाहज़ादा ने उन्हें सिंहासन परही स्थान देकर आदर-सत्कार किया। पीछे शाही ख़िलअत देने के बाद बंगाल-बिहार एवं उड़ीसा की सूबेदारी पर उन्हें अभिषिक्त किया। चौबीस लाख रुपये वार्षिक राजकर देने की प्रतिज्ञा करके मीरक़ासिम ने सूबेदारी ग्रहण की। यथा-समय दरबार भंग हुआ।

इस दरबार से किसी की आशा पूरी नहीं हुई। मीरक़ासिम का सिर नीचे झुका। शाहआलम को भी मस्तक झुकाना पड़ा। मीरक़ासिम को अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। दिल्ली के सिंहासन पर बिठाने के लिए सैनिक सहायता देने में अंग्रेजों की सम्मति न होने के कारण, थोड़े ही दिनों बाद शाहआलम ने टूटे हुए दिल से पटना से प्रस्थान किया।

पटना के दरबार की बातें आज इतिहास के जीर्ण-दफ़्तर में चुपचाप कीड़ों का पेट भर रही हैं किन्तु याद रखना चाहिए कि इस दरबार से ही अंग्रेजों की शक्ति देश में विशेष रूपसे फैली। भारत में जहाँ-जहाँ यह समाचार फैला, वहाँ के लोगों ने मनमें सोचा कि इस समय अंग्रेज बनियों की इच्छानुसार बंगाल-बिहार एवं उड़ीसा के नवाब ही नहीं वरन् भारतवर्ष के अधीश्वर (?) तक चलने को बाध्य हो रहे हैं!

इच्छा करने पर अंग्रेज़ लोग, अनायास ही बंगाल-बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी की सनद ग्रहण करके मीरक़ासिम को अपमानित कर सकते थे। उन लोगों के ऐसा न करने के कारण, उनकी प्रशंसा करनी तो दूर रही वरन् कोई-कोई तो लिख गये हैं—"हाथ में आये हुए दीवानी-सनद को इस प्रकार छोड़ देना उचित नहीं हुआ !"

१३

राज्य-शासन

"At the close of 1762 he had not only paid off all the debts of the State, but his revenue-returns showed an excess of income over expenditure,"

—Col. Malleson.

अर्थात् "१७६२ ई० के अन्त तक उन्होंने केवल, सब कर्ज़े ही नहीं चुका दिये वरन् मालगुज़ारी के हिसाब से यह भी मालूम हो गया कि ख़र्च की अपेक्षा आमदनी में बहुत वृद्धि हुई है।"

मीरक़ासिम का विचित्र इतिहास अनेक युद्ध-कहानियों से परिपूर्ण है, इसीलिए किसी इतिहास में भी उनके सम्बन्ध में भली-भाँति ऐतिहासिक विवेचन नहीं दिखाई पड़ता। उन्होंने बहुत थोड़े दिनों में सारा ऋण अदा करके

खजाने में रुपये जमा कर दिये थे। इस घटना से बहुत लोग सोचते हैं कि प्रजा-पीड़न के अतिरिक्त अर्थ-संचय में उन्होंने दूसरे और किस उपाय का अवलंबन किया होगा? इन बातों पर प्रकाश डालने के लिए मीरक़ासिम की शासन-व्यवस्था पर यथा-साध्य प्रकाश डालना आवश्यक है।

हम जिस समय की बात लिख रहे हैं, उस समय भारतवर्ष में, अर्थोपार्जन के लिए नाना देशों के नाना प्रकार के आदमी आये थे तथा नित्य आते ही रहते थे। वसुन्धरा धन-धान्य से पूर्ण थी; भारतीय शिल्पकार अनेक प्रकार के शिल्प-द्रव्यों के निर्माण में निपुण थे; देश अराजक था;—इन सब कारणों से वाणिज्य तथा सामरिक व्यापार में प्रवेश करके रातोरात बड़ा आदमी हो जाने की सभी के मन में आकांक्षा तथा संभावना रहती थी। यूरोपियन लोगों में कोई-कोई वाणिज्य तथा कोई-कोई सामरिक व्यापार से अर्थोपार्जन करने का अवसर ढूँढ़ते थे। शेष श्रेणी के यूरोपियनों में से कितने ही मीरक़ासिम की नौकरी करके उनके सेना-सम्बन्धी विभाग में स्थान पा जाते थे।

इस प्रकार जिन विदेशी वीर पुरुषों ने मीरक़ासिम की सेना में प्रवेश किया था, उनमें से कोई-कोई इस देश के इतिहास में चिरस्मरणीय हो गये हैं। समरू, गुर्गीन एवं मार्कर के नाम लोग आज भी भूले नहीं हैं। ये लोग अंग्रेजों का दलन करने के लिए सदैव मीरक़ासिम को उत्साहित किया करते थे।❀

❀ मीर क़ासिम के इन सब कार्यों की पर्य्यालोचना करके लब्ध-प्रतिष्ठ इतिहास-लेखक म्यालिसन ने लिखा है—

"These Preparations, his movement to Mounger, his repairing and strengthening

अंग्रेज़ों की सहायता से ही सिंहासन पाकर उनके प्रति इतना अविश्वास करने का क्या कारण था ? यह क्या मीरक़ासिम की नितान्त अव्यवस्थित-चित्तता का लक्षण नहीं है ? अंग्रेज़ बाहुबल से राज्य-संस्थापन के लिए व्याकुल नहीं थे; उन्होंने शाह-ज़ादा द्वारा मिलती हुई दीवानी को अस्वीकार कर दिया; शाह-ज़ादा-उन्हें इसके लिए राज़ी न कर सके, ऐसी अवस्था में अंग्रेज़ों पर सन्देह करने का क्या कारण था ?

इन प्रश्नों की व्याख्या राजनीतिज्ञ मीरक़ासिम ने भली प्रकार कर ली थी। अंग्रेज़ इस पतनोन्मुख मुग़लराज्य का शासन-भार ग्रहण करने के लिए लालायित नहीं हैं और नहीं हैं तो क्यों नहीं हैं ?, इन समस्याओं को मीरक़ासिम सहज ही समझ सके थे; किन्तु इनके साथ ही उन्होंने सबसे बड़ी यह बात भी हृदयंगम की थी कि 'अंग्रेज़ सौदागर लोग इस देश का धन-धान्य प्रकारान्तर से हथियाने की आशा से जो स्वाधीन वाणिज्य फैलाते जा रहे हैं, उसमें बाधा न डालने से देश नहीं बच सकेगा और बाधा डालने की चेष्टा करते ही लड़ाई झगड़े आरंभ होंगे।' अंग्रेज सौदागरों के स्वाधीन वाणिज्य में हस्तक्षेप करने की भावना को मन में स्थान न देने पर निस्संदेह उस समय मीरक़ासिम को विशेष आयोजन न करना पड़ता; किन्तु एक स्वदेशभक्त, आत्माभिमानी

of the fortifications of that place, the reform of his revenue system, had been inspired by one motive-distrust of English.--Decisive Battles of India, P. 144.

अर्थात् ये सब तैयारियाँ, उनका मुँगेर जाना, वहाँ के क़िलों एवं चहार-दीवारियों की मरम्मत कर उन्हें मज़बूत करना, मालगुज़ारी के क़ायदों में सुधार करना इत्यादि—केवल अंग्रेज़ों के प्रति अविश्वास के ही कारण की गई थीं।

वीर-नरेश जान-बूझकर कैसे आँखें मूँद लेता ? जिसने सबल के उत्पीड़न से दुर्बल की रक्षा करने के लिए जमींदारों को बार-बार दण्ड देने में कभी हिचकिचाहट नहीं दिखाई, वह अवश्यम्भावी हाहाकार की उपेक्षा करके कायर देश-द्रोहियों की भाँति चुपचाप स्वदेश के वाणिज्य-व्यवसाय का सर्वनाश कैसे देख सकता था ? इसीलिए—न्याय तथा राजधर्म की रक्षा तथा स्वदेश के प्रति कर्तव्य-पालन के लिए—सब-कुछ जान-बूझकर भी मीरक़ासिम ने आग में हाथ डाला था। कर्तव्य एवं आत्मगौरव-हीन राजकीय भोग-विलास में उन्हें कर्त्तव्य ही अधिक मूल्यवान् समझ पड़ा। फल चाहे जो हुआ हो, परन्तु इतना तो निस्संकोच कहा जा सकता है कि मीरक़ासिम ने जो-कुछ किया, उसके अतिरिक्त दूसरी बात एक स्वाभिमानी नीति कुशल नरपति कर ही नहीं सकता था। यही उनके सर्वनाश का मूल कारण तथा इस देश में बृटिश राज्य की स्थापना का ऐतिहासिक सूत्र हुआ। मीरक़ासिम के अंग्रेजों के साथ लड़ाई-झगड़ा न करने से उतनी जल्दी बंगाल से मुग़ल-राज्य नष्ट न होता किंतु उस अवस्था में अंग्रेज बनियों तथा मुग़ल-नवाब दोनों ही के द्वारा देश और भी अधिक पीड़ित होता; उसे और भी अधिक दुहा जाता; वह और भी अधिक लूटा-खसोटा जाता।

दुनिया का क़ायदा है कि वह फ़ायदे के लोभ से सहज ही अन्धी हो जाती है। उस समय के अंग्रेज सौदागर भी अपने स्वार्थ के लिए अन्धे हो गये थे। यह देश उनका नहीं है अथवा इसपर उनका अधिकार नहीं है, इसे जान-बूझकर वे एकदम भूल गये थे। वे यहाँ असहाय विदेशी बनियों की तरह आये थे

पर इस देश की असीम धनराशि देखकर उनकी तृष्णा बढ़ती जाती थी और वे मतवाले हो उठे थे। उनके अत्याचारों से प्रजा पीड़ित तथा पग-पग पर अपमानित होकर त्राहि-त्राहि कर रही थी; किन्तु उसकी पुकार अरण्य-रोदन की भाँति आस-पास के वातावरण में विलीन होकर रह जाती थी।

अंग्रेज़ सौदागर प्रजा पर जो अत्याचार करते थे, उनकी भीषणता का वर्णन करने के लिए यह ग्रन्थ यथेष्ट नहीं है, और न वैसा मौक़ा ही है पर इतना याद रखना चाहिए कि दुर्बल प्रजा उन अत्याचारों को मूक पशु के समान चुपचाप सहन कर रही थी; मुसलमान व हिन्दू फ़ौजदार उनके वेदनाजन्य नीरव आँसुओं के प्रतीकार का कोई उपाय न कर सकते थे। प्रजा का कलेजा हिला देने वाली पुकार तथा करुण हाहाकार को नित्य सुनते-सुनते मीरक़ासिम के नाकों दम आ गया; उनका हृदय प्रजा के असीम दुःख से क्षुब्ध, अधीर तथा उन्मत्त हो उठा। फ़ायदे के लालच से अंग्रेज़ अन्धे हो गये थे। राजधर्म की रक्षा, प्रजापालन तथा दुष्ट-दलन में अपनी असमर्थता का अनुभव कर आत्मग्लानि से मीरक़ासिम भी अन्धे हो उठे।

'सैरुब मुताख़रीन' नामक सुप्रसिद्ध फ़ारसी इतिहास के लेखक सैयद गुलामहुसेन ने मीरक़ासिम की प्रशंसा के लिए अपने इतिहास की रचना नहीं की थी, किन्तु उन्हें भी सत्य के अनुरोध से लिखना पड़ा—"जिन्हें ऐतिहासिक दृष्टि से मनुष्य के कार्यों की घटनावली लिपिबद्ध करने की इच्छा होगी, वे सच्ची बातें लिखने के लिए बाध्य होंगे। मैंने मीरक़ासिम की अनेक ग़लतियों

तथा बुराइयों का उल्लेख किया है, अतः उनके गुणों तथा सत्कीर्तियों का उल्लेख करना भी हमारा कर्तव्य है। बंगीय सेनानायकों एवं सिपाहियों की प्रभुभक्ति में अविश्वास होते ही अनेक समय सामान्य कारण के लिए उन्हें प्राणदण्ड देने में भी वह हिचकते नहीं थे, किन्तु दीवानी व फौजदारी मामलों, सेनादल एवं दरबार के शासन-कार्य तथा पण्डित-समाज की मर्यादा-रक्षा इत्यादि के सम्बन्ध में वह जैसे सुन्दर न्याय के दृष्टान्त इतिहास में पेश कर गये हैं, उन्हें देखकर उनको उस समय का आदर्श नरपति कहने में भी कोई अत्युक्ति नहीं हो सकती। वह सप्ताह में दो बार स्वयं नियमानुसार विचारासन पर बैठते थे। उस समय निम्नपदस्थ विचारकों के विचार-कार्य की पर्यालोचना करते थे तथा स्वयं वादी, प्रतिवादी एवं गवाहों की बातें तथा वादानुवाद सुनकर दोषी का निर्णय करते थे। न्याय की मर्यादा बचाने के लिए वह सदैव प्रयत्नशील रहते थे और कोई गंभीर मुकदमा स्वयं छानबीन किये बिना नहीं जाने देते थे। (आजकल की भाँति) उनके शासन तथा विचार में कोई राजकर्मचारी 'हाँ' को 'ना' नहीं कर सकता था। (इस दूषित प्रणाली से प्रजा की रक्षा करने लिए ही नीचे की अदालतों से फ़ैसला हो चुकने पर वह स्वयं 'केस' की जाँच करते थे तथा किसी कर्मचारी पर ज़रा भी शुबहा होते ही उसे उचित दण्ड देते थे; इसीलिए अदालत के अमले बेईमानी में अनभ्यस्त हो गये थे) ज़मींदारों के अत्याचारों से दुर्बल कृषकों तथा प्रजा की रक्षा करना उनका विशेष प्रिय कार्य था। सिराजुद्दौला ने रुपयों को पानी की तरह बहाकर जो इमामबाड़ा बनवाया था, उसकी सारी शृंगार एवं

सजावट की बहुमूल्य चीज़ें बेचकर उन्होंने ग़रीबों को बटवा दिया था।" ❀

संकल्प-साधन के लिए मीरक़ासिम ने नाना उपायों से अर्थ-संचय किया था। उस अर्थ के द्वारा अन्य नवाबों की भाँति भोग-विलास का पथ ग्रहण न करके वह शक्ति-संस्थपान के लिए आयोजन करने लगे—मुंगेर के पुराने क़िले की मरम्मत करके वहीं राजधानी स्थापित की; कर्म-कुशल देशी शिल्पकार नियुक्त करके गोलियाँ, गोले, बारूद, बन्दूक़ें तथा अन्यान्य युद्ध-सामग्री बनवाने लगे एवं यूरोपीय प्रणाली से सेना की शिक्षा का इन्तज़ाम करके सामरिक शक्ति-संचय की सुव्यवस्था में लग गये।

उस समय भारतीयों में बाहुबल का अभाव नहीं था, किन्तु यूरोपीय प्रणाली के समर-कौशल का ज्ञान बहुत कम लोगों को था। मीरजाफ़र के सिंहासनारोहण के कुछ दिन बाद सेनापति क्लाइव ने उन्हें सदल-बल निमंत्रित करके यूरोपीय समर-कौशल का दर्शन कराया था। अंग्रेज़ सैनिकों की त्वरित गति, उनके अपूर्व अस्त्र-चालन कौशल, उनकी अद्भुत रण-शिक्षा देखकर विस्मित-विमुग्ध हो मीरजाफ़र ने मीरक़ासिम से कहा था—"यूरोपीय समर-कौशल सर्वथा अनुकरणीय है। दूर से तो इन-पर आक्रमण करना ही असंभव है, निकट होने पर एक बार देखा जायगा!" उसी समय से यह बात मीरक़ासिम के हृदय में घर कर गई थी। समय पाकर वह बाहुबल के साथ यूरोपीय समर-कौशल से अपने सैनिकों को दीक्षित करने का आयोजन करने लगे।

❀ Scot, Vol. II. P. 411.

अंग्रेज व्यापारियों द्वारा प्रजा पर होने वाले घोर अत्याचारों के तीव्र प्रतिवाद का कुछ फल न हुआ; कलकत्ते के अंग्रेज दरबार में सकरुण आवेदन-निवेदन का भी कोई नतीजा न हुआ—हेस्टिंग्स एवं गवर्नर वान्सिटर्ट के अतिरिक्त अंग्रेज मात्र, जिस उपाय से हो सके उसी से, अर्थोपार्जन के लिए व्याकुल थे। भले-बुरे की मीमांसा करना उन्हें पसन्द नहीं था, अतः दूसरा कोई उपाय न देख, 'बाहुबल से स्वदेश के व्यापार की रक्षा करूँगा' यह सोच कर मीरक़ासिम इन सामरिक अनुष्ठानों में लिप्त हुए थे। दूसरा कोई मार्ग भी तो नहीं था?

उद्योग-पर्व

"The ravenous hordes, thus let loose on India made the race name of Christian (Firingi) a word of terror—until the strong rule of the Moghul Empire turned it into one of contempt."

—Sir W. Hunter.

यूरोपीय लोग जिस समय 'केप ऑव गुड होप' (उत्तमाशा अन्तरीप) पार करके भारतवर्ष में आये थे, उस समय भारतीयों ने प्रतिष्ठित वणिक के ही रूप में उनका आदर-सत्कार तथा स्वागत किया था किन्तु थोड़े ही दिनों बाद जल-दस्यु रूप में सर्वत्र भय उत्पन्न करके उन्होंने अपना सम्मान खो दिया

और तभी से वे 'फिरंगी' नाम से पुकारे जाने लगे। यह नाम भारतवासियों का सम्मान न प्राप्त कर सकता था। लोग फिरंगी से भय करते थे, घृणा करते थे, श्रद्धा नहीं करते थे। भारत में प्रवेश करके अपने अत्याचारों के कारण अंग्रेज भी शीघ्र ही फिरंगी उपाधि से विभूषित हुए[1] किन्तु उनके बाहुबल और समर-कौशल के कारण लोग खुल्लम-खुल्ला उनकी अवज्ञा नहीं करते थे, वरन् बहुतेरे लोग विपत्ति में उनकी शरण लेते थे। 'नेटिव' (देसी) कहने से जैसे भारतवासी-मात्र अपमान बोध करते थे (और अब भी करते हैं) उसी प्रकार फिरंगी कहते ही अंग्रेजों की भौंहें ऊपर चढ़ जाती थीं। किन्तु मीरक़ासिम के समय में मुसलमान लोग अंग्रेज़ों के लिए आमतौर पर फिरंगी शब्द ही प्रयोग करते थे;[2] हाँ, यह अवश्य था कि दूसरे प्रकार के फिरंगियों की अपेक्षा वे कुछ सभ्य अथवा उच्च श्रेणी के समझे जाते थे।

मीरक़ासिम ये बातें जानते थे। उनसे यह बात छिपी न थी कि सैनिक शिक्षा सम्बन्धी अंग्रेज़ों की उत्कृष्ट प्रणाली ही उनके बाहुबल का मूल कारण है। उस समय अंग्रेजों और भारतवासियों, विशेषतः बंगालियों को निरपेक्ष होकर एक दूसरे के गुण-दोष पर विचार करने की फ़ुरसत न थी। अंग्रेज छोटी-छोटी व्यक्तिगत बातों के लिए समस्त बंगालियों तथा कभी-कभी भारतीयों

1. *In India it is a Positive affront to call an Englishman a Firingi."*
Gotebrooke's Life of Elphinstone. Vol. II. P. 207.

२. उर्दू भाषा में तो अंग्रेज़ों के लिए 'फिरंगी' या 'फिरंग' शब्द का आम तौर से प्रयोग होता है। अब यह शब्द पुराने भावों से प्रेरित होकर प्रयुक्त नहीं किया जाता। —अनुवादक

पर लांछन लगाया करते थे; इसी तरह बंगाली व भारतीय भी अंग्रेज-जाति की निन्दा करने से नहीं चूकते थे। इन बातों को यहाँ प्रमाण देकर सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि उस समय के इतिहास का अध्ययन करने में तत्कालिक-भ्रमपूर्ण संस्कारों को एकदम छोड़ देने का कोई उपाय नहीं है। सर्व-साधारण अंग्रेजों से डरते थे; उनका हृदय से आदर व भक्ति नहीं करते थे।[१] लोग अंग्रेजों के बाहुबल एवं समर-कौशल की प्रशंसा करने पर धर्म-नीति की श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करते थे। कोई अंग्रेजों के चरित्र का अनुकरण करना अच्छा न समझता था, करता भी नहीं था। वरन् अंग्रेजों ने ही आहार-विहारादि में भारतीयों का अनुकरण करना आरंभ कर दिया था। वे अलबेले पर तम्बाकू पीते, मध्यान्ह-भोजन के बाद सोने का अभ्यास करते, कभी-कभी डोली या पालकी पर चढ़ते तथा पैदल चलने पर छत्रधर द्वारा छाता लगवाकर चलते थे। ऐसे ही समय मीरक़ासिम ने अंग्रेजों के समर-कौशल का अनुकरण करने का संकल्प किया।

जिन उपायों का अवलम्बन कर अंग्रेज़ सेना ने विस्तृत वीर-कीर्ति प्राप्त की है, उन्हीं उपायों से क्या इस देश के लोग अंग्रेजों

१ अब भी अनेकांश में वही बात है। अंग्रेज़ों की लम्बी-चौड़ी सजी हुई सेना को परेड करते या कहीं जाते देखकर साधारण लोगों के हृदय में दहशत भले ही हो, पर अंग्रेज़ों के प्रति व अंग्रेज़ी शासन-प्रणाली के प्रति उनकी श्रद्धा नहीं होती। भारत में अंग्रेज़ों का सारा शासन 'भय दिखाकर राज्य करने की नीति' पर ही अवलम्बित है, इसीलिए अंग्रेज़ी शासन की जड़ें लोगों के हृदयों में घर नहीं कर सकी हैं। —अनुवादक

के समान रण-निपुण नहीं बनाये जा सकते ? इसी चिन्ता ने मीरक़ासिम के मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया था। उनके पहले किसी भारतीय राजा या नवाब ने इस बात पर भली भाँति विचार कर देखा था, इसका प्रमाण नहीं मिलता। मीरक़ासिम संकल्प-साधन के लिए अग्रसर हुए। इसी चेष्टा के कारण इतिहास-प्रिय स्वदेशभक्त भारतीयों के हृदय से उनकी स्मृति अब भी विलुप्त नहीं हो सकी है। उन्होंने, सबसे पहले, इस देश के लोगों को समर-कौशल में अंग्रेजों का समकक्ष बनाने का आयोजन किया था। उनका वह आयोजन सर्वांश में सफल होने पर उन्हें एकदम सिंहासन दे देने के लिए अंग्रेजों को अनुतप्त होना पड़ता।

मीरक़ासिम के जन्म-ग्रहण के दो सौ वर्ष पहले फिरंगियों ने ही इस देश के लोगों को यूरोपीय प्रणाली से समर-शिक्षा देने का आरंभ किया था। उस समय यूरोप से अधिकाधिक-संख्या में सुशिक्षित सैनिक लाने की सुविधा नहीं थी, अतएव पोर्च्युगीज़ों ने बाध्य होकर इसी देश के आदमियों को यूरोपीय प्रणाली से शिक्षा देना शुरू किया था। पोर्च्युगीज़ों की देखा-देखी फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने भी 'सिपाही पल्टन' का संगठन किया था। क्लाइव की देशी 'लाल पल्टन' ने अपनी वीरता के लिए देश में बड़ा नाम पाया था। उपयुक्त शिक्षक पाकर इस देश के लोगों ने अंग्रेजों के लिए गोरी सेना के ही सामने अनेक स्थानों पर अपने समर-कौशल का परिचय दिया है, यह बात मीरक़ासिम से छिपी न थी। उपयुक्त शिक्षा पाने के बाद इस देश के सैनिकों द्वारा अंग्रेजों की सारी शक्ति आसानी से विध्वंस की जा सकती

है, यह सोचकर ही मीरक़ासिम ने इस गुरुतर कार्य में हाथ डाला था।

मुग़ल-सेना में साहस और वीरता की कमी नहीं थी। यह ठीक है कि उसे कई बार अपने से बहुत छोटी यूरोपीय सेना के सामने हारना पड़ा था, पर इसका कारण वीरता या बाहुबल का अभाव नहीं था। सैनिक शिक्षा-प्रणाली के ही दोष से वह कई बार परास्त हुई थी। सैनिकों को समय पर उपयुक्त वेतन नहीं मिलता था; बेचारे उपयुक्त अस्त्र-शस्त्र एवं परिच्छद न पाते थे; उपयुक्त नायकों द्वारा परिचलित भी न होते थे। मनसबदार लोग ही अपने पदगौरव के अनुसार सेनापति हुआ करते थे; सेनापति के गुरुतरकार्य तथा सेना-संचालन के संबंध में उन्हें विशेष ज्ञान नहीं होता था। समग्र सेना भेड़ियाधसान की नाईं एक ही दल में गिनी जाती थी। उनकी योग्यता, विशेष शिक्षा या सैनिक आवश्यकता के अनुसार टुकड़ियाँ नहीं होती थीं। समरक्षेत्र में बहुसंख्यक सेना एकत्र होकर एकमात्र सेनापति के इशारों से परिचालित होती थी। इसीलिए वह परिष्कृत यूरोपीय युद्ध-प्रणाली के सामने हार जाया करती थी। मीरक़ासिम ने इन कारणों पर बार-बार ध्यान दिया था, बार-बार सोचा-समझा और विचारा था, इसीलिए इन असुविधाओं को दूर करके अंग्रेज-सेना की तरह मुग़ल-सेना को नये ढंग से संगठित करने को अग्रसर हुए। इसके लिए उन्हें अस्त्र-शस्त्र बनाने तथा सेना को यूरोपीय समर-कौशल से शिक्षित करने की व्यवस्था करनी पड़ी। मुँगेर का क़िला इस नवीन संस्कार का केन्द्र बन गया।

शिक्षक का अभाव नहीं हुआ। संकल्प-साधन में मीरक़ासिम

की एकाग्रता थी। वह अनन्यकर्मा होकर संकल्प-साधन का आयोजन करने लगे। अस्त्र-शस्त्र बनाने के लिए कारखाना खुल गया। यूरोपीय शिक्षकों के निरीक्षण में इस देश के लोगों ने शीघ्र ही तोप एवं बन्दूक़ बनाने में दक्षता प्राप्त की। उस समय तोपों में पलीता लगाना पड़ता था; बन्दूक़ छोड़ने के समय चकमक पत्थर से आग पैदा करनी पड़ती थी। बन्दूक़ों की नलियों को आग की गरमी सहने योग्य बनाने के लिए उत्कृष्ट लोहे की आवश्यकता हुआ करती थी। मीरक़ासिम के उत्साह ने ये सारी कठिनाइयाँ दूर करदीं। राजमहल का चकमक और छोटा नागपुर का लोहा शीघ्र विख्यात हो उठा। बहुत दिनों बाद इन सब बन्दूक़ों की परीक्षा करके अंग्रेज़ों ने कहा था कि 'कम्पनी की बन्दूक़ों की अपेक्षा ये बन्दूक़ें सब तरह से अच्छी हैं।' उस समय तोपों का पीतल गलाकर ढलाई करने की प्रथा चलाकर मीरक़ासिम ने एक नई कीर्ति कमाई थी। अंग्रेज़ों को कितने ही स्वाधीन यूरोपियन व्यापारी उस समय बाहर से बन्दूक़ें, तोप एवं गोले-गोलियाँ मँगाकर बेचा करते थे। मीरक़ासिम के अस्त्रागार में ख़रीद-ख़रीद कर ये सब चीज़ें भी भरी जाने लगीं। इस प्रकार मीरक़ासिम ने जो अस्त्र-शस्त्र संग्रह किये थे, उस समय के हिसाब से अंग्रेज़ों के अस्त्र-शस्त्र से वे किसी अंश में निकृष्ट नहीं थे वरन् अनेकांश में उनसे अच्छे ही थे।*

* अंग्रेज़-लेखक 'ब्रूम' अपनी पुस्तक *(Bengal Army)* के ३५१ पृष्ठ में लिखते हैं—*"The muskets with which they were armed were manufactured in the ountry, and from trials subsequently made between them and the Tower-Proof arms of the Company's troops, the reader will be surprised to learn, that they were found to be superior to English Manufacture, Particularly in the barrels, the metal of which was of*

जिन लोगों ने मीरक़ासिम की सेना को सुशिक्षित करने का भार ग्रहण किया था, उनमें में बहुत ही कम का विवरण इतिहास में मिलता है। कलकत्ते के अर्मानियन व्यापारियों में उस समय ख्वाज़ा पिन्दू नामक एक व्यक्ति की बड़ी प्रसिद्धि थी। उसका अंग्रेजों एवं नवाब दोनों में ही सम्मान था। उसके भाई ग्रेगरी को मीरक़ासिम ने प्रधान सेनापति बनाया था। ग्रेगरी इस देश के इतिहास में साधरणतः गुरगिनख़ाँ के नाम से परिचित हैं। बंगला उपन्यास में स्थान प्राप्त कर वह आज बंगाल के बहुतेरे शिक्षित पाठकों में परिचित हैं।† उपन्यास में उनका नाम गुर्गनख़ाँ है। उन्होंने सेना के सारे विभागों का कार्य हाथ में लिया था। उन्हीं की चेष्टा से ख्वाज़ा पिंदू को मिलाकर मीरक़ासिम गुप्त रूप से यूरोपीय अस्त्र-शस्त्र संग्रह करने में समर्थ हुए थे। अनेक कारणों से मीरक़ासिम के दरबार में गुर्गनख़ाँ का प्रधान स्थान

an admirable description; the flints were also of a very excellent quality, composed of agates found in the Rajmahal Hills. and were much Preffered to those imported.'
अर्थात्, "जिन बन्दूक़ों से वे (मीरक़ासिम के सैनिक) सज्जित हुए थे, वे देश ही में बनाई गई थीं और यह सुनकर पाठक आश्चर्य करेंगे कि कम्पनी की सेनाओं की प्रसिद्ध बन्दूक़ों के साथ जब उनकी तुलना की गई तो वे इंग्लैण्ड की बनी बन्दूक़ों से भी अच्छी साबित हुईं। उनकी नलियाँ (जिन-की धातु प्रशंसनीय थी) तो ख़ास तौर से बहुत बढ़-चढ़कर थीं। कारतूस भी उच्च श्रेणी के थे, जो राजमहल की पहाड़ियों से निकले हुए चकमक पत्थरों के संयोग से तैयार किये गये थे और इंग्लैण्ड से आने वाले कारतूसों की अपेक्षा अधिक पसन्द किये गये थे।"

† बंकिम बाबू ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'चन्द्रशेखर' में 'गुर्ग-ख़ाँ' का चरित्र चित्रित किया है।
—अनुवादक

हो उठा था। उनके कारण अनेक आर्मीनियन सैनिकों ने नवाब की सेना में प्रवेश किया था; अब समय के प्रवाह में उनकी कथा विलुप्त हो गई है।

गुर्गनखाँ विश्वासी एवं प्रभु-भक्त के रूप में ही नवाब-दरबार में प्रसिद्ध थे। जिस समय मीरक़ासिम अशान्त हृदय से अंग्रेजों का दलन करने के लिए व्याकुल हो उठते, उस समय वह उन्हें शान्त कर कहते, 'अभी समय नहीं आया है!'* यह अरमानी सेनापति अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने नवाब की सेना को तीन श्रेणियों में विभक्त किया; एक में अश्वारोही रक्खे गये, दूसरी में गोलंदाज़ एवं तीसरी में पैदल। फिर पैदल सेना के भी नजीब एवं तिलंगा नामक दो भाग किये। तिलंगी सेना ठीक कम्पनी की सेना की नाईं सजाई गई। अश्वारोही सेना, मुग़ल सेनानायकों के अधीन रक्खी गई; पैदल तथा गोलन्दाज़ श्रेणी का भार अर्मीनियन, जर्मन, पोर्च्युगीज़ एवं फरांसीसी अफसरों ने ग्रहण किया।

गुर्मनखाँ के अधीन मार्कर नामक एक अर्मीनियन सेनानायक ने उस समय विशेष ख्याति पाई थी। मर्कर के अधीन तीनों श्रेणी की सेना थोड़े ही समय में सुशिक्षित हो गई। प्रत्येक श्रेणी की पल्टन से कुछ चुने हुए सैनिकों को एकत्र करके उन्होंने एक

* *"Bear and forbear; you are not yet fledged; reserve your anger till the time when you shall have feathers to yours wings,"* अर्थात् "शान्त हूजिए, धैर्य धारण कीजिए; अभी तक आप परदार (उचित सामग्रियों से संयुक्त) नहीं हुए हैं। अपना क्रोध तब तक के लिए रोके रहिए जब तक कि आपके डैनों में पर न आ जायँ।" —सैर मुताख़रीन, द्वितीय भाग, पृष्ठ १८६

विशेष दल का संगठन किया। मार्कर ने यूरोप में युद्ध-विद्या की शिक्षा पाई थी एवं हालैण्ड के युद्ध में रह कर विशेष अभिज्ञता एवं अनुभव प्राप्त किया था। उनकी विद्या-बुद्धि एव समर-कौशल की बात आज भी बंगवासियों के स्मृति-पट से नष्ट नहीं हुई है।

मीरक़ासिम के सेनानायकों में से सेनापति समरू का नाम इतिहास में भली-भाँति विख्यात है। वह यूरोप में कसाईख़ाने के एक कर्मचारी थे; वहाँ से स्विस सेनादल के साथ भारत में प्रवेश करके फ्रांसीसियों के अधीन सेना का भार ग्रहण किया था। भारत के इतिहास में वह अंग्रेजों के चिरशत्रु के रूप में ही आते हैं। वह राक्षस के समान क्रूर थे। प्रभु की आज्ञा प्राप्त होने पर हित-अहित का विचार नहीं करते थे। उनका असल नाम था, 'वाल्टर रेण्ड'।

गद्दी पर बैठने के पहले मीरक़ासिम सेनानायक का कार्य करके ही जीविका उपार्जन करते थे, अतएव सामरिक बातों के सम्बन्ध में जानकारी का उन्हें अभाव नहीं था; तथापि सिंहासन पाने के बाद स्वयं उसका भार उन्होंने विश्वासी सेना-नायकों पर ही छोड़ दिया, इसीलिए अंग्रेज इतिहास-लेखकों में से कोई-कोई उन्हें रणभीरु तक लिख गये हैं।

मीरक़ासिम के सेना-नायक साहस, वीरता और समर-कौशल में अंग्रेज़ सेना-नायकों के बराबर हो गये थे। उन लोगों पर ही निर्भर करके मीरक़ासिम ने अंग्रेज़ों से वैर मोल लेने का विचार किया था। वह जानते थे कि स्वदेश के वाणिज्य की रक्षा के लिए अंग्रेज़ों के उच्छृंखल व्यवहार का दमन करने की चेष्टा करते ही युद्ध का सामना करना होगा। इसीलिए युद्धार्थ

प्रस्तुत होने के पूर्व चुपचाप उन्होंने अनेक लाञ्छनायें सहन की थीं।

मीरक़ासिम के गुप्त सेना-संग्रह की बात अंग्रेजों को अज्ञात नहीं थी। उन्होंने भी बाहुबल से बाहुबल को दबाने के लिए उचित आयोजन करने में त्रुटि न की। विवाद के कारणों का अभाव नहीं था। दरबार में मीरक़ासिम को नित्य ही अंग्रेज गुमाश्तों की अत्याचार-कहानी सुननी पड़ती थी। अपनी प्रजा का असीम कष्ट तथा विदेशी बनियों की मनमानी लूट देखकर वह क्रोध से काँप उठते किन्तु समय आया न जान चुपचाप सह लेते थे। बालक सिराज ने हृदयावेग से अधीर होकर असमय ही कलहानल में आत्म-विसर्जन किया था। प्रवीण मीरक़ासिम को वह बात भूली न थी, अतएव उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में वह अपने हृदयावेग को रोकने के लिए बाध्य हुए थे।

अस्त्र-शस्त्रादि के एकत्र एवं सेना के सुशिक्षित हो जाने के बाद मीरक़ासिम ने बेतिया राज्य जय किया और वहाँ से नेपाल की ओर युद्ध-यात्रा की। तात्कालिक मोरंग नामक नेपाल की तराई-प्रदेश को लेकर सदैव लड़ाई-झगड़े लगे रहते थे। तिब्बत के यात्रियों से नेपाल के प्रवेश-पथ का पता लगाकर पहाड़ों को लाँघते, दुर्गमपथ को तय करते तथा अनेकानेक कठिनाइयाँ झेलते हुए मीरक़ासिम ने नैपाल-राज्य पर आक्रमण किया। यूरोपीय प्रणाली से सुशिक्षित नवाब की सेना ने नैपाल के सुविख्यात वीर सैनिकों को सम्मुख युद्ध में परास्त कर दिया, किन्तु विपक्षी दल ने मैदान छोड़कर पहाड़ियों में छिप-छिपकर डाकुओं की भाँति आक्रमण करना शुरू किया। रास्तों की अनभिज्ञता के कारण

तथा सम्मुख युद्ध में विपक्षियों को जुटते न देख भग्न-मनोरथ हो नवाब स्वदेश को लौट आये। गुर्गनख़ाँ के सेना-कौशल से नवाब की सेना सम्मुख युद्ध में दुर्दमनीय हो गई है, यह बात चारों ओर फैल गई।

सेना को नये ढंग से शिक्षित और संगठित करने के लिए मीरक़ासिम ने मुक्तहस्त होकर धन व्यय किया था। उनकी सेना भी नेपाल-युद्ध में अपनी शक्ति का परिचय प्राप्त कर यूरोपीय रण-कौशल का माहात्म्य अनुभव करने में समर्थ हुई थी।

इस समय बंगाल की अवस्था सब तरह अच्छी हो चली थी। राजकोष में धन का अभाव नहीं था; सेना सुशिक्षित हो गई थी; शिल्प एवं वाणिज्य में दूर-दूर के देशों तक ख्याति प्राप्त कर देशवासी व्यापार बढ़ाने का सुयोग प्राप्त कर रहे थे। मीरक़ासिम के न्याय-विचार से अराजकता दूर हो गई थी और चारों ओर सुविचार की प्रतिष्ठा हो रही थी; किन्तु पाठक सुनकर आश्चर्य करेंगे कि इसी समय बंगवासियों का हाहाकार बढ़ने और प्रबल होकर नवाब के कानों तक नित्य पहुँचने लगा।

स्वदेश-वासियों के लिए वाणिज्य-व्यापार से धन कमाना असम्भव हो उठा। आढ़तों में जो चीज़ें लाकर रक्खी जातीं, उन्हें अंग्रेज़ ही हड़प कर जाते। वे अपने हाथ कम मूल्य पर बेचने के लिए लोगों को बाध्य करते थे। थोड़े दाम में चीज़ें ख़रीद कर तिगुने-चौगुने दाम में उन्हें बेच अपने घर भरने के लिए वे भारत-वासियों का सर्वनाश करने को तैयार हो गये। कम्पनी के वाणिज्य से इस देश की विशेष क्षति न होती थी, क्योंकि कम्पनी यहाँ से चीज़ें ख़रीदकर विलायत में बेचती थी, किन्तु कम्पनी की

देखा-देखी, लालच से अन्धे हो कम्पनी के कर्मचारी भी अपना अलग-अलग (व्यक्तिगत) व्यापार आरम्भ कर देशी व्यापारियों का सर्वनाश करने लगे। फ़ायदा इतना अधिक होता था कि सभी अंग्रेज़ इस देश के लोगों की रोटी पर हाथ साफ़ करने को तुल गये; कम्पनी की ओर पूरा ध्यान न देकर सब अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए अन्धे होकर अत्याचार करने लगे। नवाब के कर्मचारी उनके अत्याचार का प्रतीकार करने में समर्थ नहीं हुए। अंग्रेज़ बनियों ने धन के लोभ से उन्मत्त होकर नवाब का शासन-क्षमता अस्वीकार करने में भी कमी न की। वांसिटर्ट ने इन बातों को रोकने की बहुत चेष्टा की, पर वह भी सफल न हुए। 'दोष किसका था ?' इस प्रश्न की निरपेक्ष भाव से मीमांसा करने पर अंग्रेजों को भी स्वीकार करना पड़ा है कि नवाब का कुछ अपराध नहीं; अंग्रेज़ ही अपराधी हैं।

१५
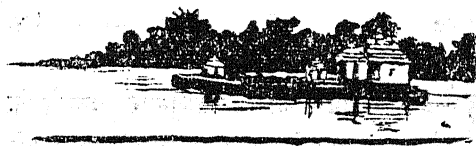
बन्धु-विच्छेद

Mir Kasim was a man of a stamp different to that of his father-in-law. The pliant disposition which had caused the latter to bend on every decisive occasion to the will of his European masters did not belong to his nature. —*Col. Malleson.**

अंग्रेज मीरजाफ़र को इच्छानुसार चलाते थे; अंग्रेजों के साथ मत-भेद या झगड़े की ज़रा भी संभावना उपस्थित होते ही मीरजाफ़र अंग्रेजों के हाथ में आत्म-समर्पण कर

* अर्थात्, " मीरक़ासिम अपने ससुर (मीरजाफ़र) के गठन से भिन्न स्वभाव के आदमी थे। मीरजाफ़र की सहज ही प्रभावित हो जाने वाली कमज़ोर प्रकृति—जिसने हर निर्णयात्मक अवसर पर उन्हें अपने

दिया करते थे। बुद्धि, औचित्य एवं स्वाधीनता को बेचकर वह सदैव अंग्रेज़ों की कृपा ख़रीदा करते थे। मीरक़ासिम को उस तरह इच्छानुसार घुमाने की संभावना नहीं थी। उनका चरित्र स्वतंत्र उपादानों से गठित हुआ था, अतः बन्धु-विच्छेद का अवसर उपस्थित होने में विलम्ब नहीं हुआ।

दोष किसका है, इस प्रश्न की स्वतंत्र रूप से आलोचना न करके ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख कर देने से ही सब-कुछ स्पष्ट हो जायगा। अंग्रेजों के साथ कलह करके ही मीरक़ासिम सिंहासन त्याग करने को बाध्य हुए थे; किन्तु अंग्रेजों के साथ कलह क्यों उपस्थित हुआ, इसके मूल कारण का अन्वेषण करते ही आश्चर्य-चकित होना पड़ता है।

यह देश—बंगाल-बिहार-उड़ीसा—उस समय मुसलमानों के अधीन था। देश के निवासियों के सुख-दुःख के साथ देश के नवाब का सम्बन्ध था। स्वदेशवासियों की रोटी पर अंग्रेज़ों को हाथ साफ़ करते तथा देश के वाणिज्य-व्यवसाय को लूटते देख मीरक़ासिम को बाध्य होकर प्रजा-रक्षा के लिए तलवार हाथ में लेनी पड़ी थी; राज-धर्म की रक्षा के लिए चेष्टा करनी पड़ी थी। उस चेष्टा में ही देश के दुर्भाग्य से उन्हें सिंहासन-च्युत होना पड़ा।

पीछे लिखा जा चुका है कि कम्पनी के कर्मचारी, रातों-रात बड़ा आदमी बन जाने की आशा से वाणिज्य-कर्म में प्रवृत्त हुए थे। कम्पनी से थोड़ा-बहुत जो वेतन मिलता था उससे शान-शौक़त के साथ रहने का काम नहीं चलता था—अभाव बना ही रहता

यूरोपीय (अंग्रेज़ों से अभिप्राय है) प्रभुओं के सामने झुकने को बाध्य किया था—उनके हिस्से में न पड़ी थी।" —कर्नल मैलीसन

था, अतः अर्थोपार्जन के लिए भी उन्हें अन्य उपायों का सहारा लेना पड़ता था। देश के वाणिज्य में लाभ का पूछना ही क्या था? धन के उस आकर्षण से उन्मत्त होकर उन्होंने जिन उपायों का अवलम्बन किया था, उनसे देशी वाणिज्य का सर्वनाश हो जाने पर देशवासियों की क्या दशा होगी, स्वार्थ की प्रबल ताड़ना से अन्धे कर्मचारी इसका विचार नहीं करते थे। वे विलायत को चीजें भेजकर तो व्यापार कर नहीं सकते थे (क्योंकि उसका एकमात्र अधिकार कम्पनी को ही था), अतएव देश में ही जल और स्थल-पथ से व्यापार करके देश का धन लूटते थे। (पिछले नवाब की सरकार ने कम्पनी के व्यापार पर चुंगी माफ़ कर दी थी। कम्पनी ने नवाब का आज्ञापत्र छपाकर उसकी एक प्रति अपने कर्मचारियों को बाँट दी थी। कर्मचारियों को आज्ञापत्र की प्रतियाँ इसलिए दी गई थीं कि कम्पनी के माल के सम्बन्ध में रोक-थाम होने वा आवश्यकता पड़ने पर आसानी के साथ जाँच हो सके) किन्तु कर्मचारीगण, कम्पनी की मोहर से युक्त यह 'दस्तक' नामक अनुमति-पत्र दिखाकर अपना ख़ास माल भी निःशुल्क ले जाने लगे।❀ अंग्रेजों के इस विश्वासघात, बेईमानी और नीचतापूर्ण व्यवहार से राजकोष की तो हानि होती ही थी; शुल्क देकर व्याणिज्य करने के कारण देशी व्यापारियों को भी कम्पनी के कर्मचारियों की प्रतियोगिता में घाटा उठाकर हारना पड़ता था। इस प्रकार देश का व्यापार उजड़ रहा था।

गवर्नर वांसिटर्ट तथा सदस्य वारेन हेस्टिंग्स के अतिरिक्त

❀ कोष्टक के वाक्य विषय को सुस्पष्ट बनाने के लिये अनुवादक ने ऐतिहासिक आधार पर सम्मिलित कर दिये हैं।

सारे अंग्रेज़ कम्पनी के कर्मचारियों के इस उच्छृंखल वाणिज्य के पक्षपाती थे। उससे सभी को लाभ होता था। लाभ वा धन के लोभ से कर्त्तव्यबुद्धि लुप्त हो गई थी। विलायत के डाइरेक्टर बार-बार निषेध करके भी कर्मचारियों की इस प्रवृत्ति को रोकने में समर्थ न होते थे। इस अनुचित वाणिज्य के अत्याचार से पीड़ित देशी व्यापारियों के आर्त्तनाद एवं हाहाकार से नवाब का दरबार हिल उठा। यह कहा जा सकता है कि मीरक़ासिम इस अत्याचार-जनित हाहाकार पर ध्यान न देते तो शायद इतनी जल्दी बंधु-विच्छेद की नौबत न आती; किन्तु याद रखना चाहिए कि देश का शासन-भार ग्रहण करने के कारण वह समाज और परमेश्वर के निकट कर्त्तव्य-पालन के लिए ज़िम्मेदार थे, अतएव इस ओर से मुँह कैसे मोड़ सकते थे? देश की शत-शत प्रजाओं के हाहाकार और पीड़ा-जनित आर्त्तनाद की उपेक्षा वह नहीं कर सके, यही उनका अपराध है। इसीसे बंधु-विच्छेद का अवसर उपस्थित हुआ।

अंग्रेज़-'बन्धुओं' के अन्याय-उत्पीड़न से प्रजा की रक्षा करने के लिए मीरक़ासिम कम्पनी के लाभ-मार्ग को अवरुद्ध करने की चेष्टा करने वाले हैं, इस बात का आभास प्राप्त कर कम्पनी के कर्मचारियों ने कलह उपस्थित किया। मीरक़ासिम बाहुबल से अंग्रेज़ कर्मचारियों का अत्याचार-उत्पीड़न दूर कर सकते थे; वह इच्छा करने पर अत्याचारियों को राज-दण्ड से दण्डित कर सकते थे; फिर भी उन्होंने कम्पनी को शिकायत करने का मौक़ा न देने के लिए अंग्रेज़-दरबार में ही निवेदन किया, उसीकी शरण ली। अभियोग के मूल-रूप तथा कारणों

का अनुसन्धान करने के लिए वारेन हेस्टिंग्स को नियुक्त कर गवर्नर वांसिटर्ट ने मीरक़ासिम को शान्त किया। हेस्टिंग्स ने अनेक स्थानों पर घूम-फिरकर जो विवरण लिखा, उससे नवाब की शिकायत तथा कम्पनी के कर्मचारियों के अत्याचार की कोई बात छिपी न रही—उसे अस्वीकार करने का कोई उपाय नहीं रह गया।[१]

ढाका के अंग्रेजों ने सिलहट में अपने सिपाही भेजकर वहाँ के एक प्रतिष्ठित अधिवासी का खून कर डाला था और ज़मींदार को बल-पूर्वक क़ैद कर ले गये थे।[२] जो लोग इन नीच कर्मचारियों के गुप्त, अवैध एवं अनुचित वाणिज्य की पोल खोलने वा उसे रोकने की कुछ चेष्टा करते थे, उन्हें कम्पनी के कर्मचारी फ़ौज भेजकर इसी प्रकार पीड़ित वा शासित करते थे।

नवाब के कर्मचारी इन अत्याचारों को रोकने में समर्थ नहीं होते थे। ज़मींदार लोग आतंक से सिहर उठे; निरीह प्रजा अंग्रेज-गुमाश्तों के अत्याचार तथा भय से गाँव छोड़-छोड़कर भागने लगी। ये सब बातें विलायत के कर्ता-धर्ता लोगों (बोर्ड ऑव् डाइरेक्टर्स) के कानों तक पहुँचीं। वहाँ से पत्र आया—"हम लोग साफ़ शब्दों में आदेश करते हैं कि हमारी अधीनता में नियुक्त रहने की इच्छा हो तो पत्र पढ़ने के साथ ही नवाब को सूचित करो कि 'हम लोग इन अत्याचारों का पक्ष-समर्थन नहीं करते हैं। निर्लज्ज और अनुचित भाव से दस्तकों का दुरुपयोग

1 *PROCEEDINGS OF COUNCIL October 14, 1762.*

2 *Mr. Vansittart has received private intelligence that a party of Sepoys were sent to Sylhet by the gentlemen (?) at Dacca on account of some private dispute, who fired upon and killed one of the principal people of the place and afterwards made the Zamindar prisoner and forcibly carried him away.--IBID.*

करके नवाब की चुंगी नष्ट करने एवं उनकी मर्यादा अस्वीकार करने की हमें ज़रा भी इच्छा नहीं है और हम ऐसे प्रत्येक कार्य को अनुचित एवं अवैध समझते हैं।' "१

विलायत के डाइरेक्टरों का यह साधु-संकल्प विफल हो गया। अंग्रेजों का अत्याचार अक्षुण्ण रहकर प्रजा का सर्वनाश करता ही रहा। डाइरेक्टरों की आज्ञा का कर्मचारियों पर कुछ प्रभाव न पड़ा। पड़ता कैसे ? वे तो स्वार्थ के लिए अन्धे हो रहे थे। अपना अपराध ढकने के लिए उन्होंने नवाब के नाम निराधार अभियोगों की सृष्टि करने में भी त्रुटि न की। उपाय न देख प्रजा की रक्षा के लिए बाध्य होकर मीरक़ासिम को अंग्रेज गुमाश्तों का 'मुचलका' लेने की आज्ञा देनी पड़ी। सिराजुद्दौला ने 'मुचलका' लेने की चेष्टा में अपना सर्वनाश किया था। पुनः वही चेष्टा करने पर फिर सर्वनाश हो सकता है, इसे सोच-समझ और जानकर भी मीरक़ासिम कर्त्तव्य-पालन से विमुख न हुए।

उस ज़माने में राजशाही की ज़मींदारी ही सब ज़मींदारियों से श्रेष्ठ तथा बड़ी समझी जाती थी। बंगाल का बहुत-सा हिस्सा इस ज़मींदारी के भीतर था। प्रतःस्मरणीया रानी भवानी के शासन-कौशल से राजशाही अपने शिल्प-वाणिज्य के लिए जगद्विख्यात हो उठा था। अंग्रेज़ लोग भारतवर्ष से जो द्रव्य विलायत भेजते थे, उसका अधिकांश राजशाही-प्रदेश में ही उत्पन्न

१ पत्र के मूल वाक्य ये हैं—

' We positively direct, as you value our service, that you do immediatly acquaint the Nabab, in the Company's name, that we disapprove of every measure which has been taken in real prejudice to his authority and government, particularly with respect to the wronging in his revenues by a shameful abuse of DUSTICKS.--COURT'S LETTER, DECEMBER 30, 1762.

होता था। गुमाश्तों के अत्याचार एवं कम्पनी के कर्मचारियों की स्वार्थान्ध प्रकृति से इस प्रदेश का शिल्प और वाणिज्य नष्ट होने लगा। मीरक़ासिम के अंग्रेज गुमाश्तों का 'मुचलका' लेने का आदेश करने पर, गवर्नर वांसिटर्ट ने ठीक हालत की जाँच के लिए गंगाराम मित्र नामक एक सुयोग्य व्यक्ति को राजशाही भेजा।[१]

[1] *I am acquainted that Mr. Chevalier, Mr. Texeira, and sundry English gomastas, without either dustak or order from the Huzoor, do in the Pergana of Rajshahy and other Districts in the Zamindary of Rani Bhabany, oppressively stop and embark goods and force people to buy, by which the inhabitants are obliged to fly the country and the King's revenues are greatly prejudiced. I therefore send you with some Burkandazes. You must, on your arrival at the said Pergannah, prevent those people who have raised such disturbances, who, if they mind you it will be well, if not whatever oppressions they have been guilty of, you must make yourself fully acquainted with, and send me an authentic account of the same and agreeably thereto I shall take account of their oppressive proceedings, and punish them.--PROCEEDINGS, January 17, 1763.*

अर्थात्, "मुझे मालूम हुआ है कि मि० चिवेलियर, टेकज़िरा तथा अंग्रेज़ गुमाश्तों के अन्य कितने ही दल हुज़ूर (नवाब) से आज्ञापत्र वा दस्तक लिए बिना ही राजशाही तथा रानी भवानी की ज़मींदारी के अन्य प्रदेशों की रैयतों एवं व्यापारियों की चीज़ें रोकते तथा उन्हें अपने हाथ बेचने एवं अपनी चीज़ें ख़रीदने को बाध्य करते हैं, उनके साथ ज़बर्दस्ती करते हैं, जिसकी वजह से वहाँ के निवासी गाँव छोड़कर भागने को बाध्य हो रहे हैं और बादशाह (नवाब-सरकार) की मालगुज़ारी तथा आमदनी को बड़ी क्षति पहुँच रही है। इसकी जाँच के लिए मैं आपको कुछ बर्कन्दाज़ों के साथ वहाँ भेजता हूँ। वहाँ पहुँचकर आप, उन लोगों को, जिनके कारण ये सब अत्याचार हो रहे हैं, रोकिए। यदि वे आपका कहा मानलें वा आपकी आज्ञा पालन करें तो ठीक है; वर्ना उनके सारे अत्याचारों, दोषों एवं अभियोगों का, जिनके लिए वे दण्डनीय हों, पता लगाकर मेरे पास सच्चा विवरण लिख भेजिए, ताकि मैं उनके विरुद्ध कार्रवाई करके उन्हें दण्ड दे सकूँ।" —कार्य-विवरण, १७ जनवरी, १७६३ ई०

मित्र महाशय की जाँच का कुछ फल न हुआ। देशी व्यापारी घाटे से त्रस्त होने लगे; देशी व्यापार के बन्द वा नष्ट होने का उपक्रम हुआ; राजकोष की हानि होने लगी; देश-वासी दिन-दिन कंगाल होने लगे। मीरक़ासिम के बार-बार प्रतिवाद करने पर गवर्नर ने उनसे भेंट करने के लिए मुँगेर की यात्रा की।

अंग्रेज़ गुमाश्तों के इस ग़ैर-क़ानूनी उच्छृंखल वाणिज्य से देश की अवस्था कितनी शोचनीय और भयानक हो उठी थी, इसे कितने ही सहृदय एवं सत्य-प्रेमी अंग्रेज-लेखक मुक्त-कण्ठ से लिख गये हैं। प्रतिष्ठित देशी व्यापारीगण इन अत्याचारों से एक दम उजड़ गये; परगने का परगना त्रस्त, कंगाल तथा हाहाकार-पूर्ण हो गया; सम्पूर्ण देशी व्यापार नष्ट हो गया।[१]

नवाब और अंग्रेज़ गवर्नर में बहुत तर्क-वितर्क हुआ। अंग्रेज कर्मचारियों के आश्रय में उनसे 'दस्तक' ले कम्पनी का झण्डा उड़ाकर कितनों ही ने बिना शुल्क के वाणिज्य आरम्भ कर दिया था। अंग्रेज अधिकारीगण अवसर के अनुसार, कभी वाणिज्य करके और कभी 'दस्तक' बेचकर, अर्थोपार्जन कर रहे थे। उपाय न देख संसर्ग-दोष से इस देश के कितने ही लोगों ने भी अंग्रेजों की देखा-देखी अनुचित उपायों का अवलम्बन करना शुरू कर दिया था। वे लोग भी कभी जाली 'दस्तक' तैयार करके, कभी अपने मित्रों एवं स्नेहियों को सिपाहियों के रूप में सजाकर, कभी अंग्रेज गुमाश्तों को घूस देकर, निःशुल्क वाणिज्य करने लगे थे।[२]

1 The results of this shameful oppressive system were that the respectable classes of native merchants were ruined, whole districts became impoverished; the entire native trade became disorganised.--MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA P. 145.

2 The river was covered with fleets of fleets proceeding up and down under English flags with small guards of SYPAHIS and English DUSTAKS and a system speedily ob-

अंग्रेज गवर्नर इनमें से कोई बात अस्वीकार न कर सके। अत्याचार के निराकरण का उपाय न देख देश अराजक हो उठा था; नवाब की शासन-क्षमता नष्ट हो चली थी; जल-स्थल सर्वत्र देश के निवासियों का व्याकुल आर्त्तनाद सुन पड़ता था। यदि कोई इन अत्याचारों के विरुद्ध अभियोग उपस्थित करने की चेष्टा करता तो अंग्रेज़ गुमाश्तों के सिपाही उसे मारने-पीटने तथा कड़े से कड़ा दण्ड देने में भी न हिचकते थे। किसी भी देश का शासक इस प्रकार की अराजकता सहन नहीं कर सकता, यह गवर्नर को भी स्वीकार करना पड़ा।१

tained amongst the native merchants of using the same DUSTAK over and over again, and finally of forging them ; also of dressing up their own followers as English SYPAHIS.—BROOM'S BENGAL ARMY, P. 345.

1 For my own part, I think that the honour and dignity of our nation would be better maintained by scrupulous and careful restraint of the DUSTAK, than by extending it beyond its usual bounds, and by putting our gomastas under some checks, than by suffering them to exercise our authority in the country, every one according to the means put into his hands, and thereby bringing an odium upon the name of the English by repeated violence done to the inhabitants. इसका आशय यह है कि मेरी निजी सम्मति में मामूली सीमा से बाहर वा अनुचित प्रकार दस्तकों का उपयोग करने की अपेक्षा उन्हें उचित रूप से व्यवहार करने तथा सावधानी एवं कड़ाई के साथ इस विषय में रोक-थाम करने से हमारे राज्य की इज़्ज़त और मर्यादा अधिक उत्तमता-पूर्वक फैलाई जा सकती है। गुमाश्तों की जाँच करने तथा उन्हें अधिकारों का उचित एवं वैध रूप में प्रयोग करने के लिए बाध्य करने में ही हमारी इज़्ज़त तथा भलाई है। गुमाश्तों को न रोकना और उन्हें अपने अधिकारों का इस प्रकार अनुचित प्रयोग करने का मौक़ा देना, कभी उचित नहीं कहा जा सकता। जो अधिवासियों पर बार-बार इस तरह की ज्यादती कर रहे हैं, वे अंग्रेज़ों का नाम कलंकित कर रहे हैं।

कम्पनी के अतिरिक्त और किसी को बिना शुल्क दिये वाणिज्य करने का अधिकार नहीं था। उसी प्रथा को पुनः चलाने के लिए गवर्नर ने अंग्रेज-कर्मचारियों को स्वतंत्र वाणिज्य पर कर लगाने का प्रस्ताव किया। एक 'दस्तक' बार-बार व्यवहृत न हो सके, इसके लिए गवर्नर वांसिटर्ट ने प्रस्ताव किया कि अंग्रेज गुमाश्ता एवं नवाब-कर्मचारी दोनों के हस्ताक्षर बिना कोई 'दस्तक' स्वीकार न किया जाय। अंग्रेज-कर्मचारियों के स्वाधीन वाणिज्य पर ९ प्रतिशत टैक्स लगाया जाना गवर्नर ने उचित बताया।

मीरक़ासिम ने गवर्नर की इन बातों में से एक भी स्वीकार न की। इन उपायों से अंग्रेज गुमाश्तों का अत्याचार दूर हो जायगा, इसका उन्हें विश्वास नहीं हुआ। गवर्नर के बहुत कहने-सुनने तथा अनुरोध करने पर उस समय इन प्रस्तावों को मानकर दरबार भंग करते हुए उन्होंने कहा—"अच्छा, कुछ दिन देखूँगा; अत्याचारों का प्रतीकार न होने पर शुल्क उठाकर अंग्रेज एवं देशी सारे व्यापारियों को समान भाव से वाणिज्य का अधिकार दे दूँगा।"

वांसिटर्ट ने जिन प्रस्तावों पर बड़े अनुनय-विनय के बाद नवाब की स्वीकृति प्राप्त की थी एवं जिनके पालन के लिए नवाब के सम्मुख धर्म की शपथ लेकर वह प्रतिज्ञा-बद्ध हुए थे, कलकत्ते के अंग्रेज उन्हें भी स्वीकार करने को तैयार न हुए। कर देना उन्होंने स्वीकार न किया वरन् वैसी शर्तें पेश करने के कारण वे गवर्नर को ही दोषी ठहराने लगे। उन्होंने कहा कि गवर्नर को कर्मचारियों के वाणिज्य के सम्बन्ध में वैसी शर्तें पेश करने का कोई अधिकार नहीं था अतएव अंग्रेज उन शर्तों को मानने के

लिए बाध्य नहीं हो सकते। इस प्रकार के तर्क-वितर्क से अंग्रेज-दरबार ध्वनित हो उठा। वारेन हेस्टिंग्स के अतिरिक्त और किसी व्यक्ति ने गवर्नर के पक्ष का समर्थन नहीं किया। हेस्टिंग्स ने सदस्यों को बार-बार समझाने की चेष्टा की कि इस प्रकार आचरण करने से अंग्रेजों का नाम घृणित और कलंकित हो जायगा[१] परन्तु इसका कुछ फल न हुआ।[२]

1 Such a system of Govrnment cannot fail to create in the minds of the wretched inhabitants an abhorrence of the English name, and authority; and how will it be possible for the Nabab, whilst he heard the cries of his people which he cannot redress, not to wish to free himself from an alliance which subjects him to such indignities ?--Hasting's MINUTE, PROCEEDINGS, March 3, 1763.

अर्थात्, "गवर्नमेण्ट की यह प्रणाली दीन-हीन, जर्जर एवं अत्याचार-पीड़ित अधिवासियों के हृदयों में अंग्रेज़ों के नाम एवं उनके अधिकार तथा शक्ति के प्रति अधिकाधिक एवं ज़बर्दस्त घृणा पैदा करने में चूक नहीं सकती और नवाब के लिए यह कैसे संभव हो सकता है कि अपनी प्रजा का व्यथित आर्त्तनाद सुनते हुए (जिनका सुनना वह बन्द नहीं कर सकते) अपने को ऐसी मित्रता वा सन्धि से मुक्त करने की इच्छा न करें, जिसके कारण उनकी मर्यादा को चोट पहुँचती है?"

अनुवादकीय नोट—हेस्टिंग्स का यह नोट साफ़-साफ़ बतला रहा है कि अंग्रेज़ों ने ही मीरक़ासिम को सन्धि तोड़ने पर बाध्य किया—इतना ही नहीं वरन् कहा जा सकता है कि ज़बर्दस्ती तुड़वाया, और इन्हीं अंग्रेज़ों ने पीछे मीरक़ासिम के मत्थे सारा दोष मढ़कर अपनी ग़लती को ढकने का प्रयत्न किया। यह प्रयत्न कितना निन्दनीय है, इसे पाठक स्वयं ही विचार लें।

२ मेरी समझ में उस समय 'पार्टीफ़ीलिंग' ज़ोरों पर थी। शुरू से ही गवर्नर का विरोध करना सदस्यों का एक ख़ास काम हो गया था। वे लोग उचित-अनुचित और हिताहित पर भी उतना विचार न करते थे। —अनुवादक

अंग्रेजों ने नमक के व्यापार पर २॥ प्रतिशत कर देना स्वीकार किया। अन्य वस्तुओं को बिना कर दिये ही लाने-लेजाने का प्रस्ताव किया। गवर्नर ने जो शर्त्तें पेश की थीं, मीरक़ासिम के अनुरोध से उन्हें लिपि-बद्ध करके नवाब के दफ़्तर में दाख़िल कर आये थे। उनकी नक़लें सब जगह भेज दी गई थीं। अंग्रेजों के शुल्क देने को तैयार न होने पर उनकी नावें रोकी गईं। इसका समाचार पाकर सब अंग्रेज अशान्त हो उठे। इधर अंग्रेज-दरबार का हाल मालूम होने पर मीरक़ासिम के लिए भी क्रोध रोकना असंभव हो गया।

दरबार भंग करते समय गवर्नर के सामने कही हुई बात याद कर, देशी वाणिज्य की रक्षा के लिए, नवाब ने सब जातियों को निःशुल्क व्यापार करने की आज्ञा प्रचारित की। यह प्रसिद्ध घोषणा-पत्र मुसलमानों के सुभान महीने की १९ वीं तारीख़ (५ मार्च, १७६३ ई०) को राजा नौबतराय के सामने लिखा गया था। इसके प्रत्येक शब्द में मीरक़ासिम का असली चरित्र प्रकट हुआ है। अंग्रेजों के साथ झगड़ा करने से सर्वनाश हो जाने की संभावना है अथवा अभी प्रकाश्य कलह का समय नहीं आया है, इन बातों की जरा भी पर्वा न करके उन्होंने राजाज्ञा प्रचारित की। अंग्रेजों ने इस घोषणा-पत्र का जो अंग्रेजी अनुवाद किया है, उसे हम यहाँ अविकल रूप से उद्धृत करते हैं—

"Having been certainly informed that the greater part of merchants of my country have suffered considerable losses, and have laid aside all traffic, sitting idle and unemployed in thier houses,—

Therfore with a view to the welfare and quiet of this kind of people, I have caused all duties of customs, chaukeedary Mangan, collections upon new-built boats and other lesser taxes by land and water, for two years to come, to be removed, and my *Sunnod* is accordingly sent to enforce it.

अर्थात्, "मुझे ठीक-ठीक पता चला है कि मेरे देश के व्यापारियों का अधिकांश भाग, अत्यधिक हानि से क्षति-ग्रस्त हुआ है और विवश हो सब कुछ छोड़कर बेकारी की हालत में दिन बिता रहा है; अतएव उनके उपकार, शान्ति, उन्नति और भलाई के लिए, चुंगी, चौकीदारी, मंगन, नव-निर्मित नावों पर बैठाये हुए कर, उतराई तथा जल-स्थल सम्बन्धी व्यापार के सब छोटे-छोटे टैक्स, अगले दो वर्षों तक के लिए दूर कर दिये जाते हैं। इस आज्ञा को कार्य-रूप में परिणत करने के लिए सनद भेजा जाता है।"

देश में घोषणा-पत्र के प्रचारित होते ही अंग्रेज-मण्डली में बड़ा कोलाहल उठा। उनकी इच्छा थी कि केवल वे ही निःशुल्क व्यापार करें। सब श्रेणी की प्रजा को निःशुल्क वाणिज्य का अधिकार देने से अंग्रेजों का सर्वनाश उपस्थित हुआ। अंग्रेज कहने लगे कि नवाब को इस प्रकार की घोषणा करने का अधिकार नहीं है।

मीरक़ासिम अंग्रेजों के साथ कलह में लिप्त हो, उनकी हत्या करके, बंगाल के इतिहास को कलंकित कर गये हैं। उनके इस कृत्य के लिए भारतवासी-मात्र लज्जित हैं, तथापि उनकी इस

विख्यात घोषणा के लिए वे उन्हें धन्यवाद देना भी नहीं भूल सकते। बंग-वासी तो सदैव उनकी इस कृपा तथा प्रजा-हितैषिता को श्रद्धा के साथ याद करते रहेंगे। अंग्रेज इतिहास-लेखकों को, इस घटना का उल्लेख करते समय, अपनी जाति के कलंक का स्मरण करके लज्जा से सिर नीचा करना पड़ा है। एक अंग्रेज इतिहासज्ञ स्पष्ट ही लिख गये हैं—"मनुष्य स्वार्थान्ध होकर कितना अधःपतित हो सकता है, इसके उत्कृष्ट दृष्टान्त में उस समय के अंग्रेज उपस्थित किये जा सकते हैं।"[१]

---

1 *The conduct of the Company's servants upon this occasion furnishes one of the most remarkable instances upon record of the power of interest to extinguish all sense of justice and even of shame. They had hitherto insisted contrary to all right aud all precedent, that the Government of the country should except their goods from duty. They now insisted that it should impose duties upon the goods of all other traders, and assumed it a guilty of a breach of place toward the English nation, because it proposed to remit them.--Mill's HISTORY OF BRITISH INDIA (Wilson) vol. III. 337.*

(अनुवादकीय नोट—'मिल का यह कहना बहुत ठीक है कि यह घटना स्वार्थान्धता एवं न्याय की हत्या का बहुत सच्चा और घृणात्मक दृष्टान्त है। एक स्वाधीन राजा के राज्य में जाकर उसकी प्रजा पर अत्याचार करना, नियम एवं क़ानून का उल्लंघन करके व्यापार करना, कर न देना, तिसपर सब श्रेणी के लोगों को निःशुल्क व्यापार का अधिकार देने पर बिगड़ खड़े होना एवं दूसरों पर टैक्स लगाने के लिए कहना, घोर अराजकता है।
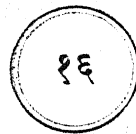
समर-सूचना

As a last resource it was agreed that a deputation should be sent to the Nawab, who was then at Mongeer to endeavour to arrange terms with him and to induce him to countermand his order for the abolition of all transit duties.❀ —*Captain A. Broome.*

अंग्रेज़ कर्मचारियों के स्वाधीन वाणिज्य की रक्षा के लिए अंग्रेज़-मात्र कमर कसकर तैयार हो गये। अंग्रेज़-गवर्नर को निरुपाय होकर उनकी आज्ञा पालन करने के

❀ "अन्तिम तदबीर यही तय पाई कि नवाब के पास (जो उस समय मुँगेर में थे) एक डेपूटेशन भेजकर समझौता करने की शर्तें तय की जायँ और इस बात के लिए दबाव डाला जाय कि अंग्रेज़ व्यापारियों के व्यापार

लिए बाध्य होना पड़ा। सब लोगों की सम्मति से मीरक़ासिम पर ही सारा अपराध लगाकर काम निकालने का निश्चय हो गया; मीरक़ासिम के सीधे-सीधे न मानने पर बाहु-बल का प्रयोग करने की बात भी तय हो गई।

अंग्रेज़ों के इस दुष्ट निश्चय की समालोचना करते हुए एक अंग्रेज़ इतिहास-लेखक लिख गये हैं:—"सब लोगों ने एक स्वर से निश्चय किया कि यदि अंग्रेज़ों के अनुरोध पर नवाब इस प्रकार अपनी प्रजा का सर्वनाश करने में असम्मति प्रकाश करें तो बाहु-बल द्वारा प्रतीकार करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है!" [१]

तथापि बाहु-बल का प्रयोग करने के पूर्व धमकी से ही काम निकालने की आशा से एक बार नवाब के पास दूत भेजना स्थिर हुआ। तदनुसार ४ अप्रैल को श्री आमियट और श्री हे नामक दो सदस्यों ने कलकत्ता से मुँगेर की यात्रा की। इधर युद्ध की तैयारी भी होने लगी। पटना के गुमाश्ता एलिस साहब के परामर्श से कुछ सिपाही भी नौका और गोली-बारूद के साथ पटना की ओर भेज दिये गये। एलिस साहब के ऐसे अनुचित व्यवहार से बिहार के नवाब-कर्मचारियों का खुल्लमखुल्ला अपमान हुआ। इधर यह सब हो रहा था और उधर दूत भेजकर समझौता करने का बाहरी पाखण्ड भी चल रहा था।

पर से सब प्रकार की चुंगी उठा लेने के आशय की दूसरी आज्ञा अपनी पहली आज्ञा के विरोध में प्रचारित करें।

1 One and all had come to the conclusion that when an indepedent Nawab of Benga should dare to move in a direction contrary to that which had been urged upon him from Calcutta, there was but one remedy, and that remedy was force.--MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA, P. 148.

मीरक़ासिम यदि स्वार्थी, अकर्मण्य और कायर होते तो कुछ भी गोल-माल न उपस्थित होता। उन्होंने अंग्रेजों की सिपाही और गोली-बारूद से भरी हुई नौका रोक कर एलिस साहब के दुर्व्यवहार के विरुद्ध अंग्रेज़-दरबार में अभियोग उपस्थित करने के लिए अपना एक दूत कलकत्ता रवाना किया।

इन सब कारणों से दूत को नवाब के दरबार में सफलता नहीं मिली। उनकी कथा पर कौन विश्वास करता? तथापि मीरक़ासिम ने युद्ध-कलह दूर करने के लिए यथा-साध्य चेष्टा करने में त्रुटि नहीं की। उन्होंने दृढ़ता-पूर्वक व्यक्त किया कि प्रजा-रक्षा के लिए ही उसके व्यापार पर से भी कर उठा लिया गया है। उन्होंने यह बात भी यथासाध्य समझा दी कि प्रजा का सर्वनाश करके अंग्रेज़ कर्मचारियों के अर्थोपार्जन में सहायता करना असम्भव है।

कलकत्ता से नवाब के दूत के लौटने तक आमियट और हे साहब को मुँगेर में ठहरने के लिए बाध्य होना पड़ा। अदृष्ट की विडम्बना के कारण इससे भी मीरक़ासिम की शान्ति की प्यास दूर न हो सकी।[१]

कलकत्ता के अंग्रेज़ एक बार ही आग हो उठे। आमियट और हे साहब लौट न सके—सिपाहियों की नौका रोक ली गई, नवाब का घोषणापत्र भी उसी प्रकार बना रहा। इससे अंग्रेज़-मात्र क्रुद्ध होकर बाहु-बल का आश्रय ग्रहण करने के लिए

1 They found him, whilst firmly resolved to adhere to the policy which he declared with most perfect truth was the only policy capable of saving the industrial classes of his dominion from absolute ruin, yet anxious, almost painfully anxious, to avoid hostilities.—MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA.

तैयार हो गये। आमियट और हे साहब को गुप्त-रूप से भाग आने के लिए पत्र लिखा गया और उनके भागकर चले आनेपर बाहु-बल का प्रयोग करने के निश्चय की सूचना एलिस साहब को दी गई। स्वभाव के क्रोधी एलिस साहब पटना के क़िले पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगे।

कई दिन बीत जाने पर भी जब कलकत्ता से दूत नहीं लौटा तब मीरक़ासिम ने आमियट साहब को कलकत्ता भेजने का विचार किया। हे साहब को दरबार में ज़मानत के रूप में रखकर आमियट को कलकत्ता भेजने से लड़ाई-झगड़ा दूर होने का उपाय निकल आवेगा, यह सोचकर उन्होंने आमियट को अपना अभिप्राय बतलाया। आमियट ने तुरन्त मुँगेर से कलकत्ता की यात्रा की। मीरक़ासिम नहीं जानते थे कि इसीसे सर्वनाश उपस्थित होगा।

अंग्रेजों ने स्थिर किया था कि २३ जून के पूर्व जिस प्रकार होगा आमियट और हे साहब मुँगेर से भाग आयेंगे और इसके बाद एलिस साहब पटना के क़िले पर अधिकार कर लेंगे। इस निश्चय को कार्यान्वित करने के लिए एलिस दिन गिन रहा था। हे साहब को ज़मानत के तौर पर नवाब-दरबार में छोड़कर आमियट ने अकेले कलकत्ता की यात्रा की है, यह संवाद सुनने के पहले ही एलिस साहब ने बाहु-बल का प्रयोग किया।

एलिस साहब का यह हठ ही सारे अनर्थों का मूल मालूम होता है। किन्तु सच पूछिए तो इसमें अकेले एलिस साहब ही अपराधी न थे। युद्ध उपस्थित होने के बहुत पहले चौदहवीं अप्रैल को ही कलकत्ता की अंग्रेज सभा में निश्चय हो चुका था

कि युद्ध आरम्भ होने पर किस सेनापति को किस पथ से किस दिशा में यात्रा करनी पड़ेगी।[1] आमियट और हे साहब का कार्य समाप्त होने के पहले १८ जून को ही कलकत्ता के अंग्रेज़ दरबार में स्थिर हुआ था कि सेनानायक लोग अमुक गुप्त स्थान पर एकत्र होंगे। तदनुसार सभी युद्ध के लिए तैयार थे।[2]

आमियट और हे साहब ने १४ जून को मुँगेर से जो पत्र कलकत्ता भेजा था वह २३ जुलाई को कलकत्ता पहुँचा। उसमें लिखा था—"पटना में सेना भेजने के कारण नवाब बहुत क्रुद्ध हुए हैं; सेना को स्थानान्तर किये बिना शान्ति स्थापित होने की सम्भावना नहीं है। गुरगनख़ाँ के भाई कलकत्ता गये हैं; उनके ऊपर अत्याचार न हो, इस उद्देश्य से हे साहब को मुँगेर में ठहरना पड़ेगा।"

इस प्रकार आत्म-रक्षा की चेष्टा करके पटना दुर्ग को सुरक्षित करने के लिए मीरक़ासिम ने सेनापति मार्कर को पटना की ओर भेजा। एलिस साहब ने देखा मार्कर के ससैन्य पहुँच जाने

1 *Vansittart's Narrative, vol III, 194*

2 *It is agreed, in order to form a front for the protection of the company's AURUNGS and lands. to secure their investment and revenues in the best manner possible, and to endeavour to collect what we can from other provinces to answer the expence of the war, that our troops be immediately prepared for taking post. according to the following disposition.—VANSITTART'S NARRATIVES. VOL. III. 227.*

यह कहना बाहुल्य मात्र है कि मीरक़ासिम ने अभी तक कम्पनी की ज़मींदारी में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया था। अपने स्वार्थ के लिए कम्पनी के व्यय से लड़ाई-झगड़ा उपस्थित करने के लिए कम्पनी के कर्मचारियों ने ऐसी अलीक बात कम्पनी के दफ़्तर में लिपिबद्ध की थी। उस समय जो अंग्रेज़ कर्मचारी कलकत्ते में रहकर कम्पनी के व्यापार का काम करते थे, उनमें सत्यनिष्ठा का बहुत अभाव था।

पर क़िले पर क़ब्ज़ा करना कठिन हो जायगा। आमियट और हे साहब के २३ जून को भागने की बात थी। अतएव २३ तारीख़ तक ठहर कर क़िले पर अधिकार करने के लिए एलिस साहब अत्यन्त व्यग्र हो उठे।

पटना-दुर्ग एक प्रकार से अरक्षित था तथा बहुत थोड़ी सेना के साथ वहाँ के नायब मीर मेंहदीख़ाँ निश्चिन्त होकर राज-कार्य चलाते थे। शहर की जिस चहारदीवारी के भीतर पटने का क़िला बना हुआ था वह भी कमज़ोर और अरक्षित थी। २३ वीं जून की रात को, जब दुर्ग की रक्षक सेना और सेनापतिगण गम्भीर निद्रा की गोद में पड़े हुए थे, एलिस साहब ने चुपचाप अंग्रेज़-कोठी में अपनी सेना एकत्र की। सवेरा होने के पहले ही तस्कर की नाईं नगर की चहार-दीवारी लाँघकर अंग्रेज़ सेना ने सिंह-द्वार खोल दिया। नगर में लूट शुरू हुई। नींद से तुरन्त उठी हुई नवाब-सेना आत्म-रक्षा न कर सकी; मीर मेंहदीख़ाँ मुँगेर भागे; एलिस साहब हँसते हुए अंग्रेज़-कोठी को लौटे; पटना की सड़कें निरीह नागरिकों के ख़ून से तर होने लगीं।

इस घोर विपत्ति के समय भी एक हिन्दू और एक मुसलमान सेनानायक ने मीरक़ासिम के नमक की मर्यादा की रक्षा करने में त्रुटि न की। हिन्दू लालसिंह ने बिखरी हुई सेना एकत्र करके दुर्ग का द्वार बन्द कर दिया और प्राणपण से क़िले की रक्षा का आयोजन करने लगा। मुसलमान मुहम्मदअमीन ने दुर्ग त्यागकर 'चेहल सेतून' नामक पुरानी हवेली को घेर लिया। इस हवेली में अस्वस्थ अंग्रेज़ों ने डा० फुलर्टन के साथ आश्रय ग्रहण किया था। इन सब बातों से एलिस साहब की पटना-

विजय व्यर्थ हो गई—क़िले पर अधिकार नहीं हुआ और अंग्रेज़ भी घिर गये। हाँ, नगर-निवासी अवश्य अंग्रेज़ सेना के अत्याचार से जर्जरित होने लगे।

ससैन्य पटना के समीप पहुँचकर (रास्ते में) मार्कर को मीर मेंहदीख़ाँ से सारा वृत्तान्त ज्ञात हुआ। नगर पर अधिकार हो जाने पर भी दुर्ग पर अंग्रेज़ सेना अधिकार न कर सकी; लालसिंह वीरता-पूर्वक आत्म-रक्षा कर रहे हैं, यह संवाद पाकर मार्कर को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने तुरन्त जय-ध्वनि करके नगर-तोरण पर आक्रमण कर दिया। अंग्रेज़ सेनानायक ने सिंह-द्वार के सामने तोप लगाकर गोलाबारी से आक्रमणकारियों की गति रोकने में त्रुटि नहीं की, किन्तु मीरनसीर नामक सेनानायक के कौशल से मीरक़ासिम की सेना ने शीघ्र ही अंग्रेज़ों को परास्त कर नगर पर अधिकार कर लिया। पटना का छोटा क़िला, लालसिंह के साहस और पराक्रम से, अंग्रेज़ों के मुख में जाने से बच गया।

मीरनसीर पर नगर की देख-रेख का भार डालकर मार्कर ने अंग्रेज़-कोठी पर आक्रमण करने के लिए उसकी ओर प्रस्थान किया। रण-शिक्षा, शौर्य-वीर्य और समर-कौशल में मार्कर की सर्वत्र प्रसिद्धि थी। आक्रमण का वेग सम्हाल कर कोठी की रक्षा करना अंग्रेज़ों के लिए असम्भव हो गया। चार दिन तक घिरे रहने के बाद, आहार के अभाव से कष्ट पाकर, वे नौका के द्वारा भागने का आयोजन करने लगे। अंग्रेज़ों की कोठी गंगा के किनारे ही बनी हुई थी और नदी की ओर नवाब की सेना का ध्यान भी नहीं था, अतः एलिस साहब को नदी के रास्ते भागने

का सुयोग मिल गया; किन्तु गंगा द्वारा कलकत्ता तक जाने का उपाय नहीं था, क्योंकि मुँगेर-दुर्ग के पास पहुँचते ही पकड़े जाने की सम्भावना थी; अतएव अयोध्या के नवाब का आश्रय ग्रहण करने की आशा से एलिस साहब ने पश्चिम की ओर यात्रा की। वर्षा की प्रबलता के कारण गंगा की धारा बहुत तेज़ हो गई थी, अतएव नौका की गति बहुत धीमी थी। नाव थोड़ी ही दूर गई होगी कि मार्कर की सेना ने आकर रास्ता रोक लिया। भागने में चतुर अंग्रेज़ सेना ने उपाय न देख युद्ध द्वारा आत्म-रक्षा करने की आशा से १ जुलाई को गंगातट पर व्यूह की रचना की। नवाब की सेना के आक्रमण की प्रतीक्षा में समय न गँवाकर स्वयं ही उसपर आक्रमण करने की आज्ञा अंग्रेज सेनानायकों ने दे दी। पर आज्ञा पाकर भी गोरी पल्टन ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। सिपाही-सेना ने भी इसी दृष्टान्त का अनुकरण किया। फल-स्वरूप अंग्रेज़ सेना पूर्णतः पराजित हुई। डा० फुलर्टन और चार सार्जेण्टों के अतिरिक्त सभी बन्दी हुए; कितने ही युद्ध-क्षेत्र में मारे गये। इस प्रकार एलिस साहब की सामरिक लीला समाप्त हुई।

यथा समय इस दुर्घटना का संवाद पाकर मीरक़ासिम ने मुर्शिदाबाद पत्र भेज आमियट को रास्ते में ही रोक लेने का आदेश भेजा। सैयद मुहम्मदखाँ उस समय मुर्शिदाबाद के शासक थे। उन्होंने क़ासिमबाजार की अंग्रेज-कोठी घेर कर आमियट साहब की नौका रोकने का संकल्प किया। हे और ग्लष्टन को ज़मानत के तौर पर मुँगेर में छोड़ कर, आमक्रेट, वालस्टन, हचिन्सन, जोन्स, गर्डन, कूपर एवं डाक्टर क्रुक के साथ आमियट साहब

नौका द्वारा कलकत्ता की यात्रा कर रहे थे। मुर्शिदाबाद के समीप पहुँचने पर नौका रोक ली गई। रोकने के अतिरिक्त उनकी हत्या इत्यादि की और कोई बात नहीं थी, किन्तु आमियट ने असंतुष्ट होकर अपने सिपाहियों को बन्दूक चलाने की आज्ञा दे दी। उन्होंने आज्ञा मानकर नवाब की सेना पर गोलियों की वर्षा आरंभ कर दी; एक हवलदार और दो-एक सिपाहियों ने भाग कर जान बचाई, शेष सब मारे गये।[१] आमियट ने ही सिपाही-सेना को बन्दूक छोड़ने का आदेश देकर यह दुर्घटना उपस्थित की। सामरिक इतिहास के अतिरिक्त अन्य किसी पुस्तक में इस बात का उल्लेख नहीं हुआ है वरन् किसी-किसी इतिहास लेखक ने तो प्रकृत बात छिपाकर इसे हत्याकाण्ड कह कर तिल का ताड़ कर दिया है। अल्पसंख्यक पलायन-परायण अंग्रेज सेना का बहुसंख्यक नवाब-सेना द्वारा घिर जाना हत्याकाण्ड ही है, इस में सन्देह नहीं; किन्तु इसके लिए आमियट साहब ही अपराधी हैं। हठवश ही एलिस साहब बन्दी हुए और हठ करने के ही कारण आमियट साहब को ससैन्य संसार से प्रस्थान करना पड़ा।

अंग्रेज़ सौदागरों के इन सब उच्छृंखल व्यवहारों से मीर-क़ासिम ने समझ लिया था कि बाहुबल के अतिरिक्त किसी दूसरे उपाय से शान्ति स्थापित होने की आशा नहीं है। अतएव सेना सजाने में उन्होंने भी कोई त्रुटि न की। किन्तु आत्म-रक्षा के अतिरिक्त आक्रमण करने की आज्ञा नवाब-सेना को नहीं मिली।

1 *Mr. Amyatt, refusing to land or surrender, directed his SIPAHIS to fire upon the Nawab's boats, which were approaching to compel them ; a short and desperate struggle ensued, the English boats were finally boarded, and the whole party destroyed or made prisoners, with exception of a Havildar and one or two Sipahis, who made their escape, and brought the melancholy intelligence to Calcutta.--BROOME'S BENGAL ARMY, P. 361.*

नवाब की आज्ञा से उनकी सेना राजधानी की रक्षा के लिए मुर्शिदाबाद प्रान्त में एकत्र होने लगी। उस समय मीरक़ासिम ने अंग्रेज़ गवर्नर को जो पत्र लिखा था, उससे उनके मन का भाव आज भी समझा जा सकता है। यह पत्र—जो व्यंग का एक अच्छा नमूना है—७वीं जुलाई को गवर्नर को मिला। इसमें नवाब ने लिखा था—"मैं एलिस साहब को हृदय से अपना परम-शत्रु ही समझता आया हूँ। इस समय देखता हूँ कि वह 'बन्धु, कहकर सम्बोधन किये जाने के सर्वथा योग्य हैं। यह बात उनके विविध आचरणों से व्यक्त हो पड़ी है। उन्होंने चोर की तरह रात के समय पटना के क़िले पर आक्रमण करके बाज़ार को लूटा; प्रातःकाल से तीन पहर तक केवल लूट और नर-हत्या से प्रतिष्ठित महाजनों एवं नागरिकों को त्रस्त किया। मैंने एक समय आपसे दो-तीन सौ बन्दूकें माँगी थीं, किन्तु आप मेरे उस अनुरोध को पूरा नहीं कर सके थे; परन्तु दुर्भाग्य कि हमारे साथ आन्तरिक मित्रता होने के कारण ही एलिस साहब ने इस हत्या-काण्ड में अपनी सेना की सारी तोप-बन्दूक़ एवं युद्ध-सामग्री मुझे सौंप दी और स्वयं सेना के भार-वहन की उत्कट चिन्ता से छुट्टी ले ली। इस व्यक्ति के इतना अनिष्ट करने पर भी, मेरे मन में कम्पनी के अनिष्ट की इच्छा न होने के कारण ही मैंने इन सारी बातों की उपेक्षा की; किन्तु इस घटना में कम्पनी की जो कुछ क्षति हुई है, उसके लिए आप ही ज़िम्मेदार हैं। आपने अन्याय से निर्दयता-पूर्वक शहर को लूट कर एवं निर्दोष नगर-वासियों को नर-हत्या से त्रस्त करके कई लाख रुपयों की द्रव्य-सामग्री लूट ली है। इस बात पर भली-भाँति विचार करके

दरिद्रों की क्षति-पूर्ति करना कम्पनी का कर्त्तव्य है। सिराजुद्दौला के समय कलकत्ता की लूट के बाद यही बात हुई थी। आप लोग बड़े विचित्र बन्धु हैं! सन्धि करके—सन्धि-पालन के लिए ईसा के नाम पर धर्म-शपथ करके—आप लोगों ने सामरिक व्यय का निर्वाह करने के लिए हमसे जमींदारी ली थी। आपकी सेना हमारे पास रह कर सदैव हमारी उन्नति की चेष्टा करेगी, इस बात की शर्त हुई थी। किन्तु, काम पड़ने पर, देखते हैं कि आप हमें नष्ट करने के लिए ही इतनी बड़ी सेना रक्खे हुए हैं! जब आपकी सेना हमारे साथ इस प्रकार का—सन्धि-विरुद्ध—व्यवहार कर रही है, तब मेरे लिखने का यही अभिप्राय है कि, आप मेरी जो ज़मींदारी भोग कर रहे हैं उसका तीन वर्ष का राज-कर आपको मेरे पास जमा करना चाहिए। गत कई वर्षों से कम्पनी के गुमाश्तों ने निज़ामत के अधिकार से जितने अत्याचार किये हैं, बल-पूर्वक जितना धन लूटा है, देश के लोगों की जितनी क्षति की है, इस समय उसका प्रतीकार करना कम्पनी का कर्तव्य है। आप लोगों को अब इतनी हानि उठानी पड़ेगी कि जैसे आप लोगों ने बर्दवान एवं अन्य स्थानों का अधिकार प्राप्त किया था, वैसे ही उन्हें लौटा देना पड़ेगा।"❀

अंग्रेज़ों की ओर से इस पत्र का उत्तर मिलने का कोई प्रमाण नहीं पाया जाता। इस पत्र में मीरक़ासिम अंग्रेज़ों के विरुद्ध जितने अभियोग लगा गये हैं, उनके ऊपर मिट्टी डालने

❀ मीरक़ासिम का मूल पत्र अब कहीं नहीं मिलता, केवल वांसिटर्ट साहब का अंग्रेज़ी अनुवाद ही मिलता है। मूल पत्र क्या हुआ, इसका ज़िक्र किसी ने नहीं किया है।

का कोई उपाय नहीं है। नर-हत्या, लूट, सन्धि-भंग, शपथ-भंग इत्यादि बातें स्पष्ट शब्दों में लिखी हुई हैं। इसकी किसी बात को मिथ्या कहने का साहस इतिहास को नहीं है। आज इतने समय बाद ऐसा साहस करके उसमें सफल होने की आशा भी नहीं है।

सिराजुद्दौला ने भी ठीक इसी भाव का पत्र अंग्रेज़ों को लिखा था। मीरक़ासिम के पत्र में उसका आभास मिलता है। इतिहास-लेखकों की कल्पित और अन्दाज़िया बातों की अपेक्षा इन पत्रों से ही उस समय की सच्ची अवस्था अच्छी तरह जानी जा सकती है। मीरक़ासिम के पत्र में अहंकार नहीं, स्वाभिमान है। इस पत्र के प्रत्येक शब्द में अंग्रेज़ों की झूठी बन्धुता का चित्र दीख पड़ता है। किन्तु जिनके व्यवहार को लक्ष्य करके मीरक़ासिम ने इस रूप में अपनी हृदय-वेदना व्यक्त की थी, वे स्वार्थान्ध होकर इंग्लैण्ड के यश पर कलंक की कालिमा लगाने को व्यग्र हो उठे थे। उनके द्वारा सुविचार की कोई आशा न थी। पिछले काल के अंग्रेज़ इतिहास-लेखकों ने मीरक़ासिम के प्रति सुविचार करने में त्रुटि नहीं की है। अंग्रेज़ों के दोष से ही यह युद्ध हुआ, इसे इस समय सभी एक स्वर से स्वीकार करते हैं।

घटना-चक्र में मुसलमान शासन नष्ट हो गया, किन्तु यदि यह चक्र उलटा घूमा होता तो अंग्रेज़ों को उसी समय यह बात समझ में आजाती कि हमारे ही दोष हमारे उच्छेद का कारण हुए हैं। उस समय यह सरल बात उनकी समझ में नहीं आई। उन्होंने बाहु-बल को ही एकमात्र आश्रय समझकर ग्रहण किया।

उस समय का बाहु-बल केवल बाहुओं पर ही निर्भर नहीं था, लोग उसके साथ छल-कौशल दिखलाने के लिए भी लालायित

रहते थे। आज भी यह बात भली-भाँति नष्ट नहीं हुई है। मीर-क़ासिम का पत्र पाकर अंग्रेज़ लोग केवल बाहु-बल पर ही निश्चिन्त होकर बैठ नहीं रहे;—बाहु-बल के साथ छल-कपट के भी हथकण्डे चलने लगे। जिस उपाय से सिराजुद्दौला का अधःपतन किया गया था, मीरक़ासिम के सम्बन्ध में उस उपाय का अवलम्बन करने की विशेष संभावना नहीं थी; तथापि जो कुछ उपाय शेष था, उसकी उपेक्षा नहीं हुई। वह उपाय और कुछ नहीं था—सिर्फ़ पुनः मीरजाफ़र!

फिर मीरजाफ़र !

The Nawab Meer Mahomed Cossim Allee Cawn having entered upon and committed acts of open hostility against the English nation, and the interest of the English United East India Company, we, on their behalf, are reduced to the necessity of declaring war against him ; and having come to a resolution of placing the Nawab Meer Mahomed Jaffer Cawn Bahadur again in the Government, we now proclaim and acknowledge him as Subahdar of the provinces of Bengal Behar and Orissa.❀ —*The Proclamation*.

फिर मीरजाफ़र ! फिर वही सन्धि-पत्र ! अंग्रेज़ सौदागर मीरजाफ़र को पुनः सूबेदार कहकर और सलाम करके समर-क्षेत्र की ओर अग्रसर ! इस नई सन्धि में पुराना सन्धि-पत्र डूब गया !

❀ चूंकि नबाब मीर मुहम्मद क़ासिम अलीख़ाँ ने अंग्रेज़ जाति और

एक बार मीरजाफ़र के साथ सन्धि करके, अंग्रेज़ बनियों ने बालक सिराजुद्दौला से सिंहासन छीन लिया था। इस बार मीरजाफ़र के साथ सन्धि करके स्वाधीनचेता मीरक़ासिम को सिंहासन-च्युत करने का आयोजन शुरू हुआ। उस बार और इस बार दोनों पक्षों की अवस्था एक-सी नहीं थी। दोनों में अन्तर प्रत्यक्ष दीख पड़ता है। उस बार बंग-वासियों की उत्तेजना से अंग्रेज़ों को सफलता मिली थी और इस बार अंग्रेज़ों की उत्तेजना से बंग-वासी विप्लव-साधन में अग्रसर हुए। उस बार मीरजाफ़र केवल प्रभु-विद्रोह में लिप्त हुए थे किन्तु इस बार समग्र बंगाली जाति के विनाश में अग्रसर हुए। उस बार सिंहासन पाने पर स्वाधीन होने की आशा थी; इस बार केवल अंग्रेज़ों की आज्ञा का पालन करने के लिए ही सिंहासन पर बैठने की व्यवस्था हुई।

अभागे मीरजाफ़र इतने में ही कृतार्थ हो गये। जिस प्रकार हो, सिंहासन पर बैठना ही उनकी दृष्टि में परम लाभ था। अंग्रेज़ों को निःशुल्क व्यापार करने का अधिकार देकर बंग-वासियों को कर के भार से पीड़ित करने पर बंगाल का सर्वनाश हो

इंग्लिश यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी के स्वार्थ के विरुद्ध प्रकट रूप से शत्रुता के कार्य किये हैं और करने पर उतारू हैं, अतएव हम कम्पनी और अंग्रेज़ जाति की ओर से उनसे युद्ध आरम्भ करने की घोषणा करने पर मज़बूर हैं और नवाब मीर मुहम्मद जाफ़रख़ाँ को पुनः बंगाल, बिहार और उड़ीसा की सूबेदारी पर बिठाने का निश्चय करके हम इस बात की घोषणा करते हैं और आज से उन्हें ही सूबेदार मानते हैं।

—अंग्रेज़ों का घोषणापत्र।

जायगा—इसे कौन नहीं समझता था ? पर सब कुछ समझ-बूझकर भी मीरजाफ़र स्वार्थ-वश सिंहासन के लोभ से—इस बात पर सम्मत हो गये।

पहली बार मीरजाफ़र को सिंहासन पर बिठाकर अंग्रेजों ने अनुभव किया था कि इस व्यक्ति के लिए तो सिंहासन की अपेक्षा फाँसी का तख़्ता ही अधिक उपयुक्त होता । हालवेल ने ऐसा ही लिखा था। इसी बात को लेकर थोड़े दिनों बाद उन्होंने मीरजा-फ़र को सिंहासन-च्युत कर दिया था। फिर उसी मीरजाफ़र को सिंहासन पर बिठाने के लिए अंग्रेज बनिये इतने व्याकुल क्यों हो उठे ?

बात यह थी कि उस समय भी सम्पूर्ण रूप से राज-शक्ति की उपेक्षा करने का साहस उनमें नहीं जन्मा था; उस समय भी अंग्रेज व्यापारी-मात्र थे। देशवासियों की सहायता के बिना मीरक़ासिम को सिंहासन-च्युत करने का उपाय नहीं था, किन्तु देश के लोग सहसा राजशक्ति के विरुद्ध—मीरक़ासिम के विपरीत—अंग्रेजों की सहायता को तैयार क्यों होने लगे ? मीरजाफ़र को मुर्शिदाबाद के शून्य सिंहासन पर प्रतिष्ठित करने से देश के लोग अपने पुराने नवाब की ओर आकृष्ट होंगे, यह विचार मन में करके अंग्रेजों ने मीरजाफ़र को पकड़ा। जो लोग स्वार्थपरायण थे, उनमें आगा-पीछा सोचने की शक्ति नहीं रह गई थी; वे अंग्रेजों की इस चाल को ताड़ न सके। इसके अतिरिक्त मीरक़ासिम दूर थे और मीरजाफ़र निकट, अतएव वे मीरजाफ़र को ही नवाब कहकर सलाम करने को व्यग्र हो उठे। देखते ही देखते मीरजाफ़र के पक्ष में अनेक गण्यमान्य सरदार जयध्वनि

करके उठ खड़े हुए। जिस देश में जन-साधारण की जयध्वनि इतनी सुलभ और इतनी सस्ती है, मीरजाफ़र ने उसी देश में जन्म ग्रहण किया था; अतएव स्वार्थवश उनकी जर्जर देह सहसा सबल हो उठी। अंग्रेज़-शिविर में उनके प्रवेश करते ही अंग्रेज़ सेना डंका बजाकर युद्ध के लिए आगे बढ़ने लगी।

अंग्रेज़ों ने इस युद्ध के सम्बन्ध में जो घोषणा पत्र (यह घोषणापत्र इस परिच्छेद के आरम्भ में दिया जा चुका है) प्रचारित किया था, उसे पढ़कर उसकी सत्यनिष्ठा की प्रशंसा करने की इच्छा नहीं होती; किन्तु अधिकांश युद्ध-घोषणापत्रों का यही रूप दीख पड़ता है। उनसे इतिहास को लज्जा नहीं आती; इससे भी इतिहास लज्जित नहीं हुआ। मीरक़ासिम का, अंग्रेज़ जाति और कम्पनी के विरुद्ध कुछ भी अत्याचार करने का प्रमाण नहीं मिलता। उनका दोष केवल इतना ही था कि उन्होंने कम्पनी के कुछ स्वार्थपरायण कर्मचारियों के अन्याय एवं उत्पीड़न को बन्द करने की चेष्टा की थी। उनकी इस स्वाधीन वाणिज्य-नीति के सफल होने पर उन स्वार्थी अंग्रेज़ों का व्यक्तिगत स्वार्थ नष्ट हो जाता, अंग्रेज़ जाति वा कम्पनी की कुछ हानि न होती; इतना ही नहीं, उन कर्मचारियों का गुप्त वाणिज्य दूर हो जाने पर कम्पनी के व्यापार की वृद्धि होती। ऐसी अवस्था में अंग्रेज़ जाति और कम्पनी के नाम की दुहाई देकर मीरक़ासिम के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करके कम्पनी की आमदनी ख़र्च करना कलकत्ते के अंग्रेज़ों के लिए कितना न्याय-संगत था, इतिहास ने इसका विचार करने की चेष्टा नहीं की है। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि इस अनुचित कार्य में कलकत्ता के अंग्रेज़ कर्मचारियों की ही इच्छा नहीं छिपी

हुई थी वरन् कम्पनी भी भीतर ही भीतर स्वार्थ से उन्मत्त हो उठी थी। इसीलिए तो इसने इन सब बातों के विरुद्ध कुछ कार्रवाई नहीं की। युद्ध का परिणाम यदि बुरा हुआ होता तो वह अवश्य ही कर्मचारियों को इस घोषणापत्र के लिए दण्डित करती।

अंग्रेज़ों के साहस की बात तो जग-विख्यात है; उनके साहस की कहानी पढ़कर चकित हो जाना पड़ता है; किन्तु इस बार अंग्रेज़ों ने जो-कुछ किया, वह साहस नहीं, उन्मत्तता थी। उपयुक्त सेना नहीं थी—तहवील में दस हज़ार से अधिक रुपये नहीं थे—फिर भी मेजर आदम को युद्ध के लिए यात्रा करने की आज्ञा हुई।

जिन सब अंग्रेज़ वीरों का नाम इतिहास में विख्यात है, उनमें से किसी को भी ऐसी असहाय अवस्था में आत्म-विसर्जन करने का आदेश नहीं मिला था। किन्तु ऐसी असहाय अवस्था में भी मेजर आदम ने कुछ हिचकिचाहट प्रकट नहीं की। सब समझते थे कि मीरक़ासिम के साथ शत्रुता करने का अर्थ सर्वनाश है—युद्ध करने पर भी वही होगा, जो चुपचाप बैठने पर होगा; किन्तु आशा मात्र के सहारे अंग्रेज़ सौदागरों ने युद्ध की घोषणा कर दी।

और कोई आशा नहीं थी—बस मीरजाफ़र ही पर एकमात्र आशा थी। बंगाल में मीरजाफ़र के समान देशद्रोहियों का अभाव नहीं था; मीरजाफ़र के समान मूर्ख और आदर-लोलुप अकर्मण्य ज़मींदारों की भी कमी नहीं थी। अंग्रेज़ों को आशा थी कि मीरजाफ़र को किसी प्रकार गद्दी पर बैठा देने से ही इन बंगाली सरदारों को अपने पक्ष में किया जा सकता है,

क्योंकि उस समय निश्चय ही देश दो दलों में विभक्त हो जायगा। कुछ लोग क़ासिमअली का पक्ष लेंगे और कुछ लोग मीरजाफ़र का। इनमें से एक दल को अपनी ओर मिला लेने से सहज ही हमारा (अंग्रेजों का) उद्देश्य पूरा हो सकेगा। कर्नल क्लाइव के इस नीति का रास्ता दिखलाने पर समस्त अंग्रेज व्यापारी-समाज भी उसके अनुसार चलने को तैयार हो गया। विदेश में शक्ति-विस्तार के लिए यही एक अमोघ नीति है। भारत के इतिहास में इस नीति का प्रधान पार्ट रहा है; इसकी शक्ति का नृत्य पग-पग पर दिखाई पड़ता है। अंग्रेज व्यापारियों ने भारत में पदार्पण करने के बाद ही यह भली-भाँति समझ लिया था कि 'भारतवासी मनुष्यत्व-हीन हैं; वे स्वदेश का सर्वनाश करके भी स्वार्थ के लिए लालायित रहने वाली जाति के जीव हैं; व्यक्तिगत स्वार्थ के नशे की तीव्रता बर्दाश्त करने की शक्ति का उनमें अभाव है।' ऐसी कमज़ोर और चरित्र-हीन जाति के ऊपर इस विभाजक नीति का प्रयोग करने में अंग्रेज क्यों आगा-पीछा करते ?

भारत और विशेषतः बंगाल के कला-कौशल और वाणिज्य की रक्षा के लिए मीरक़ासिम सर्वस्व निछावर करने को भी तैयार थे, किन्तु बंगाल-निवासियों ने मीरक़ासिम को भूलकर मीरजाफ़र का पक्ष क्यों लिया ? जिन्होंने सिराजुद्दौला के सिंहासन पर शौकतजंग को बिठाने की चेष्टा की और उसमें विफल-मनोरथ हो पीछे मीरजाफ़र-जैसे व्यक्ति को देश का शासक बनाया, उनका अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और किस कारण से दूसरे का पक्ष लेना सम्भव है ? न्याय-पूर्ण शासन कठोर हुआ करता है।

पिछले नवाबों की ऐयाशी से विलास-प्रिय बनी हुई प्रजा को और विशेषतः धनिक ज़मींदार एवं सरदारों को मीरक़ासिम के कठोर शासन ने उद्विग्न कर दिया था; मीरक़ासिम के न्याय-दण्ड से अपनी उच्छृंखलता खोकर वे त्रस्त हो रहे थे। यह भी सुना जाता था कि अंग्रेज़ों का दमन करने के बाद ज़रा भी फ़ुर्सत पाते ही प्रजा-रक्षा के लिए मीरक़ासिम अत्याचारी ज़मींदारों का दमन करेंगे। ऐसी अवस्था में जितने भी प्रजा-पीड़क ज़मींदार थे (और अधिकांश ज़मींदार प्रजा-पीड़क ही होते हैं), वे सब मीर-क़ासिम का पतन चाहते थे। जो अंग्रेज़ी गुमाश्तों के गुप्त वाणिज्य में हिस्सेदार होकर रुपयों से थैली भर रहे थे; जो अंग्रेज़ी गुमाश्तों को घूस देकर उनसे कम्पनी का 'दस्तक' वा आज्ञा-पत्र ले निःशुल्क वाणिज्य द्वारा धनी हो रहे थे या जो फ़ायदे के लोभ से कम्पनी के दस्तक का जाल करके एवं नौकरों को कम्पनी के बरकन्दाज़ों के रूप में सजाकर नवाब के कर-संग्रहकारी कर्मचारियों को धोखा देते और उनकी ताड़ना करते थे, मीरक़ासिम के स्वाधीन वाणिज्य-सम्बन्धी सुप्रसिद्ध घोषणा-पत्र से उन सबका स्वार्थ नष्ट गया। इस घटना से वे जल उठे। यदि वे स्वयं पूर्ण बलवान होते तो मीरक़ासिम को सिंहासन से उतार देने में ज़रा भी विलम्ब न करते, किन्तु साधनों की अपूर्णता के कारण वे चुप बैठे थे। अब अंग्रेज़ों को इसके लिए अग्रसर होते देख वे प्रस-न्नता-पूर्वक अंग्रेज़ों से मिल गये। मुसलमानों की अपेक्षा यह प्रवृत्ति हिन्दुओं में अधिक प्रबल हो उठी थी। इसका कारण था;—एक तो बंगाल के शासक मुसलमान थे और दूसरे मुसल-मानों का वाणिज्य में प्रवेश कम था। मुसलमान या तो तलवार

लेकर सेना में प्रवेश करते थे या हल चलाकर खेती करते थे। कोई-कोई जो धनी थे, अपने संचित ऐश्वर्य से विलासमय जीवन व्यतीत करते थे। व्यापार करके अर्थोपार्जन करने वालों की संख्या उनमें थोड़ी ही थी। यूरोपीय व्यापारियों के साथ सम्बन्ध जोड़कर धन कमाने की नई-नई रीतियों का आविष्कार करने वालों में हिन्दू ही अधिक थे। मीरक़ासिम ने पहले ही देख लिया था कि इस श्रेणी के स्वार्थ-लुब्ध हिन्दू धनिकों में अंग्रेज़ों की भक्ति सबसे प्रबल है। अतएव सोच-समझकर कमज़ोरियों से राज्य की रक्षा के लिए उन्होंने अधिकांश पदों पर ऐसे ही मुसलमानों को नियुक्त किया था, जो अंग्रेज़ों से अनुराग नहीं रखते थे। इस बात को लेकर और इसका मनमाना अर्थ करके कितने ही हिन्दू मीरक़ासिम के शत्रु हो गये थे। इस प्रकार के देश और इस प्रकार के क्षेत्र में मीरजाफ़र को नवाब कहकर सलाम करते ही, अंग्रेज़ों की भाँति अनेक शक्तिमान भारतीय भी मीरजाफ़र को नवाब कहने को लालायित हो उठे, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

घोषणा-पत्र के प्रचार के साथ ही मीरक़ासिम समझ गये थे कि मीरजाफ़र के साथ अंग्रेज़ी सेना के मुर्शिदाबाद में प्रवेश करते ही ये सब स्वार्थी भारतीय मीरजाफ़र के चरणों पर झुक पड़ेंगे। अतः सबसे पहले मुर्शिदाबाद को सुरक्षित करने का विचार उन्होंने किया। उस समय मुर्शिदाबाद एकदम अरक्षित अवस्था में था। उसकी रक्षा के लिए बहुत काफ़ी सेना उधर भेजी गई। राजधानी सुरक्षित करके यह सेना क़ासिमबाज़ार की अंग्रेज़ी कोठी को घेर लेगी और आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेज़ी सेना की

गति रोककर अंग्रेज़ी शक्ति को चूर करेगी, ऐसी आशा और योजना मीरक़ासिम के हृदय में अंकुरित हो उठी थी। इसके लिए तैयारी करने में उन्होंने त्रुटि नहीं की। सेनानायकों में जो स्वामी-भक्त और विश्वास-पात्र थे, वे ही मुर्शिदाबाद भेजे गये। मुर्शिदाबाद के शासक सैयद मुहम्मदख़ाँ अकेले ही क़ासिमबाज़ार की अंग्रेज़ी कोठी को धूल में मिला सकते थे; तथापि जाफ़रख़ाँ, आलमख़ाँ एवं शेख़ हैबतउल्ला नामक तीन विख्यात सेनापति उनसे मिलकर कार्य करने के लिए मुर्शिदाबाद की ओर भेजे गये। उनके पहुँचने के साथ ही क़ासिमबाज़ार की अंग्रेज़ी कोठी घेर ली गई।

इतनी सेना के सामने अंग्रेज़-कोठी अरक्षित थी, ऐसा कहना अनुचित न होगा। दो-तीन पल्टन शिक्षित सेना, दो-एक पल्टन अर्द्ध-शिक्षित बरक़न्दाज़ एव थोड़े अंग्रेज़ों को छोड़ वहाँ रक्षा का और कोई सामान नहीं था। वे लोग क्या करते,—युद्ध के प्रथम उपक्रम में ही हार स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ा! अंग्रेज़ लोग मुँगेर और फिर वहाँ से पटना भेजे गये—पटना का कारागार उनसे भर गया। पल्टनें मीरक़ासिम की सेना में मिला ली गईं; जिन सैनिकों ने इसमें असम्मति प्रकाश की, उन्हें छुट्टी दे दी गई। अंग्रेज़-सेना के कलकत्ता से अधिक दूर अग्रसर होने के पूर्व ही क़ासिमबाजार से इस प्रकार अंग्रेज़ों का नाम लोप हो गया!

मीरक़ासिम की सुशिक्षित अश्वारोही सेना वीरभूमि प्रान्त में पड़ाव डाले हुई थी। उसके नायक थे—मुहम्मदतक़ीख़ाँ। साहस, कर्त्तव्य-निष्ठा और रण-कौशल में तक़ीख़ाँ सब प्रकार

के समाज के श्रद्धा-भाजन थे। मुग़ल-साम्राज्य के इस अधःपतन-युग में उनके समान मुसलमान प्रभु-भक्त सेनापति यदि अधिक होते तो इतिहास में मुसलमानों का नाम कलंकित न होता। मीरक़ासिम ने इस समय उन्हें भी मुर्शिदाबाद भेज दिया।

अन्य सेनापतियों को सम्मुख युद्ध का भार देकर स्वयं मुँगेर-दुर्ग में पड़े रहने के कारण अंग्रेज इतिहास-लेखकों ने मीरक़ासिम को रण-भीरु कहा है। किस कारण से मीरक़ासिम ने स्वयं सेना-संचालन का भार ग्रहण नहीं किया, इतिहास में इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। वह प्रधान सेनापति गुर्गनख़ाँ के साथ मुँगेर में रहकर परामर्श करने एवं जिस जगह जिस सामान और जितनी सेना भेजने की आवश्यकता थी, उसकी व्यवस्था करने लगे। अन्त तक स्वदेश-रक्षार्थ प्राण-पण से युद्ध करने के लिए सेना एवं शस्त्र-संग्रह में प्रवृत्त होना उन्होंने उचित समझा और यही उस समय उचित भी था।

इधर अंग्रेज-सेना असहाय अवस्था में धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। सेनापति का असीम साहस एवं अटूट अध्यवसाय ही इसका प्रधान सहायक था। रसद और अस्त्र-शस्त्र ढोने के लिए उपयोगी गाड़ियों एवं वाहनों की कमी के कारण अनेक प्रकार का अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ता था। एक गरम देश में इस प्रकार युद्ध-यात्रा करना सहज नहीं है। दिन-दिन सेना थककर सुस्त होने लगी। पलासी-युद्ध के समय जिस पथ से सेनापति क्लाइव ने धीरे-धीरे अपनी सेना को अग्रसर किया था, यह सेना भी उसी पथ से आगे बढ़ रही थी। उस बार मीरजाफ़र से सैनिक सहायता की आशा थी और इसबार केवल मीरजाफ़र ही

था; किन्तु मीरजाफ़र के नाम की दुहाई देकर अंग्रेज़-सेना अनेक प्रकार से फ़ायदा उठाने लगी।

अंग्रेज़-शिविर में आकर वृद्ध मीरजाफ़र नुमाइशी नवाब की भाँति अभिनय करने लगे। उन्होंने जो संन्धि-पत्र लिखाकर अपने को अंग्रेज़ों के हाथ बेचा, उससे बंगाल से स्वाधीनता की छाया भी विलुप्त हो गई। जिन शुभचिन्तकों ने सिराजुद्दौला को पदच्युत करके मीरजाफ़र को सिंहासन पर बिठाया था, उन्होंने पुनः मीरजाफ़र को नवाब कहकर अभिवादन किया। इसबार फिर बंगाल-निवासी स्वदेश को भूल व्यक्तिगत ऐश्वर्य बढ़ाने के लिए पागल हो उठे। इन स्वदेश-द्रोही एवं भूले हुए मित्रों की सहायता पाकर मीरजाफ़र अंग्रेज़-शिविर में रहने लगे।

सब प्रकार की विपत्तियों से घिरा हुआ अंग्रेज़-वणिक समाज मुक्ति पाने के लिए प्राण-पण से इस युद्ध में लग गया था किन्तु धन की कमी के कारण अंग्रेज़ों की आशा पर पानी फिर रहा था; मीरजाफ़र ने युद्ध-व्यय के लिए तीस लाख रुपये प्रदान करने का वचन देकर उनकी भुजाओं में बल तथा छाती में साहस का संचार कर दिया—ब्रिटिश-वाहिनी विपुल-विक्रम से आगे बढ़ने लगी।

मीरक़ासिम के स्वयं सेना-संचालन का भार न ग्रहण करने का यद्यपि कोई स्पष्ट कारण नहीं मिलता, फिर भी तात्कालिक अंग्रेज-लेखकों की पुस्तकों में इसका किंचित आभास मिलता है। संकल्प-साधन के लिए मीरक़ासिम को विदेशी रण-पण्डितों पर निर्भर करना पड़ा था। वे सभी नवाब के प्रिय-पात्र कहे जाकर परिचित थे। फिर भी जिस स्थिति में मीरक़ासिम ने राज्य-

सूत्र हाथ में लिया था, उस स्थिति में रहकर उनपर आन्तरिक विश्वास रखना उनके जैसे नीति-निपुण व्यक्ति के लिए कठिन था। सेनापति गुर्गनख़ाँ उनके दाहिने हाथ समझे जाते थे, तथापि गुर्गनख़ाँ एवं कितने ही अंग्रेज़ों में घनिष्ठता थी। मीरक़ासिम ने सब समझ-बूझकर ही अंग्रेज़ों की गति रोकने के लिए मुसलमान सेनानायकों को नियुक्त किया था। गुर्गनख़ाँ को मुँगेर में रहकर नवाब को उपदेश देने की आज्ञा मिली। क्या इस व्यवस्था में किसी प्रकार के गुप्त संकल्प की छाया नहीं दीख पड़ती ? एक समकालिक अंग्रेज़-लेखक ने लिखा है—"मीरक़ासिम में समर-क्षेत्र की सारी कठिनाइयों को सहने की शक्ति थी; उनमें साहस और समर-कौशल का अभाव भी नहीं था; किन्तु 'स्वयं युद्ध-क्षेत्र में पदार्पण करने पर सम्भव है कि कृतघ्न सेनानायकगण शत्रु के हाथ में सौंप दें' यह सोच कर ही उन्होंने युद्ध-भूमि पर पदार्पण नहीं किया !"[१] उस समय की सम्पूर्ण बातों और परिस्थितियों पर विचारकर देखने से उक्त अंग्रेज़-लेखक की यह बात ग़लत नहीं मालूम पड़ती। केवल बाहु-बल के भरोसे ही अंग्रेज़ों ने मीरक़ासिम से युद्ध करने का साहस किया था, इसपर विश्वास नहीं किया जा सकता। जिनके पास धन नहीं, सेना नहीं, उन्होंने किस साहस से युद्ध-घोषणा की थी, आगे की घटनाओं में इसका कुछ-कुछ परिचय मिल जाता है।

1 Mir Kasim was inured to the hardships of the field ; he united the gallantry of the soldier with the sagacity of the statesman ; but he did not hazard his own person in any engagement where his officers might have made a merit of their treachery in betraying him.--TRANSACTIONS IN INDIA FROM 1756 TO 1783.
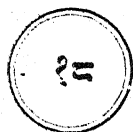
कटवा का युद्ध

The next day Mahammed Takky Khan attacked them. Success was for sometime doubtful. He had two horses killed under him, and had mounted a third when a ball lodging in his forehead, he expired.

—*Scott's History of Bengal.*

सिंहासन पाने की आशा से मीरजाफ़र ने दूसरी बार अंग्रेज़ों से जो सन्धि की, उसकी शर्तों से अंग्रेज़ सौदागर ख़ूब उत्साहित हुए। मीरक़ासिम द्वारा प्रचारित अंग्रेज़ों के अनुकूल सब आदेश ज्यों के त्यों रहेंगे; प्रतिकूल आदेश नष्ट कर दिये जायँगे;—अंग्रेजों को छोड़ और सब व्यापारियों को

कर देना पड़ेगा; अंग्रेजों के सिवाय और यूरोपीय सौदागर क़िले न बनवा सकेंगे;—युद्ध-व्यय के लिए कम्पनी को तीस लाख रुपये देने होंगे और भविष्य में भी सेना का व्यय देना पड़ेगा;—अंग्रेज़-सेना को पचीस लाख एवं अंग्रेज नौ-सेना को साढ़े बारह लाख रुपये पुरस्कार मिलेंगे;—ऐसी सन्धि से अंग्रेज़ आनन्दित न होंगे तो क्या होंगे ?

जुलाई गरमी का महीना है। सूर्य के प्रखरताप से पृथ्वी लाल हो जाती है। ऐसे समय सहसा युद्ध-यात्रा करना सहज नहीं है। किन्तु लोभ की तीव्र-ताड़ना से ऐसे ही समय अंग्रेज़-सेना युद्ध के लिए बढ़ने लगी, पर अजय नदी के किनारे पहुँचते ही उसे रुकना पड़ा क्योंकि वहाँ जाफ़रख़ाँ, आलमख़ाँ, एवं शेख़ हयातुल्ला की सेनायें उसका सामना करने के लिए पहले से ही अड़ी हुई थीं। मुहम्मदतकीख़ाँ के अनुपस्थित होते हुए भी नवाब-सेना ने वीर-भाव से अंग्रेज़ी-सेना पर आक्रमण किया। नवाब-सेना ने इस प्रकार आक्रान्त होकर अंग्रेज़-सेना-नायक लेफ्टेंएट ग्लेन, गोलन्दाज़ों एवं सिपाहियों के साहस से अपनी रक्षा करने की चेष्टा करने लगे। नवाब-सेना के पास तोपख़ाना नहीं था अतएव अंग्रेज़-सेना गोला-बारी करके उसे त्रस्त करने फिर भी चार घण्टे तक उसके वीरसैनिकों ने घमासान युद्ध किया। इस युद्ध में दोनों ही मारे गये। अंग्रेज़-सेनापति, विजयी होकर भी सुखी नहीं हुआ वरन् यूरोपीय गोलन्दाज़ों एवं सार्जेण्टों में से अधिकांश की मृत्यु हो जाने के कारण अंग्रेज शिविर में हाहाकार मच गया। नवाब-सेना ने तीन बार अंग्रेज़ों से उनका तोपख़ाना छीना किन्तु तीनों बार उनके वेतन-भोगी वीर-भारतीय

सिपाहियों ने उसका उद्धार कर अंग्रेज़ों की लाज बचा ली। इस युद्ध में ग्लेन ने देखा कि 'भारतीयों के द्वारा ही भारतीय पराजित हुए।' सिपाहियों के न रहने पर सम्पूर्ण गोरी पल्टन को नवाब-सेना अपनी क्रोधाग्नि में भून डालती।

जय-लाभ करके भी अंग्रेज़-सेनापति ने पड़ाव नहीं डाला वरन् मेजर आदम की सेना से मिलने के लिए आगे की यात्रा की। कटवा के क़िले में नाम-मात्र के सिपाही थे, अतएव वे अंग्रेज़-सेना की गति रोक नहीं सके। ग्लेन ने सायंकाल के समय दुर्ग में प्रवेश करके रसद इत्यादि पर अधिकार कर लिया। तक़ीख़ाँ के सेना-नायकों में यदि ईर्ष्या का भाव न होता तो अंग्रेज़-सेना के लिए जय प्राप्त कर लेना कठिन था।[1] तक़ीख़ाँ अकेले ही अंग्रेज़ों के आक्रमण की प्रतीक्षा में व्यूह-रचना करने लगे। उन्नीसवीं जुलाई को दोनों दल भिड़ गये। यह युद्ध इतिहास में कटवा-युद्ध के नाम से परिचित है, किन्तु वस्तुतः युद्ध-स्थल पलासी के समीप, भागीरथी के पश्चिम तट पर कटवा से कुछ दूर था।

हल्दी-घाटी के रण-रंग में महावीर प्रताप ने सात स्थानों पर आहत होकर भी युद्ध-क्षेत्र में सेना का संचालन किया था। पृथ्वी के सामरिक इतिहास में वैसे अद्भुत रण-पाण्डित्य के उदाहरण अधिक नहीं पाये जाते। कटवा के युद्ध-क्षेत्र में मुहम्मद तक़ीख़ाँ भी उसी प्रकार के वीरत्व का कीर्ति-स्तम्भ स्थापित कर गये हैं। उनकी रुहेली और अफ़गान पल्टनों के सिपाहियों ने

1 *Owing to some jealousy on the part of their commanders, the irregular troops, which had been so maltreated by Glenn on the 17th refused to join him.--MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA, P. 158.*

जिस प्रकार वीरत्व और साहस का परिचय दिया था उससे अधिक वीरता और साहस का प्रदर्शन अच्छी से अच्छी और सुशिक्षित सेना के लिए भी दुष्कर है। गगन-विकम्पनकारी हाहाकार में कुछ स्पष्ट नहीं समझ पड़ता था। कौन हारेगा, कौन जीतेगा, इसका उस समय अनुमान करना भी कठिन था। तक़ीख़ाँ आहत हुए, उनका घोड़ा मारा गया, फिर भी उनकी भौं टेढ़ी न हुई। पहले घोड़े के गिरते ही चट दूसरे घोड़े पर सवार हो आहत तक़ीख़ाँ ने सबसे आगे बढ़कर शत्रु पर आक्रमण किया। अंग्रेज़ सेना उस तीव्रवेग को सह न सकी; वह धीरे-धीरे पीछे हटने लगी। तक़ीख़ाँ के घाव से ख़ून का फ़ौवारा छूट रहा था; उसे यत्न-पूर्वक वस्त्र से बाँध दूसरे घोड़े पर सवार हो जिस समय वह सेना-संचालन की व्यवस्था कर रहे थे, उस समय उनका पार्श्वचर (बाडी गार्ड) बोला—"क्या कर रहे हैं ? ख़ून का वेग बढ़ता ही जाता है, इस समय युद्ध-भूमि से लौट चलिए।" तक़ीख़ाँ की भौंहें तन गईं। अनुचर की ओर देखकर बोले—"फिरूँगा ? किस लिए फिरूँगा ? लौट जाकर अपना काला मुँह मीरक़ासिम को दिखाने के लिए ? आगे बढ़ो।" सेना अग्रसर हुई। अंग्रेज़ी फ़ौज नदी के खाते में जा छिपी थी। उसका एक भाग बन्दूक़ों से सज्जित होकर आड़ में छिपा था। नदी ज़ोरों में बह रही थी। तक़ीख़ाँ तुरन्त वहाँ जा पहुँचे और फ़ौज लाने की व्यवस्था कर रहे थे कि शत्रु के आड़ में छिपे हुए सैनिकों ने उनके मुख की ओर लक्ष्य करके बन्दूकों की बाढ़ दाग दी। कई गोलियाँ मस्तक छेदकर निकल गईं। तक़ीख़ाँ बेजान होकर भूपतित हुए। उनके सैकड़ों सहचर तोपों की बाढ़ में भुन गये।

अंग्रेज़ों की जय हुई। जिनकी विजय निश्चिय थी, वेही ऐसे वीर सेनापति की आकस्मिक मृत्यु से पराजित हुए।※

यही तक़ीख़ाँ का संक्षिप्त इतिहास है; यही पराजय मीर-क़ासिम के सर्वनाश की पहली सीढ़ी थी। मुताख़रीन हो या जन-साधारण में प्रचलित इतिहास हो, सर्वत्र ही यह बात दीख पड़ती है। केवल बंकिम बाबू ने अपने उपन्यास को मनोरंजक बनाने के लिए जान-बूझकर इतिहास की हत्या की है। मीर-क़ासिम के स्वयं युद्ध-क्षेत्र में न आने तथा तक़ीख़ाँ-जैसे प्रभु-भक्त वीर के परलोक सिधारने के कारण ही अंग्रेज़ों के लिए विजय

※ इस युद्ध का वर्णन ग़ुलामहुसेन के 'मुताख़रीन', मुस्तफ़ा की टीका, स्काट एवं मेलीसन के इतिहासों एवं अन्यान्य तात्कालिक लेखकों की पुस्तकों में विस्तार-पूर्वक किया गया है। यहाँ 'मुताख़रीन' के अंग्रेज़ी अनुवाद से एक अंश देते हैं—

*Two or three days after, that is fifty of Mohurrum, in the year 1177 of the Hijira, Mahammed-taky-qhan came out with resolution to oppose the enemy's march. Putting the foot of courage in the stirrup of steadiness he mounted a horse whose motions were as fleet as the moments of his unfortunate rider's existence. * * The moment was becoming critical, when a ball of cannon wounded Mohammed-taky-qhan in the foot, and killed his horse, which fell sprawling on the ground. The General, without betraying any anguish, mounted another, and continusd to advance, and to exhort his men ; and he was now very near the ranks of the English who on their side advanced. * * * At this moment, a musket-ball entering at his shoulder came out on the opposite side. That brave man without betraying any emotion, assembled the hemn of his garment, and throwing it over his shodlder, to conceal his men, still advanced. The English were on the point of retreating, but they had placed an ambuscade at the bottom of a little river which was full on his passage ; and the Genearal being arrived there, was looking out for a passage to come to handblows with them, when the ambuscademen, rising at once, made a sudden discharge full in his face, overthrew numbers of his followers, and lodging a bullet in his forehead, that incomparable hero, who was the main, prop of Mir-cassim-qhan's fortune hastened into eternity in the middle of his slaughtered soldiers.'*

पालेना सहज हो गया था;❀ अंग्रेज इतिहास-लेखकों ने भी स्पष्ट-स्वर में स्वीकार किया है; किन्तु बंकिम बाबू-द्वारा चित्रित कथानक केवल कुतूहल के लिए ही गढ़ा हुआ जान पड़ता है।

यदि इस युद्ध में अंग्रेजों की पराजय हुई होती तो वे अधिक दूर तक झगड़ने की हिम्मत नहीं कर सकते थे; इसीलिए कटवा-युद्ध अंग्रेजों के लिए परम-कल्याणकारी कहा जाकर इतिहास में परिचित है। मैलीसन लिख गये हैं कि जिन्होंने मुहम्मदतक़ीख़ाँ का अनुगमन करने से इन्कार कर दिया था, वे यदि उनके साथ मिलकर युद्ध करते तो इस युद्ध में अंग्रेजों की हार अवश्यम्भावी थी; किन्तु इस प्रकार स्वदेश-द्रोह भारतवर्ष के इतिहास में नया नहीं है।'†

मैलीसन जैसे वीर पुरुष के सामरिक इतिहास की समालोचना करना पराजित भारतीयों के लिए धृष्टता का ही कार्य है, किन्तु उनकी सारी बातें ऐतिहासिक परिस्थितियों का विचार करने पर सत्य नहीं कही जा सकतीं। बहुत थोड़े में हम इस विषय पर थोड़ा प्रकाश डालना उचित समझते हैं।

❀ गिरिया-युद्ध में मीरक़ासिम की पराजय के कारणों का उल्लेख करते हुए मैलीसन ने लिखा है—

It wanted but one man, a skilful leader, such a man as the Mahammed Taki Khan whom they had lost at Katwa, to make success, humanly speaking, absolutely certain. It had not that man, it was not even inspired by the presence of the Prince for whom it was fighting.—Col. Malleson's DECISIVE BATTLES OF INDIA, P. 160.

† मैलीसन ने लिखा है—

"The irregular horsemen, who had fought Glenn the day before, and who might have decided the victory and with it the war, in favour of Mir Kasim, took no part in the action, and retired after it had been decided. The history of India abounds in instances of such unpatriotic conduct. Indeed, it may be affirmed that few things have more contributed to the success of the English than the action of jealousy of each other of the native princes and leaders of India."

युद्ध में जय भी है, पराजय भी है। जहाँ जय-पराजय के साथ स्वदेश का सम्बंध होता है, वहाँ दूसरी बात होती है; किन्तु जब जय-पराजय के साथ केवल व्यक्तिगत लाभ की बात रहती है, वहाँ वीरता का उतना सुन्दर विकास दीख नहीं पड़ता। मुगलों के इस अधःपतन के युग में सभी व्यक्ति स्वार्थ के लिए पागल हो उठे थे—देश का चाहे जो हो, अपना लाभ होना चाहिए, यही सबका प्रिय सिद्धान्त हो रहा था; अतएव लोगों ने स्वार्थ-सिद्धि के लिए क्या किया, क्या न किया, इस बात को थोड़ी देर के लिए ताक पर रखकर यह सोचिए कि अंग्रेजों ने ही उस समय कौन-सा आदर्श काम किया? जो मीरजाफ़र को एक बार अकर्मण्य शासन-कर्त्ता कह कर गद्दी से उतार चुके थे, उनका उसे पुनःनवाब कहकर सलाम करते-करते अपने शिविर में ले जाना क्या सिद्ध करता है? युद्ध में जय भी है; पराजय भी है। इसे कौन नहीं जानता था कि मीरक़ासिम यदि हार गये तो उनके पक्षवालों को मीरजाफ़र के क्रोध का पात्र होना पड़ेगा? फिर भी, मीरक़ासिम की अनुपस्थिति में, मीरजाफ़र के सामने होते हुए भी जिन सेनानायकों ने स्वामी-भक्ति का परिचय दिया उन्हें क्या कहा जाय? मीरक़ासिम की सुशिक्षित सेना के लिए शीघ्र पराजय की संभावना नहीं थी। शौर्य-वीर्य्य, समर कौशल सभी बातों में मीरक़ासिम की सुशिक्षित सेना अंग्रेजी सेना के बराबर हो उठी थी। यदि वह स्वदेश-प्रेम से अनुप्राणित होकर कर्त्तव्य-पालन के लिए उठ खड़ी होती तो अंग्रेजों के लिए उसे पराजित करना असंभव ही था। सब बातों के होते हुए भी नवाब-सेना पहले ही युद्ध में पराजित क्यों हुई? उस जमाने में सेना नहीं सेनापति ही

युद्ध करते थे। प्रधान पुरुष वा सेनापति के भागते ही सेना भी भाग खड़ी होती थी। तक़ीखाँ की आकस्मिक मृत्यु से कटवा के युद्ध में भी यही बात घटित हो गई।

जिनमें स्वदेश का भाव ही नहीं था, उनमें स्वदेश-द्रोह का भाव कहाँ से आ सकता था ? वे तो केवल अपने ही लिए उन्मत्त थे। इसीलिए वे आपस के झगड़े में स्वदेश की बात एकदम ही भूल जाते थे। तक़ीखाँ की हार समग्र जाति की-समग्र देश की हार है, यह बात सहयोगी सेना-नायकों ने नहीं सोची थी। व्यक्तिगत हिंसा-द्वेष में अपनी विचार-बुद्धि खोकर वे स्वदेश की बात ही भूल गये थे। जो व्यक्ति स्वार्थ के लिए ही अस्त्र धारण करते थे, वे तो अपने लाभ के लिए आवश्यकता पड़ने पर अन्नदाता के गले पर भी छुरी फेरने में संकोच न करते थे !

बहुत ही थोड़े आदमियों ने इस हीन स्वार्थ-सीमा को लाँघकर प्रकृत वीरत्व की मर्य्यादा की रक्षा करना सीखा था। सिराज के अनेक सेना-नायकों में मोहनलाल एवं मीरदमन प्रभृति दो-एक व्यक्ति ही इस श्रेणी के थे। मीरक़ासिम के पास तो एक ही आदमी था—मुहम्मद तक़ीखाँ। पहले ही युद्ध में अपनी वह निधि खोकर मीरक़ासिम के लिए अपने अधःपतन को गति रोकना असंभव हो गया।

बंगाल का इतिहास कलंक-कहानी से भरा हुआ है ! राजा, प्रजा, सभासद, सेनापति, किसकी बात कही जाय ? सबके ही माथे पर कलंक की रेखा दीख पड़ती है ! जो दो-एक आदमी इस सीमा से अपने को बाहर कर गये, उनकी कथा भी हम भूल गये हैं ! यदि ऐसा न होता तो तक़ीखाँ-जैसे कर्त्तव्यनिष्ठ पुरुष

के नाम पर उपन्यास में ऐसा अत्याचार न किया जाता। वीर-चरित्र में इस प्रकार का कलंक-लेपन करके भी उसका हृदय व्यथित नहीं होता, उसी देश की जनता में उक्त उपन्यास को आदर मिला है। निष्पक्ष इतिहास-लेखक इसे हमारी नीचता के अतिरिक्त और क्या कहेंगे? ऐसी बातें केवल इसी देश में संभव हैं। क्लाइव बार-बार विश्वासघात करके भी अपने देश के इतिहास में महापुरुष कहलाकर अमर हो गया है! पराजित न होने पर इस देश में भी यह सम्भव न होता; पर, हाय, वह बात नहीं हुई!
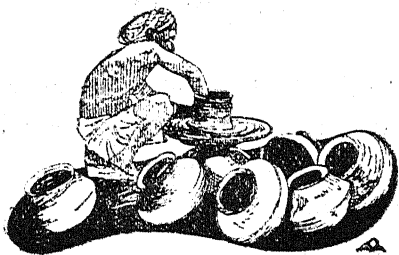
गिरिया का युद्ध

It was at this place that Mir Kasim had resolved to fight his decisive battle,—a battle which should drive the English into the sea, or be the certain precurser of his ruin. —*Malleson*.

सेनापति-हीन होने के कारण कटवा-युद्ध में पराजित होकर मीरक़ासिम की सेना भाग खड़ी हुई। सुयोग पा कटवा के छोटे से क़िले पर अंग्रज़ों ने अपना अधिकार करके उसकी यथासंभव मरम्मत की और उसकी रक्षा के लिए सिपाहियों की एक पल्टन छोड़ मुर्शिदाबाद की ओर अग्रसर हुए। पलासी-क्षेत्र से जिस रास्ते होकर कर्नल क्लाइव ने मुर्शिदा-

बाद की यात्रा की थी, उसी परिचित पथ से अंग्रेज़ी सेना आगे बढ़ने लगी।

मीरक़ासिम ने मुर्शिदाबाद में काफ़ी सेना भेजी थी। यदि उनके द्वारा नगर-रक्षा का उत्तम आयोजन किया गया होता तो अंग्रेज़ी सेना के लिए नगर में प्रवेश करना कठिन था। किन्तु मोती-झील में बहुत थोड़े सिपाहियों को छोड़कर शेष सेना इधर-उधर छावनी डाल असावधानी के साथ दिन बिता रही थी। यथासाध्य महल की रक्षा का प्रयत्न करके भी मोतीझील के थोड़े सिपाही शत्रु-सेना की गति न रोक सके। तोप के गोलों की वर्षा और गोलियों की बौछार से देखते-देखते वह इतिहास-विख्यात रमणीय प्रासाद-अवली श्रीहीन हो गई।

मोतीझील का वह गौरव फिर नहीं लौटा। अतीत की विषाद-मयी करुण कहानी कहने के लिए आज भी वह खण्डहर के रूप में वर्तमान है। कुछ दिनों तक अंग्रेज कर्मचारियों ने इसमें निवास किया था, किन्तु इस समय वह बात भी नहीं है। एक दिन यही महल मुगलों की अनुपम विभव-छटा में मुर्शिदाबाद के नागरिक सौन्दर्य से विदेशी पर्य्यटकों को आश्चर्य-चकित करता था। वह बात आज दूसरे आश्चर्य की सृष्टि करती है। मुर्शिदाबाद में पर्याप्त नवाब सेना के रहते हुए भी अंग्रेज़ी सेना ने इतनी आसानी से कैसे नगर पर अधिकार कर लिया, यह एक ऐतिहासिक आश्चर्य का विषय समझ पड़ता है। बंगाल के इतिहास की इन सब घटनाओं की आलोचना करके विदेशी लेखक भारतीयों को भीरु और कापुरुष लिख गये हैं। अपनी पराजय और हीनता को देखते हुए यह बात असत्य भी नहीं कही जा सकती। पर, हाँ,

इतना ध्यान में रखना आवश्यक है कि इन सब घटनाओं के मूल में नवाब के सेनानायकों की कर्त्तव्य-हीनता ही प्रधान रूप धारण कर बैठी थी। इन सेनानायकों के भलीभाँति अपना कर्त्तव्य-पालन करने पर बंगाल के इतिहास का आज कुछ दूसरा ही रूप होता। अंग्रेजी सेना के मुर्शिदाबाद के पास पहुँचने पर नवाब-सेना राजधानी की रक्षा की चेष्टा छोड़ गिरिया-युद्धभूमि में एकत्र होने लगी। राजधानी के प्रति की गई यह उपेक्षा ही अंग्रेजों की विजय का प्रधान कारण थी।

नगर की रक्षा में असमर्थ हो मुर्शिदाबाद के शासक के भागते ही अंग्रेज़ों ने पहले क़ासिमबाज़ार वाली कोठी पर अधिकार किया। जिस समय मीरजाफ़र ने अनुगतों के साथ समारोहपूर्वक नगर में प्रवेश करके अलीवर्दीखाँ के पुराने महल को अपना निवासस्थान बनाया, उस समय मुर्शिदाबाद का राजपथ श्मशान की भाँति श्रीहीन हो रहा था। विजयोन्मत्त सैनिक नागरिकों को त्रस्त करने लगे; जहाँ जो पाते, लूट लेते। क्षमताशून्य नाममात्र के नये नवाब ने अंग्रेज़ों की कृपा से सिंहासन पर पदार्पण किया, किन्तु उनका यह राज्याभिनय अदृष्ट का उपहास ही मालूम पड़ा!

अब वे दिन नहीं रहे! मीरक़ासिम ने समझा था कि मुसलमानों की राजधानी होने पर भी मुर्शिदाबाद में धन-कुबेर जगतसेठ का ही सबसे अधिक प्राधान्य है। उनसे ऋण लेकर व्यापारादि करने के कारण सभी अमीर-उमरा, राजा-ज़मींदार एवं व्यापारी उनके अनुगत होकर रहते थे। जगतसेठ अंग्रेजों के अकृत्रिम बन्धु थे। जगतसेठ के न होने पर मीरजाफ़र के लिए

भी सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्र करना कठिन था। इसीलिए युद्ध की सम्भावना उपस्थित होते ही जगतसेठ राजवल्लभ, कृष्ण-चन्द्र इत्यादि अंग्रेज़-बन्धुओं को मुँगेर के कारागार में क़ैद कर दिया गया। मीरजाफ़र के मुर्शिदाबाद में प्रवेश करते ही अपने दुःखों के अवसान का दिन आया समझ इस प्रकार के गण्य-मान्य नागरिकों की आशा-लता हरी हो गई। न जाने किसके भाग्य में कब क्या होना लिखा है, यह सोचते-सोचते जो मीर-क़ासिम के भय से मृतप्राय हो जीवन की घड़ियाँ बिता रहे थे, वे इस परिवर्तन से प्रसन्न हो उठे। अमीर-उमरा लोग इस नये राज-विद्रोह से प्रसन्न न होकर भी जीविका एवं स्वार्थ के लिए आदर-पूर्वक मीरजाफ़र के आगे झुककर दरबार की शोभा बढ़ाने लगे। वाणिज्य-लुब्ध सौदागर लाभ की आशा-मात्र से उत्फुल्ल हो उठे। मीरक़ासिम सन्देहवश प्रायः हिन्दुओं के साथ ज्यादती करते थे, अतएव हिन्दू भी उनसे खिन्न थे। वे भी मीरजाफ़र को पाकर प्रसन्न हुए। राजा के परिवर्तन से समग्र देश का भला होगा या बुरा. इस बात पर विचार करने वाले लोग उस समय बहुत ही कम थे। व्यक्तिगत स्वार्थ की रक्षा के लिए सभी व्याकुल हो रहे थे। मीरक़ासिम की हार, मीरजाफ़र के अभ्युदय, स्वाधीन वाणिज्य के सर्वनाश एवं अंग्रेज वणिकों की पदोन्नति से स्वार्थ-सिद्धि का सुयोग पा मुर्शिदाबाद के गण्य-मान्य लोग धीरे-धीरे मीरजाफ़र के पक्ष में मिल गये।[१] देश की प्रजा के सुख-दुःख

1 The more respectable inhabitants submitted quietly, if not cheerfully, to the change of goverment, and the mercantile community welcomed any arrangement that held out a prospect of delivering them from the exactions of Meer Kasim Khan, whose necessities and suspicions of the Hindus had led him into the commission of great severities towards that class, particularly as regards the family of the Seths, the mem-

से उदासीन होकर अपने मतलब के लिए अन्धा हो जाने से देश का किस प्रकार सर्वनाश हो जाता है, भारत या बंगाल के इतिहास में इसके उदाहरणों का अभाव नहीं है। मीरजाफ़र के इस अभ्युदय में यह घटना एक बार पुनः प्रकाशित हो पड़ी!

कटवा के युद्ध में अंग्रेजों की बड़ी हानि हुई थी, अतएव मुर्शिदाबाद पर अधिकार करते ही वे बल-संचय के लिए यत्न-शील हुए। कटवा-युद्ध में आहत अंग्रेज सैनिकों के लिए कासिमबाज़ार की कोठी में चिकित्सालय की स्थापना हुई; उनकी देख-रेख और रक्षा के लिए सिपाही-सेना का एक दल भी वहाँ भेजा गया। इस व्यवस्था के बाद कैप्टन कैम्पबेल सिपाहियों को संग्रह कर एक नई पल्टन बनाने की चेष्टा करने लगे। उधर कलकत्ता के शहर-कोतवाल कैप्टन आयरनसाइड को भी एक नई सेना बनाने की आज्ञा मिली। इन दोनों नायकों ने मुर्शिदाबाद एवं कलकत्ते से बहुत ही थोड़े समय में दो पल्टन सिपाहियों का सङ्गठन कर लिया। उस समय रुपया ख़र्च करने पर थोड़ी ही चेष्टा से सेना का संग्रह किया जा सकता था। आज जो प्रजा अस्त्र धारण करने में असमर्थ है, आज जिसे अस्त्र-शिक्षा का अभ्यास नहीं है, आज जो हथियार रखने के साधारण अधिकार से हीन है, उसकी उस समय दूसरी ही अवस्था थी। विप्लव-कालिक अराजकता में बाहु-बल ही लोगों का प्रधान सहायक था। ज़मींदारों को बाहु-बल से आत्म-रक्षा करनी पड़ती थी; ग्रामवासियों को बाहु-बल के द्वारा ही चोरों एवं डाकुओं के

bers of which wealthy firm he had made prisoners and carried to Mongheer, on account of their supposed connection with the English.--BROOME'S BENGAL ARMY. P. 375.

आक्रमण का जवाब देना पड़ता था; जो निरीह नागरिक थे, उन्हें भी धन-मान की रक्षा के लिए समय-समय पर सिपाही रखने पड़ते थे। बंगाली ब्राह्मणों एवं कायस्थों में भी कितने ही लोग सेना-संचालन करते थे। इसको जानकर ही, विपत्ति पड़ने पर, अंग्रेज़ इस देश वालों की खुशामद करते फिरते थे। क्लाइव की इतिहास-विख्यात 'लाल पल्टन' की कथा जो भूल गये हैं, उन्हें ये बातें कहाँ याद होंगी, किन्तु उस समय कितने ही बंगवासी वा भारतीय अपनी अद्भुत् वीरता के कारण कम्पनी द्वारा पुरस्कृत हुए थे। आज भी मालदा की 'काल-कटारी' इस प्रकार की जागीर का परिचय दे रही है। इन छोटी-छोटी जागीरों का साधारण नाम 'इंगलिश' है। उनकी उत्पत्ति के इतिहास का अनुसंधान करने पर बंगवासी भारतीयों की पल्टन का हाल सहज ही मालूम होता है। उस ज़माने में किसी श्रेणी-विशेष की उपेक्षा नहीं थी। सेना-संगठन के समय जो उसमें प्रविष्ट होना चाहता था, वही योग्य होने पर रख लिया जाता था। जातिगत वा देशगत भेद-भाव प्रचलित नहीं था। अतएव अंग्रेज़ों ने थोड़े समय में ही दो नई सिपाही पल्टनों का संगठन कर लिया। थोड़े ही दिनों की शिक्षा के बाद ये पल्टनें समर-क्षेत्र में जाने योग्य हो गईं। इस प्रकार मुर्शिदाबाद में एक हज़ार गोरों एवं चार हज़ार सिपाहियों के जुटने पर युद्ध-यात्रा का आयोजन होने लगा।

नवाब-सेना गिरिया के निकट एकत्र हुई थी। मार्कर, समरू एवं मीर आसादौलाखाँ उसके साथ सतर्क भाव से अंग्रेज़ सेना के आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे थे। यही अन्तिम युद्ध था— या तो अंग्रेज़ों को समुद्र में सदैव के लिए विलीन होना पड़ेगा, या

फिर सब-कुछ समाप्त हो जायगा—यह सोचकर ही मीरक़ासिम ने सेना-समावेश की थी। कम से कम अंग्रेज़ इतिहास-लेखक तो ऐसा ही लिख गये हैं!

मीरक़ासिम ने जिस स्थान पर सेना एकत्र की थी, उस स्थान पर धैर्य के साथ अंग्रेज़ सेना के आक्रमण की प्रतीक्षा करने पर इस प्रकार पराजित न होना पड़ता। अंग्रेज़ों के सामरिक इतिहास में यह बात स्पष्ट शब्दों में लिखी हुई है। मुर्शिदाबाद से सूती तक गंगा के किनारे एक पुरानी सड़क थी। उसमें एक स्थान पर वाशलीनाला नामक एक छोटी-सी नहर भागीरथी से मिलती थी। नवाब की सेना ने पहले सूती नामक स्थान पर छावनी डाली थी। छावनी के सामने मिट्टी की ऊँची और मज़बूत दीवार बनाकर सामने का भाग सुरक्षित किया था। इस स्थान पर रहकर बीच-बीच में अश्वारोही सैनिकों को भेज अंग्रेज़ों को अस्त-व्यस्त करने की सुविधा थी; उनकी रसद इत्यादि लूटकर उन्हें तितर-बितर करने की भी सम्भावना थी; पर नवाब-सेना ने वैसा नहीं किया। पहली अगस्त को अंग्रेज़-सेना के वाशलीनाला पार करते ही वह अपनी सुरक्षित छावनी छोड़ शत्रु-संहार के लिए आगे बढ़ने लगी।

गोरी पल्टन को बीच में रखकर एवं सिपाहियों को दोनों ओर खड़ाकर अंग्रेज़ों ने व्यूह की रचना की। दूसरी अगस्त को ब्राह्म-मुहूर्त्त में ही दोनों ओर से युद्ध की घोषणा हो गई। यदि इतना ही होता तो भी कोई नुक़सान नहीं था, क्योंकि गोलियाँ लक्ष्य पर नहीं बैठ पाती थीं, पर धीरे-धीरे दोनों दल आगे बढ़ते जाने के कारण बहुत निकट हो पड़े। तब यथा-रीति

युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध का विस्तृत विवरण 'मुताख़रीन' एवं अन्य इतिहास-ग्रन्थों में मिलता है। इस युद्ध में मीरक़ासिम के मुसलमान सेनानायकों ने जैसे रण-पाण्डित्य का परिचय दिया, वैसी वीरता मार्कर एवं समरू भी न दिखा सके !

मीर आसाद्दौला के अश्वारोही दल में मीर बदरुद्दीन नामक एक नायक था। उसने अपने साहस एवं पराक्रम से अंग्रेज़ों को घबरा दिया। उसने अंग्रेज़ी व्यूह के बायें भाग को भेदकर कैप्टन स्टिवार्ड के दल पर विद्युद्वेग से आक्रमण किया एवं अधिकांश अंग्रेज़ों को ज़मीन पर सुलाकर छोड़ा। कैप्टन साहब की सेना अब-तब कर रही थी। रक्षा का दूसरा उपाय न देख उसके सैनिक वाशलीनाले में कूदने लगे; कितने ही जल में डूब मरे। यदि मेजर कार्नाक ठीक समय पर सहायतार्थ न आ जाते तो स्टिवार्ड की सेना का एक आदमी भी जीता बचता या नहीं, इसमें सन्देह है; किन्तु ऐसा होने पर भी अंग्रेज़ सेना के नाश की गति का रुक जाना सम्भव नहीं था। पीछे से बदरुद्दीन एवं आगे से मीर नसीर—दोनों ओर से दोनों मुसलमान वीर ऐसे प्रबल प्रताप से अंग्रेज़ी व्यूह के बायें भाग को छिन्न-भिन्न करने लगे कि अंग्रेज़ी सेना दो तोपों के साथ अपना सारा सामान छोड़ भाग खड़ी हुई। ऐसे समय यदि शेरअलीख़ाँ ने प्रबल वेग से शत्रु के दक्षिण-पार्श्व पर आक्रमण किया होता तो निश्चय ही युद्ध में नवाब की विजय हुई होती। किन्तु वैसा न हुआ। बदरु-द्दीन के घायल होते ही साहसी अश्वारोहियों की गति रुक गई। इस प्रकार के सहसा भाग्य-परिवर्तन से आसाद्दौला हत-बुद्धि हो पड़े। इसी समय सुअवसर देख मेजर आदम ने सारी ताक़त से

नवाब की सेना पर आक्रमण किया। जिन्होंने बाहु-बल से प्रायः जय पा ही ली थी, वे ही नायक को आहत देख घबराकर भाग खड़े हुए। समरू एवं मार्कर सुशिक्षित सेना-दल लेकर पीछे हट गये। इस समय मीर नसीरख़ाँ ने, पलासी-युद्ध के मोहनलाल की भाँति, वीरता-पूर्वक आगे बढ़कर अंग्रेज़ी सेना की गति रोकने की चेष्टा की; पर अपनी चेष्टा में, अकेले होने के कारण, वह सफल न हुए!

कटवा-युद्ध के विजयी सेनापति ग्लेन ने शरीर-त्याग किया; कैप्टन स्टिवार्ड सेना-रक्षा के लिए युद्ध करने जाकर आठ स्थानों पर आहत हुए; तथापि जय अंग्रेज़ों की हुई। उपयुक्त समर-शिक्षा से सुशिक्षित होकर समरू तथा मार्कर के समान दुर्द्धर्ष वीरों के संचालन-कौशल में युद्ध करके भी नवाबी सेना पराजित क्यों हुई, यह आश्चर्य की बात है। इतने दिनों बाद इस रहस्य का ठीक पता लगाने का कोई उपाय नहीं है। अंग्रेज़ों ने लिखा कि गिरिया का युद्ध विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस युद्ध में अंग्रेज़-सेनानायकों की कर्त्तव्य-परायणता से ही अंग्रेज़ों का मुँह उज्ज्वल हुआ एवं मुसलमानों के पराजित होने पर भी इस युद्ध में मुसलमान सेनानायकों का मुख मलीन नहीं हुआ। बदरुद्दीन, मीरनसीर एवं आसादौला ने इस युद्ध में जैसे साहस और पराक्रम का परिचय दिया, वैसा ही पराक्रम यदि समरू एवं मार्कर भी दिखलाते, तो गिरिया का युद्ध-क्षेत्र ही अंग्रेज़ी सेना का समाधि-स्थल हो जाता।

गिरिया नाम में विश्वासघात की कहानी सदैव के लिए मिल गई है। एक बार इसी जगह अलीवर्दी की विश्वासघातकता से

सरफ़राज़ख़ाँ मारे गये थे। इस बार वहीं मीरक़ासिम का पराभव हुआ।

इसके बाद उधवानाला के अतिरिक्त दूसरे किसी स्थान पर अंग्रेज़ी सेना की गति रोकने की सम्भावना नहीं थी। मीरक़ासिम इसे जानते थे। जय की अपेक्षा पराजय का ही उन्होंने अधिक अनुमान किया था। गिरिया जय करके भी उधवानाला को जय करने की सम्भावना अंग्रेज़ों के लिए नहीं थी। मीरक़ासिम ने सोच-विचारकर उसे पहले से ही सुरक्षित कर रक्खा था।

उधवानाला का युद्ध

In one morning with an army 5000 strong, of whom one-fifth only were Europeans, Adams had stormed a position of enormous strength, defeated 40,000 and destroyed 15000 men, captured upwards of a hundred pieces of cannon, and so impressed his power on the enemy that they had no thought but fight.

—*Col. Malleson.*

उधवानाला-युद्ध का वर्णन करते समय मैलीसन लिख गये हैं—"एक दिन प्रातःकाल मेजर आदम ने पाँच हज़ार सैनिकों को लेकर इतने पराक्रम से शत्रु की चालीस हज़ार

सेना पर आक्रमण किया कि उसमें शत्रु के १५००० आदमी मारे गये एवं सैकड़ों गोले छोड़कर नवाब की सेना भाग खड़ी हुई।"

सामयिक इतिहासों में इस युद्ध का जो वर्णन मिलता है, उससे मालूम होता है कि बाहु-बल की अपेक्षा समर-कौशल की ही इस युद्ध में प्रधानता थी। फलानुसार इसकी गणना भी पलासी-युद्ध की भाँति अंग्रेज़ों से सम्बन्ध रखने वाले भारतीय इतिहास के प्रधान युद्धों में है। इस युद्ध में मीरक़ासिम की सारी आशायें नष्ट हो गईं; इस युद्ध से भारत में अंग्रेज़ों का पैर दृढ़ता-पूर्वक जम गया; इस युद्ध में ही मुग़ल-साम्राज्य का टिम-टिमाता हुआ दीपक सदैव के लिए बुझ गया! इस हिसाब से यह युद्ध भारत के पिछले काल के इतिहास में हमारे पतन का चिर-स्मारक हो रहा है!

उधवानाला के समीप भागीरथी के किनारे नवाबी राज्य में एक छोटा क़िला बना था। उसकी एक ओर भागीरथी बहती थी और दूसरी ओर उधवानाला बहता था। अपनी परिस्थिति एवं सुदृढ़ प्राचीर के कारण यह स्थान दुर्ग था। क़िले के नीचे होकर मुर्शिदाबाद से पटना जाने वाली सड़क बनी हुई थी। भागीरथी के किनारे पगडंडी थी; उसके एक ओर जल-मग्न तराई थी और दूसरी तरफ़ छोटी-छोटी पर्वतमालायें दूर तक फैलकर उसे सुर-क्षित और दुर्गम बना रही थीं। इस स्थान पर नई चहार-दीवारी बनाकर एवं तोपों को उपयुक्त स्थान पर लगाकर बहु-संख्यक सैनिकों द्वारा शत्रु की गति रोकने की तैयारी मीरक़ासिम ने पहले से ही कर रक्खी थी। गिरिया के युद्ध में पराजित सैनिक भी

आकर नवाब-सेना में सम्मिलित हो गये थे। इस प्रकार उधवा-नाला का नवाब-शिविर कई सहस्र सिपाहियों का आश्रय-स्थल हो उठा। इस सुरक्षित एवं सुदृढ़ दुर्ग को बहुत समय तक गोला-बारी करके भी तोड़ सकने को सम्भावना नहीं थी। बाहु-बल वा पराक्रम से यह जीता जा सकेगा, ऐसा आशा स्वप्न में भी किसी को नहीं थी।

यहाँ पहुँचकर दो कोस की दूरी पर पालकीपुर नामक गाँव में मेजर आदम ने छावनी डाली और घेरा डालने का आयोजन करने लगे। सामने बढ़ने की सुविधा नहीं थी; नवाब की सेना भी सदैव गोली चलाकर अंग्रेजों की गति रोकने को तैयार थी; ऐसी अवस्था से अंग्रेज सेनापति ने भागीरथी के तट पर तोप-मंच बाँधकर उस पर से गोले बरसाना शुरू किया।

तोप-मंच बाँधने में अधिक समय नहीं लगता, सुशिक्षित कारीगर बहुत थोड़े समय में यह काम कर सकते हैं, तथापि मेजर आदम तीन सप्ताह में केवल तीन मंच बना सके। इससे समझा जा सकता है कि नवाबी सेना किस सतर्कता के साथ गोली चला रही थी।

चौबीसवें दिन इन तोपों से गोलों की वर्षा आरम्भ हुई, पर इन मंचों पर एवं उनके आस-पास दुर्गावरोध के लिए उपयोगी बन्दूकों एवं अन्य अस्त्रों-शस्त्रों को लगाकर भी अंग्रेज सेनापति उस प्राचीर का कुछ न बिगाड़ सके।[१]

1 Even when on the twenty-founth day, opened fire from the three batteries he had constructed, the nearest of which was about three hundred yards from the enemy's intrenchment, he found that though manned with seige-guns, the fire produced little or no impression on the massiver amparts which Mir Kasim had throw : up --MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA, P. 167.
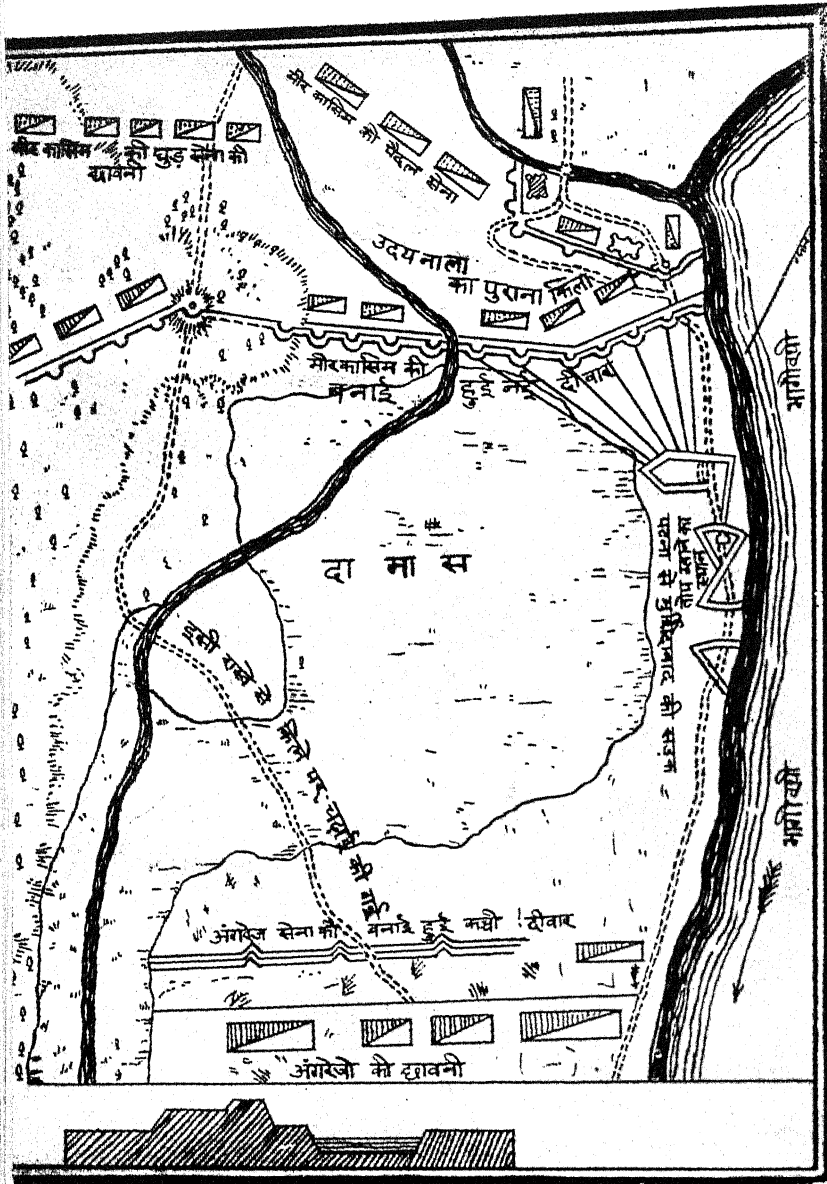
उधुवानाला का युद्धक्षेत्र

दुर्ग की ओर अग्रसर होने की चेष्टा ही घेरे सम्बन्धी समर-कौशल का नियमित रूप है। इस चेष्टा के लिए तोप-मंच से निरन्तर गोलाबारी करके दुर्ग की प्राचीर तोड़नी पड़ती या उसे लाँघकर दुर्ग में प्रवेश करना पड़ता। उधवानाला में इतने दिन रहकर एवं अनेक उपाय करके भी इन दोनों में से किसी बात को सुविधा मेजर आदम न कर सके। तराई पार किये बिना ससैन्य दुर्ग के नीचे पहुँचना असम्भव था एवं प्राचीर तोड़े बिना दुर्ग में प्रवेश भी नहीं किया जा सकता था। मेजर आदम को जब दोनों ओर से निराशा हुई तो उनका साहस, पराक्रम, आशा एवं विश्वास सब एक बार ही शिथिल पड़ गया। स्वयं मैलीसन इसे मुक्त-कण्ठ से स्वीकार कर गये हैं।[१]

किन्तु इस प्रकार 'न जयौ न तस्थौ' अवस्था में पड़े रहना ही अंग्रेज सेनापति के सौभाग्य का कारण हो उठा। थोड़े दिनों बाद नवाबी सेना ने मन में सोचा कि उधवानाला को जीतना अंग्रेजों का काम नहीं है। उस समय वे दुर्ग-रक्षा के कार्य में शिथिल होकर विलासिता एवं नाच-गान में दिन काटने लगे।[२] इधर अंग्रेज-सेनापति, एकमात्र दुर्ग-जय की चिन्ता में ही सतर्कभाव से सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

अंग्रेज-सेनापति के सौभाग्य से थोड़े ही दिनों में ऐसा अवसर प्राप्त हो गया। एक दिन निस्तब्ध रात्रि में मीरक़ासिम की सेना का एक व्यक्ति दुर्ग से भागकर चुपके-चुपके अंग्रेज-शिविर

1 Nearer he could not advance his guns, nor on the other face could he move his infantry, for the morass, saturate that time of the year, covered the position. The difficulties which presented themselves on all sides were, indeed, sufficient to make the bravest despair.--MALLESON'S DECISIVE BATTLES OF INDIA, P. 167

SCOTT'S HISTORY OF BENGAL.

में आया। पहले यह आदमी कम्पनी का नौकर था; पीछे मीरक़ासिम की सेना में नौकरी कर ली थी। मीरक़ासिम का नमक खाकर भी वह विश्वासघातक उनका सर्वनाश करने को तैयार हो गया! इतिहास से इसके नाम का पता नहीं लगता; इस व्यक्ति का वर्णन करते समय सभी इसको 'अंग्रेज़-सैनिक' लिख गये हैं!

मेजर आदम ने बड़ी प्रसन्नता से विश्वासघातक सैनिक का गुप्त संवाद सुना—मालूम हुआ कि तराई एवं खाई सर्वत्र गहरी नहीं है; उसमें एक स्थान ऐसा है, जहाँ से उसे पार किया जा सकता है। इसकी जाँच कराके जब सेनापति ने देखा कि बात ठीक है, तो उसकी बात का विश्वास किया।[१]

अब आदम ने क्षणमात्र भी विलम्ब न किया। रात में उसी समय से, अंग्रेज़ी-सेना अस्त्र-शस्त्र के साथ, कष्ट-पूर्वक तराई एवं खाई पार करके क़िले के नीचे एकत्र होने लगी। प्राचीर के बाहर नवाब की सेना के जो दो-चार सैनिक झपकी ले रहे थे, वे सावधान होने के पहले ही संगीन से मार डाले गये! कुछ सैनिकों के चुपचाप तेज़ी से प्राचीर लाँघकर फाटक खोलने के साथ ही अंग्रेज़-सेना तूफ़ान की नाईं क़िले में पिल पड़ी! नवाब-सेना ने आँख खोलते ही देखा, क़िले में चारों ओर शत्रु की सेना व्याप्त है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। युद्ध बिना किस प्रकार शत्रु ने क़िले में प्रवेश पा लिया, इसे न समझ सकने के कारण सब भाग खड़े हुए। दूसरा उपाय न देखकर नवाब-सेना के नायकों ने सेना को लौटाने के विचार से भागने का रास्ता रोक लिया।

1 IBID

'जो भागेगा, उसे गोली मार दी जायगी—युद्ध करूँगा, भागूँगा नहीं, चाहे प्राण जायँ'—ऐसी प्रतिज्ञा कर वे कमर कसकर तैयार हो गये; किन्तु किसी ने इस बात पर कान न दिया। विवश होकर वे अपनी ही भागती हुई सेना पर गोलियों की वर्षा करने लगे। भागने का रास्ता बन्द हो गया। सैनिक पर सैनिक गोलियाँ खाकर मरने लगे। दोनों ओर से त्रस्त हो, अपने नायकों के कठोर आदेश से उस समय नवाबी-सेना के पन्द्रह हज़ार सैनिकों ने प्राण गँवाये।[1] इसके बाद दुर्ग-विजय के लिए अंग्रेजी-सेना को और परिश्रम न करना पड़ा। समरू, मार्कर एवं आराटून इत्यादि विदेशी सेनापतियों ने युद्ध नहीं किया। वे अंग्रेजों के हाथ में विजय-मुकुट सौंपकर मीरक़ासिम के लिए एक मुट्ठी चिताभस्म ले उधवानाला से भाग खड़े हुए!

अंग्रेज़ों के सामरिक इतिहास में इसे ही अश्रुतपूर्व विजय कहा गया है![2] किन्तु मीरक़ासिम दूसरे ही रूप में इसका वर्णन कर गये हैं। जब उन्होंने यह कलंक-कहानी सुनी तो और आत्म-संवरण न कर सके—तुरन्त (९ सितम्बर, १७६३ ई०) अंग्रेज सेनापति के पास निम्नलिखित पत्र भेजा—

"That for these three months you have been laying waste the King's country with your forces,

1 It was yet barely day-light and the enemy confounded by the suddenness of the attack coming from several quarters, were thrown into inextricable confusion, to add o which, their own guard stationed at the bridge over the Nullah, had orders to fire on any one attempting to cross, with a view of compelling the troops to resistance, a which was performed with fearful effect; a heap of dead speedily blocked up at passage.—BROOME'S BENGAL ARMY, VOL. I. 485.

2 BROOME'S BENGAL ARMY.

what authority have you ? If you are in possession of any Royal Sunad for my dismission, you ought to send me either the original or a copy of it, that having seen it, and shown it to my army I may quit this country, and repair to the presence of his Majesty. Although I have in no respect intended any breach of public faith, yet Mr. Ellis regarding not treaties or engagements in violation of public faith, proceeded against me with treachery and night-assaults. All my people then believed that no peace or terms now remained with English, and that wherever they could be found, it was their duty to kill them. With this opinion it was that the aumils of Murshidabad killed Mr. Amyatt, but is was by no means agreeable to me that that gentleman should be killed. On this account I write ; if you are resolved on your own authority that I will cut off the heads of Mr. Ellis and the resf of your chiefs and send them to you.

Exul not upon the success which you have gained merely by treachery and night-assaults, in two or three places over a few jamadars sent by me. By the will of God, you shall see in what manner this shall be revenged and retaliated."

उधवानाला के युद्ध में ही मीरक़ासिम का सर्वनाश हुआ,

अतएव उनके इसे अस्वीकार कर पत्र लिखने से क्या होता ? इसके बाद फिर नवाब की सेना अंग्रेजों की गति रोकने में समर्थ नहीं हुई ।

मीरक़ासिम के अनुग्रह से आर्मीनियन सेनानायकगण क्षमताशाली हो उठे थे । आराटून या ख़ाजा ग्रेगरी नामक अरमानी सेनापति मीरक़ासिम के दरबार में गुर्गनख़ाँ के नाम से प्रसिद्ध थे । विश्वास करके तोपख़ाने का सारा भार मीरक़ासिम ने उन्हींपर छोड़ दिया था । कुछ इतिहास-लेखकों ने लिखा है कि उनकी कर्त्तव्य-हीनता से ही मीरक़ासिम का अधःपतन हुआ; किन्तु उन्होंने अपने कर्त्तव्य-पालन में ऐसी शिथिलता क्यों की, प्राप्त इतिहास में इसका कोई उत्तर नहीं मिलता ।

गुर्गनख़ाँ के भाई ख़ाजा पिन्दू बंगाल के इतिहास में प्रसिद्ध हैं । वह सिराजुद्दौला के समय से ही अंग्रेजों की हित-चिन्ता में लगे थे । एक भाई के अपने पक्ष में होने पर मेजर आदम ने उसकी सहायता से गुर्गनख़ाँ को भी मिलाने का यत्न किया था । इस बात को कोई नहीं जानता था पर किसी कारणवश मेजर आदम के अत्याचार से व्यथित हो ख़ाजा पिन्दू ने कलकत्ता के अंग्रेज दरबार में जो पत्र भेजा था, उसीसे यह बात प्रकट हो पड़ी ।[1] धीरे-धीरे यह समाचार मीरक़ासिम के कानों तक पहुँचा । इसके लिए गुर्गनख़ाँ निर्दयता-पूर्वक मारे गये । अंग्रेजों ने गुर्गनख़ाँ से जैसा बन्धु-भाव स्थापित किया था, उससे आगे

1 *Your petitioner begs leave to observe to this Hon'ble Board, at Ouda Nullah. a place where the enemy had strong works and great forces, your petitioner by direction from Major Adams wrote two letters to Marcar and Arratoon two Armenian officers, who amongst others, commanded the enemy's forces.—LONG'S SELECTIONS, Vol. 1, 339.*

बहुत काम निकलने की संम्भावना थी; किन्तु उनकी हत्या से उसका अन्त हो गया।[१]

मीरक़ासिम के विश्वास-भाजन ख़ाजा ग्रेगरी उर्फ़ गुर्गनख़ाँ ने अंग्रेजों की सचमुच सहायता की थी, यह बात मेजर आदम के उस पत्र से भी प्रकट होती है, जो उन्होंने गुर्गनख़ाँ की हत्या की सूचना के साथ कलकत्ता भेजा था। वह पत्र यों है—

"Dear Sir,— We had a report yesterday that Coja Gregory has been wounded some days ago by a party of his Mogal cavalry who mutinied for want of their pay between Sovage Gurree and Nabab Gunj, it is just now confirmed by a hurcarra arrived from the enemy with this addition that he died next day and that 40 principal people concerned were put to death upon the occasion; though it was imagined that the Moguls were induced to affront and assault Coja Gregory by Cossim Ally Khan, who began to grow very jealous of him on account of his good behaviour to the English." 2

इन सब घटनाओं के एकत्र न होने पर—केवल बाहु-बल से उधवानाला-समर जय करने पर—मेजर आदम अवश्य ही अद्वितीय वीर कहे जा सकते थे। थोड़ी सी सेना के साथ, कठि-

1 His brother commanded the artillery of the Nawab at Patna, and was subsequently murdered there the Nawab suspecting him of being too friendly to the English. Had he been alive the massacre (of Patna) might have been prevented through his influence.

—REVD LONG.

2 LONG'S SELECTIONS, VOL. 1, 333.

नाइयों को अतिक्रम करके, उन्होंने जिस भाँति कई युद्ध जीते, इसके लिए नवाब के सेनानायकों की विश्वास-घातकता ध्यान में रखते हुए भी उनकी प्रशंसा ही करनी चाहिए। 'जिस तरह हो शत्रु को नाश करो' यह आज-कल की युद्ध-नीति का प्रधान सिद्धान्त है अतः आर्मीनियनों की सहायता से समर जीतने पर भी, (अरमानी सेनापति भले ही विश्वास-घातक कहे जायँ) अंग्रेज सेनापति का नाम इतिहास में गौरव-पूर्वक ही लिया गया है।

पटना का हत्याकाण्ड

It is true you have Mr. Ellis and many other gentlemen in your power; if a hair of their heads is hurt, you can heve no title to mercy from the English; and you may depend upon the utmost fury of their resentment, and that they will pursue you to the utmost extremity of the earth; and should we unfortunately not lay hold of you, the vengeance of the Almighty eannot fail overtaking you, if you perpetrate so horrible an act as the murder of the gentlemen in your custody.

—*Major Adams.*

उधवानाला के युद्ध में सारी आशाओं को नष्ट होते देख मीरक़ासिम उन्मत्त की भाँति हिताहित-ज्ञान-शून्य हो उठे। उनके सीधे हृदय में परिस्थितियों के दबाव से कुटिलता

का जन्म हुआ। दो-चार विश्वासघातकों के आचरण से अपमानित एवं उद्विग्न होकर वह सबको सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। मनुष्य का चरित्र परखने एवं पहचानने की शक्ति लुप्त हो गई। वह पटना के अंग्रेज क़ैदियों की हत्या करने को तैयार हो गये।

अंग्रेज-सेनापति ने उनको इस पापमय संकल्प को छोड़ देने के लिए पत्र लिखा; प्रधान मंत्री अली इब्राहीमख़ाँ ने भी बहुत-कुछ समझाया-बुझाया; परन्तु सबकी चेष्टायें विफल हो गईं!

मीरक़ासिम की मानसिक अवस्था की उदारता-पूर्वक आलोचना करने पर, उन्हें पागल कहकर क्षमा करने की इच्छा होती है। जिनके विश्वास पर उन्होंने स्वयं सेना-संचालन का भार ग्रहण नहीं किया, वे जब एक-एक करके विश्वासघात करने लगे, तब मीरक़ासिम अपने ऊपर संयम न रख सके।[१] घटना-प्रवाह से उनका सन्देह दिन-दिन बढ़ता ही गया।

अरबअलीख़ाँ नामक एक विश्वासी सेना-नायक के ऊपर मुँगेर दुर्ग का शासन-भार छोड़ मीरक़ासिम ने पटना की यात्रा की थी। पहली अक्तूबर को मुँगेर में प्रवेश करते ही उस क़िलेदार अरबअली की विश्वासघातकता के कारण अंग्रेजों ने मुँगेर-दुर्ग पर अधिकार कर लिया। यहाँ दो हज़ार सैनिक भी उन्होंने क़ैद कर लिये।[२]

मुँगेर की यह सेना अंग्रेज़ी पल्टन में मिला ली गई और

1 The recurrence of such serious disasters had rendered Meer Kossim Khan suspicious of all his officers, and more especailly of Goorgeen Khan who was reported to be in communication with the English, through the medium of his brotder Aga Pedroos.
—BROOME'S BENGAL ARMY, Vol. 1., 390.

2 The English having had Monghyr delivered up to them by the treachery of the Governor, Arab Ali Khan, were aduancing fast towards Patna. SCOTT'S HISTORY OF BENGAL, 428.-429.

इस भाँति नवाब की सेना ही के द्वारा नवाब के सर्वनाश की चेष्टा हुई।[१] ये सब बातें जब मीरक़ासिम के कानों तक पहुँचीं तब वह सामना करने का साहस न कर सके। उन्होंने तुरन्त क़त्ल का आदेश दिया!

इस हत्याकाण्ड के कारण मीरक़ासिम का वीर चरित्र कलंकित हो गया है। इस घटना से एशिया और यूरोप के लोक-चरित्र की भिन्नता भी स्पष्ट प्रकट होती है। एलिस साहब के अपराधों का अन्त नहीं था; तथापि जिस समय मीरक़ासिम का पत्र मिला, अंग्रेज़ सेनापति इन सब जातीय क़ैदियों की प्राण-रक्षा के लिए व्याकुल हो उठे; उस समय इन स्वदेश-भक्त वीरों ने सेनापति के पास लिख भेजा—"हम लोगों के दिन पूरे हो चले हैं, अतएव हमें पुरुषोचित वीरता के साथ प्राणदण्ड ग्रहण करना चाहिए। हम लोगों की एकमात्र प्रार्थना यही है कि हमारे प्राण बचाने की आशा या उत्कण्ठा से आप एक मिनट के लिए भी अपनी युद्ध-प्रणाली में परिवर्तन न कीजिएगा।"[२] जीवन के अन्तिम मुहूर्त्त में इस प्रकार स्वदेश एवं स्वजाति की कल्याण-कामना को प्रधानता देकर न जाने कितने नर-नारी इंग्लैण्ड का मुख उज्ज्वल कर गये हैं; उनके इतिहास में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। केवल इसी घटना से एलिस साहब की सारी

3 Broome's Bengal Army, Vol. 1. 390.

1 Whatever may have been the faults of Mr. Ellis and his advisers. the close of their career was honourable to themselves and the country that produced them; they wrote to Major Adams expressing their conviction that their fate was sealed and their readiness to submit to it like men, one begging that no consideration for their position might for a moment interfere with the plans or measures of the English commander and his troops.--BROOME'S BENGAL ARMY, P. 388.

कलंक-कालिमा धुलकर स्वच्छ हो गई है और इतिहास-लेखकों ने आदर-पूर्वक उनका नाम लिया है।

राजा रामनारायण, जगत्सेठ, स्वरूपचंद, राजनगर-निवासी वैद्यराज राजवल्लभ इत्यादि अंग्रेज-हितैषी भारतीय पहले ही निर्दयता-पूर्वक क़त्ल किये गये थे! गुर्गनख़ाँ ने ख़ीमे के अन्दर ही शरीर-रक्षकों के अस्त्राघात से पंचत्व प्राप्त किया था। सेनानायकों में भी कितने ही इस प्रकार क़त्ल कर दिये गये थे। अन्त में अंग्रेज बन्दियों की बारी आई। उनका सिर काट लेने का आदेश हुआ। समरू को छोड़ और कोई इस काम के लिए तैयार न हुआ। वह ईसाई था, पर उसने बड़ी ही निर्दयता से इस काम को पूरा किया।[१]

पटना की लोमहर्षण हत्या-कहानी का वर्णन बड़ा ही कारुणिक है। डा० फुलर्टन को छोड़ और कोई नर-नारी बालिका-बालक नहीं बचा। डा० फ़ुलर्टन अपनी सरलभाषा में जो लिख गये हैं, उसके प्रत्येक शब्द से वेदना, करुणा एवं आँसू की बूँदें टपकती हैं। नवाब के कर्मचारियों में जितने हिन्दू-मुसलमान थे, उनमें कोई यह पशुता-पूर्ण कार्य करने को तैयार नहीं हुआ, यही हमारे लिए एक सान्त्वना का विषय है।

समरू के सिपाही जिस समय पटना के कारागार के समीप इस अमानुषिक कार्य को पूरा करने के लिए एकत्र हुए, उस समय प्रभात का तरुण-सूर्य पूर्व-गगन में लालिमा बिखेर रहा

1 The intelligence of the fall of Monghyr filled up the measure of Meer Kassim's fury, the surrender being attributed to treachery. He now issued the fatal order for the massacre of his unfortunate prisoners but so strong was the feeling in the subject that none amongst his officers could be found to undertake the office, untill Sumroo offered his services to execute it.--BROOME'S BENGAL ARMY, Vol. I. 390

था; साहब लोग केवल चाय पी सके थे। इसी समय समरू ने आकर एलिस, हे एवं लसिंग्टन साहब को बुलाया। एक-एक जो बाहर आते, वे क़त्ल होते थे। शीघ्र ही यह कथा भीतर के सब अंग्रेज़ क़ैदियों को मालूम हो गई। तब आस-पास—छुरी, काँटा, शीशी, बोतल, कुर्सी, कोच—जो चीज़ें मिलीं, उन्हींसे उन्होंने अपनी आत्म-रक्षा की चेष्टा की। उस समय सैनिकों को क़त्ल करने की आज्ञा मिली। वे आदेश-पालन के लिए अग्रसर तो हुए, परन्तु कार्य की भीषणता देख सिहर गये और निरस्त्र क़ैदियों पर वार करने में हिचकिचाहट प्रकट करते हुए कहने लगे—"क्या यह वीरोचित व्यवहार है? यह तो क़साईख़ाने की हत्या होगी—बन्दियों को अस्त्र-शस्त्र दीजिए; बिना युद्ध के यों किसी पर वार नहीं किया जा सकता!"

इस धिक्कार से भी नराधम समरू का हृदय विचलित नहीं हुआ। वह आँखें लाल करके गरज उठा; जिन सैनिकों ने धिक्कारा था, उन्हें ज़मीन पर गिरा कर वह बार-बार उत्तेजना-पूर्ण स्वर में आदेश देने लगा।[१] अन्त में वही हुआ, जो होना था; कोई भी मुँगेर की तरफ़ नहीं लौट सका। दूसरे ही दिन सवेरे इन क़त्ल किये हुए निहत बन्दियों की लाशें कुँए में डाल दी गईं। उस समय भी ग्लस्टन के शरीर में प्राण मौजूद था। सिपाही उन्हें बचाने की सलाह कर रहे थे, किन्तु प्रार्थना करने पर उन्हें भी

1 Their very executioners, struck with their gallantry, requested that arms might be furnished to them, when they would set upon them and fight them till destroyed, but that this butchery of unarmed men was not the work for Sipahis but for "Hallal Khores". Sumroo enraged struck down those that objected, and compelled his men to proceed in their diabolical work until the whole were slain.--BROOME'S BENGAL ARMY, VOL. 1. S39.

जीते-जी कुँए में डाल दिया गया! जो बीमार थे, वे बेचारे भी न बचे। एलिस के हँसते हुए बच्चे की भी रक्षा न हुई![1]

जब हत्या का यह समाचार कलकत्ता के अंग्रेज दरबार को मालूम हुआ तो सबके सब दुःखी हो गये। दरबार के अधिवेशन में कोई सहसा हृदय का आवेग प्रकट नहीं कर सका; रुद्ध-कण्ठ से बदला लेने के लिए सबने निश्चय किया कि 'इस मध्यान्ह में कोई जल की एक बूँद भी न पियेगा; सभी शाम को धर्म-मन्दिर में एकत्र होंगे; दुर्ग में, रणतरी से एवं भागीरथी-किनारे सर्वत्र बन्दूक़ की सलामी दी जायगी; चौदह दिन तक अंग्रेज शोक-चिन्ह धारण करेंगे एवं जो कोई मीरक़ासिम को पकड़ लावेगा उसे एक लाख रुपये पुरस्कार-स्वरूप मिलेंगे।'[2]

जिन्होंने मीरक़ासिम की निष्ठुर राजाज्ञा के कारण इस प्रकार जान देकर अंग्रेज़ी राजशक्ति के विस्तार में योग दिया था,

1 Neither age nor sex was spared, and Sumroo consummated his diabolical villany by the murder of Mr. Ellis' infant child.--IBID.

2 It is therefore agreed and ordered that a general deep mouring shall be observed in the settlement for the space of fourteen days to commence next Wednesday, the 2nd of November.

That the morning of the day shall be set apart and observed as a public fast and humiliation, and that intimation be accordingly given to the chaplains to be prepared with a sermon and forms of prayer suitable to the occasion.

* * * * *

After paying this necessary duty to the memory of our countrymen, we are further eggreed and determined to use all the means in our power for taking an ample revenge on the persons who may have been concerned in this horrid execution, and with a view of detering in future all ranks and degrees of people from ordering or executing such acts of barbarity.

Resolved, therefore, than a Manifesto of the action be published througnout all the country with a proclamation promising an immediate reward of a lack of Rupees to any persons or person who shall seize and deliver up to us Cossim Aly Khan ant that he or they shall further receive such other marks of favour and encouragement as may be in our power to show in return for this act of public justice.--LONG'S SELECTION, VOL. 1 p. 335—336

उनकी शव-राशि पर पीछे से स्मृति-चिन्ह स्थापित किया गया, जो आज तक सुरक्षित है। इस स्मृति-चिन्ह पर जो कुछ लिखा हुआ है, उसे पढ़ते-पढ़ते आज भी हृदय अवसन्न हो जाता है; आज भी मीरक़ासिम का अमानुषिक अत्याचार आँखों के सामने नाच उठता है; आज भी मन में आता है कि हाय, न जाने कब इस पृथ्वी पर ऐसे अत्याचारों का सदैव के लिए अन्त हो जायगा !

जितने दिनों तक राज-धर्म पालन करने के लिए मीरक़ासिम ने अन्यायी अंग्रेज वणिकों के उत्पीड़न से प्रजा एवं देश की रक्षा की चेष्टा की, उतने दिनों तक अंग्रेज दरबार से भी कई सदस्यों ने उनके पक्ष का समर्थन किया। भारत की अवस्था का वर्णन सुन कर विलायत के 'कोर्ट ऑव् डाइरेक्टरर्स' ने भी मीरक़ासिम के ही पक्ष में सम्मति दी थी। उसने एलिस एवं आमियट इत्यादि अंग्रेजों को पद-च्युत करके मीरक़ासिम के साथ पुनः संधि-स्थापन करने का आदेश भेजा था।

आमियट की हत्या से सहसा युद्धानल प्रज्वलित न होने पर एवं पटना के हत्याकाण्ड में अपनी नृशंसता का परिचय न देने पर, वांसिटर्ट-सरीखे न्याय-प्रिय गवर्नर की शुभाकांक्षा से, मीरक़ासिम अपने उद्देश्य में सफल हो सकते थे; किन्तु डाइरेक्टरों के उक्त आदेश के भारत पहुँचने से पहले ही मीरक़ासिम के जीवन-नाटक की यवनिका गिर पड़ी ![1]

---

1 *Court's letter, dated 8 February 1764, as published in Long's Selections, Vol 1 370—372.*

देश-त्याग

Conquests are not our aim, and if we can secure and preserve our present possessions in Bengal, we shall rest well-satisfied. —*Courts' Letter*.

विलायत के डाइरेक्टर लोग राज्य-विस्तार के लिए लालायित नहीं थे। राज्य-लोभ के कारण लक्ष्य-भ्रष्ट होने पर वाणिज्य नष्ट हो जायगा, कष्ट-संचित अर्थ से केवल सेना की ही मनोकामना पूरी होगी और कहीं पराजित हुए तो सदैव के लिए अंग्रेजों के भारतीय वाणिज्य का नाश हो जायगा, इसी आशंका से विलायत के कर्ता-धर्तागण पहले से ही राज्य-विस्तार के विरोधी थे। वे केवल धन बटोरने के इच्छुक थे। मीरक़ासिम के समय में भी उन्होंने लिख भेजा था:—"राज्य

विस्तार और आक्रमण हमारा उद्देश्य नहीं है ; बंगाल में वाणिज्य-विस्तार सम्बन्धी जो अधिकार मिले हैं, उन्हीं की रक्षा में हमें सन्तोष है।" किन्तु इस देश के अंग्रेज मीरक़ासिम को समुचित शिक्षा देने के लिए, और संभव होने पर सशरीर क़ैद करने के लिए, इतने दृढ़ संकल्प हो उठे थे कि अंग्रेजी सेना मीरजाफ़र को सिंहासन पर बिठाकर ही चुप नहीं हुई वरन् मुँगेर से पटना एवं पटना से कर्मनाशा तक मीरक़ासिम का पीछा करने में सचेष्ट हुई।

१७६३ ई० की पाँचवीं अक्तूबर को पटना का लोमहर्षण हत्याकाण्ड घटित हुआ। उस समय अंग्रेजी सेना मुँगेर में थी। १५ वीं अक्तूबर को मुँगेर से प्रस्थान करके २८ वीं तारीख को वह पटना नगर की सीमा पर पहुँची। एकाएक नगर पर आक्रमण करने का कोई उपाय नहीं था। मीरक़ासिम के आदेशानुसार नगर-रक्षा के लिए सुशिक्षित सेना तैयार थी। लाचार हो मेजर आदम ने नगर घेरकर तोप-मंच निर्माण करने की तैयारी की। इस कार्य में बाधा देने के लिए नवाबी सेना दुर्ग से निकल कर बार-बार अंग्रेजों पर आक्रमण करने लगी। उसके आक्रमण-कौशल से अंग्रेजी सेना घबरा उठी। अन्त में सेनापति ने कर्तव्य का निश्चय करने के लिए सबकी सम्मिलित सभा की। सबने सोच-समझ कर सहिष्णुता का ही उपदेश किया। पीछे स्थिति और जटिल हो गई। अंग्रेज सेना के आगमन के पूर्व ही सुशिक्षित अश्वारोहियों के साथ मीरक़ासिम दूर हट गये थे। जो लोग दुर्ग-रक्षा के लिए नियुक्त किये गये थे, उनकी संख्या भी कम नहीं थी। जिन अश्वारोहियों ने मीरक़ासिम के साथ दुर्ग-त्याग

किया था, उनके द्वारा अंग्रेज़ी सेना के पिछले भाग पर आक्रमण किया जा सकता था। इस परिस्थिति में पड़कर मेजर आद्म सहसा दुर्ग पर आक्रमण करने का साहस न कर सके। किन्तु थोड़े ही दिनों में यह आशंका दूर हो गई। सेनापति ने देखा कि अश्वारोही-गण मीरक़ासिम की रक्षा के लिए दूर ही से लौट जाते हैं, वे आक्रमण नहीं करेंगे, केवल दुर्ग की सेना ही युद्ध के लिए सचेष्ट थी। शत्रु-पक्ष की इस दुर्बलता को समझ कर अंग्रेज़-सेनापति दुर्ग पर आक्रमण करने का उपाय करने लगे।

पटना का क़िला, नगर के पूर्वोत्तर, गंगा किनारे बना हुआ था। घेरे की दीवारें बत्तीस फुट ऊँची थीं; उसके नीचे मिट्टी का प्राचीर बनवाकर मीरक़ासिम ने उसे और सुदृढ़ कर दिया था। दुर्ग के नीचे ५० फुट के घेरे में एक खाई भी थी। दुर्ग की रचना अधूरी थी, किन्तु दुर्ग-रक्षक सैनिक रण-कुशल थे। उन्होंने दुर्ग-द्वार के सम्मुख ही दीवारें खड़ी करके एक आँगन-सा बना लिया था, जिससे द्वार खुलने वा टूटने पर भी एकसाथ अधिक मनुष्य प्रवेश न कर सकें। प्राचीर पर स्थान-स्थान पर बन्दूकों का प्रबंध करके सेना सतर्क भाव से क़िले की रक्षा कर रही थी. पर नवम्बर के पहले ही सप्ताह में शत्रु-सेना के गोलों से प्राचीर दो स्थानों पर खण्डित हो गई। इन स्थानों से दुर्ग में प्रवेश करने की संभावना देख मेजर ने छठी नवम्बर को ज़ोर-शोर का आक्रमण किया। नवाबी सेना बहुत प्रयत्न करके भी अंग्रेज़ों की गति रोक न सकी। दुर्ग में प्रवेश करने के साथ ही अंग्रेज़ नायक एक-एक करके प्राण देने लगे, फिर भी शत्रु की सेना परास्त नहीं हुई, वरन् अपने स्वाभाविक धैर्य एवं अध्यवसाय के कारण अन्त में विजयी

हुई। नगर और दुर्ग पर उसका अधिकार हुआ; पटना की मुग़ल-राज्यशक्ति सदैव के लिए विलुप्त हो गई। आक्रमण का समाचार पाकर मीरक़ासिम ने अपने भतीजे मीरअबूअलीखाँ एवं बख़्शी रोशनअलीखाँ को अश्वारोही सेना के साथ पटना जाने का आदेश दिया था। किन्तु हुआ वही, जो होना था वे देर से पहुँचे। पटना के समीप पहुँचने पर उन्हें मालूम हुआ कि दुर्ग और नगर पर अंग्रेज़ी झण्डा फहरा रहा है!

अंग्रेज़ों के यात्रा-पथ में कटवा, मुर्शिदाबाद, गिरिया, उधवा-नाला, मुँगेर एवं पटना इतने स्थानों पर मीरक़ासिम ने जो रोकथाम की थी, उन सबको पार करके जब अंग्रेज़ पटना तक पहुँच गये, तब मीरक़ासिम को खड़ा होने का स्थान नहीं रह गया। तब भी उनके शिविर में तीस हज़ार रक्षक सेना वर्तमान थी; तब समरू का दल एवं मुगल अश्वारोही दल उनकी आज्ञा पालन करने को प्रस्तुत थे; किन्तु सेनापति या सैनिक किसी में पहले का-सा उत्साह नहीं रह गया था। बार-बार हार कर वे हताश हो गये थे। सेना में बाहु-बल की ऐसी अवसन्नता एवं निराशा देख मीरक़ासिम देश छोड़ने को बाध्य हुए। पहले उन्होंने रक्षा के लिए महिलाओं को रोहतासगढ़ भेजा, किन्तु पीछे वहाँ से भी उन्हें हट जाना पड़ा। अन्त में स्वयं ससैन्य देश-त्याग करने को बाध्य होना पड़ा!

इन सब घटनाओं की आलोचना करते समय बाज़-बाज़ इतिहास-लेखकों ने लिखा है—"बार-बार पराजित होने के कारण मीरक़ासिम स्वयं भी हताश हो गये थे।"१ किन्तु यह बात ठीक

1 *Meer Kasim Khan, overcome by this continued series of disasters, gave himself*

नहीं मालूम पड़ती । मीरक़ासिम ने कभी यह नहीं सोचा कि अंग्रेजों ने हमें बाहु-बल से हराया है । प्रत्येक युद्ध में आत्मरक्षा का उपयुक्त उपाय करके उन्होंने सेना एकत्र की थी; बाहु-बल की दृष्टि से अपनी सेना को सुदृढ़ बनाने में उन्होंने कहीं भी त्रुटि नहीं की थी । गिरिया, उधवानाला, मुँगेर, पटना, सर्वत्र नवाबी सेना का अगला भाग व्यवस्था-पूर्वक सुरक्षित किया गया था; यथेष्ट गोला-बारूद एवं रसद का संग्रह हुआ था; एक दल की सहायता के लिए दूसरा दल शस्त्रास्त्र से सुसज्जित हो थोड़ी ही दूर पर प्रतीक्षा किया करता था । इन सब उपायों के रहते हुए भी अंग्रेज़ विजयी हुए। किन्तु क्या इस विजय का श्रेय उनके बाहु-बल को है ? मीर-क़ासिम ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया । उन्होंने अंग्रेज़ों को जो अन्तिम पत्र लिखा था, उससे भी यही ध्वनि निकलती है । सत्य हो या झूठ, पर मीरक़ासिम यह भली-भाँति समझ गये थे कि 'सिराज के समय में जो घटित हुआ था, वही आज भी घट रहा है ! वही अंग्रेज़ वणिक, वही मीरजाफ़र, वही जगत्सेठ, राजव-ल्लभ एवं कृष्णचन्द्र मिलकर उसी प्रकार का कुटिल षड्यंत्र कर रहे हैं ।' यही जानकर ज्ञान-शून्य हो मीरक़ासिम ने हत्याकाण्ड कर डाला ! वह अधीर हो उठे थे । जब सर्वत्र उसी कौशल से अपने को पराजित होते देखा, तब निराश होकर उन्होंने देश-त्याग किया और अवध में आश्रय ग्रहण करने का निश्चय किया । पटना की ओर यात्रा करते समय बीच में पकड़े जाने पर सिराज की जिस प्रकार भागू कहला कर अनुचित निन्दा हुई थी, मीरक़ासिम की

...up to the conviction that fortune had turned against him.--BROOME'S BENGAL ARMY, p. 401.

भी वही हालत थी। भागकर जान बचाने के लिए उन्होंने देश-त्याग नहीं किया वरन् देशोद्धार के लिए ही ऐसा करने को वह बाध्य हुए थे। देश में खड़ा होकर लड़ने का स्थान रहने पर वह कभी ऐसा न करते!

प्राण-भय से भागने पर अंग्रेज़ सेनापति मीरक़ासिम का पीछा करने के लिए व्यस्त न होते। उस समय युद्धाडम्बर को बढ़ाना अंग्रेज़ों के लिए असंभव हो उठा था। राज्य अराजक, ख़ज़ाना ख़ाली, महाराष्ट्र-सेना आक्रमणोन्मुख, वृद्ध मीरजाफ़र नाम मात्र के नवाब—ऐसी अवस्था में व्यर्थ युद्ध बढ़ाने की सम्भावना अंग्रेज़ों के लिए नहीं थी; महिलाओं को रोहतासगढ़ भेजने की बात सुनकर मेजर आदम ने सोचा कि कदाचित् अब मीरक़ासिम उसे ही अपनी राजधानी बनावें, अतः उनका पीछा करना आवश्यक हो उठा।

नवाबी सेना का एक बड़ा अंग मुँगेर इत्यादि स्थानों में विजय के पश्चात् अंग्रेज़ी सेना से मिल गया था, अतएव अंग्रेज़ों को मीरक़ासिम की रहन-सहन और गति-विधि अनुमान करने में बहुत सुविधा हो गई थी। मीरक़ासिम के सहसा रोहतासगढ़ त्याग करने पर अंग्रेज़ी सेना उनको न पा सकी। इच्छा का अभाव नहीं था, चेष्टा का भी अभाव नहीं था; किन्तु सामर्थ्य के अभाव से ही अंग्रेज़ सेनापति मीरक़ासिम की गति न रोक सके। १७६३ ई० की छठी नवम्बर को पटना का क़िला अंग्रेज़ों के हाथ आया। टूटे प्राचीर की मरम्मत कराने, दुर्ग-रक्षा के लिए सेना को यथास्थान रखने एवं उनके रसद इत्यादि की व्यवस्था करने में विलम्ब हो गया। तेरह नवम्बर को अंग्रेज़ी सेना ने बाँकीपुर

से रोहतासगढ़ की ओर प्रस्थान किया। उन्नीस नवम्बर को दाऊदनगर के पास पहुँचकर मालूम हुआ कि मीरक़ासिम ने महिलाओं को धन-रत्नादि के साथ दूसरी जगह भेज दिया है। कप्तान स्मिथ मीरक़ासिम को बन्दी करने की आशा से तुरन्त कर्मनाशा की ओर चले; किन्तु सरसराम तक जाने पर कप्तान साहब को हताश होकर यह संकल्प छोड़ देने को बाध्य होना पड़ा।

बार-बार असफल होकर मीरक़ासिम भली-भाँति समझ गये कि जिनके बाहुबल के भरोसे स्वाधीनता की रक्षा का मैंने आयोजन किया था, उनमें कोई स्वाधीन शासन की रक्षा के लिए लालायित नहीं है। उनमें कोई-कोई तो खुल्लम-खुल्ला विश्वासघात एवं देश-द्रोह कर रहे थे और अधिकांश स्वार्थ से अन्धे हो अंग्रेजों की कल्याण कामना में दत्तचित्त थे। जिन्होंने वीरों की भाँति गौरव-पूर्वक मीरक़ासिम के इस महान् यज्ञ में हाथ बटाया था, उनमें अधिकांश मर चुके थे और जो बच गये थे, वे निराशा से शिथिल हो रहे थे। ऐसी अवस्था में बिहार में रहकर सिराजुद्दौला की भाँति व्यर्थ प्राण गँवाने की संभावना थी। तब क्या मुसलमान शासन की रक्षा नहीं हो सकेगी ? इस प्रश्न पर विचार करके मीरक़ासिम एकदम हताश नहीं हुए थे, क्योंकि उस समय भी दिल्ली का नाम विलुप्त नहीं हुआ था; उस समय भी बादशाह के नाम से मुसलमानों के हृदय उत्साह से भर जाते थे; उस समय भी अवध के वज़ीर मुसलमान-शासन की आशा की भाँति अपने राज्य की स्वतंत्रता बनाये हुए थे।

वज़ीर (अवध के नवाब पीछे बादशाह दिल्लीश्वर के वज़ीर कहलाते थे) की शरण में जाकर उनके सहयोग से बादशाह

की सहायता ले स्वदेशी शासन बंगाल में पुनः स्थापित करने की संभावना से आशान्वित होकर मीरक़ासिम ने बहुमूल्य उपहार के साथ अवधेश की सेवा में दूत भेजा। अवध के नवाब शाह शुजाउद्दौला वीर कहलाकर प्रसिद्ध थे, तब क्या वे वीर की मर्य्यादा को ठुकरा देंगे? वीर होते हुए भी शुजाउद्दौला स्वयं दिल्ली की मुसलमान राजशक्ति चूर कर अवध की शक्ति बढ़ाने को व्याकुल थे। इस संघर्ष से मुसलमान शक्ति में जो शिथिलता आगई थी, उसकी ओर मीरक़ासिम ने कुछ ध्यान नहीं दिया था। जिस बादशाह ने अंग्रेज़ों के शिविर में आतिथ्य ग्रहण करके अंग्रेज़ों को बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी का सनद देने का प्रस्ताव किया था वह इस समय उनके विरुद्ध खड़ा होने का साहस कर सकेगा, यह बात मीरक़ासिम के दिमाग़ में नहीं आई थी। नदी की प्रखर धारा में बहते हुए असहाय मनुष्य की नाईं उन्होंने तृण के टुकड़े को ही प्रबल आश्रय समझ लिया। शुजाउद्दौला के व्यवहार से उनकी आशा और प्रबल हो उठी।
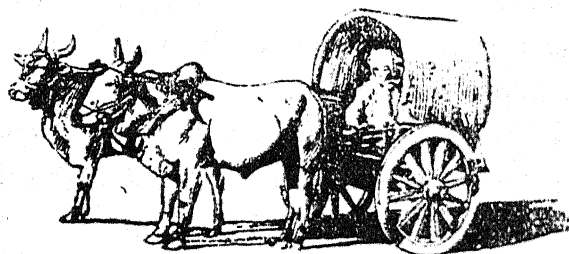
मित्र-लाभ

Meer Kasim Khan received message from Shoojah-oo-dowla, with an invitation to enter his territory, a promise of protection and support, and a copy of the Koran, in the fly-leaves of which this promise and his safe passport written with Shooja-oo-dowla's own hand. —*Broome's Bengal Army.*

कर्मनाशा के किनारे पहुँचने पर मीरकासिम को शुजाउद्दौला का उत्तर मिला। अवधेश ने कुरान के साथ ही उसके आवरण पृष्ठों पर अपने हाथ से आश्रय एवं सहायता

की बात लिखी थी एवं स्नेह-पूर्वक धर्म-बन्धु कहकर सम्बोधन किया था। इस पत्र से आशान्वित हो मीरक़ासिम सपरिवार नदी पार करने को तैयार हुए। साथियों ने उन्हें इस चेष्टा से विरत करने की बहुत चेष्टा की, पर कोई फल न हुआ। कोई मुसलमान कुरान हाथ में लेकर मिथ्या प्रतिज्ञा द्वारा किसी को (और विशेषतः अपने धर्म-बन्धु को) धोखा दे सकता है, इसका विश्वास न करके बालक सिराजुद्दौला अपमानित हुआ था; मीर-क़ासिम का भी शुजाउद्दौला के प्रतिज्ञापत्र के कारण वही हाल हुआ। वह साथियों की बात पर ध्यान न देकर तुरन्त नदी पार करके सपरिवार बनारस पहुँचे। काशी-नरेश बलवन्तसिंह अवधेश के प्रधान सामन्त थे। उन्होंने मीरक़ासिम का आदर-अभ्यर्थना करने में कोई त्रुटि न की।

उस समय भारत-भर में स्वार्थ-चिन्ता ही प्रबल हो उठी थी। मीरक़ासिम बहुत धन-रत्न लेकर पटना से भागे थे। यदि उनके साथ सुशिक्षित सैनिकों का देह-रक्षक दल न होता तो उनके नौकर उनका सर्वस्व लूट लेते। लूट का अवसर पाने के उद्देश्य से सभी ने मीरक़ासिम को अनेक प्रकार की राय दी थी। इस प्रकार के स्वार्थमय परामर्श का अर्थ समझ कर ही उन्होंने साथियों की बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने भली-भाँति सोचकर देखा था कि शुजाउद्दौला कभी प्रतारणा नहीं करेंगे। इसीलिए मित्र-लाभ से प्रसन्न हो उन्होंने अवध की यात्रा की।

मेजर आदम यह समाचार सुनकर कुछ हताश हुए। एका-एक अवध पर आक्रमण करने का साहस न करके दुर्गति नदी के किनारे छावनी डाल उन्होंने शुजाउद्दौला को लिख भेजा—

"मीरजाफ़र ही बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के असली नवाब हैं; मीरक़ासिम राज-विद्रोही एवं अंग्रेज़-हत्याकाण्ड के अपराधी हैं; उन्हें आश्रय देने पर आपके साथ हमारा कलह होगा।" किन्तु शुजाउद्दौला ने अंग्रेज सेनापति का पत्र रद्दी की टोकरी में डाल दिया।

इस घटना के बाद मेजर आदम अधिक दिन जीवित न रहे। सर्वदा सैनिक कार्रवाइयों में लगे रहने के कारण उनका स्वास्थ्य नष्ट हो गया था। फिर जब उन्होंने देखा कि अवध के नवाब पर कोरी धमकी का कुछ असर नहीं हो सकता, तो लौट पड़े। पटना एवं मुंगेर होते हुए कलकत्ता पहुँचने पर थोड़े ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। अंग्रेजों में हाहाकार मच गया। जिस वीर ने अंग्रेजों की शक्ति को सुदृढ़ करके सर्वत्र गौरव-लाभ किया था, वह सदैव के लिए संसार से चला गया।

मीरक़ासिम ने सदल-बल अवधेश का आश्रय पाकर इलाहाबाद में छावनी डाली। बादशाह (दिल्लीश्वर) उस समय शुजाउद्दौला का आश्रय लेकर लखनऊ में रहते थे। शुजाउद्दौला ही उस समय सब कुछ हो रहे थे। स्वयं बादशाह ने कृपा-भिखारी होकर जिसका आतिथ्य स्वीकार किया था, उसकी मर्य्यादा का सर्वत्र विजयी होना स्वाभाविक ही था। रुहेलों ने बादशाह को आश्वासन दे ही रक्खा था; शुजाउद्दौला ने भी उन्हें आश्रय-दान दिया; किन्तु बुन्देलखण्ड के राजा किसी की अधीनता स्वीकार करने को तैयार नहीं हुए। उनको दबाये बिना बादशाह के लिए सिंहासन पाने की कोई आशा नहीं थी। शुजाउद्दौला के प्रधान मंत्री बेणीबहादुर पर बुन्देलों को दबाने का भार पड़ा। इसी

समय मीरक़ासिम ससैन्य इलाहाबाद में छावनी डालकर मित्र-दर्शन की आशा से यथायोग्य तैयारी करने लगे।

शुजाउद्दौला के इलाहाबाद पहुँचकर मीरक़ासिम के शिविर में पदार्पण करने का अभिप्राय जताते ही तैयारी ज़ोर-शोर से शुरू हो गई। काम की हुई सुनहली किनख़ावों से सुदीर्घ मण्डप बनाकर उसमें शुजाउद्दौला की अभ्यर्थना के लिए सिंहासन रक्खा गया। सिंहासन के बगल में मीरक़ासिम के पात्र-मित्र-गण समुचित वेश धारणकर अवधेश के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। पट-मण्डप के दरवाज़े से लेकर बहुत दूर तक मीरक़ासिम के सुशिक्षित सैनिक सैनिक वेश-भूषा एवं शस्त्रास्त्र से सज्जित होकर दोनों ओर क़तार से खड़े हुए। उस पथ से सेना की जय-ध्वनि सुनते हुए दस हज़ार अश्वारोही सैनिकों के साथ वीरवर शुजाउद्दौला ने मण्डप में प्रवेश किया। उनके सिंहासनासीन होने पर मीरक़ासिम ने उन्हें अनेक बहु-मूल्य रत्नादि भेंट किये। दोनों ओर से शिष्टाचार-प्रदर्शन में त्रुटि नहीं हुई। बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा के अन्तिम स्वाधीन नवाब के वैभव से विमुग्ध हो शुजाउद्दौला ने सबके सामने उन्हें धर्म-बन्धु कहकर आलिंगन किया। मीरक़ासिम के मन में राज्योद्धार की आशा प्रबल हो उठी। बातचीत के बाद दोनों नवाब एक सुसज्जित हाथी पर सवार हो बादशाह के शिविर में गये एवं यथोचित आदर-प्रदर्शन एवं उपहारादि से दिल्लीश्वर की मर्यादा की रक्षा की। आर्य्यावर्त्त की इन तीन मुसलमान शक्तियों के सम्मिलन की बात सुनकर अंग्रेजों की चिन्ता बढ़ गई।

इस समय अंग्रेज़ों का अदृष्ट-गगन मेघाच्छन्न हो रहा था।

मेजर आदम की मृत्यु के पश्चात् ही अंग्रेजी सेना में विद्रोह फैल गया। बिहार-विजय समाप्त होते ही सेना को पुरस्कृत करने का वचन मीरजाफ़र ने दिया था। बिहार-विजय समाप्त हो गया, मीरक़ासिम देश छोड़ अवध भाग गये, बंगाल-बिहार-उड़ीसा सर्वत्र मीरजाफ़र के नवाब होने की घोषणा कर दी गई, तथापि सेना को वह पुरस्कार न मिला। इससे रुष्ट होकर पहले गोरों ने, फिर पीछे 'काले सिपाहियों' ने विद्रोह की घोषणा की। यही पहला सिपाही-विद्रोह था। इसे दबाने के लिए मीरजाफ़र और अंग्रेज सब लग गये। जब पुरस्कार देने के बाद किसी प्रकार विद्रोह शान्त हुआ, तब भी अंग्रेजी सेना पर सेनानायकों का वह पहला विश्वास नहीं रह गया। उन्होंने सेना को बाँटकर विभिन्न स्थानों पर भेज दिया, ताकि उनके आपस में मिलने की सम्भावना न रहे। इन सैनिकों को अपनी ओर मिलाने के लिए मीरक़ासिम के गुप्तचर अंग्रेजी शिविर में लुक-छिपकर पहुँचने लगे। आहट लगने पर सेनानायकों की चिन्ता और बढ़ गई। इस समय मीर-जाफ़र के अतिरिक्त अंग्रेजों का और कोई अनन्य-बन्धु नहीं था। जिस विद्या के लिए मीरजाफ़र इतिहास में विख्यात हैं, अंग्रेजों की रक्षा के लिए उसी विद्या से काम लेने का निश्चय हुआ।

मीरजाफ़र का नाम स्वदेश-द्रोह के कलंक से सदैव के लिए कलंकित हो गया है, इसीलिए उनका मंत्रणा-कौशल हम आज भूल गये हैं; किन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो कूट-प्रयोग में वह सिद्ध-हस्त थे। उनके मंत्रणादाता महाराज नन्दकुमार इसीके लिए इतिहास में प्रसिद्ध हैं। इस बार भी कौशल-प्रयोग में त्रुटि न हुई। जो उपाय किया गया, उसे उस समय की स्थिति को

देखने एवं देश-काल का विचार करने पर अन्वर्थ कहा जा सकता है। मीरजाफ़र ने गुप्त रूप से शुजाउद्दौला के पास दूत भेजा; मीर शम्सुद्दीन नामक गुप्तचर के द्वारा दोनों नवाबों में पत्र-व्यवहार आरम्भ हुआ। इससे वेणीबहादुर ने ईर्ष्यान्वित हो बादशाह के दरबार में अनेक चालें चलकर उन्हें मीरजाफ़र के पक्ष में मिला लिया। इधर मीरक़ासिम राज्य-भ्रष्ट; उधर मीरजाफ़र राज्य-लोभ से उत्साहित; मीरक़ासिम अकेले एवं मीरजाफ़र अंग्रेज़ों की सहायता से बलवान! ऐसी अवस्था में मीरक़ासिम को छोड़ मीरजाफ़र की ही ओर खड़ा होने से दिल्लीश्वर को पुनः सिंहासन पाने की सम्भावना थी। इन सब प्रलोभनों से लुब्ध होकर एक सनद एवं खिलअत के साथ बादशाह ने राजा शिताबराय को मीरजाफ़र के पास भेजा। अंग्रेज़ों की सहायता से मीरजाफ़र ने सभी जगह जो विजय पाई थी, उसपर दिल्लीश्वर ने इस पत्र में हर्ष प्रकट किया था। उधर यह सब हो रहा था और इधर मीरक़ासिम के साथ पहले की ही भाँति शिष्टाचार चल रहा था। मित्र पाकर इस प्रकार अपमानित होने पर भी मीरक़ासिम ने राजनीति से काम लेना आरम्भ किया। वह अकातर भाव से धन-व्यय करके दरबारियों एवं सरदारों को मिलाने लगे। मीरजाफ़र की सिर्फ़ बात थी और मीरक़ासिम की सुवर्ण-मुद्रा;— उमरावगण बात पर लुब्ध होकर भी सुवर्ण-मुद्रा की मर्यादा की रक्षा करने में उपेक्षा न दिखा सके![१]

1 Thus the Emperor and the Nawab Vazier were at the same time in communication with, and pledged to both the opposing parties and it appeared doubtful for sometime which side they would finally espouse,--a circumstance that compelled with the earnest entreaties of Meer Jaffier Khan, who was very sanguine in his expectations on this subject had so long retained the English inactive.--BROOME'S BENGAL ARMY, P. 427.

इस प्रकार बादशाह के दरबार में मीरक़ासिम का पक्ष प्रबल हो उठा। इस प्रकार के विपुल अर्थ-व्यय से पास का खज़ाना शीघ्र खाली हो जायगा, इस विचार को उन्होंने ज़रा भी प्रधानता न दी। जो कोई कुछ कहता, आशा से उत्फुल्ल मीरक़ासिम वही मान लेते। पीछे स्थिर हुआ, बुन्देलखण्ड के पराजित हुए बिना बादशाह या अवधेश किसी का मीरक़ासिम के राज्योद्धार के लिए अग्रसर होना असंभव है, क्योंकि अवसर पाते ही बुन्देलखण्ड के राजा अवध पर चढ़ाई कर सकते हैं। पहले इसकी व्यवस्था किये बिना मीरक़ासिम को सहायता देना असंभव है।

इससे देर होने की संभावना थी, फिर वेणीबहादुर तो उधर मिला ही था, वह क्यों बुन्देलखण्ड शीघ्र विजय करने की चेष्टा करता? मीरक़ासिम ने विचार करके स्वयं बुन्देलखण्ड पर आक्रमण करना निश्चय किया। उनकी इच्छा जानकर बादशाह ने उन्हें ही सेनापति का पद दिया। सिंहासन पाने से पूर्व मीरक़ासिम हाथ में तलवार लेकर सेना-संचालन करते थे; सिंहासन-च्युत होकर वह फिर हाथ में शस्त्र ले सेना-संचालन का कार्य करने को अग्रसर हुए। अंग्रेजों के इतिहास में रणभीरु शब्द से उल्लिखित होने पर भी निष्पक्ष विचारक जानते हैं कि मीरक़ासिम रणभीरु नहीं थे। बहुत थोड़े समय में बुन्देलखण्ड जीतकर वह बादशाह के पास पहुँचे।

अब टालमटोल करने का कोई उपाय न रह गया। मीरक़ासिम के साथ सन्धि करके शुजाउद्दौला बिहार-विजय की तैयारी करने लगे। सन्धि की मुख्य शर्तें ये थीं—गंगा पार कर बिहार में

वज़ीर की सेना के पदार्पण करने के बाद मीरक़ासिम ग्यारह लाख रुपये प्रतिमास 'तनख़ाह' देंगे, स्वराज्य की प्रतिष्ठा के बाद बादशाह को उचित राज-कर देंगे, एवं वज़ीर साहब (अवधेश) को, आवश्यकता पड़ने पर सेना से सहायता करेंगे । इस सन्धि के बाद नवाबी सेना काशी की ओर बढ़ने लगी ।
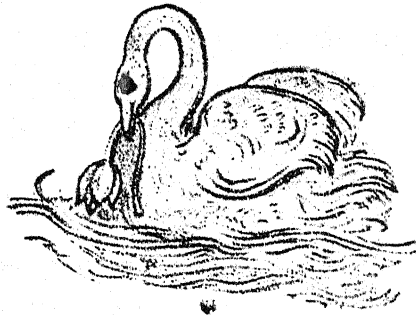
विजय-यात्रा

The Moguls, who are the only good horsemen in the country, can never be brought to submit to the illtreatment they receive from gentlemen wholly unacquainted with their language and customs.

—*Major Carnac.*

मेजर आदम के पश्चात् मेजर कार्नाक प्रधान सेनापति हुए। उन्होंने पद पाते ही अंग्रेजी सेना को सुसंस्कृत करना शुरू किया। अश्वारोही मुगलसेना ही उस समय अंग्रेजी सेना का प्रधान अंग थी। अंग्रेजी सेनानायक अपने स्वाभाविक औद्धत्य के कारण प्रायः इसका अपमान किया करते थे। वह भी ऐसे कृत्यों का उत्तर देने में कमी न करती थी। इससे अंग्रेजी-

शिविर में सदैव कलह मचा रहता था। इस झगड़े को दूर करने के उद्देश्य से मेजर कार्नाक ने मीर मेंहदीखाँ को मुगल अश्वारोही दल का नायक बनाने का विचार किया।

मीर मेंहदीखाँ पटना के शासक थे। उन्होंने मीरक़ासिम का नमक खाकर भी उनके विरुद्ध मीरजाफ़र का पक्ष ग्रहण किया था। कलकत्ता के अंग्रेज दरबार में मीर मेंहदी की नियुक्ति का प्रस्ताव करने पर इस घटना का हवाला देकर लोगों ने उनकी नियुक्ति का विरोध किया, जिससे मजबूर होकर मेजर साहब को यह विचार त्याग देना पड़ा; परन्तु उस समय अंग्रेज-सेनानायकों के उद्धत स्वभाव के विरुद्ध उन्होंने जो कुछ लिखा था, वह इतिहास में आज भी ज्यों का त्यों अंकित है।

बक्सर के पास छावनी डालकर आक्रमण की प्रतीक्षा में मेजर साहब रसद एकत्र करने लगे; उन्हें रसद का अभाव ही सबसे अधिक चिन्ताजनक जान पड़ा। काशिराज बलवन्तसिंह नवाबी सेना के लिए रसद संग्रह कर चुके थे, अतएव अंग्रेज सेनापति को फिर से रसद संग्रह करने में कठिनता हुई। दुर्भिक्ष की आशंका से खाद्य-सामग्री महँगी हो गई। मीरक़ासिम के अनुचरों ने मूल्य बढ़ाने में त्रुटि नहीं की; महाराज नन्दकुमार ने ज्यादा लाभ के लोभ से अंग्रेजी सेना के लिए खाद्य-द्रव्य बहुत महँगा कर दिया।[१]

ऐसी अवस्था में सहसा आगे बढ़कर युद्ध-घोषणा करने का उपाय नहीं था। नवाबी सेना आगे बढ़ने लगी; अंग्रेजी-सेना

1 *There appears good reason to believe that Nand Kumar the infamous but able minister of Meer Jaffer Khan was deeply concerned in creating and profitting by the scarcity.*—BENGAL ARMY, P. 429.

शिविर में ही दिन बिताने लगी। कलकत्ता का अंग्रेज़-दरबार अवधेश का विश्वास नहीं करता था। मीरक़ासिम के राज्योद्धार के लिए वह अंग्रेज़ों से कलह करेंगे, ऐसा विश्वास करके उसने लिख भेजा था—"वजीर साहब यदि सचमुच समर-लोलुप हो गये हों तो उनके बिहार में पैर रखने के पहले ही उनके राज्य पर आक्रमण करना उचित है।"

लाचार होकर मेजर साहब को युद्ध का भार लेना पड़ा। सेनापति की सभा में उपस्थित अनेक व्यक्तियों ने बिना रसद के शत्रु के राज्य पर आक्रमण करने का विरोध किया। वे पटना की ओर लौटने के लिए व्याकुल हो उठे। इन सब कारणों से अप्रैल के आरम्भ में ही अंग्रेज़ी सेना पटना की ओर चल पड़ी। इससे सिपाही लोग सेनापति कार्नाक को रणभीरु कहकर उसका उपहास करने लगे। पटना के पास छावनी डालने के पश्चात् एक दिन एक घटना से मेजर साहब को सिपाहियों के सामने बहुत लज्जित होना पड़ा। उस दिन सुबह को वह खीमे में बैठकर ताश खेल रहे थे। ऐसे ही समय अपने खीमे के सामने शत्रु-सेना को देख वह भागकर सिपाहियों के पट-मण्डप में पहुँचे; उनकी ऐसी अवस्था देख सिपाही अपनी हँसी न रोक सके। इस घटना से मेजर को बहुत उपेक्षा सहनी पड़ी। उन्हें जासूसों की नियुक्ति के लिए हर महीने काफी धन मिलता था, तब भी शत्रु-सेना इस प्रकार एकाएक उनके खीमे के सामने कैसे आ गई? इस प्रश्न पर विचार करके बहुतों ने मन में स्थिर किया कि सेनापति गुप्त-चरों की तनख्वाह स्वयं ही उड़ा लेते हैं।

युद्ध के प्रथम प्रयास में ही अंग्रेज़ सेनापति के पटना की

ओर लौटने के कारण मीरक़ासिम की सेना को आगे बढ़ने का अवसर मिला। उसने पटना तक अग्रसर होकर अंग्रेज़ शिविर को घेर लिया। पटना के पश्चिम का समस्त देश बिना विशेष प्रयत्न के ही मीरक़ासिम के हाथ आ गया।

प्रायः एक महीने तक नवाबी-सेना अंग्रेज़ी शिविर को घेरे पड़ी रही। इतने समय में कोई दल किसी को पराजित नहीं कर सका। एक दिन शुजाउद्दौला ने अंग्रेज़ी शिविर पर आक्रमण किया। वह दिन बड़ा भयंकर था। सवेरे से लेकर शाम तक रण-कोलाहल शान्त नहीं हुआ। दोनों ही ओर के वीरों ने रण-कौशल की पराकाष्ठा कर दी। उस दिन सिपाही-सेना के प्रबल प्रताप से अंग्रेज़ों की लाज रह गई। उस दिन शुजाउद्दौला ने जैसी वीरता के साथ बार-बार आक्रमण किया था, मीरक़ासिम भी यदि उसी प्रकार पराक्रम-पूर्वक आक्रमण में सहायता करते तो उसी दिन पटना पर उनका अधिकार हो जाता एवं बिहार से अंग्रेज़ी शक्ति का नाश हो जाता, किन्तु घटना-चक्र से सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया। पीछे बरसात आने पर मीरक़ासिम को बक्सर आकर छावनी डालनी पड़ी।❀

धन ही मीरक़ासिम का प्रधान बल है, इसे समझकर अंग्रेज़ों ने अनेक प्रकार से उन्हें अर्थहीन करने की चेष्टा की थी। दिल्लीश्वर अर्थाभाव से तंग थे। धन का पता पाने पर वह छल-बल-

❀ इस युद्ध का विवरण लिखकर मेजर कार्नाक ने जो पत्र कलकत्ता के अंग्रेज़-दरबार को भेजा था, उसका एक अंश यहाँ उद्धृत करते हैं—

All the principal officers distinguished themselves in their respective stations, and can not say too much of the good behaviour of the army in general and particularly of the Sepahis, who sustained the front of the attack.

कौशल किसी प्रकार से मीरक़ासिम से धन ले सकेंगे, इस आशा से अंग्रेज़ गवर्नर ने पहले ही दिल्लीश्वर को एक पत्र लिखा था [1]। किन्तु इससे मीरक़ासिम का कोई अनिष्ट न हुआ वरन् दिल्लीश्वर ने संधि-स्थापन के लिए ही यथासाध्य यत्न किया। किन्तु समरू और मीरक़ासिम को पाये बिना अंग्रेज़ों ने समझौता करने से इन्कार किया। इसीलिए वह प्रयत्न विफल हो गया, क्योंकि दिल्लीश्वर या शुजाउद्दौला किसी ने शरणागत का त्याग करना उचित नहीं समझा।

शुजाउद्दौला के पटना छोड़ने पर भी अंग्रेजी सेना ने उनका पीछा न किया वरन् डर कर मेजर कार्नाक कलकत्ता-दरबार की आज्ञा का पालन करने में इधर-उधर करने लगे। एक तो वर्षा की वजह से सेना कम हो गई थी, दूसरे सेना में अब तक विद्रोह का कुछ भाव वर्तमान था, अतएव मेजर साहब ने आगे बढ़ने में असम्मति प्रकाश की; किन्तु कलकत्ता के अंग्रेज़-दरबार ने उनकी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। बार-बार आगे बढ़ने का आदेश वहाँ से आने लगा। अन्त में एकदम लाचार होकर मेजर साहब ने विचारार्थ सभा बुलाई और अधिकांश सज्जनों की सम्मति से युद्ध-यात्रा की आज्ञा देने को बाध्य हुए। किन्तु उन्हें युद्ध में भाग न लेना पड़ा। वह शीघ्र ही पद-त्याग करके मेजर मुनरो को कार्य-भार दे कलकत्ता चले गये।

1 May it please your Majesty, Meer Kasim has carried away with him the money due to the Imperial Court, which was collected in the Treasury together with all the riches of the country. I hope and trust that your Majesty will take from him the balances due to the Court. From the time of Meer Kasim's expulsion Meer Jaffer Khan has been heartily ready to obey your commands, and we Englismen are strict allies to him and obedient servants of your Majesty, but Mahamud Jaffer Khan is exhausted by the

मेजर मुनरो ने जिस समय कार्य-भार ग्रहण किया, उस समय शुजाउद्दौला बक्सर में छावनी डालकर बरसात बिताने की तैयारी कर रहे थे। उस समय उनपर आक्रमण करने का कोई उपाय नहीं था। एक तो बरसात के दिन, दूसरे खाद्य-द्रव्य का भी अभाव था। फिर सेना में विद्रोही भावनायें प्रबल हो रही थीं। गोरे-काले सभी असन्तुष्ट थे। सिपाहियों का असन्तोष दिन-दिन बढ़ रहा था; क्योंकि युद्ध के समय तो उन्हें सबके आगे डटकर प्राण गँवाना पड़ता था, पर पुरस्कार या बँटवारे के समय उनके साथ उचित व्यवहार नहीं किया जाता था। मेजर मुनरो ने विद्रोह का मूल कारण दूर करके सुशिक्षा और सुशासन से सेना को अधिक उपयोगी बनाने के लिए पटना में रहकर ही बरसात बिताना उचित समझा।

इधर नवाब के शिविर में भी वर्षा-काल सुविधाजनक नहीं हुआ। बरसात के कारण युद्ध बन्द रहने पर भी सेना में कलह बढ़ने लगा। एक छोटे शिविर में तीन पराक्रान्त स्वाधीन नरपतियों के दीर्घकालिक निवास को दुखकर बनाने वाले विघ्नों की कमी नहीं थी। कुचक्री व्यक्ति छोटी-छोटी बातों को लेकर आपस में सदैव कलह किया करते थे। युद्ध-काल में यह गृह-कलह चुपचाप भीतर ही भीतर दृढ़ हो रहा था। वर्षा-काल में वही प्रबल वेग से ईर्षा-द्वेष की वर्षा करने लगा। एक खीमे से दूसरे में छोटी-छोटी बातें तिल से ताड़ होकर फैलने लगीं। पीछे एक दिन शुजाउद्दौला ने सुना कि मेरे उपकारों को भूलकर मीरक़ासिम ने स्वयं मेरी ही हत्या करने का विचार किया है! ऐसी झूठी बात पर कोई विश्वास

expenses of the present war, and the country is ruined by the violences and oppression of Meer Kasim--Letter from Governor to the King of Delhi

न करता, पर विश्वासघातक समरू से यह बात सुनकर शुजाउद्दौला मन ही मन मीरक़ासिम से एकदम असन्तुष्ट हो उठे । शाहआलम भी अधिक दिन से सैनिक छावनी में रहते-रहते अधीर हो गये थे । वह गुप्त रूप से अंग्रेज़-सेनापति के साथ संधि करने में प्रवृत्त हुए । मीरक़ासिम की आशा का इस प्रकार समूल उन्मूलन होने का उपक्रम हुआ । इन सब बातों का पता न पाने के कारण वह भावी सुख की आशा से सुख-पूर्वक बरसात काटने लगे । इसीलिए कहना पड़ता है कि भाग्य की शक्ति अजेय है ।

भाग्य-विपर्यय

As a last resource Meer Kasim Khan endeavoured to work upon the feeling of shame in the breast of Shooja-oo-dowlah, and assuming the garb of a *fakeer* he seated himself outside his tent with the few of his still faithful adherents clad in like manner.

—*The Bengal Army.*

किस उद्देश्य से शुजाउद्दौला ने मीरक़ासिम को धर्म-बन्धु कहकर स्नेह-पूर्वक आश्रय दिया था, वह अधिक दिन तक छिपा न रह सका। लाभ के लोभ से ही उन्होंने ऐसा किया था, यह धीरे-धीरे प्रकट होने लगा। पहले मनोमालि-

न्य, उसके बाद उपेक्षा और पीछे प्रकाश्यभाव से भर्त्सना का सूत्रपात हुआ। मीरक़ासिम ने सेना की तनख़ाह देने का वचन दिया था। जिस समय उन्होंने ऐसी शर्त की थी, उस समय उस-के पालन करने की शक्ति एवं संभावना थी; क्योंकि एक तो उस समय ख़ज़ाना खाली नहीं हुआ था, दूसरे पटना पर अधिकार होते ही बिहार प्रदेश का राजकर मिलने की आशा थी। पटना पर अधिकार न होने से वह आशा निर्मूल हो गई थी; बादशाह वज़ीर एवं उनके उमरावों को उपहार एवं समय-समय पर घूस देते रहने के कारण ख़ज़ाना खाली हो गया था। जो कुछ बचा था, उसे भी मीर सुलेमान नामक विश्वासघाती धन-रक्षक लेकर शुजाउद्दौला के ख़ीमे में चला गया। लाचार होकर मीरक़ासिम शुजाउद्दौला के निकट विचार-प्रार्थी हुए; किन्तु अपहृत धन-रत्नादि में से हिस्सा लेने के कारण उन्होंने विचार तो नहीं किया, उलटे तन-ख़ाह के रुपयों के लिए मीरक़ासिम की ही भर्त्सना करके उन्हें विदा कर दिया। मीरक़ासिम सम्मान्य शरणागत, अतिथि एवं धर्म-भ्राता थे; किन्तु स्वार्थान्ध हो शुजाउद्दौला ने इस बात का विचार न किया। अपने ख़ीमे को लौटने पर मीरक़ासिम ने फिर उसके भीतर प्रवेश न किया। अभिमान, मर्मवेदना, निराशा एवं विश्वासघात की दारुण-चोट से उनका हृदय टूट गया। वह अपने दस-पाँच सच्चे सेवकों एवं शुभचिन्तकों के साथ फ़क़ीरों के कपड़े पहन ख़ीमे के द्वार पर बैठ गये। जिसने देखा, उसीकी आँखों से आँसू निकल पड़े; सभी शुजाउद्दौला को धिक्कारने लगे। अन्त में स्वयं शुजाउद्दौला ने वहाँ जाकर मीरक़ासिम को वेश बदलने पर बाध्य किया। किन्तु अधिक दिन तक लाज बचाने

का उपाय नहीं था। धन-हीन सिंहासन-च्युत नाम-मात्र के नवाब के रूप में मीरक़ासिम शान्त न रह सके। ख़र्च में कमी करके वह धन का संग्रह करने लगे।

मीरक़ासिम समरू की सेना को विदा करने को तैयार हुए। आधुनिक प्रणाली से समर-शिक्षा पाने पर भारतीय यूरोपीय सैनिकों की समता कर सकते हैं या नहीं, इसकी परीक्षा करने के लिए मीरक़ासिम ने कितने यत्न, कितने व्यय से इस सेना को सुशिक्षित किया था, आज उसीको अर्थाभाव के कारण विदा करते हुए उनका हृदय फटने लगा; पर दुराचारी समरू इससे ज़रा भी विचलित न हुआ। वह पहले से ही छिपे-छिपे शुजाउद्दौला का शरणागत हो चुका था और मीरक़ासिम से विदा होने पर अस्त्र-शस्त्र के साथ उनके शिविर में आश्रय लेने की व्यवस्था कर चुका था। उसने अस्त्र-शस्त्र देना स्वीकार न किया वरन् उद्धत स्वर में बोल उठा—"देखते नहीं हो कि अस्त्र-शस्त्र तुम्हारे हाथ में शोभा नहीं पाते!" मीरक़ासिम ने सजल आँखें ऊपर उठा कर देखा, समरू की सेना शुजाउद्दौला के शिविर के समीप अपनी छावनी डाल रही है। एक पैदल सिपाही वा भेरी-वाहक ने भी उन्हें सलाम नहीं किया!

इसके बाद से भद्रता का सूक्ष्म आवरण नष्ट हो गया। शुजाउद्दौला के आदेश से समरू की सेना ने मीरक़ासिम के ख़ीमे को घेर लिया। हाहाकार मच गया, पर किसी ने इसपर कान न दिया। सब मिलकर मीरक़ासिम को बन्दी कर ले गये; ख़ीमा लूट लिया गया; बेगमों के वस्त्रों तक भी तस्करों के हाथ पहुँच गये। देखते ही मीरक़ासिम का सर्वस्व लुट गया। इस लूट-

खसोट में केवल एक व्यक्ति को छोड़ उनके अन्य अनुगत नौकरों ने भी विश्वासघात करने में कमी नहीं की। केवल एक आदमी शेख मुहम्मदअसूर ने स्वामि-भक्ति का परिचय दिया। वह कुछ धन-रत्नादि लेकर गुप्त-पथ से रुहेलखण्ड चला गया और मीर-क़ासिम के परिवार की व्यवस्था करके उनके छूटने की प्रतीक्षा करने लगा।

इधर शुजाउद्दौला बक्सर में ही नृत्य-गीत में दिन बिताने लगे। मेजर कार्नाक के व्यवहार से अंग्रेज़ी शक्ति की दुर्बलता का परिचय पाकर वह निश्चिन्त हो गये; अपनी रक्षा का कोई उपाय न किया। इस बात का पता पाते ही मेजर मुनरो ने युद्ध के लिए यात्रा की।

निकट पहुँचने पर मेजर साहब की गति रुक गई। नवाब की घुड़सवार-सेना के पराक्रम से अंग्रेज़ी-सेना घबरा उठी। आगे बढ़ना तो दूर रहा, पीछे लौटना भी दूभर हो गया। अंग्रेज़-सेना-नायकों ने घोड़ों को कुदाकर किसी प्रकार नाला पार कर प्राण बचाये। नालों को उलाँघने में अनभ्यस्त मुग़ल अश्वारोही उनका पीछा न कर सके। विजय के नशे में चूर हो जाने के कारण ही नवाब की सेना का सर्वनाश हुआ। लांछित होकर अंग्रेज़ी-सेना अधिक सतर्कता से आगे बढ़ने लगी। व्यूह रचकर युद्धोन्मुख-भाव से वह धीरे-धीरे बक्सर के समीप पहुँच गई। यदि उस दिन उस थकी सेना पर नवाब की सेना ने आक्रमण किया होता तो अंग्रेज़ों का सर्वनाश हो जाता। शुजाउद्दौला को ससैन्य आगे बढ़ते देखकर अंग्रेज़ी सेना में आतंक फैल गया, किन्तु उस दिन आक्रमण न करके शुजा के लौट जाने के कारण उसे विश्राम

करने का अवसर मिल गया। उस रात को अंग्रेजी-सेनानायकों को विश्राम करने का अवसर नहीं मिला; आपस में राय करते-करते ही सवेरा हो गया।

१७६४ ई० की २३ अक्तूबर को प्रातःकाल होते ही नवाब की सेना शिविर से बाहर निकलने लगी। उस दिन अंग्रेजी-सेना युद्ध के लिए तैयार नहीं थी, किन्तु सेनापति के आदेश से उसे तैयार होना पड़ा। पहले दोनों पक्षों ने दूर से बाढ़ दागकर युद्ध की घोषणा की; पीछे दोनों दल भिड़ गये। ऐसा जान पड़ता है, मानों शुजाउद्दौला विजय की आशा से फूल उठे थे। धन-रत्न एवं बेगमादि को शिविर में छोड़ उन्होंने निश्चिन्त भाव से युद्ध-क्षेत्र में पदार्पण किया था। न जाने क्या सोचकर मीरक़ासिम को मुक्ति दे दी। मीरक़ासिम के शिविर छोड़कर चले जाने के बाद ही युद्ध की घोषणा हुई। उस दिन मुग़ल-सेनानायकों ने वीरता का आदर्श उपस्थित कर दिया; अंग्रेज़-नायकों ने भी वीरता की पराकाष्ठा कर दी। अंग्रेजी सेना के विजयी होने की सम्भावना नहीं थी, किन्तु उसीकी विजय हुई। मुग़ल-सेनानायकों की मृत्यु हो जाने से सेना भाग खड़ी हुई; इस प्रकार अंग्रेजों के जय-लाभ का पथ सरल हो गया।

मेजर मुनरो ने युद्ध-क्षेत्र से ही इस विजय का समाचार कलकत्ता लिख भेजा; विस्तृत रिपोर्ट पीछे भेजी। इस रिपोर्ट को ही बक्सर-युद्ध का विशेष विवरण कहकर अंग्रेजों के सामरिक इतिहास में स्थान मिला। इस युद्ध में अंग्रेजों की ओर के हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने गोरों से अधिक वीरता का परिचय दिया था, किन्तु इतिहास में इस बात की चर्चा प्रायः नहीं-सी है। मेजर

तथा अवध की तिजारत देनी चाही। मेजर मुनरो ने उनकी रक्षा कि गोरी सेना के हतहतों की संख्या केवल १५१ थी; सिपाहियों में हताहतों की संख्या ६८५ थी। इसका प्रधान कारण यही था कि इस युद्ध में भाग लेने वाली सेना में ८५७ गोरे एवं ७०७२ सिपाही थे। सिपाहियों के ही बाहु-बल से इस युद्ध में अंग्रेज़ विजयी हुए. इसे अंग्रेज़ी इतिहास-लेखकों ने मुक्त-कण्ठ से स्वीकार नहीं किया है।

एक असावधानी के कारण ही शुजाउद्दौला की पराजय हुई। उन्होंने सब कुछ शिविर में रखकर युद्ध-क्षेत्र में सेना का संचालन किया था। दो-चार सेनानायकों के मरते ही उनकी सेना भागकर शिविर लूटने लगी। इससे प्रायः सभी को युद्ध छोड़ शिविर की ओर भागना पड़ा। नाला पार करके जो कुछ मिला उसे लेकर ही शुजाउद्दौला ने पुल तुड़वा दिया। उस समय तक जो नाला पार नहीं कर सके थे, उन्हें अंग्रेज़ी-सेना की संगीनों से घायल होकर प्राण त्यागने पड़े। युद्ध समाप्त होने के बाद एक सप्ताह तक घायलों की चिकित्सा की सुव्यवस्था न हो सकी; अंग्रेज़ों के आहत युद्ध-क्षेत्र में ही पड़े रहे। सेनापति रोज़ उन्हें देखकर अन्न-जल का इन्तज़ाम कर दिया करते थे, किन्तु चिकित्सा न होने से उनको पीड़ा असह्य होने लगी। अन्त में बड़ी मुश्किल से उनकी चिकित्सा की व्यवस्था हुई।

दिल्लीश्वर शाह आलम युद्ध-भूमि के पास ही छावनी डालकर निरपेक्ष दर्शक की भाँति युद्ध देख रहे थे। अंग्रेज़ों की विजय होते ही उन्होंने अपने को पूर्ण-रूप से अंग्रेज़ों का हिताकांक्षी घोषित किया। उन्होंने अंग्रेज़ों को बिहार-बंगाल एवं उड़ीसा की दीवानी

साहब की रिपोर्ट में हताहतों की संख्या देखने से विदित होता है का भार ग्रहण करके कलकत्ता समाचार भेजा। 'जिन तीन मुसलमान नरपतियों ने स्वदेशी-शासन को सुदृढ़ करने के लिए धर्म की शपथ करके हाथ मिलाया था, उसमें निरुपाय होकर मीरक़ासिम फ़क़ीर हो गये; शाहआलम ने अंग्रेजों के हाथ आत्म-समर्पण किया; एवं शुजाउद्दौला पराजित हो अपने राज्य को लौट गये। यह सब इतनी जल्दी स्वप्न की नाईं घटित हो गया!

मीरक़ासिम का क्या हुआ, इस करुण प्रश्न का विस्तृत उत्तर देने के लिए इतिहास में बहुत कम वर्णन मिलता है। शिविर से मुक्त होकर अधिक दूर जाने के पहले ही रण-क्षेत्र से भागी हुई नवाब-सेना चारों ओर फैल गई थी। शुजाउद्दौला ने दया करके मीरक़ासिम को एक हाथी दिया। हाथी और आरोही दोनों ही दीन-हीन वेश में थे। आरोही को शत्रु के हाथ समर्पित कर देने से एक लाख रुपये मिलने की आशा थी। भागते हुए सैनिकों ने इस उपाय से रुपया पैदा करने की चेष्टा में त्रुटि न की। चारों ओर दुर्भाग्य का ताण्डव देख मीरक़ासिम ने हाथी छोड़ सदर राह त्याग कर जंगल के रास्ते पैदल चलना आरम्भ किया। भूख, प्यास, थकावट एवं दुर्भाग्य की चोट से उनकी दशा ऐसी हो रही थी कि बंगाल, विहार एवं उड़ीसा के भूतपूर्व नवाब के रूप में पहचानने की सम्भावना नहीं थी। इसी से मीरक़ासिम की जीवन-रक्षा हुई। किन्तु जान बचने पर भी जीवन धारण करने की सुव्यवस्था नहीं हुई। बहुत क्लेश से किसी प्रकार रुहेलखण्ड पहुँचे। वहाँ कुछ दिन तक प्रभु-भक्त शेख मुहम्मदअसूर की चेष्टा से पेट में दाना पड़ता रहा। धीरे-धीरे सारा सामान समाप्त हो गया।

उनकी व्यथा से व्यथित होकर कुछ दिन तक वहाँ के नवाब नजफुद्दौला ने उन्हें वृत्ति दी थी। उसके बाद मीरक़ासिम का क्या हुआ, इसका किसी को पता नहीं चला।

१७७७ ई० की छठी जून को दिल्ली की सीमा पर एक टूटी कुटी के आँगन में एक अज्ञात पुरुष की मृत-देह धूल में लोट रही थी; उसे दफ़नाने की भी सामग्री न थी। कुटी में एक जीर्ण शाल पाकर नागरिकों ने उसे ही बेचकर समाधि-क्रिया की व्यवस्था की। जिस समय वह मृत-शरीर क़ब्र में रक्खा जाने लगा, उसी समय न जाने किसने अकस्मात् चीखकर बता दिया कि यही बंगाल के अन्तिम स्वाधीन नरपति मीरक़ासिम हैं!! वह आर्त्त-नाद भी तुरन्त आकाश में विलीन हो गया!

दीवानी सनद

At this happy time, our Royal Firman, indispensibly required obedience, is issued;—that whereas, in consideration of the attachment and servce of the high and mighty the noblest of cxalted noblтes, the chief of illustrious warriors, our faithful servants and sincere well-wishers, worthy of our Royal favours, the ENGLISH COMPANY, we have granted them the DEWANEE of the Provinces of Bengal Behar and Orissa from the beginning of Fussul Rubby of the Bengal year 1171.

—*The Sunnud.*

बक्सर-युद्ध के दूसरे दिन अंग्रेज-सेनापति मेजर मुनरो को शाहज़ादा शाहआलम का एक पत्र मिला था। यह पत्र ही कम्पनी बहादुर के असाधारण सौभाग्य-लाभ का मूल-

सूत्र कहा जाता है। इसमें शाहआलम ने लिखा था—"मुझे अंग्रेज़ों की विजय से बहुत प्रसन्नता हुई है; इतने दिन बाद मेरी मुक्ति का अवसर आया है। आज तक मैं वजीर शुजाउद्दौला के आश्रय में नजर-बन्द की भाँति दिन बिताता रहा हूँ। अब अंग्रेज कम्पनी को बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी का सनद देकर मैंने उसके आश्रय में जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया है।" १ तीनों नरपति मुसलमान शासन की रक्षा के लिए युद्ध-क्षेत्र में अग्रसर हुए थे, जिनमें मीरक़ासिम ने शुजाउद्दौला के उत्पीड़न से फ़क़ीरी ग्रहण कर ली, शुजाउद्दौला पराजित होकर भाग गये। ऐसी अवस्था में शाहआलम अंग्रेज़ों का आश्रय ग्रहण करने को लालायित हो उठे। इस प्रकार बंगाल-बिहार-उड़ीसा की दीवानी का सनद पाने से अंग्रेज़ों को भारतवर्ष में राज्य-विस्तार का अवसर मिल गया।

इसके पहले भी शाहआलम ने अंग्रेज़ों को दीवानी देने का आग्रह किया था। कर्नल क्लाइव इसके लिए तैयार थे, पर विलायत के डाइरेक्टरों को उस समय भी भारत की प्रकृत अराजकता की बात पर विश्वास न था; उनको आशंका थी कि शासन में हस्तक्षेप करने से कहीं व्यापार भी नष्ट न हो जाय। शाहआलम के पुनः यह प्रस्ताव उपस्थित करने पर मेजर मुनरो एकाएक इस-पर राय न दे सके। कलकत्ता के कोर्ट में बहस चलने लगी; शाहआलम ने अंग्रेज़ों के शिविर में आश्रय ग्रहण किया।

1 *On the day following the battle of Buxer, the Emperor Shah Allum wrote to the British Commander, congratulating him upon the victory, and representing that he himself had been hitherto a mere state-prisoner in the hands of Shooja-oo-dowlah, that he had at length been freed by this fortunate event, and was now only desirous to place himself once more under British protection.--BROOME'S BENGAL ARMY, P. 485.*

१७६४ ई० की १९ वीं नवम्बर को कलकत्ता-कोर्ट की सम्मति पाकर दूसरे ही दिन अंग्रेज-सेनापति ने दिल्लीश्वर के स्वागत का आयोजन किया। २४ तारीख़ को अंग्रेज़-सेनानायकों ने बादशाह के सम्मुख उपस्थित हो यथा-रीति प्रणाम कर 'नज़र' दी।[१] इसके बाद चुनार के क़िले पर आक्रमण करने की तैयारी आरम्भ हुई। शुजाउद्दौला के सेनापति मुहम्मद बशीरख़ाँ ने चुनार-दुर्ग की रक्षा का यथा-साध्य प्रबन्ध किया था। अंग्रेज़ी-सेना दुर्ग पर अधिकार न कर सकी। उसके सैकड़ों सैनिक मारे गये। अंग्रेज़ों ने बनारस के समीप जो शिविर स्थापित किया था, उसपर भी आक्रमण होने की आशंका थी; अतएव अंग्रेज़-सेनापति चुनार छोड़ने को बाध्य हुए और कलकत्ता-कोर्ट तथा शुजाउद्दौला दोनों में सन्धि करा देने को व्याकुल हो उठे।

सन्धि करने में शुजाउद्दौला को इन्कार नहीं था। वेणीबहादुर के साथ अंग्रेज़-सेनापति की बात-चीत चलने लगी। किन्तु, मीरक़ासिम एवं समरू को पकड़कर उपस्थित करने की बार-बार उत्तेजना देने के कारण शुजाउद्दौला सन्धि की बात स्वीकार न कर सके। उन्होंने रुहेलखण्ड के हाफ़िज़ रहमतख़ाँ से सन्धि करके उनके वीर रुहेले सिपाहियों को ले विजय की आकांक्षा से इलाहाबाद में छावनी डाल दी। रोहिलों के परामर्श से मराठी-सेना के नायक मल्हारराव होल्कर द्वारा सहायता ग्रहण करने

1 Such of the officers as will be off duty to-morrow, who choose to wait on the King and wish him joy of being put in possession of Shooja-oo-Dowla's country by the English, are desired to meet at the Head Quarters at 9 o'clock to-morrow morning; it is necessary to acquaint them that it is customary to make him a Salam on the occasion, and the least that should be given by a Captain is five gold mohurs, and three by a Subaltern.—CARACCIOLI, VOL. 11. 62-63.

का ठीक-ठीक हो गया। इस प्रकार शक्ति-संचय करने के पश्चात् शुजाउद्दौला ने अपने राज्य में पदार्पण किया।

देशी दशा क्या हुई ? जिस देश की असहाय प्रजा के शिल्प-वाणिज्य की रक्षा के लिए मीरक़ासिम सर्वस्व खोकर अन्त में फ़क़ीरी ग्रहण करने को बाध्य हुए, उसकी कथा लिखते समय अंग्रेज़ लेखक भी समवेदना प्रकट करने को मजबूर हुए हैं। देश अराजक हो उठा; अंग्रेज़-मात्र दुर्द्धर्ष हो उठे; नाम मात्र के नवाब मीरजाफ़र अपनी रक्षा न कर सके। उनका स्वास्थ्य पहले से ही ख़राब हो रहा था। कलकत्ता लौटते ही उन्हें झगड़ों में पड़ना पड़ा। रुपया, रुपया, रुपया! और कुछ नहीं केवल रुपया !! रुपयों के अभाव से कम्पनी बहादुर का क्रोध प्रबल हो रहा था। देश अराजक होने के कारण राजकर एकत्र नहीं हो पाता था। उधर ख़ज़ाना ख़ाली था; मीरजाफ़र के पारिवारिक व्यय की भी सुविधा नहीं थी। जल-स्थल सर्वत्र बिना शुल्क दिये व्यापार करके अंग्रेज़ वणिकों ने कर की आमदनी घटा दी थी। देशी वाणिज्य का नाम लोप होने-होने को हो गया। ऐसे समय अंग्रेज़ों की अर्थ-लालसा जागकर विकराल रूप धारण करने लगी।[१] मीरक़ासिम के 'अत्याचार' से जिन अंग्रेज़ सौदागरों की हानि हुई थी, उसे पूरा करने की शर्त्त मीरजाफ़र ने की थी। इसके लिए पाँच लाख से अधिक न देना पड़ेगा, यह जानकर मीरजाफ़र ने आसानी से स्वीकार कर लिया था किन्तु पीछे वही पाँच लाख क्रम से दस

1 The disturbed state of the country, and the abuse of the English privileges of trade, together with the infamous conduct of the native agents employed by those so engaged, added to the confusion and difficulties in collecting the revenues, and crippled the resources and industry of the country.—BROOME'S BENGAL ARMY, P. 497.

लाख, दस लाख से बीस लाख, बीस लाख से तीस लाख एवं तीस लाख से तिरपन लाख हो गया! 'मीरक़ासिम के स्वाधीन वाणिज्य वाले घोषणापत्र के प्रचार से देशी व्यापारियों को लाभ एवं हम लोगों को नुक़सान हुआ है', यह कहकर सभी अंग्रेज हानि की सूची बनाने लगे। इस बात से कम्पनी का कोई सम्बन्ध न था। इन कर्मचारियों की मनस्तुष्टि के लिए कम्पनी का रुपया बाकी रखकर मीरजाफ़र ने उनकी काल्पनिक हानि के एवज में पचीस लाख रुपये दिये, फिर भी ऋण से छुटकारा न मिला।१ इस प्रकार रुपये लेकर अंग्रेज कर्मचारियों ने उसे कम्पनी को आठ रुपये सैकड़ा सूद पर उधार दे दिया। चूँकि मीरजाफ़र के यहाँ कम्पनी का रुपया बाक़ी था अतएव यह भार और बड़े रूप में उनके सर आ पड़ा। अभागे मीरजाफ़र जिस समय ऐसी शोचनीय अवस्था में थे, उसी समय कम्पनी के कर्मचारियों ने कम्पनी का रुपया चुकाने के लिए उन्हें तंग करना आरम्भ किया! स्क्राफ्टन लिख गये हैं—'इस समय अंग्रेज कर्मचारियों ने मीर-जाफ़र को 'कामधेनु' बना रक्खा था!' २

कलकत्ता में इस प्रकार विडम्बना सह, गलितकुष्ट से पीड़ित मीरजाफ़र मुर्शिदाबाद लौटकर १७६५ ई० के जनवरी महीने में

1 The amount of which compensation, it was stated would not exceed five lakhs of Rupees ; but the demand gradually increased to ten--twenty--thirty--and finally to fifty-three lakhs of rupees, chiefly on account of alleged losses by the interruption of an illicit trade. So strong was the prevalance of personal interest over public duty, that although the claims of the Company were still undischarged, more than half of these demands for compensation were extorted from the Nawab, and the money immediately lent to Government at 8 per cent interest by their own servants, who, however regardful of private advantage were rapidly sinking the pecuniary affairs of the company into a state of ruin.—IBID.

2 The Nawab was in fact no more than a banker for Company's servants, who could draw upon him as often and to great an amount as they pleased.—SCRAFTON.

परलोक सिधारे। पाप नष्ट करने के लिए मृत्यु के समय महाराज नन्दकुमार ने, श्री किरीटीश्वरी देवी का चरणामृत लाकर उनके मुख में छोड़ दिया।

मीरजाफ़र ने जिस उपाय से गद्दी पाई थी, उसकी इस देश के इतिहास में बार-बार निन्दा हुई है। जिस उद्देश्य से उन्होंने अपने को बेंचा था, उसकी भी इतिहास में प्रशंसा नहीं है। एक अंग्रेज लेखक स्पष्ट लिख गये हैं—"इस देश के लोग यदि कभी विदेशी शासन से मर्म-पीड़ित होंगे, तब वे मीरजाफ़र को ही मूल कारण कहकर निन्दा करेंगे—नवाबी का बाह्य आडम्बर फैलाकर आत्म-सुख की आशा से ही उन्होंने देश को बेच दिया था!"[1] इस ऐतिहासिक घटना के साथ एक और सिद्धान्त जोड़ा जा सकता है—किसी प्रकार अपने वंश का प्राधान्य स्थापित करने के लोभ से ही उन्होंने ऐसा किया था पर वह प्राधान्य उनके ही जीवन में नाम-मात्र का रह गया। उनको तो कुछ शासन-क्षमता भी थी पर उनके उत्तराधिकारी उससे भी वंचित हुए; जिन्होंने जय-पराजय में चिरसहचर रहने का वचन देकर संधि की थी, उन्होंने दीवानी-सनद ग्रहण करके मीरजाफ़र के पुत्र को 'नवाब नाज़िम' बना डाला!

नवाब के निर्वाचन में देश के लोगों को ज़बान हिलाने का अधिकार नहीं था। यदि अधिकार होता तो वे दो अत्याचारियों से एक को सदैव के लिए बिदा करके कम्पनी बहादुर को ही नवाब चुनते। शाहआलम के दीवानी-सनद देने की इच्छा प्रकट

1 *If the people of this country ever writhe under a foreign sway, they have to thank this man,—this Mir Jaffier, who sold his country that he might wear the pagentry of royalty.*—MALLESON.

करने पर भी ऐसा क्यों किया गया, यह प्रश्न उठाकर बहुतेरे अंग्रेज इतिहास-लेखकों ने कुतूहल प्रगट किया है। एक ने लिखा है—'नाममात्र का नवाब न रहने पर धन हड़पने की सुविधा न होगी, यह सोचकर ही अंग्रेज लोग नवाब नियुक्त करने को इतने लालायित हुए।'[१]

मीरन का पुत्र छः वर्ष का था; मीरजाफ़र के पुत्र नजमुद्दौला बालक नहीं थे। अंग्रेजों ने उन्हें ही गद्दी पर बिठाया। विलायत के डाइरेक्टर लोग इससे असन्तुष्ट हुए। ऐसा क्यों हुआ, इसका रहस्य जानने की चेष्टा में उन्होंने त्रुटि नहीं की। मिल लिख गये हैं—"मीरन के पुत्र के घूस देने में असमर्थता प्रकट करने के कारण ही ऐसा हुआ।[२]" अंग्रेजी कोर्ट के सदस्यों को इस उपलक्ष में लगभग बारह लाख रुपये मिले थे।[३] ऐसी अवस्था में अंग्रेज इतिहास-लेखकों की बात काटने का उपाय नहीं है किन्तु उन लोगों ने केवल अर्थलोभ से ही दीवानी-सनद ग्रहण करना अस्वीकार किया था, ऐसा कहने से अविचार होता है। उन्होंने इस कार्य में हिचकिचाहट भी प्रकट की थी; विलायत के डाइरेक्टरों ने भी हिचकिचाहट प्रकट करते हुए कलकत्ते की अंग्रेजी कोर्ट को इस विषय में बार-बार सावधान कर दिया था। दीवानी का सनद ग्रहण करने पर बादशाह को उचित कर देना होगा;

1 *Possibly they considered that were the Dewanee to pass into the hands of the Company, there should be no Nawab, from whose treasury they could enrich themselves on the plea of presents, restitution, compensation &c,—the frequent periodical assertion of which demands had been reduced to system.—BROOME'S BENGAL ARMY, P. 498.*

2 *Nudjum-oo-Dowla could give presents; the infant son of Meerun,—whose revenues must be accounted for to the Company, could not.—MILL'S HISTORY OF BRITISH INDIA, VOL. III. 358.*

3 *Second Report, p. 21.*

अराजक देश में शीघ्र राज-कर संग्रह न होने पर व्यापार के लाभ से रुपया निकाल कर देना होगा, जिससे कम्पनी के मुख्य कार्य व्यापार में क्षति होने की सम्भावना उठ खड़ी होगी, यही सब सोचकर कलकत्ता की कोर्ट सनद ग्रहण करने में टालमटोल करती आ रही थी। पीछे लार्ड क्लाइव ने आकर साहस करके सनद ग्रहण किया। थोड़े ही दिन में 'कम्पनी बहादुर' का नाम सर्वत्र फैल गया।

परिशिष्ट

(क)

कम्पनी के साथ मीरजाफ़रखाँ का गुप्त संधिपत्र

"I swear by God, and the Prophet of God to abide by the terms of this treaty whilst I have life.

(मीरजाफ़र का हस्ताक्षर)

ARTICLE I.—Whatever articles were agreed to in the time of peace with the Nabob Surajah-Dowlah, I agree to comply with.—II. The enemies of the English are my enemies, whether they be Indians or Europeans.—III. All the effects and factories belonging to the French in the province of Bengal, the paradise of nations, and Behar, and Orissa, shall remain in the possessions of the English, nor will I ever allow them any

more to settle in the three provinces.—IV. In consideration of the losses which the English Company have sustained by the capture and plunder of Calcutta by the Nabob, and the charges occasioned by the maintenance of the forces I will give them one crore of Rupees.—V. For the effects plundered from the English inhabitants of Calcutta, I agree to give fifty lacks of rupees—VI. For the effects plundered from the Gentoos, Mussalmans, and other Subjects of Calcutta twenty lacks of rupees shall be given.—VII. For the effects plundered from the Armenian inhabitants of Calcutta, I will give the sum of seven lacks of rupees. The distribution of the sums allotted to the English, Gentoos, Moors, and other inhabitants of Calcutta, shall be left to Admiral Watson, Colonel Clive, Roger Drake, William Watts, James Kilpatrick, and Richard Becher Esquires, to be disposed of by them, to whom they think proper.—VIII. Within the ditch, which surrounds the borders of Calcutta, are tracts of land belonging to several Zemindars; besides these, I will grant to the English Company 600 yards without the ditch.—IX. All the land lying south of Calcutta, as far as Culpee, shall be under the Zemindary of the English Company;

and all the offices for these parts shall be under their jurisdiction. The revenues to be paid by the Company in the same manner as other Zemindars.—X. Whenever I demand the assistance of the English, I will be at the charge of the maintenance of their troops.—XI. I will not erect any new fortifications near the river Ganges below Hughley.—XII. As soon as I am established in the three Provinces, the aforesaid sums shall faithfully be paid.—Dated the 15th of the month of Ramazan, in the second year of the present reign."

The treaty written and signed by the English contained the sense of all these articles, but not expressed in the same word; and it likewise had one more of the following tenor:—

ADDITIONAL ARTICLE.

"XIII. On condition Meer Jaffier Cawn Bahadur solemnly ratifies and swears to fulfil the above articles, we the underwritten do, for and in the behalf of the Honourable East India Company, declare on the Holy Evangelists, and before God, that we will assist Meer Jaffier Cawn Bahadur with our whole utmost force, to obtain the Subahdarship of the Province of Bengal, Behar, and Orissa, and further that we will assist him to the utmost against all his enemies whatever, whenso-

ever he calls upon us for that purpose, provided that when he becomes the Nabob he fulfils the above articles."

(ख)

मीरक़ासिमखाँ का संधिपत्र

"FIRST, The Nabob Meer Mahomed Jaffier Cawn, shall continue in the possession of his dignities, and all affairs be transacted in his name, and a suitable income shall be allowed for his expenses.

"SECOND, The Neabut of the Soubadaree of Bengal, Azimabad, and Orissa, &c., shall be conferred by his Excellency the Nabob, on Meer Mahomed Cossim Cawn. He shall be vested with the administration of all the affairs of the provinces, and after his Excellency he shall succeed to the government.

"THIRD, Betwixt us and Meer Mahomed Cassim Cawn, a firm friendship and union is established. His enemies are our enemies and his friends are our friends.

"FOURTH, The Europeans and seepoys of the English army shall be ready to assist the Nabob

Meer Mahomed Cassim Cawn in the management of all affairs, and in all affairs dependent on him, they shall exert themselves to the utmost of their abilities.

"FIFTH, For all charges of the Company, and of the said army, and provisions for the field, &c., the lands of Burdwan, Midnapoor, and Chittagong, shall be assigned, and sunnuds for that purpose shall be written and granted. The Company is to stand to all losses, and receive all the profits of these three countries; and we will demand no more than the three assignments aforesaid.

"SIXTH, One-half of the Chunam produced at Silhet for three years shall be purchased by the Gomasatahs of the Company, from the people, of the government, at the customary rate of that place. The tenants and inhabitants of that place shall receive no injury.

"SEVENTH, The balance of the former Tuncaws shall be paid according to the Kistbundee agreed upon with the Royroyan. The jewels, which have been pledged shall be received back again.

"EIGHTH, We will not allow the tenants of the Sircar to settle in the lands of the English Company. Neither shall the tenants of the Company be allowed to settle in the lands of the Sircer.

"NINTH, We will give no protection to the dependants

of the Sircar in the lands or factories of the Company. neither shall any protection be given to the dependants of the Company, in the lands of the Sircar; and whoever shall fly to either party for refuge shall be given up.

"TENTH, The measures for war or peace with the Shahzada, and raising supplies of money, and the concluding both these points, shall be weighed in the scale of reason, and whatever is judged expedient shall be put in execution; and it shall be so contrived by our joint counsels that he be removed from this country, nor suffered to get any footing in it. Whether there be peace with the Shahzada or not, our agreement with Meer Mahomed Cossim Cawn, we will, by the grace of God inviolably observe, as long as the English Company's factories continue in the country.

Dated the 27th of September, 1760,
in the year of the Hegira, 1174."

(ग)

मीरजाफ़रखाँ का दूसरा संधिपत्र

ON THE PART OF THE COMPANY.

" We engage to reinstate the Nobob Meer Mahomed Jaffier Cawn Behader, in the Subahdarree of the provinces of Bengal, Behar and Orissa, by the desposal of Meer Mahomed Cossim Cawn; and the effects, treasure, jewels, &c., belonging to Meer Mohomed Cossim Cawn, which shall fall into our hands, shall be delivered up to the Nabob afore-named.

ON THE PART OF THE NABOB.

FIRST,—The treaty which I formerly concluded with the Company, upon my accession to the Nizamut, engaging to regard the honor and reputation of the Company, their Governor and Council as my own, granting perwannahs for the currency of the Company's trade, the same treaty I now confirm and ratify.

SECONDLY,—I do grant and confirm to the Company, for defraying the expences of their troops, the chucklas of Burdwan, Midnapoor and Chittagong, which were before ceded for the same purpose.

THIRDLY,—I do ratify and confirm to the English, the privilege granted them by their firmaun, and Several husbul-hookums, of carrying on their trade by means of their own dustucks, free from all duties, taxes and impositions, in all parts of the country, excepting the article of salt, on which a duty of two and a half PER CENT. is to be levied on the Rowana or Hooghly market price.

FOURTHLY,—I give to the Company half the saltpetre, which is produced in the country of Poornea, which their gomastahs shall send to Calcutta ; the other half shall be collected by my fougedar, for the use of my offices ; and I will suffer no other person to make purchases of this article in that country.

FIFTHLY,—In the chucla of Silhet for the space of five years, commencing with the Bengal year 1170, my fougedar, and the Company's gomastah, shall jointly prepare Chunam, of which each shall defray half the expenses ; and half the Chunam so made, shall be given to the Company, and the other half shall be for my use.

SIXTHLY,—I will maintain twelve thousand horse, and twelve thousand foot in the three provinces ; and if there should be occasion for more, the number shall be increased proportionably to the emergency. Besides these, the force of the English Company shall always attend me when they are wanted.

SEVENTHLY,—Wherever I shall fix my court, either at Moorshedabad or elsewhere, I will advise the Governor and Council ; and whatever number of English forces, I may have occasion for, in the managment of my affairs, I will demand them, and they shall be allowed me ; and an English gentleman shall reside with me, to transact all affairs between me and the Company ; and a person shall also reside on my part at Calcutta, to negotiate with the Governor and Council.

EIGHTHLY,—The late perwanna issued by Cossim Allee Cawn, granting to all merchants the exemption of all duties, for the space of two years shall be reversed and called in, and the duties collected as before.

NINTHLY,—I will cause the rupees, coined in Calcutta, to pass in every respect equal to the siccas of Moorshedabad, without any deduction of batta ; and whosoever shall demand batta shall be punished.

TENTHLY,—I will give thirty lacks of rupees to defray all the expenses and loss accruing to the Company, from the war and stoppage of their investment ; and I will reimburse to all private persons the amount of such losses, proved before the Governor and Concil as they may sustain in their trade in the country ; if I should not be able to discharge this in ready money, I will give assignment of land for the amount

ELEVENTHLY,--I will confirm and renew the treaty which I formerly made with the Dutch.

TWELFTHLY,--If the French come into the country I will not allow them to erect any fortification, maintain forces, or hold lands, zemindarree, &c. but they shall pay tribute, and carry on their trade as in former times.

THIRTEENTHLY,--Some regulations shall be hereafter settled between us, for deciding all disputes which may arise between the English agents and gomastahs in the different parts of the country, and my officers.

In testimony whereof, we the said Governor and Council have set our hands, and affixed the seal of the Company to one part hereof ; and the Nabob aforenamed, hath set his hand and seal to another part hereof ; which were mutually done, and interchanged at fort William, the 10th day of July, 1764.

(Signed) HENRY VANSITTART
JOHN CARNAC,
WILLIAM BILLERS
JOHN CARTIER,
WARREN HASTINGS,
RANDOLPH MARRIOTT,
HUGE WATTS."

Demands made on the part of the Nabob Meer Mahomed Jaffer Cawn, to the Governor and Council, at the time of signing the treaty.

"FIRST,--I formerly acquainted the Company with the particulars of my own affairs, and received from them repeated letters of encouragement with presents. I now make this request, that you will write in a proper manner to the Company, and also to the King of England, the particulars of our friendship and union, and procure for me writings of encouragement, that my mind may be assured from that quarter, that no breach may ever happen between me and the English and that every Governor and Counsellor, and Chief, who are here, or may hereafter come, may be welldisposed and attached to me.

SECONDLY,--Since all the English Gentlemen, assured of my friendly disposition to the Company, cnfirm me in the Nizamut, I request, that to whatever I may at any time write, they will give their credit and assent, nor regard the stories of designing men to my prejudice, that all my affairs may go on with success, and no occasion may arise for jealousy or ill-will between us.

THIRDLY,--Let no protection be given, by any of the English gentlemen, to any of my dependents, who may fly for shelter to Calcutta, or other of your districts ; but let them be delivered up to me on demand. I shall strictly enjoin all my fougedars aumils on all accounts, to afford assistance and countenance to such of the gomastahs of the Company, as attend to the lawful trade of their factories ; and if any of the said gomastahs shall act otherwise, let them be checked in such a manner, as may be an example to others.

FOUREHLY,--From the neighbourhood of Calcutta to Hooghly, and many of the perganahs bordering upon each other, it happens, that on complaints being made, people go against the taalookdars, reiats, and tenants of my towns, to the prejudice of the business of the sircar : wherefore, let strict orders be given, that no peons be sent from Calcutta on the complaint of any one, upon my taalookdars or tenants ; but on such occasions, let application be made to me, or the Naib of the fougedaree of Hooghly, that the country may be subject to no loss or devastation. And if any of the merchants and traders which belonged to the Buxbunder and Azimgunge, and have settled in Calcutta, should be desirous of returning to Hooghly, and carrying on their business there as formerly, let no one molest them. Chandernagore, and this French factory, was presented to me by Colonel Clive, and given by me in charge to Ameer Beg Cawn. For the reason, let strict orders be given, that no English gentlemen exercise any authority therein, but that it remains as formerly, under the jurisdiction of my people.

FIFTHLY,--Whenever I may demand any forces from the Governor and Council for my assistance, let them be immediately sent to me, and no demand made on me for their expenses.

The demands of the Nabob Shujaa-ool Moolk, Hissam-o-Dowla, Meer Mahomed Jaffier Cawn Bahader, Mohabut Jung, written in five articles. We the President and Council of the English Company do agree, and set our hands to, in Fort William, the 10th of July, 1763."

(घ)

दीवानी सनद

"Firmaun from the King Shah Aulum, granting the Dewannee of Bengal, Behar, and Orissa, to the Company. Dated August 12th, 1765.

At this happy time, our royal firmaun, indispensibly required obedience, is issued : that whereas, in consideration of the attachment and service of the high and mighty the noblest of exalted nobles, the chief of illustrious Warriors our faithful servants and sincere well-wishers, worthy of our royal favours, the English Company, we have granted them the Dewannee of the provinces of Bengal, Behar, and Orissa, from the beginning of the Fussal Rubby of the Bengal year 1171, as a free gift and ultumgau, without the association of any other person, and with an exemption from the payment of the customs of the Dewannee, which used to be paid to the court. It is requisite that the said Company engage to be security for the sum of twenty-six lacks of rupees a year, for our royal revenue, which sum has been appointed from the Nabob Nadjum-ul-Dowla Bahadar, and regularly remit the same to the royal Sircar : and in this case, as the said Company are obliged to keep up a large army for the protection of the province of Bengal, &c., we have granted to them whatsoever may remain out of the revenues of the said provinces, after remitting the sum of twenty-six lacks of rupees to the royal Sircar, and providing for the expenses of the Nizamut ; it is requisite that our royal descendants, the Viziers, the bestowers of dignity, the Omrahs, high in rank, the great officers, the Muttasuddies of the Dewannee, the managers of the business of the Sultanut, the Jagheerdars and Croories, as well the future as the present, using their constant endeavours for the establishment of this our royal command, leave the said office in possession of the said Company, from generation to generation, for ever and ever ; looking upon them to be insured from dismission or removal, they must on no account whatsoever give them any interruption, and then must regard them as excused and exempted from the payment of all the custums of the Dewannee, and royal demands. Knowing our orders on the subject to be most strict and positive, let them not deviate therefrom.

Written the 24th of Sophar of the 6th year of the Jaloos (the 12th Aug. 1765.)

Contents of the Zimmun.

Agreeably to the paper which has received our sign manual, our royal commands are issued : That, in consideration of the attachment and services of the high and mighty the noblest of exalted nobles, the chief of illustrious warriors, our faithful servanrts and sincere well-wishers, worthy of our royal favours, the English Company, we have granted them the Dewannee of the provinces of Bengal, Behar, and Orissa, from the beginning of the Fussul Rubby of the Bengal year 1172, as a free gift and Ultumgau, without the association of any ather person, and with an exemption from the customs of the Dewannee, which used to be paid to the court on condition of their being security for the sum of twenty-six lacs of rnpees a year for our royal revenue ; which sum has been appointed from the Nabob Nudjum-ul-Dowla Bahadur ; and after remitting the royal revenue, and providing for the expenses of the Nizamot, whatsoever may remain we have granted to the said Company.

THE DEWANNEE OF THE PROVINCE OF BENGAL.
THE DEWANNEE OF THE PROVINCE OF BEHAR.
THE DEWANNEE OF THE PROVINCE OE ORISSA.

सस्ता-साहित्य मण्डल

अजमेर के

मुख्य-मुख्य प्रकाशन

१

क्रांतिकारी

१	हमारे ज़माने की गुलामी	।)
२	नरमेध !	१।।)
३	शैतान की लकड़ी	।।।=)
४	चीन की आवाज़	।-)
५	दुखी दुनिया	।।)
६	जब अंग्रेज़ आये	१।=)

२

बल-प्रद

१	आत्मा-कथा (दोनों खण्ड)	२)
२	विजयी बारडोली	२)
३	दक्षिण आफ्रिका का सत्याग्रह (दो भाग)	१।)
४	स्वाधीनता के सिद्धांत	।।)
५	शिवाजी की योग्यता	।=)

३
जीवन-प्रद

१	दिव्य जीवन	।।।
२	जीवन-साहित्य (दो भाग)	१)
३	तामिल वेद	॥=)
४	स्त्री और पुरुष	॥)
५	अनीति की राह पर	॥)
६	कलवार की करतूत	-)॥।

४
ज्ञान-प्रद

१	आत्मोपदेश	।)
२	यथार्थ आदर्श जीवन	॥)
३	खद्दर का संपत्ति शास्त्र	॥।≡)
४	समाज-विज्ञान	१॥)
५	क्या करें ?	१॥=)
६	हाथ की कताई-बुनाई	॥=)